भावपूर्ण समर्पण



स्व. श्रीमती लाजवन्ती देवी सेतिया

(1925-2019)

यह स्मारिका हमारे परम वंदनीय माता-पिता की प्रेरणादायक स्मृतियों को समर्पित है। उनका त्याग, अटल विश्वास, पुरुषार्थ तथा उन द्वारा प्रदान किए गए नैतिक मूल्य हमारी सफलता का आधार हैं। उनके अनुकरणीय जीवन की स्मृतियां हमारी वास्तविक शक्तियां हैं। हमारे माता-पिता की पावन स्मृतियों को पल-पल नमन!

कीर्तिशेष ममतामयी माँ की पुण्य स्मृति में भावांजलि

माँ ! कहो तुम्हें क्या दें उपमा।
उपमा में भी तुम ही हो माँ,
महिमा में भी तुम ही हो माँ,
गरिमा में भी तुम ही हो माँ,
तुम कहाँ नहीं हो बोलो माँ।
यदि कहूँ चन्द्रमा हो तुम माँ,
तो वहाँ नहीं हो क्या तुम माँ?
पर यह ठीक नहीं तुलना
है दाग चन्द्रमा में देखो,
तुम हो परम पवित्र हमारी माँ।
माँ ! कहो तुम्हें क्या दें उपमा।
तुम साँस-साँस में बसी हुई
तुम रोम-रोम में रमी हुई
तुमने देकर माँ जन्म हमें
मंगलमय जीवन दान दिया
मानवता का वरदान दिया।
प्यार अथाह दिया तुमने
ममता का संज्ञान किया।
इस प्यार का वर्णन हो कैसे
हैं सभी विशेषण व्यर्थ हुए।
क्या संबोधन में बोलें माँ ?
माँ ! कहो तुम्हें क्या दें उपमा।
कैसे भूलें माँ आज तुम्हें,
यह रक्त बह रहा हममें
यह श्वास चल रहा हममें
हैं प्राणवान ये तन और मन
इस हेतु तुम्हें माँ करें नमन।
बचपन में तुमने हाथ पकड़
इन पाँवों को गति दी थी माँ,
कैसे बोलें, कैसे सोचें
कैसा व्यवहार करें सबसे,
संस्कार अमोल दिये थे माँ।
इन संस्कारों का कवच पहन
निर्भीक चले हैं हम जग में

यह वात्सल्य तुम्हारा था
काँटे भी फूल बने पग में।
तेरा कैसे कर्ज चुकाएं हम
हम तुमसे पूछ रहे हैं माँ।
माँ ! कहो तुम्हें क्या दें उपमा।
तुम त्याग-तपस्या की मूरत
करुणा की जीवित सूरत थीं।
सात्विक जीवन था सदा जिया
तुम धार्मिकता की संबल थीं।
तुम थी उदार पग-पग पर
थीं दानशील हर अवसर पर
सामाजिक मंगल हेतु भूमिका
थी सदा निभाई तुमने माँ।
माँ ! कहो तुम्हें क्या दें उपमा।
प्रेम सूत्र में हमें बाँध
तुमने हमको था एक किया
हम सीख गए मिलकर रहना
था मंत्र प्रेम का हमें दिया
दी सीख हमें जो जीवन में
उसको कैसे हम भूले माँ।
माँ ! कहो तुम्हें क्या दें उपमा।
तुम नहीं यहाँ, पर पास यहीं
तुम माँ बोलो, तुम कहाँ नहीं?

तुम यहाँ वहाँ हो इस घर में
हो गूँज रही हर इक स्वर में
हम जो भी हैं तुमसे हैं माँ
खुशियाँ भी हैं तुमसे ही माँ
सारी खुशहाली तुमसे माँ
जीवन हरियाली तुमसे माँ।
माँ ! कहो तुम्हें क्या दें उपमा।
हम चलें तुम्हारे पथ पर माँ
आशीष हमें दो ऐसी माँ
यदि फिसलें हम माँ कभी कहीं
हाथों से हमें संभालो माँ।
अंतर्मन में तुझे देखें माँ
सिर पर सदा हो तेरा हाथ
सब कुछ यहाँ मिल जाता है
जब मिल जाता माँ तेरा साथ।
जब हमें पुन: यह जन्म मिले
तो कोख तुम्हारी ही हो माँ
यह कोख भाग्यशाली पाते
उनको ही मिलती ऐसी माँ।
माँ ! कहो तुम्हें क्या दें उपमा।

पल-पल माताजी के श्रीचरणों में :
अर्जुनदास, रविकुमार, महेन्द्रकुमार सेतिया
ज्ञानदेवी, कमलेश रानी, उषा रानी एवं सुनीता रानी

हमारे परम वंदनीय माता-पिता के आस्था केन्द्र



अति सुंदर अति प्यारा श्री आनंदपुर धाम हमारा



ऐतिहासिक गुरुद्वारा बुड्ढा जोहड़ साहिब, डाबला (श्रीगंगानगर)

श्री परमहंस, अद्वैत मत श्री आनंदपुर

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वरा।
गुरु साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः।।
'सतगुरु ही जीवन की पूर्णता'
राम कृष्ण से को बड़ा, तीन्हुं तो गुरु कीन्ह।
तीन लोक के हैं धनी, गुरु आगे अधीन।।

इस धरा पर जब-जब भी परमात्मा ने अवतार धारण किया, तब-तब प्रत्येक अवतार में स्वयं परमात्मा होते हुए यह आदर्श स्थापित किया कि सतगुरु के बिना इस जीवन का उद्देश्य परिपूर्ण नहीं होता, ना ही मानव जन्म सफल होता है। प्रत्येक प्राणी-मात्र को अपने जीवन में सतगुरु की नितान्त आवश्यकता है। सतगुरु ही जीवन को जीने का ढंग सिखाते हैं। सतगुरु नाम दीक्षा प्रदान कर भजन सुमिरण द्वारा जीव के जीवन को खुशहाल बनाते हैं।

'गुरु शरण, निष्ठा, दृढ़ विश्वास'

स्व. श्रीमान गिरधारीलाल सेतिया एवं स्व. माताजी श्रीमती लाजवंती सेतिया जी संसार में रहते हुए अपने आत्मिक कल्याण के लिए प्राथमिक तौर पर अग्रसर रहे। पूजनीय माताजी बचपन से ही शांत प्रकृति, सरलता एवं आध्यात्मिक विचारों वाली थीं। सर्वप्रथम माताजी पर श्री गुरु महाराज जी की असीम कृपा बरसी एवं गुरु दीक्षा प्राप्त कर गुरु चरणों से जुड़ीं एवं आध्यात्मिकता की ओर पग बढ़ाया। भाग्यशाली होते हैं वह जीव, जिन पर संसार में रहते हुए सतगुरु कृपा एवं उनकी कृपा दृष्टि द्वारा अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने की लगन लगती है। आप सांसारिक कर्तव्यों को बड़ी सहजता, सुगमता, धैर्यशीलता एवं लगन से निभाती रही, सम्पूर्ण परिवार को एक माला के रूप में पिरोये रखा और सभी को उच्च संस्कार और गुरु भक्ति की प्रेरणा देती रही।

माताजी की भक्ति एवं निष्ठा के फलस्वरूप पिताजी के पुरातन संस्कार जागृत हुए और उन्हें भी श्री आनंदपुर धाम में जाकर गुरु दीक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और दोनों निरंतर भजन-सुमिरन की कमाई में संलग्न हो गए। पिताजी की लगन और निष्ठा इस प्रकार गुरु चरणों से जुड़ी कि माताजी से भी अधिक गुरु भक्ति से जुड़ गये।

आप दोनों ही नियम के परिपक्व थे। आपने नित-नियम से प्रात:काल एवं सायंकाल की श्री आरती पूजा में भी श्री आनंदपुर कुटिया (जैतसर) में पहुँचकर लाभ उठाना, जीवन में प्रत्येक कार्य में सतगुरु को सर्वप्रथम स्थान देना एवं प्रत्येक कार्य को उनकी पूजा-अर्चना द्वारा ही सम्पूर्ण करना आपके जीवन के उद्देश्य थे।

आपने सम्पूर्ण परिवार को गुरु चरणों के साथ जोड़ने के लिए जीवनपर्यन्त भरसक प्रयत्न किया और उन्हें धार्मिक विचारों से परिपूर्ण बनाया। श्री आनंदपुर कुटिया (जैतसर) के निर्माण कार्य में पूर्ण रूप से सहयोग करते हुए आपने तन-मन और धन को पवित्र बनाया। समय-समय पर गुरु दरबार की प्रत्येक सेवा में पूर्ण निष्ठा और भावपूर्वक भाग लेते रहना, आपका जीवन उज्ज्वल बनाता रहा और गुरु चरणों में निरंतर आपका प्रेम बढ़ता रहा।

माताजी एवं पिताजी की उच्च भावना, गुरु चरणों की दृढ़ प्रीति, निष्ठा और अनुराग केवल सेतिया परिवार ही नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज के लिए आदर्श है। उनके सिद्धान्त सभी को यह शिक्षा प्रदान करते हैं कि किस प्रकार परिवार और समाज के बीच समन्वय स्थापित करते हुए सत्गुरु के बताये हुए मार्ग पर चलना है और गुरु भक्ति द्वारा अपने जीवन का कल्याण करना है।

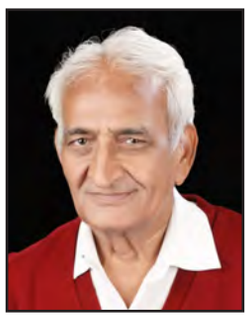
नि:स्वार्थ सेवाभाव आध्यात्मिक जीवन की आधारशिला है।



Mr. Arjun Dass Setia
Chief Coordinator



Smt. Vimla Guglani
Author of Family Background



Prof. Des Raj Sukhija
Editor-in-Chief



Dr. A.C. Chug
Chief Advisor

Assistant Coordinators



Mr. Ravi Kumar Setia



Mr. Mahender Kumar Setia

Assistant Advisors



Smt. Gyandevi Wadhwa



Smt. Kamlesh Bhateja



Smt. Usha Bajaj



Smt. Sunita Nagpal

When life is seen as divine, everyone grows wings.

आत्मिक आभार

हमारे परम वंदनीय दादा-दादी, नाना-नानी और माता-पिता के प्रेरणादायक जीवन की अनमोल स्मृतियां हमारे जीवन का आधार हैं। आज हम जो कुछ भी हैं उन्हीं के आशीर्वाद के परिणामस्वरूप हैं। हमारी परम पूजनीय माता श्रीमती लाजवंती देवी एवं पिता श्री गिरधारीलाल जी सेतिया की पुण्य स्मृति में समर्पित यह स्मारिका हमारे परिवार के स्वर्णिम इतिहास और सुंदर संस्कारों की विरासत की झलक प्रस्तुत करती है। हमारे माता-पिता ने अपनी जीवन यात्रा में परमात्मा को सदैव साथ रखते हुए विपरीत समय में भी अवसर तलाशे और रिश्तों की मिठास को सदैव बनाए रखा। हमारे माता-पिता की श्री परमहंस अद्वैतमत आनंदपुर कुटिया के प्रति आस्था की स्मृतियां हममें अदृश्य शक्ति का संचार करती हैं। हमारे माता-पिता ने हमसे संयम का पालन करवाते हुए हमारे जीवन को उचित दिशा प्रदान की। उन्होंने बचपन से ही हम पर उस मिट्टी की परत की तरह उचित दबाव बनाए रखा जो कि बीज के अंकुरन और विकास के लिए उसे सुरक्षित रखती है। जिस प्रकार मिट्टी की परत का दबाव बीज की सहायता करता है ठीक वैसे ही हमारे माता-पिता द्वारा हमसे कड़े नियमों का पालन करवाने का विवेकपूर्ण दबाव हमारे लिए अत्यंत हितकर रहा।

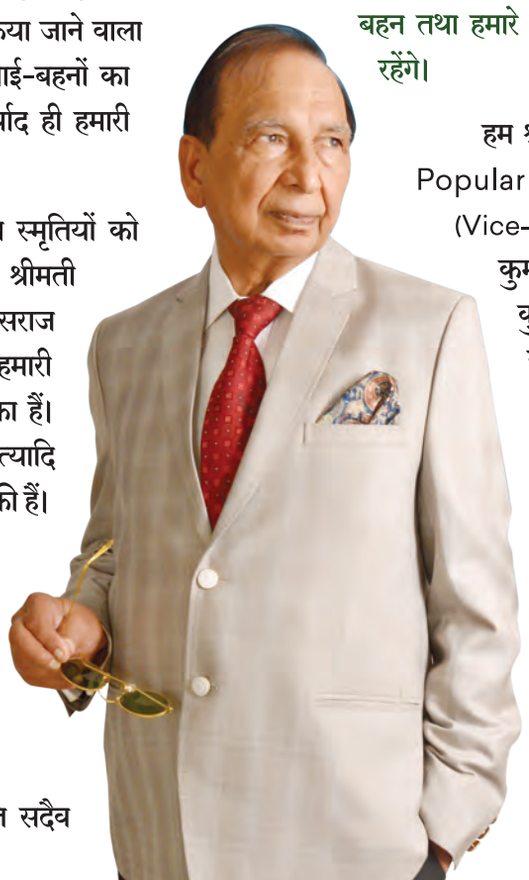
हमारे माता-पिता के मर्यादित जीवन ने हमें यह आभास कराया कि आत्मविश्वास के साथ धैर्यपूर्वक किया जाने वाला कड़ा परिश्रम ही सौभाग्य की जननी है। हम भाई-बहनों का परस्पर प्रेम तथा हमारे माता-पिता का आशीर्वाद ही हमारी वास्तविक शक्ति है।

हमारे परमपूज्य माता-पिता की पावन स्मृतियों को स्मारिका के रूप में सदैव बनाए रखने के लिए श्रीमती विमला गुगलानी, डॉ. अमरचन्द चुग और प्रो. देसराज सुखीजा ने बहुमूल्य योगदान प्रदान किया है। हमारी बहन श्रीमती विमला गुगलानी प्रतिष्ठित लेखिका हैं। उनकी अनेक कविताएं, कहानियां, रेसिपी इत्यादि समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। उन्होंने बहुत से साहित्यिक सम्मान प्राप्त किए हैं। रेडियो और टी.वी. पर भी इनके प्रोग्राम और इंटरव्यू प्रसारित हो चुके हैं। विमला बहन स्मारिका के प्रति पूर्णतया समर्पित रही हैं। हमारी इच्छा का मान रखते हुए श्रीमती विमला गुगलानी तथा इनके दोनों बेटों द्वारा प्रदान किए गए सहयोग के लिए हमारा परिवार इनके प्रति सदैव आभारी रहेगा।

हम हमारे मामाजी के सुपुत्र डॉ. अमरचन्द चुग जी के प्रति विशेष रूप से आभारी हैं जिन्होंने इस स्मारिका के संपादन हेतु अथक श्रम किया और कुशल मुख्य सलाहकार की भूमिका बखूबी निभाई है। डॉ. चुग समय-समय पर अपने सुझावों द्वारा हमारे इस कार्य को एक नया स्वरूप प्रदान करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहे। पुस्तक लिखने का उनका पिछले चालीस वर्षों का अनुभव हमें प्रेरणा प्रदान करता रहा। हम उनके प्रयासों को कभी भूल नहीं सकते।

हमारे प्रिय मित्र प्रो. देसराज सुखीजा का जीवन को सार्थक दिशा प्रदान करने वाले साहित्य के प्रति सदैव विशेष लगाव रहा है। उन्होंने हमारे परिवार के सदस्य की भांति इस स्मारिका का संपादन किया है और इसे सुन्दर स्वरूप प्रदान करने का हर संभव प्रयास किया है। उन्होंने हर पल स्मारिका के संपादन और प्रकाशन को प्राथमिकता प्रदान की है। इस पावन कार्य के लिए उन द्वारा प्रदान किए गये अनमोल रचनात्मक एवं भावनात्मक योगदान को हम कभी भुला नहीं पाएंगे।

हमारे माता-पिता को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने वालों तथा पग-पग पर हमें सहयोग प्रदान करने वालों के प्रति हम सभी भाई-बहन तथा हमारे सुपुत्र आत्मिक रूप से आभारी रहेंगे।



हम श्री निर्मल गोयल (President, Popular Printers), अजय अग्रवाल (Vice-President) डिज़ाइनर सुशील कुमार शर्मा तथा टाइपिस्ट राजेन्द्र कुमार शर्मा का हार्दिक धन्यवाद करते हैं जिन्होंने इस स्मारिका को आकर्षक ढंग से प्रकाशित करने का रचनात्मक एवं सराहनीय कार्य किया है। स्मारिका को सुंदर स्वरूप प्रदान करने के लिए इन द्वारा दिए गए सक्रिय सहयोग के लिए हम सदैव इनके प्रति आभारी रहेंगे।

-अर्जुन दास सेतिया

Gratitude is the fairest blossom which springs from the soul.

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान

सत्यमेव जयते

मुम/संदेश/ओएसडीएफ/2022
जयपुर 19 अक्टूबर, 2022



संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि सेतिया परिवार द्वारा अपने पूज्य माता-पिता स्व. श्री गिरधारी लाल सेतिया एवं स्व. श्रीमती लाजवंती सेतिया की पुण्य स्मृति में 'अमर स्मृतियाँ' स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

अपने पूज्य माता-पिता की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के उद्देश्य से ऐसे प्रकाशन अपने आप में महत्त्वपूर्ण हैं। इससे उनके व्यक्तित्व को प्रकाशमान करने से नई पीढ़ी को प्रेरणा मिलती है। यह शुभ है कि सेतिया परिवार द्वारा कोरोनाकाल से अब तक प्रतिदिन जरूरतमंदों और अस्पतालों में असहाय लोगों को भोजन, बच्चों के लिए नई बस उपलब्ध कराने के साथ ही विभिन्न स्थानों पर वाटर कूलर्स की व्यवस्था आदि की जा रही है। इस प्रकार के पुनीत कार्यों से अन्तःकरण में विशेष संतोष की अनुभूति होती है।

मैं सेतिया परिवार के स्मृति शेष माता-पिता जी को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए स्मारिका के प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(अशोक गहलोत)

वसुन्धरा राजे सिंधिया

सत्यमेव जयते

निवास : 13, सिविल लाइन्स,
जयपुर (राज.)



संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि सेतिया परिवार द्वारा अपने माता-पिता से जुड़ी स्मृतियों को लिपिबद्ध करने के लिए 'अमर स्मृतियाँ' नामक एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। मेरा मानना है कि किसी भी व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास माता-पिता द्वारा दिए गए संस्कारों के बिना नहीं हो सकता। वे हमारे लिए निश्चित रूप से ईश्वर हैं, जिनका पूरा जीवन हमारे भविष्य को संवारने में गुजर जाता है।

स्व. गिरधारी लाल जी सेतिया एवं स्व. श्रीमती लाजवंती जी सेतिया ने न केवल अपनी संतानों को सुयोग्य बनाया, बल्कि अभावग्रस्त जीवन जी रहे लोगों की भी मदद की। ऐसे सेवाभावी माता-पिता की याद में 'अमर स्मृतियाँ' नामक स्मारिका का प्रकाशन किया जाना निश्चित रूप से आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी है।

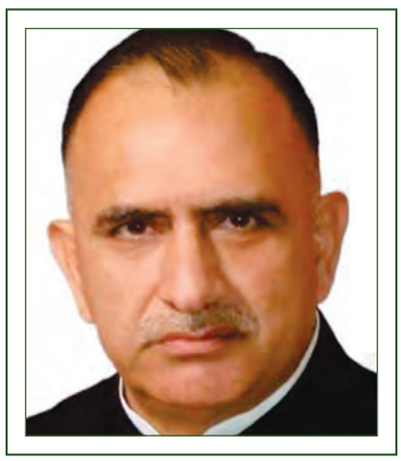
'अमर स्मृतियाँ' स्मारिका की सफलता के लिए शुभकामनाएँ।

(वसुंधरा राजे)

अशोक परनामी
पूर्व राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य
पूर्व विधायक (आदर्श नगर विधानसभा)
पूर्व प्रदेशाध्यक्ष, भाजपा (राजस्थान)
पूर्व महापौर, जयपुर

सत्यमेव जयते

निवास :
314, आदर्श नगर, जयपुर-302004
फोन : 0141-4374089



संदेश

परम वंदनीय माता-पिता अनमोल दिव्य उपहार हैं। वे नि:स्वार्थ प्रेम और त्याग का भव्य स्वरूप हैं। बच्चों के प्रति माँ की विशाल ममता और पिता की त्यागपूर्ण क्षमता अतुलनीय हैं। माता-पिता अपने जीवन के रंगों से बच्चों के जीवन में इन्द्रधनुषी रंग भरते हैं तथा उनकी खुशियों में ही अपनी खुशियां तलाशते हैं। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड माता-पिता के श्रीचरणों में निहित है। देवतुल्य माता-पिता की वंदना ईश्वर की आराधना है।

स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल जी सेतिया एवं श्रीमती लाजवंती देवी का प्रत्येक कर्म धर्म पर आधारित रहा। उन्होंने अपनी जीवन यात्रा में रिश्तों की मधुरता को सदैव बनाए रखा। वे केवल अपने परिवार तक सीमित नहीं रहे। जनहित के प्रति सदैव समर्पित रहते हुए, उन्होंने अपने बच्चों के जीवन को सुन्दर संस्कारों से संवारा और उन्हें परोपकार के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

स्मारिका 'अमर स्मृतियाँ' के प्रकाशन द्वारा माता-पिता की पावन स्मृति को निरंतर बनाए रखने के प्रयास की मैं सराहना करता हूं तथा परम श्रद्धेय माता-पिता की स्मृति को श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। मेरी हार्दिक कामना है कि सेतिया परिवार सेवाभाव के साथ विकास पथ पर निरंतर अग्रसर रहे। सर्वश्री अर्जुनदास, रवि कुमार, महेन्द्र कुमार सेतिया तथा सम्पूर्ण सेतिया परिवार को स्मारिका के सार्थक प्रकाशन के लिए मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

(अशोक परनामी)

Rajiv Arora
Chairman

Udyog Bhawan, Tilak Marg
Jaipur-302005, India
Ph. : +91-141-2227267
Mob. : 9828090509
E-mail : rajsico@rajasthan.gov.in

The Rajasthan Small Industries Corporation Ltd.

(A Government of Rajasthan Undertaking)



संदेश

परम श्रद्धेय पिताश्री गिरधारी लाल जी सेतिया एवं माताश्री स्व. लाजवंती देवी जी सेतिया की जीवन यात्रा के दौरान विरासत में मिले संस्कारों से अर्जित यश-वैभव एवं सुख-समृद्धि में सेतिया परिवार ने समाज में नूतन आयाम स्थापित किये हैं।

धर्मपरायणता, पुरुषार्थ, समाज सेवा, सद्व्यवहार, सादा जीवन, कुशल नेतृत्व के धनी एवं वात्सल्य की प्रतिमूर्ति, आदरणीय माताजी और पिताजी की आदर्श जीवनशैली से प्रेरित होकर उनके सुपुत्र सर्वश्री अर्जुन दास, रवि कुमार और महेन्द्र कुमार सेतिया एवं परिवारजन के द्वारा प्रस्तावित स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है जो कि समाज के लिए अनुकरणीय एवं पुनीत कार्य है। इस अनुष्ठान के लिए परिवार को साधुवाद एवं गुरुवर की ओर से शुभकामनाएं।

(राजीव अरोड़ा)

कालीचरण सराफ
सदस्य
राजस्थान विधानसभा

सत्यमेव जयते

कार्यालय :
सी-51, सरदार पटेल मार्ग,
सी-स्कीम, जयपुर -302001 (राज.)
फोन एवं फैक्स : 2225040, 2221364



संदेश

माता-पिता की असीम महिमा को शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं है। भारतीय संस्कृति में माता-पिता को ठीक ही देव तुल्य माना गया है। परम सम्माननीय माता-पिता द्वारा प्रदान किये गये श्रेष्ठ संस्कारों के परिणाम स्वरूप सेतिया परिवार जन-कल्याण के प्रति सदैव समर्पित रहा है।

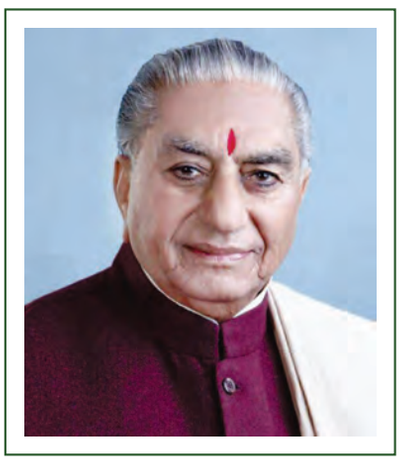
सेतिया परिवार द्वारा पूजनीय पिता स्व. श्री गिरधारी लाल जी सेतिया तथा माता स्व. श्रीमती लाजवंती देवी की पुण्य स्मृति में स्मारिका 'अमर स्मृतियाँ' का प्रकाशन अपने आप में अत्यधिक प्रशंसनीय एवं पावन कार्य है। सेतिया परिवार को स्मारिका के सफल प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाऐं।

(कालीचरण सराफ)

राधेश्याम गंगानगर
पूर्व मंत्री, राजस्थान सरकार
एवं प्रदेशाध्यक्ष, राजस्थान प्रदेश पंजाबी महासभा
राजस्थान, जयपुर

सत्यमेव जयते

82 जी ब्लॉक, श्रीगंगानगर (राजस्थान)
सम्पर्क : 094140-88888, 0154-2471060
Email : mla.gang.rj@gmail.com



संदेश

सेतिया परिवार से मेरा अनेक वर्षों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। श्री अर्जुनदास जी सेतिया, श्री रवि सेतिया, श्री महेन्द्र सेतिया एवं पूरा सेतिया परिवार श्रीगंगानगर जिले के जैतसर कस्बे से निकलकर प्रदेश की राजधानी जयपुर में आज व्यापारिक क्षेत्र में बुलंदी को प्राप्त कर रहा है। साथ ही समाज सेवा के क्षेत्र में भी यह परिवार वर्षों से सक्रिय है। मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि सेतिया परिवार अपने माता-पिता की स्मृति को चिरस्थाई बनाने के लिए एक सुंदर स्मारिका का प्रकाशन करने जा रहा है। मैं इसके लिए सेतिया परिवार को अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं और साधुवाद देता हूं। साथ ही मैं आशा करता हूं कि यह स्मारिका सेतिया परिवार की आने वाली पीढ़ियों को ही नहीं बल्कि पूरे समाज को एक दिशा दिखाने का काम करती रहेगी। एक बार पुन: हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

सद्भावी
राधेश्याम गंगानगर

रफीक खान
(विधायक आदर्श नगर जयपुर)
अध्यक्ष
Rafeek Khan
(MLA, Adarsh Nagar, Jaipur)
Chairman

सत्यमेव जयते

राजस्थान राज्य अल्पसंख्यक आयोग
Rajasthan State Commission for Minorities
8321, एस.एस.ओ. भवन (तीसरी मंजिल)
शासन सचिवालय, जयपुर - 302005
8321, S.S.O. Building (Third Floor), Secretariat
Jaipur-302 005 | Email : cmcrajasthan@gmail.com
फोन /Tel. : 0141-2227100, 5153222/23 Extn. 6422



संदेश

मुझे यह जानकर बहुत खुशी मिली कि सेतिया परिवार द्वारा अपने माताजी-पिताजी से जुड़ी यादों की एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

स्व. श्री गिरधारी लाल जी और स्व. श्रीमती लाजवंती सेतिया ने अपनी संतानों को काबिल बनाया और अच्छे संस्कार दिए और लोगों की मदद करने की शिक्षा दी। ऐसे मदद करने वाले बुजुर्गों की याद में 'अमर स्मृतियाँ' स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा देने वाला है।

इस पुनीत कार्य के लिए मैं इनके पुत्रों को हार्दिक बधाई देता हूँ। 'अमर स्मृतियाँ' की सफलता की शुभकमानाएँ!

(रफीक खान)

निवास : डी-136, कैलाश मार्ग, बनीपार्क, जयपुर (राज.) ● मोबाइल : 9351610110, 8769394702
Resi : D-136, Kailash Marg, Bani Park, Jaipur (Raj.) • E-mail : mlarafeekkan@gmail.com, rafeekkhanpcc@gmail.com

Jagdish Chandra
Channel Head, First India News



संदेश

गिरधारी लाल सेतिया मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्य बेहद अनुकरणीय और प्रशंसनीय हैं। स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया और स्व. श्रीमती लाजवंती देवी जी की पुण्य स्मृति में प्रकाशित की जा रही स्मारिका 'अमर स्मृतियाँ' सचमुच आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत है।

सद्भावी
जगदीश चंद्र
चैनल हेड, फर्स्ट इंडिया न्यूज

सरदार अजयपाल सिंह

अध्यक्ष - सिख समाज, राजस्थान



संदेश

संसार में माता-पिता के कर्ज को किसी भी रूप में चुकाना किसी के लिए भी असंभव है। ऐसे में हम उनकी स्मृति में कुछ भी करें वह कम ही होगा। अपनी संस्कृति से जुड़े होने के कारण शास्त्रानुसार किए जाने वाले कार्य तो हम करते ही हैं, परन्तु प्रेरणास्पद कार्य तो मेरे मित्र सर्वश्री अर्जुन दास, रवि कुमार एवं महेन्द्र कुमार जी सेतिया ने किया है।

मेरे मित्र अर्जुन दास, रवि कुमार एवं महेन्द्र कुमार जी सेतिया का अपने माता-पिता की स्मृति को सदा-सदा के लिए हृदय में बसा कर रखने का एक अत्यन्त सुंदर प्रयास इस स्मारिका के रूप में किया जा रहा है, जिसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है। मैं इस स्मारिका के सफल प्रकाशन की मंगल कामना करता हूं। मुझे विश्वास है कि यह स्मारिका परिवार की भावी पीढ़ियों तथा समाज का मार्गदर्शन करती रहेगी। हार्दिक शुभकामनाएं!

सद्भावी

सरदार अजयपाल सिंह

श्रद्धा-सुमनांजलि



डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'
जवाहर नगर, जयपुर

भारतीय संस्कृति में 'मातृदेवो भव' और 'पितृदेवो भव' के आर्ष वचन के माध्यम से माता-पिता के प्रति श्रद्धा सहित अनन्य भाव व्यक्त किया गया है। माता-पिता का वात्सल्य और उनका स्नेहासिक्त आशीर्वाद प्रभु का वरदान होता है। जिन्हें यह वरदान मिलता है वे परम सौभाग्यशाली होते हैं। माता-पिता के ऋण से उऋण होना बहुत कठिन है। दरअसल, माता-पिता की पूजा देव-पूजा है, पूरी कायनात की इबादत है। उनके उपकारों के प्रति कृतज्ञ होना, उनके आदर्शों पर मनसा-वाचा-कर्मणा व्यवहार करना, उनके न रहने पर उनकी पावन स्मृति को अक्षुण्ण रखकर आने वाली परिवार की पीढ़ी को अभिप्रेरित करना, कृतज्ञ संतान का परम कर्तव्य है।

सेतिया परिवार अपने दिवंगत माता-पिता की पावन स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए स्मारिका का प्रकाशन कर रहा है। यह उनके प्रति श्रद्धा का नैवेद्य है। माता-पिता के चरणचिन्हों को समय की रेती पर उकेरने का सुन्दर उपक्रम है। यह स्मारिका कालान्तर में एक बेमिसाल दस्तावेज बनकर सेतिया परिवार को सतत अभिप्रेरित करती रहेगी। मैं इस प्रयास की सराहना करता हुआ इसके सफल एवं सार्थक प्रकाशन की मंगल कामना करता हूँ। सेतिया परिवार के कीर्तिशेष माता-पिता की स्मृति में अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूँ। सेतिया परिवार दिनोंदिन वैभव, सुख-समृद्धि के प्रांशु शिखरों पर चढ़ता रहे, यही मेरी शुभकामना है। इति शुभमस्तु।

श्रद्धांजलि



– Prof. Ramesh K. Arora
Ph.D. (Kansas)

इस विश्व में मानव के दो प्रमुख दायित्व हैं - कर्म एवम् प्रेम। कर्म का अर्थ है अपने कर्तव्य को अर्चना के रूप में सम्पन्न करना तथा प्रेम का अर्थ है दूसरों के कल्याण एवम् आनंद के लिए जीवन को समर्पित करना। किन्तु कर्मयोगिनी श्रीमती लाजवंती देवी सेतिया जी के लिए तो कोई दूसरा था ही नहीं।

उनका लगाव केवल अपने पति तथा बच्चों तक सीमित नहीं था। उन्होंने तो अपना दृष्टिकोण ही विश्वजनीन कर लिया था। स्व:विस्तार की वे एक असाधारण प्रतिमा थीं। किसी के आंसू पोंछना तथा किसी के चेहरे पर मुस्कराहट लाना, बस ये दो ही उनके प्रमुख रुझान थे। सरल स्वभाव की स्नेहमयी माँ थी वो, पर साथ ही ईश्वर की पुत्री भी। इसी कारण वे सदैव अपने जीवन को सात्विकता से जी कर सभी की उत्फुल्लता की प्रेरक थीं। वे एक सफल व सम्पन्न परिवार की प्रमुख आधारशिला थीं, किन्तु उनमें कभी अहंकार नहीं आया। वे विनम्रता को जीवन में आत्मसात कर मधुरता की शुभ्रतम प्रतिमा थी।

ऐसी महान आत्मा इस विश्व में अवतार लेकर एक संदेश दे जाती है - सच्चाई का संदेश, कर्मठता का संदेश तथा आध्यात्मिक गरिमा का संदेश। ऐसी माँ की स्मृति को शत्-शत् नमन।

'ये माता-पिता के दिए हुए अच्छे संस्कारों का ही फल है कि परिवार उनकी यादों को स्मारिका के रूप में सदैव बनाये रखना चाहता है'



- बिमला गुगलानी

यह मेरे लिए बहुत बड़ा सौभाग्य है कि मुझे इस स्मारिका का हिस्सा बनने का मौका मिला क्योंकि मैं भी सेतिया परिवार का ही हिस्सा हूँ। अगर हम अपने परिवार की किसी न किसी रूप में सेवा कर सकें तो जीवन सफल है। अर्जुन भाई साहब, रवि कुमार और महेन्द्र कुमार से जब भी स्मारिका संबंधी चर्चा हुई, तो मुझे बहुत अच्छा लगा और गर्व हुआ। जब भी हम स्वर्गीय श्री गिरधारीलाल जी और श्रीमती लाजवंती जी, जो कि मेरे ताया-ताई जी थे के बारे में बात करते तो सारी पुरानी यादें जीवंत हो उठती और साथ बिताए सारे लम्हें चलचित्र की तरह आँखों के सामने आ जाते।

जयपुर में बहुत समय बाद रिश्तेदारी की शादियों में मिलना हुआ तो बहुत अच्छा लगा। वही प्रेम और अपनापन, कुछ भी कम नहीं। अपने सेतिया परिवार के सभी सदस्यों से मिलकर ऐसे लगा कि अगर मन में स्नेह है तो दूरियां कुछ भी मायने नहीं रखती। इत्तेफाक ऐसा हुआ कि स्मारिका के काम के चलते परिवार में दो शादियां सम्पन्न हुई, दिल्ली में महेन्द्र भाई के बेटे की और जयपुर में सुरेन्द्र भतीजे की बेटी की। दोनों बार ही भव्य आयोजन और बहुत धूमधाम। हर ईवेंट बेमिसाल और अद्‌भुत। मुझे परिवार सहित दोनों शादियों में जाने का सुअवसर मिला जो कि मुझे ताउम्र नहीं भूलेगा। अर्जुन भाई साहब, रवि और महेन्द्र भाइयों के अलावा भाभियों और सभी बच्चों से जो प्यार, सत्कार मिला वो मेरे लिए अमूल्य है।

ये माता-पिता के दिए हुए अच्छे संस्कारों का ही फल है कि बच्चे उन्हें इस स्मारिका के रूप में जीवित रखना चाहते हैं और अपने श्रद्धासुमन अर्पित कर रहे हैं। शादी के बाद भी मैं कुछ दिन जयपुर में रही और हम मिलते रहे तो मैंने देखा कि अर्जुन भाई साहब, रवि और महेन्द्र किस प्रकार एकजुट होकर इस कार्य में संलग्न रहे। सिर्फ इतना ही नहीं परिवार के हर सदस्य ने पूरा सहयोग दिया। माता-पिता के आशीर्वाद से परिवार फलफूल रहा है। उनके ही दिखाए रास्ते पर चलकर दान, धर्म में भी इनकी पूरी आस्था है। सभी की मदद इस तरह करते हैं कि एक हाथ से दो तो दूसरे को भी पता न चले। अंत में यही कामना है कि मेरे इस परिवार में प्यार, सहयोग और समर्पण की भावना यूं ही बनी रहे और माता-पिता और सभी बुजुर्गों का सिर पर हाथ रहे और सदा ही उनका आशीर्वाद और उनकी दुआएं मिलती रहें।

'जैसे हवाएं मौसम का रुख बदल देती हैं, वैसे ही दुआएं मुसीबत के पल बदल सकती हैं।'

सद्‌कर्मों की सुगंध से जीवन महक उठता है।

'यह स्मारिका सेतिया परिवार के स्वर्णिम गौरवपूर्ण इतिहास, परम्परा और बेमिसाल जीवन शैली को प्रस्तुत करती है'



-डॉ. अमर चंद चुग

सेवानिवृत्त चेयरमैन, एमजीबी ग्रामीण बैंक

यह स्मारिका मेरे आदरणीय फूफा श्री गिरधारीलाल जी सेतिया और बुआ श्रीमती लाजवंती जी सेतिया की यादों को सदैव जीवंत रखने हेतु और अपने बुजुर्गों के असंख्य उपकारों के प्रति कृतज्ञता के भाव प्रकट करने के उद्देश्य से उनके परिवार द्वारा प्रकाशित की जा रही है। लगभग पिछले अठारह महीनों से सेतिया भाई साहब के नेतृत्व में परिवार के सभी सदस्यों और अन्य रिश्तेदारों ने इसे मूर्त रूप देने में अपनी पूर्ण भूमिका निभाई है और सौभाग्यवश मुझे भी इस उपक्रम का भागीदार बनाया, जिस हेतु मैं उनका सहृदय से अभिनंदन करता हूं। यह स्मारिका सेतिया परिवार के स्वर्णिम गौरवपूर्ण इतिहास, परम्परा और बेमिसाल जीवन शैली को प्रस्तुत करती है। पिछले 70 वर्षों के दौरान शून्य से प्रारम्भ हुई इस परिवार की यात्रा में आए सभी उतार-चढ़ाव के दौरान उनके माता-पिता ने उनका हौसला बढ़ाया और आगे बढ़ने की हिम्मत दी और उन्हीं के आशीर्वाद से वे जिन्दगी की सम्पन्नता को प्राप्त कर पाए। जिन्दगी के सतत संघर्ष में माता-पिता के आदर्शों पर चलते हुए किसी भी मुश्किल में उनका केवल एक उंगली पकड़ना ही काफी था। अपने माता-पिता के प्रति कर्तव्य और आचरण में सामंजस्य स्थापित करते हुए जिन्दगी की हर चुनौती का सामना करने का साहस सेतिया परिवार को कैसे मिला, उसकी विस्तृत जानकारी आपको इस स्मारिका में उल्लेखित श्रद्धा भावों से स्वत: ही प्राप्त हो जाएगी। सभी भाइयों और बहनों तथा आगे उनके बच्चों ने भी पारिवारिक एकता को आज तक बनाए रखा हुआ है और यही आपसी जुड़ाव इनकी दिन दुगनी रात चौगुनी होती प्रगति का मुख्य कारण है।

‘माता-पिता के साये में बिताए गए अनमोल पलों की स्मृतियाँ तथा उन द्वारा प्रदान किए गए श्रेष्ठ संस्कारों की शक्तियां हमारे जीवन को संवारती हैं....’



- प्रो. देस राज सुखीजा

सेतिया परिवार के श्रद्धाभाव पर आधारित यह स्मारिका मेरे प्रिय मित्र अर्जुनदास सेतिया की परमवंदनीय माताजी श्रीमती लाजवंती देवी और पिताजी श्री गिरधारीलाल सेतिया की पावन स्मृति को युग-युगांतर तक बनाए रखने तथा उन द्वारा प्रदान किए गए सुंदर संस्कारों की सौगात को भावी पीढ़ियों तक पहुंचाने का पावन प्रयास है। हृदय की गहराइयों में संजोकर रखे जाने वाली माता-पिता की स्मृतियाँ उनके प्रति आस्था के पुष्प हैं। माता-पिता के साये में बिताए गए अनमोल पलों की स्मृतियाँ तथा उन द्वारा प्रदान किए गए श्रेष्ठ संस्कारों की शक्तियां हमारे जीवन को संवारती हैं तथा विकट विपत्तियों को भी अवसरों में परिवर्तित करने का सामर्थ्य प्रदान करती हैं।

माता-पिता की स्मृतियों को अपनों के साथ साझा करने का कार्य न केवल अतीत में परिवार और प्रियजनों के साथ बिताए गए प्रेमपूर्ण लम्हों को फिर से जीने का कार्य है बल्कि रुह से जुड़े गहरे रिश्तों की कभी समाप्त न होने वाली महक का अहसास भी है। आस्था के प्रतीक माता-पिता की स्मृतियाँ हमें यह आभास कराती हैं कि पारिवारिक एकता और रिश्तों की मधुरता में ही जीवन की सुंदरता है।

माता-पिता द्वारा प्रदान किए गए सुंदर संस्कार सेतिया परिवार के व्यवहार से छलकते हैं। परिवार के सदस्य अपने मुखिया अर्जुनदास सेतिया के मित्रों को भी हार्दिक रूप से अपना मानते हैं। रवि कुमार सेतिया, महेन्द्र कुमार सेतिया तथा परिवार के अन्य सदस्यों से मेरा जब भी मिलना हुआ या उनसे फोन पर बात हुई तो हमेशा अपनेपन का अहसास हुआ। इनकी अपनों को दिल से अपना मानने की कोमल भावना में इनके माता-पिता द्वारा दिए गए संस्कारों की महक है। परम पूजनीय माताजी ममता का सागर थीं। बच्चों को वो आशीषों से भर दिया करती थीं। उन्होंने पारिवारिक रिश्तों में सदैव मधुरता को बनाए रखा। परमात्मा के प्रति पूर्ण आस्था होने के कारण स्व. श्री गिरधारीलाल जी और माताजी विपरीत स्थितियों में भी सहजता से जीवन जीते रहे और समाज के प्रति सदैव समर्पित रहे। उन्होंने सद्भाव से प्रेरित कर्म को धर्म मानते हुए श्रेष्ठ जीवन जिया। उन्होंने परिवार में बच्चों के बचपन को सुंदर संस्कारों से सींचते हुए उनके भविष्य को संवारना प्रारम्भ कर दिया था। कठिन से कठिन परिस्थिति में भी वे न तो कभी हताश हुए और न ही परिवार में किसी को निराश होने दिया। ईश्वर की शक्ति को अपने जीवन का आधार बनाकर वे निरंतर आगे ही आगे बढ़ने का प्रयास करते रहे। आस्था के साथ संघर्षपूर्ण जीवन जीते हुए उन्होंने इस प्रकार बड़ी कामयाबी की नींव स्थापित कर दी कि अनंत धैर्य, समर्पण, प्रेमपूर्ण सहयोग तथा सेवाभाव उनका परिचय बन गए। उनके कुशल मार्गदर्शन में उनके बच्चों ने आत्मविश्वास और नए उत्साह के साथ विकास के नए-नए रास्ते चुनते हुए सफलता की बुलंदियों को छू लिया। सेतिया परिवार के सदस्यों की पारिवारिक एकता, विनम्रता, सहजता तथा सेवा भावना में वे अनमोल संस्कार दिखाई पड़ते हैं जो कि इन्हें विरासत में प्राप्त हुए हैं।

परिवार और प्रियजनों ने श्रद्धेय माताजी और पिताजी को दिल की गहराइयों से याद करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किए हैं। माता-पिता की स्मृतियाँ तो ऐसी आत्मिक भावनाएं हैं जिन्हें शब्दों में पूर्णतया उतारा ही नहीं जा सकता। बच्चों के प्रति माता-पिता का अनुपम प्रेम सागर से भी गहरा और पर्वतों से भी कहीं अधिक ऊंचा है। माता-पिता का आशीर्वाद परमसुखी जीवन का आधार है:

‘रुह की गहराइयों में माता-पिता, जीवन पथ महकाते हैं

ईश्वर के स्वरूप धरा पर, आशीष सदा बरसाते हैं।’

स्व. श्री गिरधारी लाल जी सेतिया और माताजी की पावन स्मृतियों से प्रेरणा प्राप्त करते हुए ऐसा जीवन जीने का संकल्प उनके प्रति आत्मिक श्रद्धांजलि होगी कि हमारा प्रत्येक कर्म प्रार्थना हो जाए।

आस्थापूर्ण स्मृतियाँ हमारी आंतरिक दिव्यता को जाग्रत करती हैं।



स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल जी सेतिया

- के.के. बोहरा
डायरेक्टर दूरदर्शन (रिटा.)

कोई साठ सत्तर साल पहले जैतसर आज जैसा बिल्कुल नहीं था। थोड़ी सी आबादी थी, एक ही स्कूल और वो भी मिडिल लेवल का। बड़ी क्लासों में पढ़ने के लिए श्रीगंगानगर या सूरतगढ़ जाना होता था। संसाधन लोगों के पास थे ही कम, इसलिए कोई विरला ही जाता था बाहर पढ़ने। कमजोर वर्ग के लिए तो लोकल स्कूल में पढ़ना ही एक सपना होता था। कहने को तो जैतसर को उस समय भी जैतसर मंडी कहा जाता था, लेकिन कृषि जिंसों की आवक बहुत कम ही होती थी। चूंकि मंडी की आबादी कम थी, इसलिए गली मोहल्लों और सड़कों पर आवाजाही मामूली रहती। लेकिन इतने अभावों के बाद भी जैतसर हमेशा से कर्मवीरों की भूमि रही है। यहां बहुत से लोग बाहर से आये और जी तोड़ मेहनत करके अपना-अपना नाम व्यवसाय जगत में स्वर्ण अक्षरों में लिखाया। मैं ऐसे ही एक कर्मवीर के बारे में आपको बताने जा रहा हूं जो मिट्टी से जुड़े मामूली इंसान से बहुत बड़े व्यापारी बनकर छा गए। मैं बात कर रहा हूं स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल जी सेतिया की।

1952 के आसपास श्री गिरधारी लाल जी सेतिया पाकिस्तान के बहावलनगर से आकर बस गए जैतसर में। 17-18 साल की उम्र में ही शादी हो गई थी। इनकी अर्द्धांगिनी बनीं अनूपगढ़ के बहादर चंद जी और बुद्धां बाई जी की बेटी लाजवंती देवी। उन दिनों जैतसर था एकदम सूने-सूने से गांव जैसा। ज़िन्दगी जीने के लिए किसी काम धंधे की तलाश थी। कुछ समझ में नहीं आ रहा था। कुछ दिन तो केवल सोच विचार में ही बीत गए, फिर उन्होंने एक दिन मन बनाया कि क्यों ना परचून किराने का कारोबार शुरू किया जाए। इस सोच के पीछे ये मत था कि आटा दाल चावल तो सभी घरों की जरूरत होती है, इसलिए ये काम चल निकलेगा। पत्नी लाजवंती ने भी इसके लिए हामी भर दी थी। बस फिर क्या था, इधर-उधर से कुछ जुगाड़ कर गिरधारी लाल जी ने किराने का धंधा शुरू कर दिया। वे जानते थे कोई भी बिजनेस प्रोग्रेस तभी करता है जब उसके लिए जी तोड़ मेहनत की जाए। गिरधारी लाल जी सेतिया ने मेहनत के साथ-साथ ईमानदारी को भी अपना हथियार बनाया और चल पड़े अपना कर्मरथ लेकर। हालांकि सेतिया जी ने अपनी पढ़ाई लिखाई तो औसत दर्जे की ही की थी, लेकिन कैल्कुलेशन्स और हिसाब-किताब रखने में वे शुरू से ही माहिर थे। 'पहले लिख और बाद में दे, भूल पड़े कागज से ले' वाली कहावत उन पर एकदम फिट बैठती थी। आगे जाकर यही बात उन्होंने अपने बेटों को मूलमंत्र के रूप में दी।

कड़ी मेहनत का ही फल था कि किराने की दुकान चल निकली। इसी कारण मंडी में एक इज्जतदार व्यापारी के रूप में गिरधारी लाल जी सेतिया की गुडविल बन गई थी। सेतिया जी अपने छह भाई और तीन बहनों में दूसरे नम्बर पर थे, इनके दो भाई तो जैतसर में ही कारोबारी थे। अन्य तीन भाई बसंत लाल जी, आसा राम और मुरारी लाल सूरतगढ़ रहते थे। गिरधारीलाल जी के तीन बेटे और चार बेटियां हैं। सभी संतानें बड़ी होनहार और कर्मवीर हैं। सबसे बड़े सुपुत्र हैं श्री अर्जुन दास सेतिया। इन्होंने अपनी युवावस्था जैतसर में गुजारने के बाद सन् 1987 में जयपुर का रुख किया और साबुन का व्यवसाय करने के पश्चात् वे राजापार्क वाले पेट्रोल पम्प के डीलर बने। आजकल अर्जुन सेतिया जी टोंक रोड पर मौजूद पेट्रोल पम्प का संचालन कर रहे हैं। इनके तीन बेटे और दो बेटियां हैं। बड़े पुत्र तो हैं सुरेन्द्र, मंझले हैं राजेन्द्र और सबसे छोटे बेटे का नाम राज कुमार है। दोनों बेटियों में छोटी हैं रैना और बड़ी बेटी को मंजू कहकर पुकारते हैं। श्री गिरधारीलाल जी सेतिया के मंझले बेटे का नाम रवि सेतिया है। इन्होंने शुरुआती दिन जैतसर में परिवार के साथ रहकर बिताए और बाद में जयपुर को इन्होंने अपनी कर्मभूमि बनाया। रॉबिन और नितिन दो पुत्रों के पिता रवि कुमार, गुलाबी नगर के एक जाने माने व्यवसायी हैं। इनके दोनों साहबजादे अपने पिता के फाइनेंस व्यवसाय में हाथ बंटाते हैं। गिरधारीलाल जी के तीसरे और सबसे छोटे बेटे हैं महेन्द्र सेतिया। इनका बचपन भी जैतसर में बीता और इन्होंने भी पिंकसिटी जयपुर को ही अपने कारोबार के लिए चुना। आज ये पेट्रोल पंप सहित अनेक प्रकार के व्यवसाय संचालित कर रहे हैं। महेन्द्र कुमार के दो बेटे हैं। बड़ा बेटा है विपुल और छोटे पुत्र को संकुल के नाम से जाना जाता है। दोनों जयपुर में ही फाइनेंस व्यापार करते हैं। गिरधारीलाल जी सेतिया की चार बेटियां हैं- ज्ञान देवी, कमलेश रानी, उषा रानी और सुनीता रानी। ये सभी अपने-अपने घर में सुखी और सम्पन्न हैं।

'मैं तो पत्थर ही था, मुझे तराशने वाले मेरे माता-पिता दिव्य शिल्पकार हैं, हमारी हर प्रशंसा के वे ही हकदार हैं'



- अर्जुनदास सेतिया

आज हम जो कुछ भी हैं प्रभु कृपा, पीढ़ियों की लगन, अथक परिश्रम, धैर्य, आत्मविश्वास और पुरुखों के आशीर्वाद के फलस्वरूप हैं। हमारे पूर्वज आज के पाकिस्तान के कस्बे बहावलनगर में आढ़त का व्यवसाय किया करते थे। हमारे पिताजी के परदादा श्री खेमचन्द जी सेतिया बहावलनगर कस्बे के प्रतिष्ठित व्यापारी थे और उनका कारोबार दूसरी मंडियों में भी फैला हुआ था। देश के विभाजन से पहले हमारा घर बहावलनगर स्टेशन से लगभग 700 मीटर की दूरी पर था। स्टेशन से सीधा चलते हुए लगभग 500 मीटर की दूरी पर एक मंदिर था जहां से हिन्दू आबादी शुरू होती थी। मंदिर से बाएँ मुड़कर थोड़ी दूरी पर हमारा मकान था। श्री खेमचन्द सेतिया के होनहार सुपुत्र श्री माछीराम सेतिया ने व्यवसाय और परिवार की प्रतिष्ठा को और आगे बढ़ाया। सब कुछ ठीक चल रहा था परन्तु देश के विभाजन ने मुसीबतों का पहाड़ खड़ा कर दिया। बंटवारे के बाद लाला माछीराम जी सब कुछ छोड़कर ईश्वरीय शक्ति के साथ परिवार सहित हिन्दुस्तान की सीमा पर पहुंचे जहां से उन्हें सूरतगढ़ ले जाया गया। सारा परिवार कड़ा संघर्ष करते हुए 5-6 वर्ष सूरतगढ़ ही रहा। जीविकायापन अपने आपमें बहुत बड़ी समस्या थी। जिस किसी को जो भी काम मिला पूरे मन से करते रहे। उन दिनों हमारे परिवार के सदस्यों ने प्रेमपूर्वक एकजुट रहते हुए विकट विपत्तियों के अंधकार में भी अवसरों का प्रकाश तलाशने का लंबा संघर्ष किया। मुश्किलों से जूझते-जूझते उन्होंने संघर्ष को ही अवसर के रूप में स्वीकार करना सीख लिया। हमारे पिताजी और उनके भाइयों ने विभाजन के बाद विभिन्न कारोबार किए। 1953 में पिताजी



अपने भाइयों के साथ सूरतगढ़ से आकर जैतसर बस गए जो कि उनकी कर्मभूमि बन गया।

हमारे माता-पिता त्याग, धर्म निष्ठा और निस्वार्थ प्रेम का प्रतिरूप हैं। उन द्वारा किया गया संघर्ष और उनके अथक प्रयास हमारी सफलता का आधार हैं। पिताजी को मैंने कड़ी मेहनत करते देखा है। वे अकेले ही दुकान चलाते थे, क्योंकि उस समय उनके पास हैल्पर्स रखने का प्रावधान नहीं था। उन्हें सारा दिन खुद ही काम करना पड़ता था। मैंने उनको 16-16 घंटे काम करते देखा। आठ साल की उम्र से ही मैंने पिताजी के साथ काम में हाथ बंटाना शुरू कर दिया था। मेरे पिताजी की बातों में स्पष्टवादिता झलकती थी। गुरुद्वारा बुड्ढा जोहड़ के प्रति उनकी बहुत श्रद्धा थी। वे सुबह जल्दी उठते, गुरुद्वारे जाते और सेवाभाव का जीवन जीने के लिए प्रेरित किया करते थे।

पिताजी पर ग्राहकों का पूरा विश्वास था। उनकी कार्यशैली को देखकर मैं बहुत प्रभावित रहता था। जब मैं 15 साल का था पिताजी ने मुझे पटाखे बेचने के लिए कहा तब मैंने 100 रुपये कमाये। मुझे वर्षों बाद अहसास हुआ कि पिताजी अपनी निगरानी में मुझे धीरे-धीरे मजबूत बनाकर आगे बढ़ते हुए देखना चाहते थे। उन दिनों जैतसर में हमारी दुकान श्री मूलचन्द जी सनेजा के साथ साझेदारी में थी। मुझे आत्म निर्भर बनाने के लिए पिताजी चाहते थे कि मैं अलग काम करूं। इसके लिए पैसों की जरूरत थी। मैंने 200 रुपये में अपनी साइकिल बेच दी। पिताजी ने और 500 रुपये का इंतजाम कर दिया। इस प्रकार 800 रुपये की पूंजी के साथ 1961 में पिताजी के कुशल मार्गदर्शन में मेरी किराने की दुकान शुरू हो गई। अच्छे व्यवहार और ईमानदारी के कारण मेरे नए-नए ग्राहक बनते ही गए। मुझे सुबह 6.00 बजे से रात 10.00 बजे तक फुर्सत ही नहीं मिलती थी। मैं अकेला ही काम करने वाला था। वह समय मेरे लिए कठिन होने के साथ-साथ बहुत सिखाने वाला भी था। पिताजी की

आँखों में मेरे लिए ऊँचे सपने थे। एक कवि की निम्नलिखित पंक्तियां उन परिस्थितियों को बयां करती हैं:

'अभी तो असली मंजिल पाना बाकी है,

अभी तो इरादों का इम्तिहान बाकी है।

अभी तो तोली है मुट्ठी भर जमीन,

अभी तोलना आसमान बाकी है।'

उन दिनों गरीबी के कारण सामान उधार लेना अधिकतर ग्राहकों की मजबूरी थी। मैं उन पर विश्वास करते हुए, उधार दे दिया करता था। बाद में वो प्राय: उधार चुका दिया करते थे। इस प्रकार परस्पर विश्वास के कारण ग्राहकों के साथ मेरे प्रेमपूर्ण सम्बन्ध विकसित होते गए।

एक दिन पिताजी को कागज पर लिखी उधारी देखकर गुस्सा आ गया। उन्होंने उस कागज को उठाकर बाहर फेंक दिया और मुझे दुकान से बाहर निकाल दिया। मैं बिना कुछ सफाई दिए चल दिया। बेचैनी में मैं बहुत दूर चला गया। फिर वापस घर की ओर चल पड़ा। घर से कुछ दूरी पर माताजी ने मुझे देख लिया। घर ले जाकर उन्होंने प्यार से पीठ पर हाथ फेरा, पानी पिलाया, खाना खिलाया और फिर अपने पास बिठाया। पिताजी ने मुझे अगले दिन दुकान पर जाने के लिए नहीं कहा, लेकिन माताजी के कहने पर मैं चला गया। अगले दिन फिर उधार के सामान वाला कागज देखकर पिताजी नाराज हुए और बहुत डांटा। मैं यह सोचकर परेशान हो रहा था कि मैंने कोई गलती तो की नहीं परन्तु फिर भी पिताजी मुझसे नाराज थे। पिताजी के प्रति मन में भयपूर्ण आदर होने के कारण मैं सिर झुकाए चुपके से उनकी डांट सुनता रहा। पिताजी का इस विचार से क्रोध बढ़ता चला गया कि मैं कितना ढीट और जिद्दी हूँ। मुझे डांटते हुए पिताजी ने कहा- 'दो पइयां विसर गइयां, मेरी दूर बलाईयां गइयां।' संयोग से उसी समय भगवानदास चाचाजी वहाँ आ गए। परिवार के प्रति चाचाजी की सोच सकारात्मक थी। चाचा भगवानदास जी सभी भाई-बहनों और बच्चों से भावनात्मक रूप से जुड़े रहे और हमेशा अपनों की खुशी में खुश रहे।

पिताजी और चाचाजी का गहरा प्यार अपने आप में एक मिसाल था। चेहरा देखते ही चाचाजी मन के भाव पढ़ लिया करते थे। मेरी नम आँखें देखकर, चाचाजी बोले- 'अर्जुन की गल है?' मैंने कहा कि पिताजी मुझे बहुत डांटते हैं। चाचाजी ने बड़े भाई से पूछा 'कि गल हो गई?' पिताजी ने कहा इसी से पूछ लो। जब चाचाजी को पूरी बात का पता चला तो वे बोले कि पहले तो उधार देता है, फिर कच्चा पक्का लिखता है। तेरे पिताजी सोचते हैं कि जो माल तू खरीदता और बेचता है, तुझे ढंग से उसके रेट भी पता नहीं होते। लेकिन चाचाजी के मना करने और समझाने के बाद भी मैंने उधार



माँ के पावन सान्निध्य में आनंद ही आनंद

देना चालू ही रखा। समय बीतने के साथ मुझमें धीरे-धीरे परिपक्वता आती चली गई। वर्षों बाद मुझे आभास हुआ कि मेरे ग्राहकों को उधार देने के कार्य में शायद पिताजी को मेरी मुसीबत को आमंत्रित करने वाली नासमझी नजर आती थी। कितनी हितकर थी पिताजी की नाराजगी ! फिर जब हर साल बढ़ता हुआ मुनाफा देखते तो पिताजी संतुष्ट हो जाते। लेकिन डांट-फटकार चालू रही। जब मेरी बहन ज्ञान देवी की शादी हुई तो मेहमानों को ड्राई फ्रूट्स तथा तरह-तरह की मिठाइयां परोसी गई। विवाह का शानदार प्रबन्ध देखकर चाचाजी ने हैरान होकर मुझे कहा, 'तू तो साहूकार हो गया है जो इतना खर्चा कर रहा है। तेरी होड़ कोई वी नहीं कर सकदा।' हर साल मेरी अच्छी कमाई हो जाती थी। हमारा किराना व्यवसाय शुरू होने के 12 साल बाद जब महेन्द्र कुमार दुकान पर आने लगा तो हम दोनों भाइयों के प्रयास से हमारा काम और भी अच्छा हो गया। अगले पाँच सालों में हमने होलसेल की एक और चीनी और गुड़ की दुकान शुरू की। आसपास की मंडियों में हम माल भेजा करते थे जैसे विजयनगर, रामसिंहपुर, अनूपगढ़, घनसाना आदि। हमारी गिनती क्षेत्र के बड़े व्यापारियों में होने लगी थी।

हमारे बहनोई श्री राजेन्द्र कुमार नागपाल और उनके परम पूजनीय पिताजी स्व. श्री केशवानंद जी ने हमें जयपुर में पेट्रोल पम्प बिजनेस शुरू करने का मार्ग सुझाया। 1987 में हमारे जैतसर के व्यवसाय की हक हलाल की कमाई से बचाए गए पैसे मुझे देते हुए



स्व. श्री भगवानदास जी सेतिया : हमारे प्रेरणास्रोत



वर्ष 1994 में अपनी बड़ी बेटी मंजु के विवाह समारोह में अर्जुनदास सेतिया अपने पिता जी एवं चाचा भगवानदासजी सेतिया से विचार विमर्श करते हुए

पिताजी ने मुझे पेट्रोल पम्प की डील के लिए जयपुर भेजा। उधर महेन्द्र कुमार और सुरेन्द्र कुमार ने व्यापार में उतनी ही गति बनाए रखी। इस प्रकार विकास पथ पर निरंतर अग्रसर रहते हुए जनवरी 1990 में राजापार्क, जयपुर में पेट्रोप पम्प प्रारम्भ हुआ। कुछ वर्ष पश्चात् टोंक रोड स्थित पेट्रोल पंप (ग्लास फैक्ट्री के सामने) की डीलरशिप ले ली गई।

1992 में मैंने और बेटे राजेन्द्र कुमार ने एक्सपोर्ट और माइनिंग बिजनेस शुरू किया। फाइनेंस व्यवसाय में रुचि होने के कारण राजेन्द्र ने 1994 में एस.के. फाइनेंस कंपनी की स्थापना की। तब हमारे माता-पिता जैतसर में ही थे। जयपुर आने से पहले पिताजी के प्यार भरे पत्र आते रहे। बहुत सराहते और आशीर्वाद देते। उनके पत्र आने पर मैं भावुक हो जाया करता था। हर कदम पर रवि कुमार, महेन्द्र कुमार, सुरेन्द्र कुमार, राजेन्द्र कुमार और राजकुमार के सक्रिय सहयोग से व्यवसाय में निरंतर प्रगति होती रही। प्रभु सब पर कृपा बनाए रखें। कुछ ही वर्षों में रवि कुमार, महेन्द्र कुमार, सुरेन्द्र कुमार और राजकुमार के व्यवसाय नई ऊँचाइयां छूने लगे। ये हमारे माता-पिता की दुआओं, हम सबकी कार्य के प्रति निष्ठा, ईमानदारी और दृढ़ निश्चय से संभव हो पाया।



अपने मम्मी-बाऊजी श्री अर्जुनदास सेतिया-श्रीमती भजनदेवी के विवाह की 50वीं सालगिरह (Golden Jubilee) वाले सुहाने दिन 26 मई, 2016 को अपार उमंग में आनंद बांटते हुए

पितजी कहा करते थे कि सफल और सुखी जीवन पारस्परिक सहयोग, प्रेम, त्याग पर आधारित है। माता-पिता द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर ही हमने सफलता प्राप्त की। हम तीनों भाइयों और परिवार के सभी सदस्यों के परस्पर सहयोग और प्रेम के परिणामस्वरूप आज सबका अपना-अपना सफल फाइनेंस व्यवसाय है। हमारे माता-पिता का आशीर्वाद ही हमारी भव्य सफलता का आधार है। पक्षियों को दाना डालना, गरीबों की हर संभव सहायता करना, उचित जगह गुप्त दान देना, प्याऊ बनवाना आदि पिताजी के स्वभाव में था। हमने जयपुर में पिताजी की स्मृति में 'श्री गिरधारी लाल सेतिया मेमोरियल ट्रस्ट' की स्थापना करते हुए उनके द्वारा किए जाने वाले सेवा कार्यों को जारी रखा है।

माँ तो जगत जननी है। माँ परम पूजनीय है। माँ की ममता को कोई नहीं भूल सकता। माँ ने हमें जन्म दिया, सुन्दर संस्कार दिए, उंगली पकड़कर चलना सिखाया। एक गुरु की तरह माँ ने हमें तराशा। बचपन में मुझे बढ़िया कपड़े पहनाती, अच्छा खाना खिलातीं। मेरे रोज के आहार में दूध, दही, मक्खन को प्राथमिक बनाने वाली मेरी माँ ही थी। माँ ने हम भाई-बहनों को सलीके से रहना सिखाया। हमारी बहन कमलेश को पूरे स्कूल में सफाई और पढ़ाई के लिए सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया और सभी ने उन्हें सराहा। हमारी बहन की इस उपलब्धि का श्रेय माताजी को ही जाता है।

हमारी माताजी अत्यधिक व्यवहार कुशल थीं। वे सहज रूप से बात करते-करते सार्थक जीवन जीने के रहस्य प्रकट कर दिया करती थीं। एक दिन समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति के बारे में सुनी हुई अप्रिय बात के बारे में मैंने माताजी को बताया तो उन्होंने कहा कि पीठ पीछे बुराई करने वालों पर आँख बंद करके विश्वास मत किया करो। माताजी ने मुझे 15 वर्ष की नाजुक उम्र में ही अहसास दिला दिया था कि कई बार राई का पहाड़ अर्थात् छोटी सी बात का बतंगड़ बन जाता है। मुझे समझाते हुए माताजी ने कहा था 'काका ध्यान रखा कर, कई वारी खंब दा वी कां बन जांदा हे'।

हमारी माताजी ने जिम्मेदारियों को प्रेमपूर्वक निभाते हुए हर रिश्ते की मधुरता और निकटता को सदैव बनाए रखा। हमारी माताजी बहुत धैर्यशील थीं। उन दिनों रेलगाड़ी रात तीन बजे जैतसर से केसरीसिंहपुर जाया करती थी। तब पिताजी का सरसों के तेल का व्यापार था। ट्रेन आने पर पिताजी ने दाहिने हाथ से ट्रेन के डिब्बे का हैंडल पकड़ा और बाएं हाथ में 15-16 किलो तेल का कनस्तर था। ट्रेन चल पड़ी मगर गेट नहीं खुला। सर्दियों के दिन थे और अगला स्टेशन 25 मिनट के बाद आना था। जैतसर के स्टेशन मास्टर से पता



स्व. श्री केशवानंद जी नागपाल

चला कि वे लटकते हुए गए थे। मैं जब स्कूल से आया तो माताजी की आँखें नम थी और चेहरा गंभीर था। उन्होंने मुझे पिताजी के जोखिम भरे सफर के बारे में बताया तो मेरा मन बहुत दु:खी हुआ। लेकिन माताजी का धीरज भरा गंभीर चेहरा आज भी मेरी आँखों के सामने है।

बचपन में महेन्द्र थोड़ा जिद्दी था। लेकिन अपने शांत स्वभाव के कारण माताजी उसे हमेशा कठोर सजा से बचा लेती थीं। माताजी ने बच्चों का बड़े प्यार से पालन पोषण किया। जब हम सभी दुकान से आते तो वो सबको सलाद कटोरियों में दिया करती थीं। तेरह साल साथ-साथ रहने के बाद रवि कुमार की शादी के समय मेरे पिता-माता ने मेरा अलग आलीशान घर बनवाया। माताजी से अत्यधिक लगाव होने के कारण अलग मकान बन जाने के बाद भी हम देर रात तक उनके साथ दिल की बातें किया करते थे और खाना भी वहीं खाया करते थे। हमारे माता-पिता की जीवन शैली ने हमें आभास कराया कि परस्पर प्रेम, आत्म संयम, धैर्य, सहनशीलता और त्याग की भावना पारिवारिक जीवन के आभूषण हैं। स्वयं को सदैव मर्यादित रखना रिश्तों के मिठास का मूलमंत्र है।

मेरे माता-पिता ने बहुओं को बेटी की तरह माना। परिणामस्वरूप परिवार में प्रीत तथा खुशहाली बढ़ती चली गई। पिताजी अपने उसूलों के पक्के थे। बच्चों की काम के प्रति लापरवाही, मनमानापन तथा जिद्दीपन को देखकर उन्हें गुस्सा आता था। उनके गुस्से में उनका आंतरिक प्रेम तथा बाहरी कठोरता में बच्चों का हित छुपा होता था। हमारे माता-पिता ने हमें इस योग्य बनाया कि हम निरंतर आगे ही आगे बढ़ते रहें। जितनी भी शादियां हुई सबके लिए गहने, कपड़े माताजी ने खुद बनवाए। तब पता भी नहीं चलता था कि कौनसा काम कब हो गया। वह बेटे-बेटियों की सलाह भी ले लिया करती थीं। माताजी के स्वभाव की सरलता और अपनेपन की भावना हर एक के लिए अलग से झलकती थी। उन्होंने मायके परिवार में कभी किसी से फर्क नहीं किया। सबसे ऐसे मिलती जैसे युगों बाद मिली हों। सुन्दर संस्कारों से उन्होंने बच्चों के जीवन को संवारा। हमारी माँ सर्वगुण सम्पन्न थीं। उन्हें देखते ही सब ऐसे प्रसन्न हो जाते जैसे जन्नत मिल गई हो। माताजी को सबसे अथाह प्रेम था।



वर्ष 2022 में अपने विवाह की 56वीं सालगिरह पर
अर्जुनदास सेतिया-भजनदेवी सेतिया

माताजी ईश्वर के प्रति समर्पित थीं। जब से मैंने होश संभाला तब से मैंने उन्हें हर रोज श्री आनंदपुर कुटिया जाते देखा। बचपन में वो अपनी माँ के साथ कुटिया जाया करती थीं। हमारी माताजी सुबह शाम नियमित रूप से पूजा किया करती थीं और बाईजी की भावपूर्ण सेवा किया करती थी। उन्होंने जब जैतसर में कुटिया का निर्माण करवाया तो हमारे परिवार ने धर्म की राह पर चलने वाले बहुत से लोगों को आमंत्रित किया और भंडारे का आयोजन किया था। माताजी श्री आनंदपुर धाम तथा श्री प्रयागधाम परिवार सहित जाया करती थीं। हमारी माताजी इतने सहज और सरल स्वभाव की थीं कि जो भी उनसे मिला उनके रुहानी स्नेह को प्राप्त करते हुए उन्हें अपना मानने लगा। परम पवित्र हृदय होने के कारण उनकी आँखों में वात्सल्य और चेहरे पर दिव्य चमक दिखाई दिया करती थी। जीवन यात्रा की अंतिम घड़ी में माताजी अत्यन्त शांत थीं। उनके चेहरे पर दिव्य चमक और शांति देखकर ऐसे प्रतीत हुआ जैसे आत्मस्वरूप का चिंतन करते-करते वो ध्यान की उच्चतम अवस्था अर्थात् समाधि अवस्था में प्रवेश पा चुकी थीं।

सरोज सेतिया द्वारा हमारे माता-पिता की हर पल श्रद्धापूर्वक की जाने वाली सेवा और परिवार के सदस्यों के प्रति उनके अपार प्रेम को कभी भुलाया नहीं जा सकता। हमारे माता-पिता सदैव हमारे दिलों में हैं। हमने उन्हीं से जाना कि जीवन श्रेष्ठ करने और श्रेष्ठ पाने का अनमोल अवसर है। हमारे माता-पिता हमारे जीवन का आधार हैं। हमारे रोम-रोम में बसने वाले माता-पिता को कोटि-कोटि नमन!



परम वंदनीय माताजी श्रीमती लाजवंती देवी
4 दिसंबर, 2019 को अन्तिम यात्रा पर

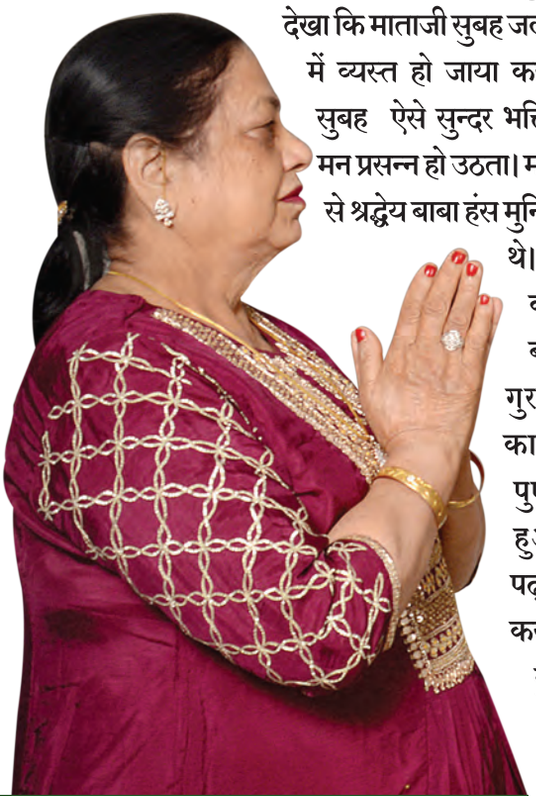
'परिवार में सुख, शांति और समृद्धि हमारे माता-पिता के आशीर्वाद का प्रतिफल है'



स्व. श्री गिरधारीलाल जी - स्व. श्रीमती लाजवंती देवी जी



स्व. श्री रामचंद जी चुग - स्व. श्रीमती नारायणी देवी जी



-भजन देवी सेतिया

विवाह के पश्चात् जब मैं ससुराल आई तो मैंने देखा कि माताजी सुबह जल्दी नहा कर पूजा में व्यस्त हो जाया करती थीं। सुबह-सुबह ऐसे सुन्दर भक्तिमय माहौल से मन प्रसन्न हो उठता। माताजी के आग्रह से श्रद्धेय बाबा हंस मुनि जी आया करते थे। माताजी ने उन्हें कहा कि मेरी बहुरानी को गुरमुखी पढ़ाओ। कायदा पढ़ाने से पुण्य कार्य शुरू हुआ। पंज ग्रंथि पढ़ाई, फिर चौकी करवाई, इससे मुझे गुरु ग्रंथ साहिब जी पढ़ने की इजाजत मिल गई। पिताजी ने मुझे संगत को भी पढ़कर सुनाने के लिए कहा।

परम पूज्य माताजी-पिताजी की यादें मेरे दिल की गहराइयों में हमेशा बनी रहेंगी। उन्होंने जन्म देने वाले मेरे माता-पिता की तरह मेरी छोटी से छोटी खुशी का ध्यान रखा। उनके असीम प्यार ने मुझे ऐसी दृष्टि प्रदान कर दी कि उनमें मुझे अपने



बाबा हंसमुनिजी

पिता श्री रामचंद जी और माता श्रीमती नारायणी देवी का स्वरूप नजर आने लगा। घर में जब पहली बहू आती है तो अलग ही चाव होता है। माताजी जहाँ भी जाते, मुझे अपने साथ ही रखते और सबसे बहुत ही अच्छी तरह मिलवाते थे। जब माताजी मुझे अपने साथ अनूपगढ़



माताजी का अपार स्नेह और आशीर्वाद प्राप्त करते हुए श्रीमती भजनदेवी सेतिया

अपने पीहर लेकर गई तो वहाँ पर उन्होंने मुझे बहुत सारे आभूषण और सुन्दर वस्त्र भेंट किए। माताजी ने मुझे अपनी भाभियों, भतीजियों से मिलवाया। तब नानीजी जीवित थीं। वो मुझे देखकर इतने खुश हुए कि मैं बता नहीं सकती। माताजी की चाचीजी, आसपास रहने वाली मोहल्ले की महिलाएं और रिश्तेदार भी मिलने के लिए आए। सुबह पाँच बजे उठकर हम कुटिया जाते। वहां पर रिश्तेदारों ने प्रेमपूर्वक खाने के लिए आमंत्रित किया। अनूपगढ़ में बिताए वो पल आज भी मेरी यादों में ज्यों के त्यों हैं। उन दिनों लोग छोटी-छोटी बातों में बड़ी-बड़ी खुशियां ढूंढ लेते थे। माताजी का अपनी देवरानी, जेठानी तथा आसपास के लोगों से भी बहुत प्यार था। दोपहर में सब मिलकर घंटों प्रेमभरी बातें करते। माताजी का सभी जगह बहुत सम्मान था। माताजी मेरे पतिदेव को काका कहकर बुलाया करते थे और सब उन्हें 'काके की माँ' कहकर बुलाते थे।

प्रभु की हमारे परिवार पर असीम कृपा रही लेकिन



सन् 2019 में शिवांश नागपाल के विवाह के शुभ अवसर पर श्रीमती भजनदेवी सेतिया अपनी पुत्रवधूओं के संग

माताजी में बिल्कुल अहंकार नहीं था। मुझे कपड़े काटने सिलने आते थे। लेकिन समय नहीं मिलता था। माताजी ने मुझे कहा कि तेरे पास जो कपड़े सिलवाने या कटवाने के लिए आए तो उन्हें मना मत करना। उन्होंने कहा कि कोई आस लेकर आए तो उसका दिल नहीं तोड़ना चाहिए। मुझे उनकी यह सीख बहुत अच्छी लगी। पिताजी का कहना था कि मुझे घर के सारे काम करने चाहिए। हमारे घर भैंस का दूध निकालने वाला आता था, मगर फिर भी पिताजी ने यह कहकर भैंस का दूध निकालना सिखाया कि कभी भी जरूरत पड़ सकती है और फिर अपने हाथ से काम करने की बात ही कुछ और होती है। माताजी को समाज के रीति-रिवाजों



सन् 2001 में राजकुमार सेतिया के विवाह के शुभ अवसर पर माता जी और श्रीमती भजन देवी आनंद के लय-ताल में

और पारिवारिक परम्पराओं की बहुत जानकारी थी। वह सब मैंने भी सीख लिए। जैसा कि सब जानते हैं, कुटिया के प्रति उनकी बहुत आस्था थी। बाईजी को बुलाते, सत्संग करवाते। बाईजी मुझसे भी बहुत प्यार करते थे।

परिवार में सुख शांति और समृद्धि हमारे परम वंदनीय माताजी और पिताजी के आशीर्वाद का प्रतिफल है। वे कहा करते थे यदि निरन्तर विश्वास रखते हुए मेहनत की जाए तो किस्मत भी साथ देती है:

'यूं ही नहीं होती हाथ की लकीरों के आगे उँगलियाँ,
रब ने भी किस्मत से पहले मेहनत लिखी है।'



श्री अर्जुनदास सेतिया - श्रीमती भजन देवी सेतिया सदा साथ रहने वाले परिवार के सदस्यों के साथ



'समर्पण भाव पर आधारित हमारे माता-पिता की जीवन शैली ने हमें ये आभास कराया कि आदर्श परिवार सुसंस्कृत समाज के निर्माण का आधार है'

- रवि कुमार सेतिया

माता-पिता का अपने बच्चों के प्रति प्रेम अतुलनीय है। वे बच्चों का जीवन संवारते हुए तथा उनके उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए समर्पित रहते हैं। वे उनके विकास और खुशी में ही अपना सब कुछ देखने लगते हैं। माता-पिता के अनुपम त्याग और परिवार के प्रति समर्पण भाव को देखते हुए उन्हें ठीक ही देवतुल्य कहा गया है। कितना महान है उनका प्रेम!

हमारे परम पूजनीय परदादा जी, दादा जी और पिताजी बहावलनगर में अनाज मंडी के बड़े व्यापारी थे। उनका व्यापार सम्पूर्ण क्षेत्र में फैला हुआ था और परिवार इलाके के सम्पन्न परिवारों में से एक था। अगस्त 1947 में देश के दु:खद विभाजन के समय हमारा परिवार बहावलनगर कस्बे की विशाल भू संपत्ति को छोड़कर बड़ी कठिनाई से भारतवर्ष की सीमा पर पहुंचा। बहावलनगर राजस्थान की सीमा के निकट होने के कारण हमारे परिवार के काफिले को सूरतगढ़ ले जाया गया।

हर पल दिल के पास हमारे परम पूज्य दादा जी


स्व. श्री निहालचंद जी सेतिया


स्व. श्री होतचंद जी सेतिया

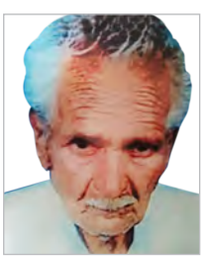

स्व. श्री टोपनदास जी सेतिया

रूह के रिश्ते निभाने वाले, प्रेम की फुहार में भीगे भाई


स्व. श्री मुंशीराम जी सेतिया


स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया


स्व. श्री भगवानदास जी सेतिया


स्व. श्री बसंतलाल जी सेतिया


श्री आसाराम जी सेतिया


श्री मुरारीलाल जी सेतिया

हमारी माताजी का जन्म 1925 में बहावलनगर (पाकिस्तान) में हुआ। उनके पिता श्री बहादर चंद जी चुग और दादा श्री गोमाराम जी वूल के विशिष्ट व्यवसायी थे। परम पूजनीय श्री बहादर चंद जी के तीन बेटे श्री बालकिशन दास जी, श्री सोहनलाल जी तथा श्री बिहारीलाल जी और दो बेटियां माया देवी और लाजवंती देवी थी। हमारी माताजी परिवार में सबसे छोटी थीं। सब प्यार से उन्हें लज्जा कहकर बुलाया करते थे।

Parents are the ultimate role models for children.



रवि सेतिया - प्रेम सेतिया अपने विवाह की 25वीं वर्षगांठ पर
आमेर क्लार्क होटल जयपुर में माता-पिता का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

लगभग 4 वर्ष की आयु में उनके पिता श्री बहादर चंद जी का आकस्मिक निधन हो गया। श्री बालकिशन दास जी भाइयों में सबसे बड़े थे। उन्होंने पढ़ाई छोड़कर परिवार का उत्तरदायित्व संभालने का निर्णय लिया। 1931-32 में इनका चुग परिवार बहावलनगर से अनूपगढ़ आ गया। अनूपगढ़ आने के 2 वर्ष बाद ही उनके दादा श्री गोमा राम जी का देवलोकगमन हो गया। तब माताजी की आयु लगभग 6 वर्ष की ही थी। मुसीबतों का दौर खत्म होने का नाम नहीं ले रहा था परन्तु हमारी अम्माजी/नानीजी श्रीमती बुद्धां बाई बहुत ही सुलझी हुई तथा साहसिक महिला थीं। मुसीबतों के घोर अंधकार में भी उन्होंने अपने और बच्चों के जीवन में कभी लाचारी का नकारात्मक भाव नहीं आने दिया। पवित्र हृदय के साथ परोपकार के मार्ग पर साहसपूर्वक चलते हुए उन्होंने परिवार को संभाला और अपने बच्चों को साहसिक तथा मर्यादित जीवन जीने का मार्ग दिखाया। हमारे माताजी को अपनी परमवंदनीय माँ से अति सुन्दर संस्कार प्राप्त हुए। उन्होंने छोटी-सी आयु में जीवन के बहुत उतार-चढ़ाव देख लिए थे और अपनी माँ तथा भाइयों के त्यागपूर्ण और संघर्षपूर्ण जीवन से सार्थक जीवन जीने का मंत्र सीख लिया था।

हमारे पिताजी का अपने भाई-बहनों से असीम प्रेम था। भाइयों और तीन बहनों का घर संसार देखते ही बनता था। दादा श्री होतचन्द जी के प्रति सभी बेटे एवं बेटियां पूर्णतया समर्पित थे। पिताजी का परिवार के प्रति समर्पण भाव और आत्मविश्वास तथा माताजी की भक्ति की शक्ति और शालीनता से घोर अंधकार में भी धीरे-धीरे अवसरों के द्वार खुलने लगे। हमारे माता-पिता का विवाह देश के विभाजन से लगभग 5 वर्ष पहले ही हुआ था। परिवार के सदस्यों के प्रति अपार सेवाभाव से हमारी माताजी ने सबके दिलों को जीत लिया। सूरतगढ़ में हमारे परदादा जी-परदादी जी, दादाजी-दादीजी, पिताजी और दादाजी के भाइयों के परिवार 16 कमरों वाले एक ही मकान में साथ-साथ रहते थे। हमारे सभी परिवारों का सांझा चूल्हा था। परस्पर प्रेम के कारण परिवार के सदस्यों ने कठिन परिस्थितियों में भी कभी हार नहीं मानी। सूरतगढ़ में पिताजी का चार-पाँच वर्ष रहना हुआ। बाऊजी श्री अर्जुनदास सेतिया ने हमें बताया कि सूरतगढ़ में पिताजी के पास सामान ढोने के लिए 2 ऊंट थे। पिताजी सूरतगढ़ से श्रीगंगानगर अनाज ले जाते थे और गंगानगर से कपड़ा व्यापारियों का कपड़ा लाया करते थे। बाद में तीन भाइयों ने एक पुराना ट्रक खरीदा और उससे जुड़ा व्यापार करने के लिए जैतसर शिफ्ट हो गए।

जैतसर हमारे पिताजी की कर्म भूमि बन गया। कर्म को धर्म मानते हुए और धर्म को जीवन का आधार बनाते हुए हमारे पिताजी ने जैतसर में किराने की दुकान शुरू की। किराना व्यापार में उतार-चढ़ाव देखने के बाद पिताजी की ईमानदारी, सूझ-बूझ, दूरदर्शिता और कड़ी मेहनत अंतत: रंग लाई और किराना व्यापार के क्षेत्र में उन्होंने अपार सफलता प्राप्त की। इस सफलता का श्रेय हमारे बाऊजी अर्जुनदास जी सेतिया को भी जाता है जो कि व्यापार के क्षेत्र में दूर-दूर तक लोकप्रिय हो चुके थे।

हमारे ताया श्री मुंशीराम जी का लगभग 44 वर्ष की आयु में होने वाला आकस्मिक निधन परिवार के लिए बहुत बड़ा दु:ख था। तायाजी के तीन बेटे और एक बेटी थी। तब उनका बड़ा बेटा 15 वर्ष का और बेटी सबसे छोटी थी जो कि लगभग 5-6 वर्ष की थी। गम के माहौल में हमारे पिताजी और चाचा भगवान दासजी ने अपने बड़े भाई के निधन को भारी मन से धैर्य दिखाते हुए प्रभु इच्छा के रूप में स्वीकार किया और बड़े भाई के बच्चों की पढ़ाई-लिखाई, जीवनवृत्ति और विवाह के दायित्व अपने बच्चों की तरह निभाए। जाने वाले की कमी तो कोई भी पूरा नहीं कर सकता परन्तु पिताजी और चाचाजी का यही प्रयास रहा कि उनके बड़े भाई के बेटे और बेटी किसी प्रकार के भी अभाव को महसूस न करें। दोनों भाई बड़े भाई के बच्चों के लिए सदैव पिता तुल्य ही रहे।

जब हमारे पिताजी जैतसर आ गए तब दादाजी तीन बेटों के साथ सूरतगढ़ ही रह रहे थे। परिवार तथा समाज के प्रति समर्पित होने के कारण पिताजी और चाचाजी की यह हार्दिक इच्छा थी कि सारा परिवार साथ-साथ रहे। समर्पण भाव हो तो परमात्मा की सहायता भी कदम-कदम पर साथ होने लगती है। हमारे दादाजी वृद्धावस्था में प्रवेश पा चुके थे। हमारे पिताजी और चाचा भगवानदास जी ने अपने तीनों छोटे भाइयों के सम्मानजनक जीवनयापन के लिए अलग-अलग व्यवसायों की व्यवस्था की। 1967 में ताया मुंशीराम जी के परलोकगमन के पश्चात् परिवार

का केन्द्र हमारी माताजी ही थीं। रिश्तेदारों का निरन्तर आना जाना लगा ही रहता था। हमारे माताजी गुरु घर को भोग लगाकर ही भोजन किया करती थीं। हर सुबह-शाम पूजा पाठ करना, घर पर आने वाले मेहमानों को कुछ खाए पिए बिना नहीं जाने देना, हर दिन चिड़ियों के लिए बाजरे की पोटली बांध कर पिताजी को देना आदि माताजी के जीवन के अटल नियम थे। घर की बहू-बेटियों ने भी इन नियमों को श्रद्धापूर्वक अपने जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बना लिया।

गुरु घर के प्रति माताजी के पूजा भाव ने परिवार के वातावरण को आस्था से महका दिया था और उन्हें अत्यधिक श्रद्धेय बना दिया था। माताजी का सब हार्दिक रूप से सम्मान किया करते थे। जैतसर में हर सुबह छोटे-बड़े एक दूसरे से राम-राम करते हुए, बेटे-बहुएं माताजी का आशीर्वाद लेते हुए, बच्चे स्कूल जाते हुए और दुकानदार दुकानों पर जाते हुए दिखते थे। सुबह-सुबह माताजी दही बिलोना शुरू करती तो छाछ लेने वालों का आना शुरू हो जाया करता था। घर पर छाछ बेशक कम रह जाती परन्तु माताजी का प्रयास यही रहता था कि कोई खाली हाथ न जाए। माताजी के सरपोस (चपाती बॉक्स) में 6-7 रोटियां हमेशा रहती थी। माताजी किसी को भी कुछ खाए-पिए बिना नहीं जाने देती थीं। खाने के बारे में तो वे हर किसी से पूछती ही रहती थीं। खाने के समय जब तंदूर गर्म हो जाता तो परिवार की महिलाएं हमारे यहाँ तंदूर में रोटियां लगाया करती थीं। जैतसर में हमारी माताजी प्रतिदिन हमारे घर के आँगन में शाम 4 बजे से 5 बजे तक महिलाओं के भजन-कीर्तन का आयोजन किया करती थीं। हमारी माताजी ने अपनी बहुओं को बेटियों की तरह चाहा और प्यार ही प्यार में उन्हें बहुत कुछ सिखा दिया। परिवार के सभी सदस्य माताजी के दिल के करीब थे।

हमारे दादा श्री होतचंद जी और उनके बड़े भाई निहाल चंद जी एक ही गली में रहते थे। दादाजी गली में चारपाई पर आराम किया करते थे। हमारी माताजी हर रात सोने से पहले उनके लिए दूध का गिलास लेकर जाया करती थीं। हमारे माताजी की तरह हमारी



वर्ष 2016 में रवि सेतिया-प्रेम सेतिया अपने निवास स्थान पर माताजी की ममता की छांव में

चाची श्रीमती मुकनी देवी भी अपने ससुर श्री निहालचंद जी की भरपूर सेवा किया करती थीं। हमारे चाचा केसर दास जी अपने पिता निहालचंद जी को सुबह-शाम हुक्का भर कर दिया करते थे। हमारे चाचाजी ने सच्चे दिल से अपने पिता श्री निहालचन्द जी की सेवा की। वे हर सुबह अपने पिताश्री को अपने कंधे का सहारा देते हुए दुकान पर ले जाया करते थे। एक दिन जब मैंने उन्हें अपने पिताजी को कंधे पर बैठाकर दुकान पर ले जाते देखा तो मेरा हृदय उनके प्रति श्रद्धा से भर गया। सेवा भाव के सुन्दर संस्कार परिवार के परम सुख का आधार थे।



माँ-बेटा गले मिलते हुए

पिताजी और चाचाजी परिवार में सभी के दिलों में बसते थे। प्रेम के मधुर अहसास ने पारिवारिक जीवन में मिठास लाते हुए ऐसे एकीकरण के भाव को उत्पन्न किया कि परिवार के सदस्य सबके सुख में अपने सुख को महसूस करने लगे। इस प्रेरणा से परिवार का कारवां उत्साहपूर्वक आगे बढ़ता चला गया और नई ऊँचाइयां छूने लगा।। यह जो सिलसिला शुरू हुआ कभी रुका नहीं। पिताजी, चाचा भगवानदास जी और बाउजी इसकी धुरी थे। मैंने और महेन्द्र ने


स्व. श्री मुंशीराम जी भटेजा


स्व. मास्टर श्री कृष्णलालजी थरेजा


स्व. श्री अमरलाल जी वधवा


स्व. श्री हंसराजजी बंसल


स्व. श्री प्यारेलाल आहूजा

विकास के अनुपम प्रयासों को नए आयाम देने प्रारम्भ कर दिए। माताजी की प्रेरणा और आशीर्वाद से यह दायरा कब और कितना बढ़ गया हमें मालूम ही नहीं पड़ा।

हमारे माता-पिता ने हमारे उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करने के लिए बचपन में ही हमसे नियमों का पालन कराते हुए हमें कड़े अनुशासन में बांधना और संयम की शक्ति का आभास कराना प्रारम्भ कर दिया था। उन्होंने अति प्रभावशाली ढंग से हमारे जीवन को संवारा और हमें अपनी भूल सुधारते हुए जीवन में नए-नए रास्ते तलाशने के लिए प्रेरित किया था। बच्चों से अनजाने में गलतियाँ तो होती ही रहती हैं। हमारे माता-पिता ने हमारी गलतियों को कभी नजरअंदाज नहीं किया। महेन्द्र कुमार का जिद करते हुए नहर में नहाना, मेरा मनमाना व्यवहार और बड़े भाई अर्जुनदास का ग्राहकों को उचित रूप से लिखे बिना उधार देना आदि गलतियाँ होने पर हमें पिताजी की ओर से कठोर सजा मिलती। हमारी माताजी प्राय: यह सोचकर हस्तक्षेप नहीं किया करती थीं कि बच्चों के जीवन को संवारने के लिए ही तो कठोरता दिखाई जा रही थी। हम अपनी गलतियों के लिए माफी मांगते और माता-पिता को विश्वास दिलाते थे कि भविष्य में ऐसी गलतियों को दोहराया नहीं जाएगा। आज मैं जब पीछे मुड़कर देखता हूँ तो यह अहसास होता है कि पिताजी बिल्कुल सही थे। बढ़ती उर्म के साथ ही समझ आता है कि क्या ठीक हैं और क्या गलत। माता-पिता के परिपक्व मार्गदर्शन ने हम तीनों भाइयों के जीवन को नया मोड़ दे डाला। माताजी की कोशिश हमेशा यही रहती थी कि हम अपना काम समय पर करें।

माता-पिता के प्रभावशाली मार्गदर्शन के परिणामस्वरूप मैं पूरी रुचि के साथ शिक्षा प्राप्त करने के मार्ग पर चलते हुए संयमित जीवन जीने लगा। जैतसर में भाई अर्जुनदास जी ईमानदारी और सूझ-बूझ के साथ किराना व्यापार चला रहे थे। हमारे छोटे भाई महेन्द्र कुमार के सक्रिय सहयोग से व्यापार ने नई गति प्राप्त की। पिताजी द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलते हुए अर्जुनदास महेन्द्र कुमार नाम की फर्म नई बुलंदियों को छूने लगी। माता-पिता के परिपक्व मार्गदर्शन ने हम तीनों भाइयों के जीवन को ही रूपांत्रित कर डाला। जीवन में हमारी सफलता का श्रेय हमारे माता-पिता को ही जाता है। हमारे बच्चे भी इस तथ्य को जानते हैं कि हमारी भव्य सफलता के वास्तविक किरदार उनके परम पूज्य दादा-दादी ही हैं।

पिताजी और उनके भाइयों में प्रेम और विश्वास का गहरा सम्बन्ध था। हमारे पिताजी प्रत्येक कर्तव्य के प्रति सदैव समर्पित रहे। उन्होंने जीवन केवल अपने लिए नहीं जिया। उन्होंने धन का परोपकार में सदुपयोग करने का मार्ग दर्शाया। पिताजी ने जैतसर के गुरुद्वारा साहिब में अतिरिक्त निर्माण करवाया और श्मशान भूमि की बाउंड्रीवाल बनवाई। वे असहाय परिवारों की कन्याओं के विवाह संस्कार में यथासंभव सहायता तथा समय-समय पर जरूरतमंदों की सहायता के लिए समर्पित रहे। उनकी जीवनशैली से हमें यह सीखने को मिलता है कि पूर्ण समर्पण तथा परोपकार से ही हम जीवन को शांतिपूर्ण, मधुर एवं आनंदपूर्ण बना सकते हैं। उनके स्वभाव में सरलता, सहजता, स्पष्टवादिता और उदारता थी। उन जैसे सरल व्यक्ति ही उनके दिल के करीब रहे।

पिताजी के परम मित्रों में श्रीगंगानगर से अमरलाल जी वधवा और मुंशी राम जी भटेजा थे। उनके जैतसर निवासी घनिष्ठ



वर्ष 2016 में ममतामयी माताजी हारवीन के जन्मदिन पर आनंदपूर्ण परिवार के सदस्यों के साथ

मित्र सर्वश्री किशनलाल जी थरेजा, हंसराज जी अग्रवाल लोहे वाले, प्यारेलाल जी आहूजा और लालचंद मुंजाल सदैव सुख-दु:ख में सदा साथ खड़े रहते थे। हमारे सेतिया परिवार में समधियों और दामादों के शुभागमन पर परिवार के सब बड़े उनके सम्मान में इकट्ठे हो जाया करते थे। किशन लाल जी रस्सेवट, टेकचंद जी नागपाल, योग राज मूटनेजा जी, चाचा राम किशन जी का हमारे पिताजी से विशेष प्रेम था।

घर पर पहली शादी थी बड़ी बहन ज्ञान देवी की। तब श्रीगंगानगर से वर पक्ष पूरे शानो शौकत के साथ बारात लेकर आया था। बरातियों की मेहमान नवाजी और सेवा जैतसर के जीवन स्तर से ऊँची थी। इस विवाह संस्कार के विशाल आयोजन ने हमारे बाऊजी श्री अर्जुनदास जी को आत्मबल प्रदान किया और समाज ने उन्हें बहुत सम्मान दिया। इसके पश्चात् हमारे परिवार में बड़े अपने फैसलों में उनकी राय शुमार करने लगे थे। एक एक्सीडेंट में पैर को लगने वाली चोट के कारण छोटा भाई महेन्द्र नियमित पढ़ाई जारी नहीं रख सका और अल्प आयु में ही बाऊजी के साथ किराना व्यवसाय में जुट गया। 1977 में पढ़ाई समाप्त करने के पश्चात् मैं भी व्यवसाय संबंधी बैंकों से लेन-देन तथा सरकारी कार्यालय संबंधी कार्य करने लगा जिससे परिवार तथा व्यवसाय की पहचान दूर-दूर तक स्थापित होने लगी। बाऊजी की बड़ी सोच, महेन्द्र कुमार, सुरेन्द्र कुमार व तुलसीराम की मेहनत तथा व्यवसाय में मेरे सक्रिय योगदान ने हमारे परिवार के जयपुर में व्यवसाय स्थापित करने की राह आसान कर दी।



वर्ष 2014 में रवि सेतिया-प्रेम सेतिया अपने निवास स्थान पर

सन् 1987 में व्यवसाय के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छूने के लिए हमारे बाऊजी श्री अर्जुन दास जी ने जैतसर से जयपुर के लिए प्रस्थान किया। जयपुर में इनके लिए विभिन्न व्यवसायों के नए-नए द्वार खुलते चले गए। परिणामस्वरूप परिवार के अन्य सदस्य भी धीरे-धीरे जयपुर जाने लगे। हमारे बाऊजी की अटलता एवं आत्मविश्वास, सम्पूर्ण परिवार के सहयोग, प्रभु कृपा तथा माता-पिता के आशीर्वाद से जयपुर में पेट्रोल पम्प, माइन्स तथा फाइनेंस व्यवसाय की भव्य शुरुआत होने पर हमारा पूरा परिवार जयपुर शिफ्ट हो गया।

जयपुर में हम तीनों भाइयों के राजापार्क और जवाहर नगर में अलग-अलग निवास स्थान हैं परन्तु तीनों ही भाई एक दूसरे के दिल के बहुत करीब हैं। हमारे माता-पिता सन् 1994 में जयपुर आ बसे। वे पूर्णतया तो हमारे छोटे भाई महेन्द्र के निवास पर ही रहे परन्तु परिवार के अधिकतर सदस्य प्राय: हर दिन उनका आशीर्वाद प्राप्त कर लिया करते थे। कभी हम उन्हें अपने यहाँ ले आते तो कभी महेन्द्र उन्हें हमसे मिलाने के लिए हमारे यहाँ ले आया करता था। उनकी मौजूदगी हमारे लिए बहुत बड़ी खुशी और सुरक्षा का स्रोत हुआ करती थी। हमारे बाऊजी तो नियमित रूप से हर सुबह उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद ही पेट्रोल पम्प जाया करते थे।

पिताजी की हार्दिक इच्छा थी कि मैं अपने भाइयों के साथ ही रहूँ परन्तु व्यवसाय में मेरी रुचि नहीं थी। 1978 में मैंने न्यू इंडिया इंश्योरेंस में नौकरी शुरू कर दी परन्तु पिताजी की इच्छा के प्रति सम्मान के कारण मेरे सोच में धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगा और मुझे यह अहसास होने लगा कि पिताजी बिल्कुल ठीक कहते हैं। पिताजी की आशीष भरी प्रेरणा के परिणामस्वरूप 20 वर्ष का सेवाकाल पूर्ण होने पर मैंने 1998 में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति प्राप्त की और परिवार के फाइनेंस व्यवसाय में सम्मिलित हो गया।

जैतसर और जयपुर के जीवन की परिस्थितियों में अंतर होना तो स्वाभाविक ही था। जयपुर आने के बाद पिताजी ने धीरे-धीरे स्वयं को सकारात्मक रूप से बदलते हुए परिस्थितियों को सुखद बना डाला। हमारे पिताजी जीवन की प्रत्येक अवस्था के गुणों के साथ आगे बढ़ते हुए सदा सार्थक जीवन जीते रहे। उनके जीवन में बचपन की सरलता, यौवन के उत्साह, प्रौढ़ अवस्था के तालमेल और वृद्धावस्था के विवेक का अद्भुत संगम था। पिताजी में हर प्रकार की परिस्थितियों में आत्म-विश्वास के साथ आगे

बढ़ने का विशेष गुण था। जयपुर आने के बाद उनके जीवन में न केवल आंतरिक बल्कि बाहरी परिवर्तन भी नजर आने लगा। जैतसर में पिताजी धोती-कमीज पहना करते थे। जयपुर आने पर उन्होंने कमीज-पायजामा पहनना शुरू किया और विवाह शादियों में सबकी खुशी में खुश रहते हुए कोट-पेंट भी पहनने लगे।

जयपुर में सभी को पिताजी का साथ अच्छा लगता था। बच्चों को उनकी ओर से अपार प्यार और बातों ही बातों में जीवन जीने की कला की अनमोल सीख मिल जाया करती थी। घर पर आने वाले मेहमान पिताजी का सान्निध्य पाकर धन्य हो जाया करते थे। पिताजी जिस किसी से मिलते उसका दिल हमेशा के लिए जीत लिया करते थे। जयपुर में जब पिताजी का धर्म प्रेमी अमरीक सिंह बेदी जी से मिलना हुआ तो दोनों को एक दूसरे का साथ अच्छा लगने लगा। दोनों में मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो गये। पिताजी और श्री बेदी जी राजापार्क पेट्रोल पम्प के ऑफिस में प्राय: लंबे समय तक आध्यात्मिक बातें किया करते थे। उन दिनों बेदी जी राजापार्क स्थित भगत सिंह पार्क में सुबह 8 बजे से 10 बजे तक सत्संग का आयोजन किया करते थे। पिताजी नियमित रूप से उनके प्रवचन सुनने के लिए जाने लगे। हमारे माता-पिता का जीवन मानव धर्म पर आधारित था। पिताजी जैतसर में असहाय व्यक्तियों की समय-समय पर सहायता किया करते थे तथा जरूरतमंद व्यक्तियों को भोजन खिलाया करते थे। जयपुर में भी घर से सत्संग के लिए चलते समय वे दो व्यक्तियों के लिए नियमित रूप से भोजन ले जाया करते थे। हमारे माता-पिता के आदर्श जीवन ने हमें जनहित से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

हमारी माताजी और उनकी बहुओं का एक दूसरे से गहरा लगाव था। जब हमारे माता-पिता जयपुर आ गए तो सभी बहुएं अपने पोते-पोतियों को माताजी के पास भेजकर बेफिक्र हो जाया करती थीं। स्वभाव से प्रसन्नचित्त और मिलनसार होने के कारण हमारी माताजी हम सबकी खुशी में खुश रहती थीं। मेरी सदैव दिली इच्छा रही कि मेरे माता-पिता को मुझ पर गर्व हो। मेरे भतीजे-भतीजियाँ, भांजे-भांजियां जब बहुत छोटे थे तो उनकी मासूमियत भरी बातें दिल छू जाया करती थीं। जब वो थोड़े बड़े होने लगे तो परिवार के अन्य बड़ों की तरह मैं भी उनके भविष्य के बारे में जागरूक था। मेरा प्रयास सदैव यही रहा कि उन्हें अच्छे से अच्छे स्कूलों में प्रवेश प्राप्त हो और उनकी पढ़ाई पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अति उत्तम रूप से चलती रहे। उनकी पढ़ाई पूरी होने के बाद उनके कामकाज में भी मैं रुचि लेता रहा। सुरेन्द्र कुमार का विवाह 1989 में जयपुर में हुआ था हालांकि उस समय हमारा परिवार जैतसर में ही रहता था। राजेन्द्र, राजू, रिम्पु, मंजू, संजू, बिट्टू, भुल्लु, शब्बो, शिखा, सन्नी, विक्की, कंचन, शशि, विपुल, संकुल, दिव्या, शिवांश, रॉबिन, नितिन, सोनम त तुलसी के बच्चों के विवाह हमारे परिवार के जैतसर से जयपुर आने के बाद ही हुए थे। इनके विवाह की सभी तैयारियां हम तीनों भाइयों ने मिलकर व्यवस्थित रूप से की थी।



वर्ष 2017 में रविकुमार सेतिया राजस्थली रिजॉर्ट में माताजी को उनके पौत्र विपुल सेतिया के मेंहदी समारोह स्थल की ओर ले जाते हुए



संत पुरुष श्री अमरीक सिंह जी बेदी
हमारे पिताजी के प्रेरणा स्रोत

हमारे माता-पिता परिवार के प्रति सदैव समर्पित रहे। समर्पण भाव पर आधारित उनकी जीवन शैली ने हमें यह आभास कराया कि आदर्श परिवार सुसंस्कृत समाज के निर्माण का आधार है। हमारे माता-पिता द्वारा दिए गए सुन्दर संस्कारों के कारण उनके जीवनकाल में और आज भी हम सभी भाई-बहनों के लिए पारिवारिक भावना और प्रेमपूर्ण परस्पर सहयोग सर्वोच्च रहे

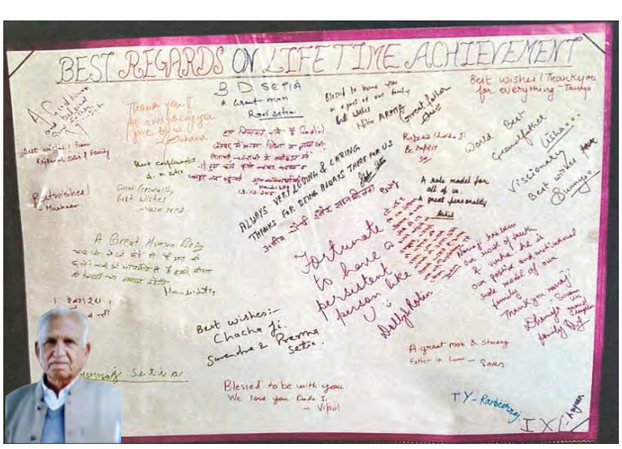
हैं। हमारे पिताजी कहा करते थे कि पोते-पोतियों और दोहते-दोहतियों के विवाह का उत्तरदायित्व उनका ही है। हम सभी भाई-बहनों के अटूट प्रेम और विश्वास के परिणामस्वरूप परिवार के विवाह योग्य बच्चों के रिश्ते हम तीनों भाई आपसी परामर्श से करते रहे हैं।

बुजुर्गों की शान का हार्दिक स्वागत करते रहने की सीख हमने अपने परम पूजनीय माता-पिता से प्राप्त की थी। हमारे पिताजी के देवलोकगमन के पश्चात् हमें उनकी छवि अपने चाचा भगवान दासजी में नजर आने लगी थी। हम तीनों भाइयों ने चाचा भगवान दास जी का हार्दिक सम्मान करने के लिए उन्हें परिवार सहित मेरे निवास पर आमंत्रित किया था। तब माताजी उम्र के 80 वर्ष देख चुकी थी। परिवार के सभी बड़ों ने चाचा भगवान दासजी को फूल मालाएं पहनाकर सम्मानित किया। फूलों की वर्षा से वातावरण सुगंधित हो उठा था। चाचाजी की आँखें सजल हो आई थीं। बड़े व्हाइट बोर्ड पर उनके प्रति लिखे गये भावों ने उन्हें नि:शब्द बना दिया था। तब पिताजी होते तो वे उस दृश्य का भरपूर आनंद लेते। हमारे चाचाजी इस सम्मान के योग्य थे।



वर्ष 2007 में अर्जुनदास, रविकुमार, महेन्द्रकुमार रॉबिन के विवाह के शुभ अवसर पर माताजी के स्नेहपूर्ण सान्निध्य में

हम तीनों भाई चाचा भगवान दासजी के साथ कार से दिल्ली जा रहे थे। मैं चाचाजी से प्राप्त हुई प्रेरणाओं पर बात कर रहा था। तब उन्होंने हँसते हुए कहा था कि उन्हें किसी ने इनाम तो दिया नहीं। तब बाऊजी ने अपनी उंगली से गोल्ड की अंगूठी निकालकर उन्हें पहनाई। बाऊजी जी की भावनाओं को देखते हुए चाचाजी भाव विभोर हो गए थे। पर जब सभी वापिस लौटकर जयपुर आए तो वे अंगूठी निकालकर बाऊजी को वापिस देने लगे। तब बाऊजी ने सम्मानपूर्वक उनका हाथ थाम लिया था और अंगूठी पहने रखने के लिए प्रार्थना की थी। चाचाजी नहीं मान रहे थे। जब बाऊजी ने परिवार की खुशी का वास्ता दिया तब जाकर वो माने।



चाचा भगवानदास जी के सम्मान में उनके प्रति व्हाइट बोर्ड पर लिखे गए हृदय के भाव

माताजी का हमारे प्रति प्यार अनमोल था। हम तीनों भाइयों का उनसे गहरा लगाव था। प्राय: वो स्वस्थ ही रहीं परन्तु जब कभी उनके मेडिकल चैकअप के लिए उन्हें हॉस्पिटल ले जाना पड़ा तो हम तीनों भाई वहाँ पहुँच जाया करते थे। माताजी चाहती थीं कि हम हर दिन उनसे मिलते रहें। दिल की गहराइयों से माताजी से प्रेम होने के बावजूद, मैं जब कभी 5-6 दिन बाद उनसे मिलने जाता तो वो भावुक होकर कहा करती थी- 'बड़े दिनां बाद आया हैं तू, तैनू मेरी याद नहीं आंदी?' मुझे रह-रहकर विचार आता है कि माता-पिता के अनमोल प्यार का कर्ज कभी चुकाया तो नहीं जा सकता परन्तु हर पल उनकी भावनाओं का ध्यान रखते हुए कुछ सीमा तक फर्ज तो निभाया जा सकता है। आज हम जो भी हैं वो सब हमारे परम पूज्य माता-पिता के आशीर्वाद का ही प्रतिफल है। माता-पिता के साये में बिताए अनमोल पल हम कभी भूल नहीं पायेंगे।

हमारे माता-पिता ने विकट विपत्ति में धैर्य तथा साहस का परिचय दिया। उनकी जीवनशैली से प्रभावित होकर हमारे अपनों ने भावों की अभिव्यक्ति के द्वारा उन पर श्रद्धा के पुष्प बरसाए हैं। समर्पण भाव से भीगी इस स्मारिका में हमारे माता-पिता की सकारात्मक सोच और उससे उपजे उनके अनुपम साहस की झलक है। एक तरफ उनकी प्रेरणादायक जीवनशैली है तो दूसरी ओर परिवार के साथ आगे बढ़ने की चाहत है। इस स्मारिका में हम अपने माता-पिता के परिवार तथा समाज के प्रति सम्पूर्ण समर्पण भाव को श्रद्धापूर्वक प्रस्तुत कर रहे हैं।

'धीआं बेगानियां ते नूहां बिलानियां (सहेलियाँ)'



स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया - स्व. श्रीमती लाजवंती देवी



स्व. श्रीमती इंद्रा देवी - स्व. श्री सरदारीलाल जी नागपाल



- प्रेम सेतिया

माताजी का स्वभाव बहुत सहज था। हर पल उनकी याद आती है। उनके दिए संस्कार सदैव उनकी याद दिलाते हैं। उन्होंने परिवार को पूरा प्यार दिया और परिपक्व भी बनाया। छोटा बड़ा जो भी घर पर आता, चाय, शरबत, लस्सी, दूध, भोजन जिसका भी समय हो, बड़े प्यार से खिलाते-पिलाते और परिवार सहित सबका हालचाल पूछते। कभी कोई चीज कम भी होती तो भी कहते, बहुत है तुम ये ले जाओ। माताजी मिलनसार भी बहुत थीं। जब मेरी शादी हुई तो मन में डर सा था, लेकिन उन्होंने कभी माँ तो कभी बहन और कभी सहेली की तरह मेरा साथ दिया। कभी-कभी सास की तरह सीख भी दी तो बड़े प्यार से। अगर कभी मेरे सिर में दर्द होता तो तेल लगाकर मालिश भी कर देती थीं। माँ बेटी की तरह सुख-दुख की सारी बातें भी किया करती थी। वो अक्सर कहा करती थीं 'धीआं बेगानियां ते नूहां बिलानियां (सहेलियाँ)। बेटियाँ तो चली गई अपने घर, अब तुम्हीं मेरी बेटियाँ हो।' उनकी ये बात मुझे बहुत अच्छी लगती थी। कभी-कभी लस्सी के साथ गर्मा-गर्म मूली के जो परांठे अपने हाथों से बनाकर खिलाया करती थीं, उनका स्वाद अभी तक मुँह में है। वैसा परांठा अपने हाथ से कभी नहीं बनता।

घर की कोई भी समस्या होती तो वो अपने ही सिर पर ले लेती। अपने बेटों के आगे खड़ी हो जाती और बहुओं की तरफ़दारी करती। उन्होंने हर तरह से घर को जोड़े रखा। बड़े भाई साहब श्री अर्जुनदास जी भी परिवार को बहुत प्यार करते हैं। मुझे तो आज भी बहुरानी कहकर बुलाते हैं। बच्चों को भी अपने बच्चों की तरह रखा। माताजी के दिल के वो बहुत करीब थे। हर बात उनसे शेयर करना उनकी आदत में शुमार था। छोटा बेटा महेन्द्र और सरोज



वर्ष 2013 में नितिन सेतिया के सगाई समारोह के अवसर पर माताजी और श्रीमती प्रेम सेतिया आनंद उठाते हुए



वर्ष 2017 में माताजी रवि कुमार सेतिया-प्रेम सेतिया के निवास स्थान पर बच्चों को आशीर्वाद देते हुए



वर्ष 2013 में नितिन सेतिया के विवाह के अवसर पर रवि सेतिया, माताजी और श्रीमती प्रेम सेतिया खुशियाँ बांटते हुए

उनके साथ रहते थे। उन दोनों ने उनकी बहुत सेवा की। कभी-कभी हमारे पास भी आ जाते थे। उनके गुणों का जितना भी बखान किया जाए कम है। उनके दिए संस्कारों पर चलें, यही हमारी इच्छा है। ईश्वर हमारा साथ दे और मेरा विश्वास है कि वो जहाँ भी होंगे हमें आशीर्वाद ही दे रहे होंगे।

पिताजी के बारे में-

पिताजी थोड़े कठोर स्वभाव वाले थे। ऊपर से सख्त और अंदर से नरम। कभी-कभी तो वो इसलिए गुस्सा हो जाते कि उनके बच्चों को गुस्सा क्यों नहीं आता। वे कहा करते थे 'मैं जब भी उनको डाँटता हूँ तो वो एक रोटी ज्यादा खा लेते हैं और दाँत निकाल कर हँसते हैं। मैंने तो लोगों को ऐसे मौके पर रोटी की थाली उठाकर फेंकते देखा है।' बच्चों को हिसाब-किताब की बातें उन्होंने बड़े अच्छे से सिखाई। हमेशा बच्चों को शिक्षा देते कि जब भी कभी बाहर जाओ, पता होना चाहिए कि जेब में कितने पैसे हैं, कितने खर्च कर दिए। हिसाब के पक्के रहने वाला गुण अति अनुकरणीय है। घर में जब गाय-भैंसें थी तो वो खुद भी उनकी सेवा करते और हमसे भी करवाते थे। पिताजी को मालूम था कि मैं गाय-भैंसों की सेवा दिल से नहीं करती। एक दिन जब सब पशु बिक गए तो वो हँसते हुए बोले कि प्रेम सबसे खुश होगी अब। समय बीतने के साथ पिताजी में बहुत बदलाव आया, इतना कि यकीन करना मुश्किल था। बहुओं के साथ भी बेटियों की तरह बात करना, हँसी मज़ाक करना। बस इसी तरह दोनों ने परिवार को बाँधे रखा। आज भी हम सभी प्यार से रहते हैं। जेठानी, देवरानी, ननदों के साथ बहनों सा रिश्ता है। सबसे छोटी ननद सुनीता और मैं तो सहेलियों की तरह रहते हैं।



श्री रवि सेतिया - श्रीमती प्रेम सेतिया परिवार सहित

Parents are guides, protectors and providers for their children.

'हमारे परम पूजनीय माता-पिता ने हर रिश्ते की सुंदरता को सदा बनाए रखा'



-महेन्द्र कुमार सेतिया



स्व. श्री गिरधारी लाल जी सेतिया
राजापार्क पेट्रोल पंप आफिस में

इस संसार में माता-पिता और गुरुजन से बढ़कर कुछ भी नहीं। हमारे प्रथम गुरु हमारे माता-पिता ही थे। प्रारंभिक बचपन में उन्होंने ही हमें सही और गलत का भेद समझाया। जब मेरी आयु लगभग 11 वर्ष की थी तो अनूपगढ़ में हमारे मौसा जवाहरलाल जी धूड़िया का आकस्मिक निधन हो गया था। दिवंगत आत्मा की शांति के लिए जैतसर पांच की पुली (रघुनाथगढ़) पर यज्ञ का आयोजन किया जा रहा था। तब मैं कक्षा 6 का विद्यार्थी था। मैं उस दिन स्कूल नहीं जाना चाहता था। माता-पिता के बहुत समझाने के बाद भी मैं स्कूल न जाने की जिद पर अड़ा रहा। मेरी जिद के कारण पिताजी का गुस्सा बढ़ता चला गया। उन्होंने मेरी खूब पिटाई करके मुझे स्कूल भेजा। वो अवस्था ही ऐसी थी कि मैं अपनी जिद को पूरा करने के लिए कुछ भी कर सकता था। जब हमारे परिवार के सदस्य यज्ञ के आयोजन में शामिल होने के लिए चले गए तो मैं भी तीन मील की दूरी साइकिल पर तय करते हुए वहाँ पहुँच गया। वहाँ पर अनूपगढ़ से आए हुए परिवार के बच्चों के साथ मैं नहर में खूब नहाया और लंगर सेवा भी की। अवसर की नजाकत को देखते हुए वहाँ पर पिताजी ने मेरी जिद को अनदेखा कर दिया। बचपन की मस्ती में मुझे मालूम ही नहीं था कि अपनी जिद से मैं स्वयं अपना बुरा कर रहा था और अपनों को अनजाने में बहुत कष्ट पहुंचा रहा था। परन्तु पिताजी ने मेरे जीवन को उचित दिशा प्रदान करने की ठान रखी थी।



सार्थक जीवन जीने की कला
सिखाने वाले हमारे महान शिक्षक
स्व. श्री दीवानचंद मिढ्ढा

बच्चे तो कच्ची मिट्टी के समान होते हैं उन्हें जैसा आकार देंगे वे वैसे ही बन जाएंगे। माता-पिता और गुरुजन द्वारा प्रदान किए जाने वाले सुन्दर संस्कार देर-सवेर बच्चों के जीवन को रूपांतरित कर ही देते हैं। जब मैं श्रद्धानंद आचार्य गवर्नमेंट सीनियर सैकंडरी स्कूल जैतसर में कक्षा 6 का विद्यार्थी था तो हमारे क्लास टीचर स्व. श्री दीवान चंद मिढ्ढा ने हमें न केवल प्रभावशाली ढंग से शिक्षा प्रदान की बल्कि हमारे जीवन में नैतिक मूल्यों की मजबूत आधारशिला भी रख दी। वे हमें प्रेरित किया करते थे कि हम प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक माता-पिता के चरण छू कर आशीर्वाद प्राप्त किया करें। उनके महान आदर्शों



श्री गिरधारी लाल जी सेतिया अपने पिता श्री होतचंद जी और ताया श्री निहालचंद जी को वर्ष 1974 में भावपूर्वक भोजन कराते हुए

ने अनगिनत बच्चों के जीवन को संवारा। उनकी प्रेरणादायक स्मृतियों को अमर बनाने के लिए जैतसर में हमारे परिवार द्वारा विद्यालय के प्रांगण में 1 जनवरी, 2000 को उनकी प्रतिमा की स्थापना कराई गई।

मेरे परमपूजनीय माता-पिता और गुरुजन ने मुझे अज्ञानता की गहरी नींद से जगाते हुए मेरे जीवन को सार्थक दिशा प्रदान की। जब मेरी आयु लगभग 14 वर्ष की थी तो पिता जी मुझे नियमित रूप से सूर्योदय से पहले उठाने लगे। उनके निर्देश का पालन करते हुए मैं घर पर गुरु महाराज के आगे माथा टेककर सुबह जल्दी दुकान की साफ-सफाई के लिए जाने लगा। नियमों को मेरे जीवन का आधार बनाते हुए पिताजी ने ही मुझे सफलता की ओर बढ़ना सिखाया था। पिताजी के मर्यादित जीवन से मैंने यह सीखा कि कठिन समय में भी पूर्ण विश्वास के साथ संघर्ष करते हुए और असफलता से भी सीखते हुए निरंतर आगे बढ़ने का प्रयास करते रहें।

जब मैं आठवीं कक्षा का विद्यार्थी था तो एक दुर्घटना में पैर के फ्रैक्चर के कारण मैं काफी समय तक विद्यालय नहीं जा सका। मुझे अमृतसर और गंगानगर के हॉस्पिटल में एडमिट होना पड़ा था। लंबे इलाज के बाद भी जब मेरी स्थिति में संतोषजनक सुधार नहीं आ पाया तो मेरे स्व. मामाजी श्री सोहनलाल जी चुग मुझे जयपुर ले आए और उन्होंने अपनी तथा मेरी बहन डॉ. शशी की निगरानी में मेरा इलाज शुरू करवाया। एक वर्ष तक अपने साथ रखते हुए मामाजी के परिवार ने दिन-रात मेरी भरपूर सेवा की। जयपुर में मेरा इलाज 2 वर्ष चला और इस प्रकार मामाजी और शशी बहन जी के प्रेमपूर्ण प्रयासों के परिणामस्वरूप मैं पूरी तरह से ठीक हो गया। मैं उनके अपार प्रेम को कभी भुला नहीं पाऊंगा। पैर के फ्रैक्चर के कारण मैं आठवीं की परीक्षा नहीं दे पाया था। अगले वर्ष आठवीं की परीक्षा देने के बाद मैं माताजी के साथ अनूपगढ़ चला गया जहां हमारे नानीजी और मामा बालकिशन दास जी तथा बिहारी लाल जी रहा करते थे। हम गर्मी की छुट्टियाँ प्राय: नानी जी के यहाँ बिताया करते थे। छुट्टियां बिताने के बाद हम बस द्वारा अनूपगढ़ से जैतसर वापिस आए। उन दिनों बस बड़े भाई साहब श्री अर्जुनदास की दुकान के पास ही रुका करती थी। जब मैं दुकान पर भाई साहब से मिलने गया तो उन्होंने मुझे घर भेजने की बजाय दुकान पर ही काम में लगा दिया। भाई साहब की यह सोच थी कि जीवन में कामयाबी हासिल करने के लिए मुझे सकारात्मक रूप से व्यस्त रहना चाहिए। आठवीं का परिणाम घोषित हुआ तो हमारे परिवार में सबको यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मैं अपनी कक्षा में दूसरे स्थान पर रहा था। उन दिनों जैतसर में मिडिल स्कूल ही था। आठवीं के बाद की पढ़ाई करने के लिए बच्चे गंगानगर जाया करते थे। पिताजी को मेरे स्वास्थ्य की बहुत चिंता रहती थी। वे चाहते थे कि मैं जैतसर से बाहर न जाऊं। इसलिए उन्होंने मुझे भाई साहब के साथ दुकान पर काम करने के लिए और प्राइवेट पढ़ाई जारी रखने के लिए कहा। शुरुआत में मैं पिताजी और भाई साहब के डर से ही दुकान पर जाया करता था परन्तु धीरे-धीरे मेरी व्यवसाय में रुचि पैदा होने लगी। जैतसर में किराना व्यापार के क्षेत्र में भाई साहब अर्जुनदास जी का दूर-दूर तक नाम था। मैं व्यवसाय में पूरे मन से उनका साथ देकर पिताजी को प्रसन्न देखना चाहता था। मैं सुबह जल्दी दुकान पर जाकर देर रात तक भाई साहब के साथ पूरी रुचि के साथ काम करने लगा। नए-नए ग्राहक जुड़ते गए और हर दिन बिक्री बढ़ने के साथ व्यवसाय में वृद्धि होती चली गई।



वर्ष 2021 में संकुल सेतिया के विवाह के अवसर पर महेन्द्र सेतिया अपनी बड़ी पुत्रवधू तृप्ति को आशीर्वाद देते हुए



वर्ष 2016 में माताजी, महेन्द्र सेतिया, विपुल और संकुल श्री अर्जुनदास सेतिया - श्रीमती भजन देवी सेतिया की 50वीं शादी की सालगिरह धूमधाम से मनाते हुए

पिताजी के मार्गदर्शन में भाईसाहब ने व्यवसाय में सदा ईमानदारी और विनम्रता के साथ ग्राहकों की पूर्ण संतुष्टि पर अपना ध्यान केन्द्रित किया था। व्यवसाय में पिताजी और भाई साहब को अपना आदर्श मानते हुए छोटी उम्र में ही मैं पूरी लगन से काम करने लगा। भाई साहब के साथ व्यवसाय में काम करते हुए लगभग दो वर्ष बीत चुके थे। हमने गुड़ और चीनी का थोक व्यवसाय शुरू किया जिसमें हमें अपार सफलता प्राप्त हुई। व्यवसाय में वृद्धि के साथ हमारा हर दिन नए उत्साह और नए-नए विचारों से शुरू होता था। देर रात दुकान बढ़ाने के बाद हम बिक्री का पैसा घर पर गिना करते थे। मेरे मन में विचार आया कि क्यों न इन पैसों में से कुछ पैसा धीरे-धीरे चुपके से बैंक में जमा कराता रहूं। बचत करने की आदत हममें पिताजी ने ही डाली थी। पिताजी हमें समझाते हुए कहा करते थे कि नियमित रूप से की जाने वाली छोटी-छोटी बचत एक दिन बहुत बड़ी राशि बन जाती है। हमें बचपन में कभी 10 पैसे तो कभी 25 पैसे जेब खर्च मिला करता था। पिताजी ने हम भाई-बहनों को अलग-अलग मिट्टी की गुल्लक भी दी थी। हममें बचत की आदत विकसित करने के लिए पिताजी कहा करते थे कि जिसकी गुल्लक सबसे पहले भर जाएगी उसे इनाम दिया जाएगा। हम सबमें पिताजी की ओर से इनाम और शाबाशी पाने की होड़ लगी रहती थी।

बचत का महत्त्व समझाते हुए एक दिन पिताजी ने कहा था कि बचत करने वालों को पैसा न केवल बचाता है बल्कि जीवन में आगे भी बढ़ाता है। पिताजी के बचत सम्बन्धी विचारों से प्रेरित होकर मैं बैंक में चुपके से समय-समय पर पैसा जमा कराता रहा। इस प्रकार 8 महीने में 4 लाख रुपये इकट्ठे हो गए। जब एक रात मैंने पिताजी और भाई साहब को 4 लाख रुपये की एफ.डी. दिखाई तो पिताजी बहुत खुश हुए और भाई साहब हैरान हो गए। भाईसाहब को विश्वास ही नहीं हो पा रहा था कि इतने कम समय में इतनी बड़ी राशि कैसे जमा हो गई। उन दिनों 4 लाख रुपये वास्तविकता में बहुत बड़ी राशि हुआ करती थी। तब जैतसर में एक मुरब्बा नहरी जमीन की कीमत 50,000 रुपये के आसपास हुआ करती थी जबकि आज वहां एक मुरब्बा नहरी जमीन लगभग 2 करोड़ की है। इसी तथ्य से अनुमान लगाया जा सकता है कि उन दिनों चार लाख रुपये कितनी बड़ी राशि हुआ करती थी। हम व्यवसाय के क्षेत्र में नई-नई ऊँचाइयों को छू रहे थे। 1977 में पढ़ाई समाप्त करने के बाद रवि भाई साहब व्यवसाय सम्बन्धी बैंकों से लेन-देन तथा अन्य सरकारी काम करने लगे। इस प्रकार अर्जुनदास महेन्द्र कुमार नाम की हमारी फर्म की जैतसर क्षेत्र में दूर-दूर तक अलग ही पहचान स्थापित हो गई।



वर्ष 2021 में महेन्द्र सेतिया अपनी नवविवाहित पुत्रवधू आशीमा को आशीर्वाद देते हुए।

हमारे व्यवसाय की वृद्धि में तुलसीराम सुथार का बहुत बड़ा योगदान रहा है। वो उम्र में मुझसे दो साल बड़े हैं। 12 वर्ष की अल्प आयु में तुलसी राम जैतसर में अर्जुन भाई साहब के साथ दुकान पर काम करने लगे थे। देखते ही देखते वो हमारे परिवार का अभिन्न अंग बन गए थे। हमारे माता-पिता ने तुलसीराम को हमेशा अपना चौथा बेटा माना। तुलसीराम जी का प्रेमपूर्ण सहयोग हमें सदा यही आभास कराता है कि हम चार भाई हैं।

पिताजी की व्यापारिक सूझबूझ, दूरदर्शिता और ईमानदारी ने हमें व्यवसाय में भव्य सफलता दिलाई। हमारे पिताजी हिसाब किताब में माहिर थे। उनका लेनदेन सम्बन्धी

कभी किसी से कोई विवाद नहीं हुआ। पिताजी कहा करते थे कि व्यवसाय में तरक्की के लिए सतर्कता और हर दिन का हिसाब-किताब रखना निहायत जरूरी है। पिताजी की व्यावहारिक सीख को अपनाते हुए जब हमने हर दिन की बिक्री, खर्च और ग्राहकों की मांग की वस्तुओं को लिखने के साथ-साथ स्टॉक को अपडेट करना शुरू किया तो व्यवसाय के क्षेत्र में कामयाबी के नए-नए द्वार इस प्रकार खुलते चले गए कि फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

हमारे पिताजी प्राय: स्वस्थ ही रहे। उनकी सांस की तकलीफ जीवन के अंतिम महीनों में बढ़ती चली गई। बहुत इलाज करवाया गया, परन्तु विधि के विधान को कौन बदल सकता है। 30 अक्टूबर, 2006 को हमारे पिताजी का निधन हुआ जो कि परिवार के लिए गंभीर सदमा था। देखते ही देखते सब कुछ बदल गया। हमारे पिताजी की मौजूदगी हमारे लिए हर कदम पर शक्ति और सहारा थी। पिताजी के बिना जीवन अधूरा लगने लगा था। हम सब उन्हें बहुत याद किया करते थे। जीवन में इतना खालीपन आ चुका था कि कुछ अच्छा नहीं लगता था। हमारी माताजी पिताजी को कभी भूला नहीं पाई। वे रह-रह कर पिताजी को याद किया करती थीं। घर में जब भी चने की दाल की खिचड़ी बनती तो माताजी कहा करती थीं, 'तेरे पिताजी नूं खिचड़ी दा बहुत शौक सी।'



वर्ष 2007 में रॉबिन सेतिया के
विवाह के अवसर पर
महेन्द्र सेतिया-सरोज सेतिया
माताजी का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

हमारे माताजी ने कठिन समय में प्राय: धैर्य दिखाया। पिताजी को वो कभी भुला तो नहीं पाए परन्तु धर्म पर आधारित जीवन जीने के कारण न तो कभी निराश हुए और न ही हमें कभी निराश होने दिया। उनकी सोच थी कि चिंता जीवन को अंधकारमय बनाती है जबकि चिंतन हमें विकट से विकट समस्या को सुलझाने का आत्म-बल प्रदान करता है।



वर्ष 2010 में महेन्द्र सेतिया-सरोज सेतिया
अपने विवाह की सालगिरह मनाते हुए

माताजी ने श्री आनंदपुर कुटिया के प्रति समर्पित रहते हुए सदैव सेवा भाव से जीवन जिया।

हमारी माताजी ने हर रिश्ते की सुन्दरता को सदा बनाए रखा। अपनों के साथ दिल से अपनापन दिखाते हुए वे जीवन में रंग भरती रही। हम तीनों भाइयों के पास माँ का अलग-अलग कमरा है। हम आज भी उस कमरे को माता जी का कमरा कहते हैं। मेरे दोनों भाई समय-समय पर माताजी को हमारे यहां से अपने यहां ले जाया करते थे। जयपुर रहने वाली बहनें और माताजी के भतीजे-भतीजियाँ भी अपनी सुविधा के अनुसार उनसे मिलने के लिए आ जाया करते थे। अपनों को साथ-साथ देखकर हमें ऐसे लगता था जैसे फिर से जैतसर वाले घर में पहुँच गए हैं। माता जी हम सभी भाई बहनों, बहुओं और बच्चों से बहुत प्यार करती थीं। बहू-बेटियों से फोन पर दिल खोलकर बातें किया करती थीं और फुर्सत के क्षणों में चुनिंदा टी.वी. सीरियल भी देख लिया करती थीं। धार्मिक पुस्तकें पढ़ने में भी उनकी बहुत रुचि थी। घर में कोई भी बड़ा कार्य उनकी राय के बिना नहीं किया जाता था। परिवार के मांगलिक कार्य तो उनकी उपस्थिति के बिना होते ही नहीं थे। माताजी कहा करती थी कि परस्पर प्रेम और दीन दुखियों की सेवा हमारा परम धर्म है।

माताजी की दिली इच्छा थी कि संकुल की शादी जल्दी हो जाए। वो अक्सर कहा करती थी- 'महेन्द्र तू क्यों देर कीती जांदा हें, संकुल लइ कोई घर तां देख।' जवाहर नगर का पहले वाला मकान हमारी जरूरतों को देखते हुए छोटा पड़ रहा था। माताजी चाहती थीं कि मैं बड़ा मकान बनवाऊँ। उनकी इच्छा को देखते हुए मैंने सेक्टर 5 जवाहर नगर में बड़ा प्लॉट खरीदकर सन् 2016 में निर्माण कार्य शुरू करवाया। माताजी



वर्ष 2021 में नव दंपति संकुल-आशिमा अपने मम्मी-पापा और भाई-भाभी के साथ

की जरूरतों का ध्यान रखते हुए उनके लिए अलग कमरा बनवाया। नए मकान के निर्माण में 4 वर्ष लग गए। हम माताजी को दो बार नया मकान दिखाने के लिए भी ले गए थे।

मई 2019 में अकस्मात ही हमारी माताजी को सांस लेने में कठिनाई होने लगी। उनकी बढ़ती परेशानी को देखते हुए हम उन्हें तत्काल हॉस्पिटल ले गए जहां तरह-तरह के टेस्ट के साथ इलाज शुरू हो गया। डॉ. दिनेश शर्मा जब भी राउंड पर आते तो हम तीनों भाइयों को वहां साथ-साथ देखा करते थे। एक दिन उन्होंने कहा कि तुम भाइयों का आपस में और माताजी के प्रति बहुत प्यार है। माताजी की तबीयत में सुधार आने लगा। 12 मई, 2019 का दिन मदर्स डे था। संयोगवश इस दिन हमारी माताजी हॉस्पिटल में ही थीं। हम सभी भाई-बहन यह सोचकर भावुक हो गए कि हमारी माँ जो हमेशा हमारी खुशियों में खुश रहती हैं आज हॉस्पिटल में है। माताजी के चेहरे पर खुशी देखने के लिए हमने हॉस्पिटल के प्रबन्धक से मदर्स डे मनाए जाने की अनुमति प्राप्त की और माताजी के कमरे को अति सुन्दर रूप से सजाया। हम सब भाई बहन तथा परिवार के सभी सदस्य वहाँ मौजूद थे। उस दिन हमारी माताजी के भतीजे-भतीजियाँ भी वहाँ पहुँच गये थे। मदर्स डे मनाए जाने का समस्त प्रबन्ध बच्चों ने ही किया था। सबकी सम्मान भरी निगाहें माताजी पर टिकी हुई थी और वहां पर सब मन ही मन उनके जल्दी ठीक हो जाने की प्रार्थना कर रहे थे। हम सबने माताजी के चरण छूकर आशीर्वाद प्राप्त किया। उस समय माताजी को प्रसन्न देखकर हम सभी प्रसन्न हो रहे थे। माताजी की स्थिति में थोड़े सुधार के बाद उन्हें हॉस्पिटल से डिस्चार्ज कर दिया गया। परन्तु लगभग 6 महीने बाद माताजी की तबीयत खराब होने पर फिर से हॉस्पिटल में एडमिट कराना पड़ा। उनकी हालत में सुधार नहीं हो पा रहा था। उनकी स्थिति को देखते हुए डॉक्टरों ने यह कहते हुए उन्हें डिस्चार्ज किया कि उन्हें घर ले जाना ही उचित रहेगा। 3 दिसम्बर, 2019 को हमारे परम पूजनीय माताजी का देवलोकगमन हो गया। हमारे मन में यह अफसोस बना रहेगा कि माताजी की इच्छा अनुसार मकान बनकर तैयार हो चुका था परन्तु वे एक दिन भी वहाँ नहीं रह पाए। 16 जनवरी, 2020 को हम नए मकान में शिफ्ट हुए। माताजी का कमरा देखते ही उनका ममतामयी स्वरूप मन की आँखों के सामने आ जाता है। हमारे माता-पिता हमारे दिल की गहराइयों में हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि उनका आशीर्वाद हम सब पर सदैव बना रहेगा।

'बिन बोले हर भाव समझ जाती है माँ,
आँसू पीकर भी खुशियां बरसाती है माँ।
शुक्रिया हो नहीं सकता कभी उसका अदा,
जाते-जाते भी दुआ जीने की दे जाती है माँ।'



वर्ष 1990 में सरोज सेतिया मास्टर विपुल संग अपने परम वंदनीय मम्मी-पापा के साथ मन्नत उतारने के लिए हरिद्वार में



वर्ष 2004 में सरोज सेतिया अपने जन्मदिन पर माताजी और पिताजी का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए



- सरोज सेतिया

शादी के बाद हर लड़की नए घर में नए-नए सपनों के साथ प्रवेश पाती है। मैंने भी बहुत से सपने संजो रखे थे। मैं ससुराल में सबसे छोटी बहू थी और मुझे घर का काम करना भी नहीं आता था। इसलिए मन में डर समाया हुआ था। परन्तु माताजी द्वारा कदम-कदम पर दिए जाने वाले सहारे और भजन देवी भाभीजी तथा प्रेम दीदी के प्रेमपूर्ण सहयोग के कारण सारा डर देखते ही देखते समाप्त हो गया। पिताजी का स्वभाव थोड़ा गर्म था। परन्तु माताजी और प्रेम दीदी ने मुझे लड्डू बनाना, पापड़ बनाना, तंदूर पर रोटी लगाना आदि सारे काम धीरे-धीरे सिखा दिए। बड़ी मुश्किल तो तब आई जब बहुत बड़ा घूंघट निकालना पड़ा। हमारे परिवार में घूंघट की प्रथा हमारे विवाह के पश्चात् भी लगभग 9 वर्षों तक चलती रही। घूंघट की प्रथा से छुटकारे के पल आज भी मुझे याद हैं। चाचा भगवान दास जी के बेटे अशोक सेतिया की शादी के बाद जब डोली आई तो नववधू पिंकी/सरोज की इच्छा का सम्मान करते हुए उसे घूंघट ना करने की छूट दी गई। उस समय माताजी-पिताजी और परिवार की सभी बहूएं वहां मौजूद थी। पिताजी ने सभी बहूओं का घूंघट उतरवाया। सभी बहूओं ने उनके आगे माथा टेककर आशीर्वाद प्राप्त किया। तब पिताजी ने कहा था 'शर्म तां अखां दी होंदी हे। घुंड विच की पिआ हे।' चाचा भगवानदास जी के यहाँ से जब हम घर आए तो पिताजी ने तीनों बेटों के सामने हँसते हुए कहा था- 'अज चंगा कम करके आया हां। अज सारी नूहां दे घुंड उतरवा दिते। ऐवें परेशान करदा रिहा, ते होंदा वी रिहा।'

विपुल और संकुल से पिताजी का बहुत लगाव था। जैतसर में मेरे बेटों के जन्म के पश्चात् पिताजी का स्वभाव शांत होता चला गया। वे मुझे कहा करते थे कि तू मेरी बहू नहीं बेटी है। बचपन में जब विपुल और संकुल झगड़ने लगते थे तो परेशानी में



वर्ष 1995 में सरोज सेतिया, विपुल और संकुल
माताजी-पिताजी की ममतामयी छाँव में



वर्ष 2013 में नितिन सेतिया के शुभ विवाह से पूर्व सरोज सेतिया
माताजी को आनन्दपूर्वक मेंहदी सेरेमनी स्थल की ओर ले जाती हुई

मेरी आँखें नम हो जाया करती थी। बच्चे तो लड़ाई-झगड़े के बाद आपस में जल्दी घुल-मिल जाया करते थे परन्तु बच्चों के झगड़े के कारण मुझे होने वाली परेशानी को देखकर पिताजी उनसे कहा करते थे, 'अपनी माँ को कभी मत रुलाना। वो हमारे घर की लक्ष्मी है।'

जब हम जयपुर आए तो पिताजी मुझे कहते कि आरती पूजा किया कर, तो मैं कहती कि गुरु महाराज का कोई चमत्कार देख लूं फिर करूंगी और चमत्कार हो ही गया। पिताजी आरती कर रहे थे तो चुपचाप जाकर उनके पीछे खड़ी हो गई। पिताजी मुस्कुरा दिए। सच पूछो तो मेरे अंदर भक्ति भाव उन्होंने ही जगाया। जब मैं मंदिर से आती तो वह बहुत खुश होकर कहते, "मेरा दिल कर रहा है तुझे एक नहीं दो बार आशीर्वाद दूँ।" उनके बारे में जितना लिखा जाए कम है। उनकी दान करने में बहुत आस्था थी। मुझसे कहते किसी से मत पूछना, न माताजी से और न महेन्द्र से, जो तेरा मन करे दान कर। जब मैं गंगानगर जाती तो आने पर पूछते कि क्या तू मेरी बहन से मिलकर आई है, कुछ लेकर भी गई थी? मैं कहती हाँ गई थी, फल और पैसे देकर आई हूँ। तो दोनों कहते अब हमें कोई चिंता नहीं। सरोज सब संभाल लेगी। पिताजी का अपने समधियों से भी बहुत प्यार था। मेरे पिताजी आते तो वे कहते कि बहुत सारी खीर बनाना। बादाम मुझे देना मैं डालूँगा। तुम दोनों कम बादाम डालती हो।

उन्होंने अपने बच्चों को भी बहुत अच्छे संस्कार दिए। भाई-बहनों में इतना प्यार आजकल के जमाने में कम ही देखने को मिलता है। माताजी का अपने भतीजे व भतीजियों से भी बहुत प्यार था। बाद में जब माताजी की तबीयत ठीक भी नहीं थी तो कहती कि मेरा मन करता है कि मैं राजेन्द्र के घर जाऊँ। तब मैं कहती ठीक हो जाओ फिर चले जाना। वो कभी किसी की बुराई नहीं करती थीं। दु:ख-सुख तो जीवन का हिस्सा है, लेकिन अपनों का साथ हो तो सभी दु:ख भूल जाते हैं। बहनों जैसी ननद और भाइयों जैसे जेठ मिले। सभी ने बहुत बढ़-चढ़कर प्यार, मान-सम्मान दिया। हर कदम पर अपनों का प्रेम और माताजी तथा पिताजी का आशीर्वाद ही हमारी शक्ति है।



वर्ष 2018 में विपुल सेतिया के विवाह पर माताजी अपनी
पौत्रवधू तृप्ति से आनंदपूर्वक गले मिलते हुए



वर्ष 2021 में संकुल सेतिया के विवाह पर श्रीमती सरोज सेतिया
और तृप्ति सेतिया प्रेमपूर्वक आनंद बांटते हुए

'हमारे भाई-भाभियों के प्रेम ने इस कहावत को ही झूठला दिया है - 'पेके होंदे माँवां नाल'



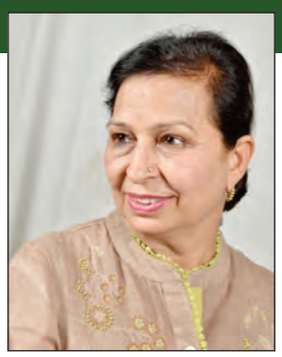
ज्ञानदेवी वधवा



कमलेश भटेजा



उषारानी बजाज



सुनीता रानी नागपाल

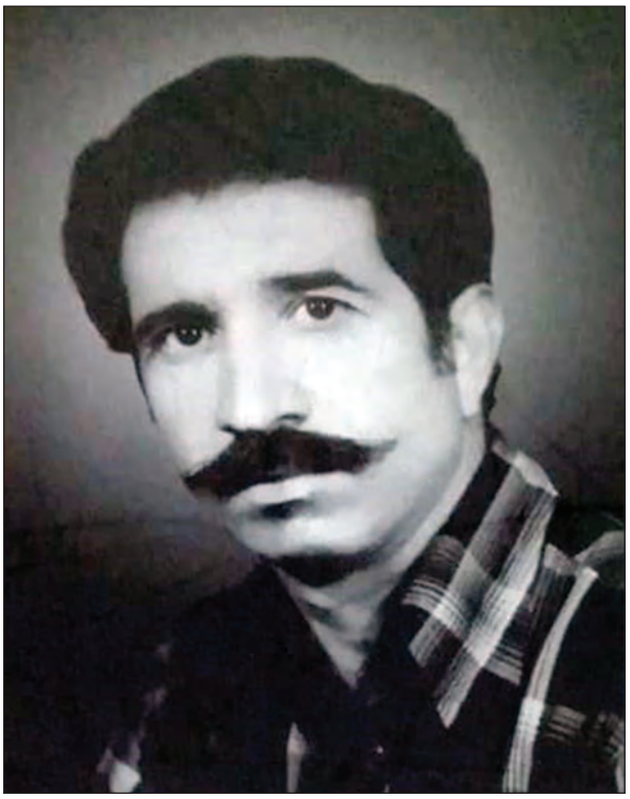
हमारे परम पूजनीय माता-पिता की पुण्य स्मृति में समर्पित स्मारिका 'अमर स्मृतियां' हमारे भाइयों के भावपूर्ण अथक प्रयास, श्रद्धा और कर्मठता को दर्शाती है। हम सभी बहनें माता-पिता के प्रति अपने भाइयों के समर्पण भाव को नमन करती हैं। माताजी-पिताजी के जीवन का हर कर्म अविस्मरणीय है। हमें गर्व है अपने भाइयों पर जिन्होंने माताजी और पिताजी को बहुत सम्मान दिया और उनके देवलोकगमन के बाद भी उन्हें परिवार के दिलों में बनाए रखा। कहने को तो हम अपने-अपने परिवार का ममतामयी तरीके से निर्वाह कर रहे हैं लेकिन भाई अर्जुनदास जी, भाई रवि जी और भाई महेन्द्र जी के आत्मिक प्यार ने तो हमें सरल-सहज प्रेम के झूले में झूला रखा है। हम बहनें कई बार आपस में बात करती हैं कि इतनी ममता का भण्डार भाइयों के पास आया कहाँ से। वैसे तो हम सब भाई-बहन सीनियर सिटीजन हो चुके हैं और उम्र के साथ सुख-दु:ख चलता रहता है लेकिन हमारी एक आवाज, एक इच्छा, एक तकलीफ मानो वायरलेस कनेक्शन का काम करती है। एक कहावत है कि 'पेके होंदे माँवां नाल' लेकिन हमारे भाई-भाभियों के प्रेम ने इस कहावत को ही झूठला दिया है। माता-पिता के जाने के बाद हमारा मायका आज भी अपार प्रेम की खूशबू से महक रहा है। हमें गर्व महसूस होता है कि हम ऐसे महान माता-पिता की संतान हैं व सर्वश्रेष्ठ भाइयों की बहनें हैं।

बातें तो बहुत है, क्या-क्या लिखें। जब भी होली-दिवाली, एकादशी, शादी की सालगिरह, जन्मदिन आदि के शुभअवसर आते हैं तो ढेरों उपहार लेकर प्यार बांटने पहुंच जाते हैं और हमें समझ ही नहीं आता है कि उन्हें बिठाएं कहाँ। हम दो बहनें जयपुर में ही रहती हैं और दो गंगानगर में। हमारा विवाह हुए लगभग 40-50 वर्ष हो गए हैं और हम आज भी भाइयों के पास रहने जाती हैं और बहुत प्रेमपूर्वक सम्मान पाती हैं। हम आज भी जब कभी भाई-भाभी के घर रहने के लिए जाती हैं तो वहां रात का खाना सभी भाई-भाभी और हम बहनें साथ-साथ ही खाते हैं। जब हम सभी मिल बैठते हैं तो बीते दिनों को खूब याद करते हैं और परिवार में बच्चों संग खुशियां बांटते हैं। हमारी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि हमारे भाई-भाभी सदैव स्वस्थ और प्रसन्न रहें और हमें हर जन्म में उनका साथ मिले।

'माता पिता की यादों और संस्कारों की अमूल्य धरोहर सदा हमारे साथ रहती है'



- ज्ञानदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री जगदीश राय वधवा
श्रीगंगानगर



स्व. श्री जगदीश राय वधवा

माता-पिता हमेशा तो हमारे साथ नहीं रहते। मगर यादों और संस्कारों की अमूल्य धरोहर सदा हमारे साथ रहती है। हम सात भाई-बहन हैं। मैं उनकी दूसरे नंबर की संतान हूँ। उन्होंने बड़े प्यार से मेरा नाम ज्ञानदेवी रखा। मुझे अपनी उँगली पकड़ कर चलना सिखाया। जब मैं छोटी सी थी तो माता-पिता जी मुझे अपने साथ गुरुद्वारा साहिब लेकर जाया करते थे और फिर मैं धीरे-धीरे उनके साथ जपजी साहब का पाठ करने लगी और वही आदत आज भी बरकरार है। सत्रह साल की ही उम्र में मेरी शादी श्रीगंगानगर के सम्पन्न घराने में श्री जगदीशराय वधवा के साथ हो गई। माताजी ने मुझे शिक्षा दी थी कि ससुराल को अपना परिवार समझ कर रहना। उनकी इसी शिक्षा से ससुराल में मैंने इज्जत कमाई। उनकी मेहमान नवाजी से उनके दामाद यानि कि मेरे पति बहुत खुश होते और वह भी उनका बहुत आदर करते।

कुछ समय बाद मैंने माताजी के साथ आनंदपुर आश्रम जाना शुरू किया। वहाँ से मुझे 'नाम' की दात मिली जो कि माताजी का दिया हुआ एक अनमोल तोहफा था। मेरे परम पूज्य गुरु ने बिना माँगे ही मेरी सारी इच्छाएँ पूरी की। मेरी दो बेटियाँ हैं, कंचन और शशी। कंचन की शादी हनुमानगढ़ टाउन में राजकुमार चिलाना से हुई। कंचन की एक लड़की सिल्की और एक लड़का अंकुश है। सिल्की की शादी पदमपुर के मनीष नागपाल से हुई और एक बहुत प्यारा आठ साल का बेटा शौर्य नागपाल है और अंकुश की शादी हनुमानगढ़ की शिवाली भूतना से हुई। शशी की शादी सूरतगढ़ के हेमराज भटेजा के साथ हुई। उसके दो बच्चे हैं रिया और कार्तिश। रिया की शादी जयपुर के रोहित वर्मा से हुई। उनका एक साल का बेटा मानविक वर्मा है। कार्तिश आठवीं कक्षा में पढ़ता है। शौर्य और मानविक के आने से मैं एक दर्जा और ऊपर हो गई।

मेरे माता-पिता जी हमेशा बच्चों की शादी, पढ़ाई या फिर जब कभी भी जरूरत पड़ी तो मजबूत सहारा बने। माताजी को सफाई बहुत पसंद थी। वह खुद को और घर को खूब सँवार कर रखती थी। माता-पिता जी कपड़े बहुत सलीके से पहनते थे। पिताजी को मिलजुलकर रहना बहुत अच्छा लगता था। वो जब भी काम के सिलसिले में गंगानगर आते तो उनका कोई न कोई भाई या

भतीजा जैसे चाचा भगवान दास, बसंत लाल, आसाराम, मुरारी लालजी और उनके भतीजे निरंजन या रमेश कोई और भी साथ होते। मैं उन सबके लिए उनकी पसंद का खाना बनाती तो वो खा कर कहते, "ज्ञान तेरे हाथ में स्वाद है।" वे स्पष्टवादी थे और प्रशंसा भी खुले मन से ही करते थे। उन्हें मिलना जुलना और मेहमान नवाजी करना अच्छा लगता था। वे अपने रिश्तेदारों को जैतसर आने का निमंत्रण देते रहते थे। जब माता-पिता श्रीगंगानगर आते तो यहाँ उनकी बहन ठाकरी देवी, संतोष, भांजी-भांजे गुरबख्श और प्रेम, मेरे चाचा रामदयाल जी, भतीजी सरोज और राज, माताजी की बहनें विशनी, भगवानी और भतीजे जयलाल चुग और अपने सभी सम्बन्धियों को संदेश भिजवा देते। कभी हम उन्हें मिलने चले जाते तो कभी वो आ जाते। इस तरह घर में एक खुशनुमा माहौल बन जाता था। जब माताजी यहाँ आती थी तो हम कुटिया की आरती में सुबह शाम इकट्ठे जाते और जब भी श्री आनंदपुर धाम जाते तो अपनी बहन, बेटे-बेटियों सबको संदेश भिजवा दिया करती थी कि जिसने भी चलना हो तैयारी कर ले। उनको सबके साथ जाना अच्छा लगता था। मैं तो उनके साथ कई बार श्री आनंदपुर धाम जा चुकी हूँ। एक बार तो मैं कंचन, शशी के साथ हरिद्वार पन्द्रह दिन लगाकर आई। हमारी माताजी को श्री गुरु महाराज के चरणों में लीन हुए 2 वर्ष हो गए हैं लेकिन वो हमसे एक पल के लिए भी अलग नहीं रही हैं। माताजी जीवन में गुरु भक्ति के मार्ग पर चले और हम सबको भी भक्ति मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने अपना पूरा जीवन मर्यादा से जिया और सभी को अच्छे कर्म करने की शिक्षा दी। माताजी ने सभी के साथ स्नेहपूर्वक व्यवहार किया। हमारे माता-पिता का जीवन हमें अच्छे कर्म करते हुए सद्गुरु का ध्यान करने की और उनकी आज्ञा में चलते रहने की प्रेरणा देता है। माताजी और पिताजी की यादों और संस्कारों की अमूल्य धरोहर सदैव हमारे साथ रहेगी।



अक्टूबर 2013 में नितिन सेतिया के विवाह के अवसर पर माताजी अपनी पुत्री ज्ञानदेवी एवं पुत्रवधू सरोज सेतिया के साथ



श्रीमती ज्ञानदेवी अपने आस्था के केन्द्र श्री आनंदपुर कुटिया, गंगानगर में



शिव मंदिर जवाहर नगर सेक्टर 4 जयपुर में भक्ति के रंग में रंगे माताजी के साथ सन् 2011 में श्रीमती ज्ञानदेवी वधवा भगवान नरसिंह की मूर्ति स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में

'हमारे माता-पिता हर छोटी-बड़ी खुशी को अपनों के साथ अलग अंदाज में बांटते थे'



-कमलेश भटेजा

'माँग लूं यह जन्नत कि फिर वही जहाँ मिले,
फिर वही गोद मिले, फिर वही छांव मिले।
कठिन राहों में भी सफ़र आसान सा लगता है,
ये मेरे माँ बाप की दुआओं का असर लगता है।'

माताजी का स्वभाव शांत व प्यार से परिपूर्ण था। वो अपने मायके और ससुराल में सभी परिवार वालों पर एक सा प्यार लुटाती रहीं। पिताजी खुशमिजाज स्वभाव के थे। उनके गुस्से में भी उनकी गहरी और ऊँची सोच झलकती थी। कई बार उन्होंने अपने बेटे-बेटियों की बजाय अपने भाई-बहनों और उनके बच्चों को आगे किया। मुझे एक घटना याद आ रही है जो सबको साथ लेकर खुशियाँ बाँटने का परिचय देती है। बात 1978 की है। रवि की सगाई करने सूरतगढ़ जाना था। माताजी और पिताजी को लगा कि



परम पूजनीय माताजी और पिताजी वर्ष 1998 में रक्षाबंधन के त्यौहार पर बहन शीला देवी एवं पुत्री कमलेश भटेजा के साथ

भगवानदास चाचाजी के परिवार में से भी किसी एक को साथ लेकर चलना चाहिए तो उन्होंने मुझसे बोला कि तुम्हारी जगह सरोज (चाचाजी की बेटी) को भेज देते हैं। ये उनकी परिवार को एक साथ लेकर चलने की गहरी सोच को दर्शाती है।

माताजी सौभाग्यवश 95 साल की उम्र तक हमारे साथ रहीं और ताउम्र अपने मायके का सुख लिया। उनका अपने भतीजे-भतीजियों, भांजे-भांजियों और उनके परिवारों के साथ अटूट और अनोखा प्यार था। पिताजी आज का काम कल पर नहीं टालते थे। हमेशा सेवा करने को आतुर रहते थे। उनके स्वभाव में था कि कोई उनके घर आए तो खाए-पिए बिना ना जाए और हमें भी यही सिखाते थे। वो हर छोटी-बड़ी खुशी को अपनों के साथ अलग अंदाज में बाँटते थे जैसे कि सुरेन्द्र कुमार के डिग्री लेकर आने के बाद घर पर पार्टी करना, बच्चों के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ तथा और भी छोटी बड़ी खुशियों को सेलिब्रेट करना। खुशियों को साझा करना तो आज घर की परम्परा ही बन गई है।

माताजी जहाँ भी जाते अपनी एक अलग छाप छोड़ते थे। वो कभी भी खाली नहीं बैठती थीं। अचार, साग, सब्जी वो हर कला



दिल से दिल तक जुड़ी माँ-बेटी

A mother and daughter's love is never separated.



कमलेश भटेजा और उनकी बेटियाँ एक-दूसरे में स्वयं को देखते हुए

में निपुण थीं। उनके दोहते, पोते उनकी बनाई चीजों के दीवाने थे। माताजी जो भी करना चाहतीं उनकी बहुएँ बहुत सहयोग करती थी। आज भी वो हमें बहनों जैसा प्यार व मान सम्मान दे रही हैं। माताजी पिताजी के साथ अनेकों अनुभव ऐसे हैं जिन्हें शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। सबसे मुख्य काम उन्होंने हम सातों बहन-भाइयों को प्यार की डोरी में पिरोया। उनके उच्च विचारों से हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। मेरी शादी भटेजा परिवार में हुई। मेरे सास-ससुर बहुत ही आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे। उन्होंने अपना सारा जीवन सेवाभाव में ही व्यतीत किया। वे सादा जीवन, उच्च विचार की शैली में ही विश्वास रखते थे।



माँ - हमारा सारा जहाँ

मेरी पाँच बेटियाँ व एक बेटा है। सभी अपने घरों में सुखी व समृद्ध जीवन बिता रहे हैं। संजू-विजय चराया, सुषमा-गजनीव अरोड़ा, पूजा-राजेश रस्सेक्ट, शालिनी-सुनील चुघ, शबनम-मुकेश अरोड़ा एवम् पुत्र रितिक। सभी बेटियों की शादी माता-पिताजी, भाइयों-भाभियों की सलाह, सहयोग और आशीर्वाद से हुई। आज सभी अपने-अपने घरों में खुश हैं। माताजी-पिताजी को शत्-शत् नमन!



वर्ष 2021 में संकुल सेतिया के सगाई समारोह में भाई-बहन खुशियाँ बरसाते हुए

'मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि इस परिवार का हिस्सा हूँ'



-दीवान चंद भटेजा

माताजी और पिताजी के प्यार और सम्मान में हर शब्द छोटा लगता है। मेरे माता पिताजी के जाने के बाद उन्होंने कभी भी मुझे उनकी कमी महसूस नहीं होने दी। वो महान शख्सियत के मालिक थे। माताजी जब भी अपना हाथ मेरे सिर पर रखती तो मुझे माँ के प्यार का अहसास होता था। मेरे कम बोलने की आदत के कारण मैं कभी भी उनसे नहीं कह पाया कि मेरे मन में उनके लिए कितना प्यार व सम्मान है। आज भी उनकी याद में मेरी आँखें नम हो जाती हैं। उन्होंने अच्छे संस्कारों से न केवल अपने बेटे-बेटियों को बल्कि उनके बच्चों को भी सरोबार किया। मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली मानता हूँ कि मैं इस परिवार का हिस्सा हूँ।



वर्ष 2009 में श्री दीवानचंद भटेजा-श्रीमती कमलेश भटेजा अपने विवाह की 40वीं वर्षगांठ पर माताजी, महेन्द्रकुमार-सरोजरानी व प्रेम सेतिया के साथ

'नानाजी और नानीजी ने जो मार्ग दिखाया है, मैंने वो जीवन में अपनाया है'



-रितिक भटेजा सुपुत्र श्री दीवान चन्द भटेजा

हमारे परमपूज्य नानाजी और नानीजी ने सदा प्रेम, परोपकार और परस्पर सहयोग पर आधारित जीवन जिया। नाना जी कहा करते थे कि समाज को सर्वश्रेष्ठ देने से ही हमारे पास सर्वश्रेष्ठ लौटकर आएगा। हमें नानीजी का भरपूर प्यार प्राप्त हुआ। उनकी दिव्यता और व्यवहार कुशलता ने हमें जीवन जीने का मार्ग दिखाया। उनकी याद आने पर आज भी आँखें नम हो जाती हैं। निम्नलिखित पंक्तियां नानीजी के बारे में मेरे दिल के भाव प्रकट करती हैं :

मेरी नानी की उंगुलियों में ज्यादा ताकत तो न थी,

मगर मेरा सिर झुका तो,

कांपते हाथों ने जमाने भर की दौलत दे दी।

वैसे रोता तो मैं बहुत कम हूं,

पर जब भी उनकी याद आती है, आंखें नम हो जाती हैं।

हम नानाजी और नानीजी को कभी भुला नहीं पाएंगे।

Parental love is truly selfless.

'छोटे मुँह से कैसे करूँ माँ की महिमा का बखान,
तेरी ममता के आगे तो झुकता है सारा जहान'



उषा रानी धर्मपत्नी स्व. श्री वेदप्रकाश बजाज
श्रीगंगानगर

श्रीमती उषा रानी इस परिवार की तीसरी बेटी है जिसकी शादी गंगानगर में स्व. श्रीमती ठाकरी देवी एवं स्व. शिवलाल बजाज के बेटे स्वर्गीय वेदप्रकाश बजाज से हुई। इनके बड़े बेटे-बहू हैं विकास और साक्षी बजाज जो कि श्रीगंगानगर में रहते हैं, जिनके होनहार बच्चे हैं मेहुल और सान्या। इनके छोटे बेटे-बहू हैं सन्नी और श्वेता बजाज जिनके मन्नत और अरमान दो प्यारे बच्चे हैं। इनका निवास जालौर में है। उषा रानी की बेटी है प्रीति और दामाद विरेन कामरा जी। इनके बच्चों के बहुत ही खूबसूरत नाम हैं 'दिया और अंश'। बहुत ही मिलनसार और शांत स्वभाव की हैं उषा। सभी बेटियों को अन्य गुणों के साथ-साथ सहनशीलता भी विरासत में ही मिली हुई है।

उषा रानी बजाज ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा है : "जब माता-पिता हमारे पास होते हैं तब हमें उनके होने का अहसास नहीं होता। पिता तो नीम के पेड़ जैसा होता है, जिसके पत्ते भले ही कड़वे हों पर असरदार होते हैं। मेरे पिताजी भी कुछ ऐसे ही थे, ऊपर से कड़क पर अन्दर से नर्म। पिताजी का बड़े बेटे अर्जुनदास, रवि कुमार और महेन्द्र, पौत्र विपुल, संकुल से विशेष लगाव रहा।

मेरी प्रिय माताजी की अलग ही पहचान थी। माताजी-पिताजी हमारे पहले गुरु थे। जो हमें अच्छे संस्कार मिले, उन्हीं की देन है। उन्होंने ही हमें सिखाया सही गलत की पहचान करना। सबको सुखी रखना बेशक हमारे हाथ में नहीं परन्तु किसी को दु:खी न करना तो हमारे हाथ में है। हमने उनसे सीखा कि जीवन जितना सादा रहेगा, तनाव उतना ही आधा रहेगा। वो हाथ सदा पवित्र होते हैं जो दुआ के साथ-साथ सेवा के लिए भी उठते हैं।

पिताजी का सेवा दान में बहुत विश्वास रहा। उनकी अच्छी बातें आज भी मन में बसी हैं। उसी आदर्श पर चलकर तीनों भाई राम, लक्ष्मण, भरत स्वरूप हैं। माता-पिता जी आज भी हमारे हृदय में बसते हैं। उनकी आध्यात्मिक सोच और परिवार को एक साथ बाँधे रखने की कला बच्चों में आज भी खुशबू की तरह फैली हुई है। आज भी हम सभी भाई-बहन एक ही सूत्र में बँधे हुए हैं। एक-दूसरे का ध्यान रखना, एक-दूसरे के काम आना, किसी बड़े फैसले के लिए एक-दूसरे से सलाह मशवरा करते रहना, ये सभी गुण माता-पिता के ही दिए हुए हैं। माँ तो ऐसा अनमोल रत्न है जिसके आगे देवता भी झुक जाते हैं।



माँ-बेटी : एक दूसरे का सुकून

जैसे यशोदा कृष्ण, वैसा ही अनमोल रिश्ता रहा बड़े भाई साहब अर्जुनदास जी के साथ माताजी का। हमारी माताजी घर को सहेज कर रखने के लिए बहुत छोटे-छोटे नुस्खे देती रहती। उन्हें खाली बैठना बिल्कुल पसंद नहीं था। बच्चों की परवरिश करना उन्हीं से ही सीखा। सफाई तो उनके जीवन का शृंगार थी। पिताजी ने हमेशा मुश्किलों का साहसपूर्वक सामना करना सिखाया।

सरोज भाभी ने माताजी जैसा ही प्यार दिया है। उनका हर साल बुलाना, मेथी के लड्डू देना, अचार डालकर देना आज भी याद है। चाहे अपने घर में सब कुछ हो, लेकिन कहते हैं ना कि बेटी को तो पीहर के साग की भी भूख होती है। परम पूजनीय माता-पिता को शत्-शत् प्रणाम!

'ये जीवन की तपती धूप है, वो तो ठंडी छांव होते हैं, स्नेह से भरे माँ-बाप धरती पर भगवान् होते हैं'



-सुनीता नागपाल
धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र कुमार नागपाल, जयपुर

मैं जब भी माताजी-पिताजी के बारे में लिखने बैठती हूँ तो मन प्यार की अनुभूति से भर जाता है और आँखों से आँसू बहने लगते हैं और बिना लिखे ही उठ जाती हूँ। भगवान् का ये कैसा नियम है कि ये सुखद अहसास हमसे छिन गया है। वैसे तो जो इस दुनिया में आया है, उसका जाना तो निश्चित है। लेकिन जो इस तरह की मधुर स्मृतियों के साथ जीवन जीता है, वह अपनी छाप परिवार के दिलों पर छोड़ जाता है। माताजी-पिताजी दोनों बहुत सुन्दर सुडौल शरीर के थे और समाज सेवा में अपना विशेष योगदान देते थे। यही गुण उनके बच्चों में भी देखने को मिलते हैं।



वर्ष 2008 में सुनीता नागपाल अपने विवाह की 25वीं सालगिरह पर माताजी के साथ आनंद बांटते हुए



वर्ष 2017 में विपुल सेतिया के विवाह के शुभ अवसर पर सुनीता नागपाल माताजी के साथ खुशियों के पल शेयर करते हुए

उनकी धार्मिक प्रवृत्ति तथा सेवा भावना ने परिवार के सदस्यों को अच्छे संस्कार दिए और कर्तव्य निष्ठ बनाया। उनकी सूझबूझ ने परिवार को एकसूत्र में पिरोए रखा। पिताजी थोड़े गरम मिजाज के थे लेकिन उनके गुस्से और नाराजगी में सामने वाले का उपकार ही छुपा होता था। बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने में उनकी विशेष भूमिका रही। अर्जुन भैया को करीब चौदह वर्ष की उम्र में ही स्वतंत्र व्यापार करवाया और फिर छोटे भाइयों को।

परिवार के हर निर्णय में माताजी का विशेष योगदान रहता था। उन्होंने पिताजी के गुस्से को कभी बड़ा होने ही नहीं दिया। माताजी अपने शांत स्वभाव से हर समस्या को सुलझा लेती थीं। एक बार की बात है जब मैं बहुत छोटी थी तो पिताजी ने कुछ गरीब लड़कियों के विवाह के लिए घर के सामने ही टेंट लगवाया। बारात का स्वागत किया और यथासंभव गिफ्ट भी दिए। उन्होंने बहुत अच्छे ढंग से इस कार्य को पूर्ण किया। एक सुखद अनुभव याद आता है। जब कभी ग्रहण लगता तो पिताजी उसके बाद गरीबों में अनाज बांटने के लिए घर के बाहर अनाज की बोरियां रखवा देते। संस्कारों की बात तो ये कि पिताजी अपने भाइयों के बच्चों को अपने बच्चों से आगे रखते थे। उनकी सगाई जैसे प्रोग्राम भी अपने ही घर पर किए। उनका समधियों से भी विशेष प्रेम था। वो चाचाजी के और अपने समधियों को बुलाकर उनका आदर-सत्कार करते। इस तरह पारिवारिक जिम्मेदारियों का आनंदपूर्वक निर्वाह करते। पिताजी का करीब 70 वर्ष की उम्र में जयपुर सेटल होना उनके लिए बहुत बड़ा चैलेंज था। जिन्दगी की फिर से नई शुरुआत थी।

जयपुर में सामाजिक जीवन जीते हुए वे अपने बच्चों के साथ खुश रहे।

माताजी ने रिश्तेदारों के यहाँ जाने और उन्हें अपने यहाँ बुलाने का खूब आनंद उठाया। जयपुर आने के बाद उनका सूर्योदय से पूर्व उठना, रोज सत्संग के लिए आनंदपुर कुटिया जाना, घूमने जाना, रेडियो सुनना उनकी दिनचर्या का हिस्सा थे। जब पिताजी घर रहते तो रेडियो उनके साथ ही रहता। वो अधिकतर आकाशवाणी से प्रस्तुत समाचार सुनते थे। पिताजी का आदर्श जीवन हमारे लिए प्रेरणा स्रोत है। वो जब भी घर से निकलते तो दो व्यक्तियों के लिए घर का बना खाना लेकर जाते। इस कार्य में सरोज भाभी का विशेष योगदान था। वो पिताजी के बिना कहे ही ताजी रोटी सब्जी पैक कर देती। मैंने सदैव पिताजी को जरूरतमंदों की मदद करते ही देखा। पिताजी बच्चों को पैसा जमा करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए पॉकेट मनी दिया करते थे। मुझे तो वो रानाजी कहकर ही बुलाते थे।

माताजी-पिताजी का मेरे साथ विशेष प्यार था शायद इसलिए कि मैं घर में सबसे छोटी थी। माताजी तो मुझे अपने हाथ की कड़छी कहती थीं। माताजी के बारे में तो इतनी यादें हैं कि कलम से लिखी भी न जाएं। मेरी माँ तो जगत माँ थी। उनका नित्यक्रम सुबह पाँच बजे से लेकर शाम तक लगभग फिक्सड था। समाज का कोई भी कार्य आता तो शारीरिक श्रम से लेकर आर्थिक, धार्मिक जो भी बन पड़ता अच्छे से अच्छा करती। पहले कुटुम्ब तो बड़े होते ही थे। चाचा ताऊ का प्रेमपूर्ण बड़ा परिवार और उनके मुस्कुराते चेहरों ने सबका मन जीता हुआ था। माताजी की सरलता, सहजता और अतिथि सत्कार की भावना को हम भगवान की बख्शीश मानते हैं। इसी विनम्र स्वभाव ने पहले कुटुम्ब फिर



वर्ष 1992 में संकुल की छठी के शुभ अवसर पर हमारे माता-पिता रितिक भटेजा और सुनीता नागपाल आनंद मनाते हुए

परिवार को एक सूत्र में पिरोए रखा। जब भी किसी संत फकीर का आना होता तो माताजी और पिताजी उनका हार्दिक सम्मान करते। वही भाव बच्चों में भी बना हुआ है। भाई अर्जुनदास जी ने तो बड़ा होने के कारण इस कार्य को बहुत बढ़-चढ़कर किया। उनका नाम माता-पिता के साथ सदैव जुड़ा रहा है। प्रारम्भ में जयपुर हमारे माता-पिता की पहचान अर्जुन की माँ और अर्जुन के पिता के रूप में होने लगी। माता-पिता के संस्कारों से प्रेरित होकर उनकी बेटियों ने भी अपने-अपने घर में बखूबी इज्जत पाई। उनका स्वभाव तो हर बच्चे में ही दिखता है। माताजी की जीवन शैली में एक अदा थी- अच्छा पहनना, कपड़ों का रखरखाव, अच्छा चयन और अच्छा खाना। लियाकत शब्द उन पर जंचता था। शारीरिक स्वास्थ्य की बात करें तो वे अपनी सेहत का विशेष ध्यान रखती। खाने-पीने में विशेष संतुलन था जो कि हमें हमारी जीवन शैली में उनकी याद दिलाता रहता है। उन्होंने अपना स्वस्थ शरीर ही भगवान को लौटाया।



वर्ष 2008 में राजेन्द्र नागपाल-सुनीता नागपाल अपनी 25वीं शादी की सालगिरह के आनंदपूर्ण क्षणों में माताजी तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ

An anniversary is a time to celebrate the joys of today and the hopes of tomorrow.



'माता-पिता के प्रेम को कभी भुलाया नहीं जा सकता'

-राजेन्द्र कुमार नागपाल

माता-पिता के प्रेम को कभी भुलाया नहीं जा सकता। मैं बहुत ही भाग्यशाली हूं जिसे पहले अपने मम्मी-बाऊजी और फिर माताजी-पिताजी का पूरा प्यार मिला। पिताजी मुझे 'जंवाई राजा' कहकर बुलाया करते थे। उनके प्रेमपूर्ण व्यवहार से मन श्रद्धा से ओत प्रोत हो जाता था। उनकी सलाह हमेशा ही किसी कहावत व किस्से के साथ पूरी होती थी। उनको जीवन का गहरा अनुभव था। लाड़ प्यार से उन द्वारा की जाने वाली आवभगत को मैं कभी भूल नहीं सकता।

माताजी के हाथ के खाने का स्वाद आज भी मैं बच्चों को बताता हूँ। उनकी अच्छी सोच तो उनके हर भाव में नजर आती थी। उनका घर पर आने वाले मेहमानों का आदर सत्कार करने और उन्हें खिलाने पिलाने का तरीका ही मन को मोह लेने वाला था। जब तक मुट्ठी भर ड्राई फ्रूट्स नहीं खिला लेतीं उनका मन नहीं भरता था। अब



माताजी के साथ श्री राजेन्द्र कुमार नागपाल



वर्ष 1992 में मोती डूंगरी गणेश मंदिर जयपुर के सामने दुर्गामाता मंदिर में सेतिया परिवार की ओर से स्थापित की गई शेरों वाली दुर्गा माता की मूर्ति

तो माता-पिताजी की याद ही शेष है। लेकिन सेतिया परिवार में भाई-भाभियों और बच्चों का प्रेम हमारे प्रति वैसा ही बना हुआ है।

इस परिवार की ओर से जितना प्यार और सम्मान मैंने प्राप्त किया है शायद ही किसी को नसीब हुआ होगा। स्वर्गीय माता-पिताजी को शत-शत् नमन! मुझे विश्वास है कि हमें उनका आशीर्वाद सदैव प्राप्त होता रहेगा।



मोती डूंगरी गणेश मंदिर जयपुर के सामने दुर्गामाता मंदिर में सेतिया परिवार की ओर से देवी दुर्गा की मूर्ति स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर वर्ष 1992 में माताजी और पिताजी के साथ श्रीमती सुनीता नागपाल एवं श्री राजेन्द्र कुमार नागपाल यज्ञ करते हुए

'माँ और दादी धरती पर जन्नत हैं और बाप-दादा सा साथा इस जहाँ में कहीं नहीं मिलता'



- सुरेन्द्र कुमार सेतिया



हम अपने दादाजी को पिताजी कहा करते थे तथा दादीजी को माताजी कहा करते थे। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं अपने दादाजी-दादीजी का पहला पोता बना। मेरी माताजी (दादी माँ) कहती थीं कि बचपन में मैं बहुत सुंदर था। मेरे पिताजी (दादाजी) मुझे प्यार से अपनी पीठ पर बिठाते थे और मेरी उंगली पकड़कर घुमाने ले जाते थे। मुझे हर सुबह प्रार्थना में शामिल करना, स्कूल ले जाना, स्कूल से वापिस लाना तथा दुकान पर ले जाना उनकी दैनिक दिनचर्या के महत्त्वपूर्ण कार्य थे।

मेरी दादी माँ मुझसे बहुत प्यार करती थीं और मेरे लिए दूध-दही अलग से रखती थीं। अंतिम दिनों में जब वो बीमार थीं तो मैं रोज अस्पताल जाया करता था और वो मुझसे दिल की बातें किया करती थीं। मेरी भी उनसे दिल की हर बात हुआ करती थी। वो मेरा हाथ पकड़े रखती थीं। मैं अपनी दादी माँ का प्यार कभी भूल नहीं सकता।

जिन्दगी में जो बुजुर्गों का हाथ पकड़ कर रखते हैं उन्हें किसी के पैर पकड़ने की जरूरत नहीं पड़ती। जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था तो पिताजी मेरे गुरु बन गए। वे मेरी हर बात का ध्यान रखते थे। जब मैं रुपये गिनता, गड्डी बनाता तो ये देखकर वो मुस्कुराते रहते, इससे मुझे मन ही मन आभास होता कि वे मुझसे खुश हैं। पिताजी ने मुझे बहुत कुछ सिखाया और वह मेरे मार्गदर्शक बन गये। मेरे बाऊजी और चाचा महेन्द्र कुमार सेतिया ने व्यापार के सारे गुण कूट-कूट कर मुझमें भरे और मुझे बहुत अच्छी तरह तराशा। आज जो मिली हमें शौहरत है, वो माताजी, पिताजी तथा मम्मी-बाऊजी की बदौलत है।



सुरेन्द्र कुमार सेतिया - प्रेरणा सेतिया
सदा साथ-साथ

परम पूजनीय माताजी और पिताजी में इतने गुण थे कि उनका वर्णन करना अत्यधिक कठिन है। सच पूछो तो उनकी महिमा में लिखने के लिए मेरे पास पर्याप्त शब्द ही नहीं हैं। आप बहुत दयावान, प्रतिभावान व आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे। आप हमेशा अपनी जुबान के धनी रहें। आपने हमें कड़ी मेहनत और बचत करना सिखाया। आपसे हमें अति सुंदर संस्कार मिले जो कि हमारे आचरण की नींव है। घर आए मेहमानों का आदर सत्कार करना आपका विशेष गुण था। आप द्वारा परिवार को आपस में जोड़कर रखना, सबको साथ लेकर चलना, सबकी बात ध्यान से सुनना और उचित राय मशवरा देना मुझे आज तक याद है। हम सदैव आप द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने का प्रयास करते हैं। आपका आशीर्वाद सदा हमारे साथ रहे, यही हमारी कामना है।

Grandparents create memories that the heart holds forever.

'ईश्वर की अपार कृपा से परिवार के सभी सदस्य हर रिश्ते को दिल से ऐसे निभा रहे हैं कि जीवन अनंत आनंद उत्सव बन चुका है'



- प्रेरणा सेतिया

जब 1989 में मेरा विवाह हुआ तब व्यवसाय के सिलसिले में हमारा सेतिया परिवार जयपुर शिफ्ट होने लगा था। परन्तु पुराने व्यवसाय के संचालन के लिए हम विवाह के बाद भी लगभग 15 वर्ष तक जैतसर में ही रहे। हम सबसे आखिर 2004 में जैतसर से जयपुर आए।

श्रीगंगानगर से शादी के बाद जब मैं जैतसर आई तो प्रारम्भ में थोड़ा अजीब सा लगा। अक्सर ऐसा होता है कि पहली बहू से सभी की अपेक्षाएं कुछ ज्यादा ही होती हैं और संयुक्त परिवार। पहले मन में थोड़ा डर सा था लेकिन जल्दी ही सब घुल-मिल गए। माताजी, पिताजी, मम्मी और बाऊजी का इतना प्यार और अपनत्व मिला कि मायके जाने का ख्याल ही नहीं आता था। सिर्फ विशेष मौकों पर ही जाना होता। घर का माहौल बहुत ही बढ़िया। सबका आपस में प्यार, कहीं कोई कमी नहीं थी। माताजी तो हर समय मेरे खाने-पीने का ध्यान रखती थीं। मेरे दोनों बच्चों को भी उनका बहुत लाड़-प्यार मिला। जब पिताजी घर पर होते तो माहौल को खुशनुमा बना कर रखते।

घर में अक्सर मेहमानों का आना-जाना लगा ही रहता था। लेकिन सबका खुले दिल से स्वागत किया जाता था। बिना खाए पिए किसी को जाने ही नहीं दिया जाता था। गाय-भैंसों के होने के कारण घर में दूध, दही, मक्खन, घी की कोई कमी नहीं रहती थी। उन दिनों लस्सी लेने वाले भी आते रहते थे। किसी को भी माताजी खाली नहीं जाने देती थीं। माताजी की एक खास बात मुझे बहुत अच्छी लगती। खुद भी अच्छे से तैयार होना और सभी बहू-बेटियों को भी हमेशा प्रोत्साहित करना। उन दिनों अपनेपन की भावना इतनी प्रबल थी कि दूर-दूर से रिश्तेदार मिलने आते और हमारे परिवार से भी हर सुख-दु:ख में शामिल होने कोई न कोई जरूर जाता। पहले पहल तो मुझे कई रिश्ते समझ ही नहीं आते थे लेकिन बाद में धीरे-धीरे पता चलता गया। माताजी सेवाभाव, भक्ति भाव और बहुत हिम्मत वाली थीं। पिताजी के परलोक गमन के पश्चात् उन्होंने जल्दी ही अपने आपको संभाल लिया। उनका मानना था कि अगर वो टूट गई तो परिवार को हौसला कौन देगा।



वर्ष 2018 में समीधा नागपाल के विवाह से पूर्व यज्ञ के आयोजन समारोह में शिवाली, शालिनी एवं प्रेरणा माता जी के उमंगपूर्ण सान्निध्य में

माताजी और पिताजी का जीवन सचमुच ही अनुकरणीय और बेमिसाल था। उन्हीं के दिए संस्कार परिवार के हर व्यक्ति में झलकते हैं। इतनी ऊंचाइयों तक पहुंचने के बाद भी लेशमात्र अहंकार नहीं। माताजी का मायके से भी बहुत लगाव रहा। जब भी मौका मिलता सबको मिलने जातीं और वो भी आते। माताजी की प्रिय परपोती के शुभ विवाह के समय हमारा मन रह-रहकर कह रहा था- काश आज माताजी हमारे साथ होती। परन्तु हमें विश्वास है कि उनका आशीर्वाद हमें सदैव प्राप्त होता रहेगा। ईश्वर की अपार कृपा से परिवार के सभी सदस्य हर रिश्ते को दिल से ऐसे निभा रहे हैं कि जीवन अनंत आनंद उत्सव बन चुका है:

मैं यहाँ कब बहू से बेटी बन गई, पता न चला,
कब सबकी चहेती बन गई पता न चला,
बीत गए बरसों, लगें ज्यों कल की बात है,
बिताए कितने सावन, पता न चला।

Nothing is more wonderful than the love and guidance given by grandparents.

'Unconditional love is rarely given by anyone except grandparents and great-grandparents'



- Shivangi Bhatia

Dear Mataji & Pitaji,

You were the living storyteller of the entire family and a wonderful combination of warmth & kindness, laughter & love. Between the earth & the sky above, nothing can ever match your love.

We will always cherish the moments shared together & how you greeted everyone with a tight hug and a kiss. You always made us feel, you were just waiting to see us all day and then your day was complete. We are grateful to have shared this life with you and nurtured under your guidance. Unconditional love is rarely given by anyone except grandparents and great-grandparents. The best educators are the grandparents. I must say that there is nothing more wonderful than the love and guidance given to grandchildren. We are lucky enough that we enjoyed the love and blessings of our great-grandparents.



अक्टूबर 2021 में अपने विवाह पश्चात शिवांगी परम प्रसन्न दादा-दादी और मम्मी-पापा के साथ

Grandparents are founders of loving legacy and the keepers of family traditions that linger in cherlshed memories. It is rightly said that our parents give us life, but our grandparents give us a sense of who we are and where we come from. Dear Mataji and Pitaji, you helped us understand our roots. We always looked forward to meeting you. There are no goodbyes for us. Wherever you are, you will always be in our hearts. Lots of love from your great-granddaughter, Shivangi Bhatia



Newly weds Ujjwal Bhatia and wife Shivangi Bhatia standing cheerfully together.

Our great-grandparents are our greatest blessings.

'सेतिया परिवार का आपसी स्नेह आदर-सत्कार एवं सूझबूझ अनुकरणीय हैं'



Smt. Jyoti Bhatia - Shri Vipan Bhatia
(Parents-in-law of Shivangi)

सेतिया परिवार से हमारा रिश्ता जुड़ते ही हमें ऐसे प्रतीत हुआ जैसे हम कई वर्षों से इन्हें जानते हों। उनके प्रेमभाव और विनम्रता को हम कभी भी भुला नहीं पाएंगे। श्रीमान गिरधारी लाल जी सेतिया और श्रीमती लाजवंती देवी सेतिया द्वारा रोपित संस्कारों का उनके परिवारजन पूर्णतया पालन करते हुए उनका नाम रोशन कर रहे हैं। उनकी याद को हमेशा जीवंत रखने हेतु इस स्मारिका का प्रकाशन उनके प्रति उनके अनंत लगाव को दर्शाता है। हमारा मानना है कि सेतिया परिवार की एकता और माँ-बाप के आशीर्वाद के फलस्वरूप ही वे अपने व्यवसाय में उत्तरोत्तर बढ़ोतरी कर रहे हैं।

सेतिया परिवार ऐसा आदर्श परिवार है जिसके मर्यादित सदस्यों में परस्पर प्रेम की प्रबल भावना है। वर्तमान में एकाकी परिवारों का चलन चरम सीमा पर है परन्तु जयपुर का यह सेतिया परिवार श्रीमती भजन देवी एवं श्री अर्जुनदास जी (जिन्हें परिवार का प्रत्येक सदस्य स्नेह से मम्मी और बाऊजी कहकर बुलाता है) के कुशल मार्गदर्शन एवं सान्निध्य में प्रेमपूर्वक साथ-साथ विकास पथ पर अग्रसर हैं।



स्टेज पर दुल्हा-दुल्हन उज्जवल भाटिया-शिवांगी परिवार के सदस्यों के साथ



उज्जवल भाटिया-शिवांगी मम्मी-पापा और बहन कावेरी के साथ

हमारे भाटिया परिवार के सेतिया परिवार के साथ 20 फरवरी, 2021 के शुभ दिन जयपुर में सम्बन्ध जुड़े। संयोगवश यही शुभ दिन हमारे बेटे उज्जवल का जन्मदिवस है। इस दिन हमारे बेटे उज्जवल और शिवांगी सुपुत्री श्रीमती प्रेरणा एवं श्री सुरेन्द्र कुमार सेतिया की 'रोका सैरेमनी' जयपुर में उमंग के साथ सम्पन्न हुई। प्रिय शिवांगी बाऊजी की सबसे बड़ी पौत्री है। सेतिया परिवार का आपसी स्नेह, आदर-सत्कार एवं सूझ-बूझ अनुकरणीय हैं। हमारा सौभाग्य है कि हमारे सम्बन्ध ऐसे आदर्श परिवार से जुड़े हैं जहाँ प्रत्येक सदस्य के व्यवहार और विचारों में सुन्दर संस्कार झलकते हैं। परिवार का प्रत्येक सदस्य अपना लगता है। परिवार के सदस्य आतिथ्य में बेमिसाल हैं। हम भाटिया परिवार की ओर से विशेष रूप से उल्लेख करना चाहेंगे उज्जवल और शिवांगी के 14 अक्टूबर, 2021 में हुए विवाह संस्कार के दौरान आफिस स्टाफ की भूमिका का जो कि सच में सुपर से भी बहुत ऊपर थी। जियो सेतिया परिवार! ईश्वर आपको सदैव स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रखें एवं दीर्घायु प्रदान करें। खुश रहिए, खुशियाँ बिखेरिए !

प्रेम वह संगीत है जो पारिवारिक जीवन को मधुर बनाता है।

'Our parents give us life but our grandparents give us a sense of who we are….'



- Shubham Setia



अक्टूबर 2021 में शुभम सेतिया अपने मम्मी-पापा तथा बहन-बहनोई के साथ

I must say that grandparents are like a little bit parent, teacher as well as friend. It's rightly said that our parents give us life, but our grandparents give us a sense of who we are and where we come from. Dear Mataji and Pitaji, you helped me understand my roots and do things with that understanding.



I always looked forward to meeting you. You made me feel important and showered me with pure love. There are no goodbyes for us. Wherever you are, you will always be in our hearts. You were someone with silver in hair and gold in heart.

I read somewhere, but it is very much true that grandparents are a family's strongest foundation. They are the founders of loving legacy and the keepers of family traditions that linger on in cherished memories.

Lots of love from your great-grandson, Shubham Setia.

Shabham Setia graduated in MBA in Family Managed Business from S. P. Jain Institute of Management & Research, Mumbai. He was part of the 2019-2020 batch. It was an amazing experience for him to be part of one of the best B-schools in india.

Some of the world's best educators are great-grandparents.

'हम जब भी मिले उनके अपनेपन की भावना ने हमारे मन को छू लिया'



-Smt. and Shri Jagdish Munjral
USA

स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया से हम जब भी मिले उनके अपनेपन की भावना ने हमारे मन को छू लिया। माताजी ने प्रेमपूर्ण व्यवहार से रिश्तों की मधुरता को सदैव बनाए रखा। कुछ पंक्तियां माँ-बाप के लिए :

इस दुनिया में स्वार्थ बहुत है,
किस दुनिया से आई 'माँ।'
दुनिया के सब रिश्ते ठंडे,
ममता में मुस्काई 'माँ।'
जब भी कोई रिश्ते उधड़े,
करती है तुरपाई 'माँ।'
बाबूजी हैं खूब कमाते,
लेकिन बरकत लाई 'माँ।'
बाबूजी थे सख्त मगर,
माखन और मलाई 'माँ।'
सेवा धर्म के पथ पर चलकर,
सब तीरथ हो आई 'माँ।'

'माताजी और पिताजी की सरलता, विनम्रता तथा समाज सेवा की भावना को कभी भुलाया नहीं जा सकता'



अश्वनी कुक्कड़ - नीलम कुक्कड़

परमपूज्य माताजी और पिताजी आकर्षक व्यक्तित्व के धनी होने के साथ सरल स्वभाव के थे। माताजी बहुत प्यार और अपनेपन की भावना से मिला करती थी। हम उन्हें अंकल जी और आंटी जी कहा करते थे पर उनके प्यार और अपनेपन से कब माताजी और पिताजी बन गए पता ही नहीं चला। जब भी मिलते थे हमेशा मुस्कुराते हुए मिलते थे। अपने परिवार को उन्होंने प्रेमपूर्वक एक सूत्र में बांध कर संयुक्त परिवार के संस्कार दिए जो आज भी कायम हैं।

माताजी धार्मिक विचारों वाली महिला थीं। पाठ-पूजा में उनका बहुत विश्वास था। वह सुबह-शाम कुटिया जाया करती थीं। जैतसर की श्री आनंदपुर कुटिया को सुन्दर स्वरूप प्रदान करने में माताजी और पिताजी का बहुत योगदान था।

माताजी अत्यधिक विनम्र, दयावान और शांत स्वभाव की महिला थीं। जैतसर के लोग आज भी माताजी और पिताजी को सम्मानपूर्वक याद करते हैं। उनकी सरलता, विनम्रता तथा समाज सेवा की भावना को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

'दादाजी ने अपने परिवार को एकता के सूत्र में बाँधकर संयुक्त परिवार का उदाहरण प्रस्तुत किया'



सचिन मुंजराल-सोनाली मुंजराल
(स्व. श्री बनवारी लाल मुंजराल-श्रीमती कृष्णा मुंजराल के सुपुत्र-पुत्रवधू)

मैं स्व. श्री गिरधारी लाल जी का आदरपूर्वक 'दादाजी' के नाम से उल्लेख कर रहा हूँ। उनके परिवार से हमारा सम्बन्ध 1988 में स्थापित हुआ था। मेरी बड़ी बहन प्रेरणा का विवाह इनके बड़े सुपौत्र श्री सुरेन्द्र सेतिया सुपुत्र श्री अर्जुनदास जी सेतिया से हुआ। दादाजी का स्वभाव सेवाभाव से ओतप्रोत था। मुझे याद आ रहा है, जब मैं पिताजी के साथ जैतसर जाता था तो सबसे पहले हम बाजार में किराना दुकान पर दादाजी के पास जाते थे। दादाजी बहुत प्यार से मुझे अपने पास बिठाकर कहते थे कि आप लोग समधि के साथ-साथ मेरे पारिवारिक सदस्य भी हो। यही अपनापन मैंने पूरे सेतिया परिवार में सदा देखा है। दादाजी ने अपने परिवार को एकता के सूत्र में बाँधकर जो संयुक्त परिवार का उदाहरण प्रस्तुत किया वही वट वृक्ष रूपी सेतिया परिवार आज जयपुर में सफलतापूर्वक उन्हीं के नाम से आगे बढ़ रहा है। दादाजी एक दूरदर्शी व्यक्तित्व की मिसाल के रूप में जाने जाते हैं। उनकी इसी विरासत को तीन पुत्रों व चार पुत्रियों ने बहुत ही श्रद्धापूर्वक आगे बढ़ाया है। दादाजी के एक कृत्य ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। उन्होंने बड़े सुपौत्र श्री सुरेन्द्र सेतिया की काबलियत, कर्मठता, ईमानदारी व सेवाभाव को देखते हुए उन्हें अपने चौथे पुत्र का दर्जा दिया। यह उदाहरण एक कुशल प्रशासक व एक नेकदिल इंसान ही प्रस्तुत कर सकता है। हम नतमस्तक होकर परम पूजनीय दादाजी और दादीजी को नमन करते हैं।

-सचिन मुंजराल



स्व. श्री बनवारी लाल मुंजराल-श्रीमती कृष्णा मुंजराल

'हम दादा जी को पिताजी कहा करते थे और पापा को बाऊजी कहकर बुलाते हैं। यह मेरा परम सौभाग्य हैं कि 'मुझे एक नहीं दो-दो पिताश्री का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ'





- राजेन्द्र सेतिया

दादा पोते से बढ़कर प्यारा रिश्ता कोई और नहीं हो सकता। इस रिश्ते को मैंने बेहद नजदीक से महसूस किया है। वो दादाजी ही थे जिन्होंने मेरा हाथ थामकर मुझे कंधों पर बिठाया था। उनके वजूद के सामने छत तो बहुत छोटी है, आकाश सा वजूद था उनका। दादाजी अनुशासन पसंद, दयालु एवम् महान व्यक्तित्व के धनी थे। मैं यकीन से कह सकता हूँ कि उनके बारे में जितना भी लिखा जाए, कम ही होगा। उनकी हर बात में कोई न कोई गहरा संदेश छिपा होता था। सौभाग्यवश मेरा बचपन उनके बहुत करीब रहते हुए बीता। इसलिए मेरा यह कहना गलत नहीं होगा कि दादाजी के साथ बिताए गए बहुमूल्य वर्ष केवल इसलिए कीमती नहीं थे कि वो मेरे दादाजी थे, बल्कि इसलिए भी कि वो मेरे गुरु, सखा और सबसे बढ़कर मार्गदर्शक थे। हम दादा जी को पिताजी कहा करते थे और पापा को बाऊजी कहकर बुलाते हैं। यह मेरा परम सौभाग्य हैं कि 'मुझे एक नहीं दो-दो पिताश्री का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ'।

पिताजी मुझे अपना बीरबल कहा करते थे क्योंकि मैं उन्हें अकबर बीरबल की कहानियाँ पढ़कर सुनाया करता था। वो मुझे उन कहानियों का अर्थ समझाया करते थे। उन द्वारा दिए गए उदाहरणों का मेरे जीवन निर्माण में बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने मुझे आभास कराया कि विवेकपूर्वक किया जाने वाला कठिन परिश्रम कभी विफल नहीं होता। उनका मुझे पहली साइकिल भेंट करना, आज भी याद है। उनकी गाईडेंस में मैंने मात्र दस साल की उम्र में दीपावली पर पहली बार पैंतीस रुपये कमाए, जिनकी कीमत उस समय बहुत थी। परिवार की अहमियत की सीख भी मुझे उन्हीं से ही मिली, विशेषतौर पर तब जब वो हमें पारिवारिक समारोहों में साथ ले जाया करते थे। वे बेहद प्यार से हमारा ख्याल रखते। पिताजी को गाय, भैंसें पालने का बहुत शौक था। वो उन्हें अपने परिवार के सदस्यों की तरह मानते थे व उनकी दिल से सेवा किया करते थे। उनके निस्वार्थ सेवाभाव के साथ-साथ सख्त अनुशासन से भी मैं बहुत प्रभावित था। उन्होंने स्कूल से लेकर कॉलेज तक मेरा अटूट साथ दिया। पिताजी अक्सर हमें हमारे हॉस्टल रूम में मिलने आया करते थे और एक दोस्त की तरह ही हमारे दोस्तों के बीच हँसी-ठिठोली में भी बखूबी साथ निभाया करते थे।

जब मैंने पहली बार स्वयं का व्यापार शुरू किया तो ऑफिस में उनका आना जाना लगा रहता था। उन्होंने हमेशा एक ही सीख दी कि ग्राहकों के साथ ईमानदारी बरतना और अपने कर्मचारियों का परिवार के समान ध्यान रखना। उनकी दी हुई यह सीख आज मेरे जीवन व व्यापार का मूल मंत्र बन गई



ममतामयी दादी माँ के मुस्कान भरे सान्निध्य में

Grandparents create memories that the heart holds forever.

है। पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित भी कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनमें जीवन जीने का सही मार्ग प्रशस्त हुआ है। परिवार ही नहीं, अपितु समाज के लिए भी उनका सेवाभाव देखते ही बनता था। वो अक्सर कहा करते थे कि अपनी कमाई का कुछ हिस्सा गरीब व जरूरतमंदों में बाँटना चाहिए। उनकी दी हुई सेवाभाव की इस सीख को मैंने आत्मसात कर लिया है। यहाँ मैं बाऊजी का जिक्र करते हुए एक बात कहना चाहूंगा कि उन्होंने पिताजी का साया हम पर हमेशा बरकरार रखा व यह उनका दरियादिल स्वभाव ही है कि उन्होंने हमें उनके नजदीक रहने का मौका दिया। इसी कारण हमें एक नहीं दो-दो पिता का स्नेह व आशीर्वाद मिला। पिताजी, मेरा यकीन है कि आप द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलते हुए हम आपकी अनमोल सीख को जीवन में उतारने के लिए सदैव प्रयासरत रहेंगे।

दादी माँ-

माँ जैसा प्यार व स्नेह भी कोई दे सकता है, यह मुझे दादी माँ के साये में जीवन जीते हुए महसूस हुआ। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारा बचपन एक संयुक्त परिवार में बीता जिसकी वजह से दादी और अपनी माँ, हमें दोनों का भरपूर प्यार मिला। माताजी के जीवन के बहुत से ऐसे उदाहरण मैं गिना सकता हूँ जिससे यह पता चलता है कि उनका व्यक्तित्व कितना उत्कृष्ट था। अगर मैं यह कहना चाहूं



श्री राजेन्द्र सेतिया-श्रीमती शालिनी सेतिया अपने सुपुत्र यश सेतिया और सुपुत्री कुमारी तान्या सेतिया के साथ



श्री अर्जुनदास सेतिया-श्रीमती भजनदेवी सेतिया परिवार संग

कि हर सफल व्यक्ति के पीछे एक माँ का हाथ होता है तो मैं कतई गलत नहीं हूँ क्योंकि मैंने इस सत्य को निकटता से जिया है। माताजी का सम्पूर्ण जीवन परिवार के साथ प्रत्येक व्यक्ति के लिए उदाहरण स्वरूप रहा है। हर परिस्थिति में उन्होंने स्वयं को एक मिसाल के तौर पर प्रस्तुत किया। चाहे हर मोड़ पर उनका परिवार को जोड़े रखना हो या फिर किसी भी निर्णय को लेने में दूरदर्शिता अपनाना हो, उन्होंने हर भूमिका को बखूबी निभाया। उनकी व्यावहारिक बुद्धि गजब की थी। हर परिस्थिति में स्वयं को इस तरह से ढाल लेती थीं जैसे वो उससे न जाने कितनी बार गुजर चुकी हों। मैंने उनकी जीवनशैली से मेहनत व संयम बरतने की सीख ली है। उनका आशीर्वाद और प्यार से सिर पर हाथ फेरने का मुझे आज भी अहसास है। माताजी अपने स्वास्थ्य का बहुत ध्यान रखती थीं। उनके सद्गुण हमारे लिए सदैव प्रेरणास्त्रोत रहेंगे।

घर में कोई बीमार होता तो वो घंटों उसके सिरहाने बैठी रहतीं। न जाने कितने ही अत्यन्त कारगर देसी नुस्खे उनके पास थे। आज भी याद हैं वो बचपन के दिन, वो पेड़ों के झूले और परियों की दादा-दादी की कहानियाँ, गोद में घुमाना, वो मेला दिखाना, हमारा चुपके से कहीं जाना, की हमने कितनी नादानियां, प्यारे माताजी-पिताजी हम आप द्वारा दिखाए गए पथ पर चलने के लिए हमेशा आतुर रहेंगे।

A grandmother's love knows no distance.

'परम वंदनीय माताजी-पिताजी सदैव हमारे दिलों में रहेंगे'



-शालिनी सेतिया

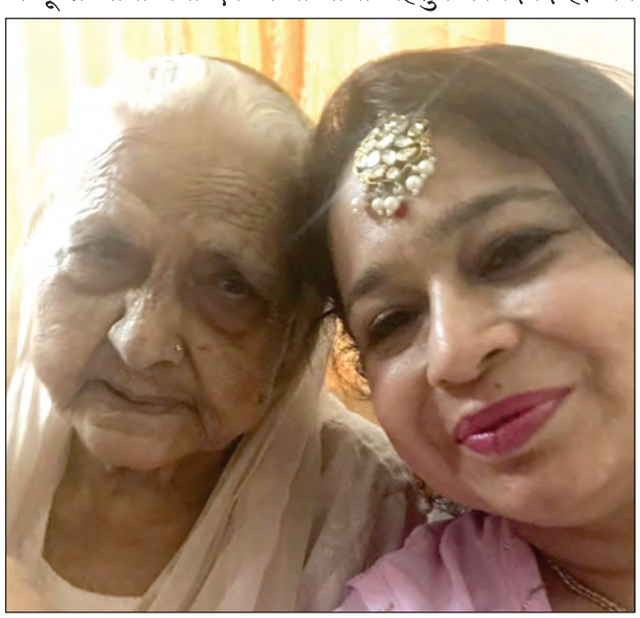
जब मैं शादी के बाद इस घर में आई तो माताजी से माँ जैसा प्यार और दुलार मिला। उनका हर काम में हमारा सहयोग करना अलग ही अहसास था। उन्हें मैंने कभी भी दादी सास नहीं बल्कि सदैव दादी माँ ही माना। हमारे सिर पर उनका स्नेहपूर्ण हाथ हमें यह अहसास दिलाता था कि वो हरदम हमारे साथ हैं। जो भी उन्हें प्यार से बुलाता वो तुरन्त आ जातीं। उनका घर में होना ही सही मायने में घर को घर बनाता था। छोटे से छोटा बच्चा भी उनके प्रेमपूर्ण व्यवहार को समझता था।

बाऊजी जब भी दादीजी को लेकर आते थे तो घर में सबके चेहरे खिल उठते। वो कभी अकेले खाना नहीं खाती थीं। हम लेट हों तो भी धैर्यपूर्वक इंतजार करती और कहती- 'बेटे, फ्री हो ले, थक के आए हो।' हर किसी की तकलीफ बिना कहे ही समझ जाती थीं। मुझे याद है जब मैं पेट्रोल पम्प से स्टोर चलाती थी और थकी हुई घर लौटती थी तो वो हमेशा कहती थीं, "तू थक गई होगी, पानी पी ले, पहले खाना खा ले फिर बात करेंगे।" उनका प्यार से हाथ पकड़ना ही सारी थकान भुला देता था। एक दिन मैं सुबह गई तब पीछे से उनकी तबीयत अचानक ही खराब हो गई। उनके हाथ-पाँव काँप रहे थे। जब मम्मी ने कहा कि शालिनी को बुला लेते हैं तो उन्होंने मम्मी को यह



कहते हुए फोन करने के लिए रोका कि उसे परेशान मत करो। दोपहर का समय था। जब मैं घर आई तो मम्मी ने कहा कि माताजी की तबीयत बहुत खराब है, तू उन्हें जल्दी ही अपने जॉली भैया (जो डॉक्टर हैं) को दिखा ला। तब भी माताजी ने कहा कि पहले इसे खाना खा लेने दे। उनका एक हाथ उठाया नहीं जा रहा था। मैं तत्काल उन्हें लेकर भैया के पास गई। माताजी की गंभीर हालत को देखते हुए भैया ने कहा कि उन्हें जल्दी ही न्यूरोलॉजिस्ट को दिखाना होगा। डॉ. नीरज भूटानी के इलाज से वो थोड़े दिनों में ही ठीक हो गए। उन्होंने जो धैर्य दिखाया वो शायद ही कोई दिखा सके।

एक बात पिताजी के बारे में भी शेयर करना चाहूंगी। जब मेरी नई-नई शादी हुई थी, तब किसी ने बताया कि पिताजी के लिए जम्मू से लाया गया एक कली वाला लहसुन फायदेमंद है। मैंने



भाई-बहन के अनंत प्रेम से बंधे धागों के त्यौहार रक्षाबंधन पर माताजी एवं शालिनी सेतिया डॉ. जॉली अरोड़ा - डॉ. रेणुका अरोड़ा के निवास स्थान पर



वर्ष 2016 में रंगों तथा हंसी-खुशी के त्यौहार होली पर शालिनी सेतिया तथा परिवार के अन्य सदस्य माता जी के साथ होली खेलते समय जीवन में खुशियों के रंग भरते हुए

लहसुन को दाँत से खोलकर पिताजी को दे दिया और कहा कि आप इसे अब आराम से खा सकते हैं। पिताजी ने खुशी से खा लिया। मुझे



वर्ष 2018 में सौभाग्यवती स्त्रियों के प्रमुख त्यौहार करवा चौथ पर श्रीमती भजनदेवी सेतिया अपनी पुत्रवधू शालिनी सेतिया और प्रेरणा सेतिया को भरपूर आशीर्वाद देते हुए

ध्यान ही नहीं रहा कि मेरे दाँत से खोलने से लहसुन जूठा हो गया था। बाद में उन्होंने कहा कि जो चीज निश्छल भाव और प्यार से दी जाए वो सुच्ची ही होती है। एक और घटना साझा करती हूँ। मम्मी बीमार



वर्ष 1996 में अपने पहले जन्मदिन पर मंद-मंद मुस्कुराता मासूम यश सेतिया अपने परम वंदनीय परदादाजी की दुआओं में और परम पूज्य परदादी की ममताभरी बाहों में

थीं और अस्पताल में थीं। मैंने यश की दूध की बोतल उबालने रखी और भूल गई। उसको सुलाते-सुलाते मुझे भी झपकी लग गई। बोतल जलने के कारण सब तरफ धुंआ ही धुंआ हो गया और मेरा दम घुटने लगा। मैं चिल्लाते हुए पिताजी के पास गई। उन्होंने तुरन्त मुझे इन्हेलर दिया और संभाला। मेरे साथ पिताजी का विशेष लगाव था।

जब भी कहीं बाहर जाना होता तो वो मेरे और सुनीता आंटी के साथ ही जाते। उन्हें हमारी पसंद अच्छी लगती थी। मेरी शादी के बाद 25 साल हमारा साथ रहा। मैंने हमेशा गरीबों के प्रति उनका स्नेह देखा था। कुछ भी खाने से पहले वो हर चीज कामवाली की प्लेट में रखते, अपने हाथ से उसे दूध का गिलास पकड़ाते। घर में कुछ भी खाने से पहले वो काम वाली को देते। हमारी हाउस हैल्पर बाईस साल से है। उन्हें संक्रान्ति को हमेशा पैसे देते ताकि वो अपनी पसंद की चप्पल खरीद सकें। परम वंदनीय माताजी-पिताजी सदैव हमारे दिलों में रहेंगे। हम उनके प्यार और जीवन मूल्यों को कभी भुला नहीं पाएंगे।



वर्ष 2018 में शिवांश के विवाह के शुभ अवसर पर शालिनी, तान्या और रैना आनंद मनाते हुए

'The loving memories of our great-grandparents will be in our hearts forever'



- Yash Setia in New York City (USA)

My Great-Grandfather (Pita Ji)

The warmth of his gaze said, "I love you."

The strength of his hugs said,

"I will keep you safe."

The gentleness of his hands said,

"You're precious to me."

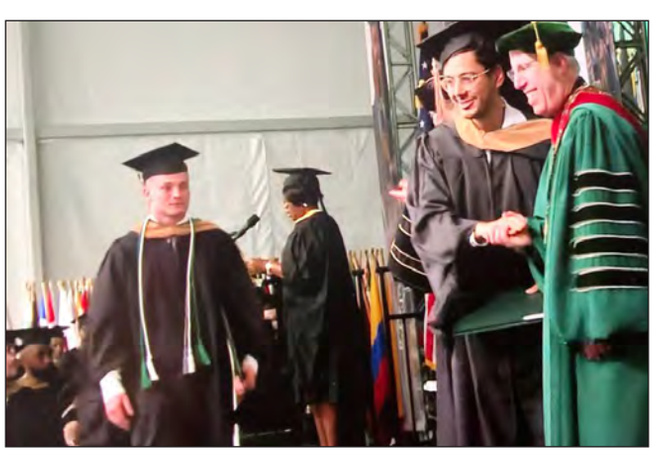
His nod of approval for a job well done said : "Bravo! God bless you!" We are the legacy of your ideology. We will do our best to follow it sincerely.

My Great-Grandmother (Mata Ji)

I have many memories of Mata Ji's house marked by love, laughter and contentment. Mata Ji was famous for her hearty welcome, warm hugs and holding hands. She was often responsible for bringing the whole family together.

Love you, my great - grandmother. Bau Ji is a big fan of yours. I have heard many inspirational stories from him about you. A big thank you for nurturing such a lovely family lovingly. Dear great-grandmother, your loving memory will be in our hearts forever.

Heartfelt Congratulations to Yash Setia on receiving the Master of Finance Degree in May 2022 from Boston College which is in the Boston City of the United States of America. Yash Setia received the Degree from the President and Principal Spanelli himself.





Great - grandparents are voices of the past and the door to the future.

'I will forever be grateful to the Supreme Lord for blessing me with my great-grandparents'



- Tanya Setia

Our Great-Grandfather (Pita Ji)
Sliver-haired with a twinkle in his eye,
Our great-grandpa was a wonderful personality,
His laugh could always fill up a room,
So jovial with a resounding boom.
When great-grandpa would visit us,
We relished every moment of his great presence
He'd tell us stories of dad's early childhood.
A big thank you for all your powerful life lessons and guidance.

Mata Ji (My Great-Grandmother)

Thank you for your sacrifices, your care and concern, your love and everything that you have done for us. I will forever be grateful to the Supreme Lord for blessing me with my great-grandmother, Mata ji. The love of Mata ji was unique. God must have given Mata Ji to us to liven up our lives, make our lives complete and make us well-rounded and better human beings. She played a big part in my childhood. I remember sitting with Mata Ji so many times when she taught me a lot about love and the meaning of family. She has been not only our great-grandmother, but also our affectionate friend and our inspiration.

Lots of hugs, Mata Ji and Pitaji.



Mataji showering Tanya with praise and affection



Tanya and Sahana (Pari) in the blissful companionship of their great-grandmother in 2018

Great-grandparents are the perfect blend of love, cheerfulness and wonderful stories.

'बुआजी के गहरे प्रेम और शीतल वाणी की मधुरता ने मेरा मन मोह लिया'



-स्व. श्री केवल कृष्ण गड्डी

1932-2022

जब मैं पहली बार 1959 में हमारी शादी के समय बुआजी एवं फूफाजी श्री गिरधारीलाल जी से मिला तब मैंने उन्हें अत्यधिक विवेकपूर्ण एवं आत्मीय पाया। इस मुलाकात के बाद मेरी नौकरी के चलते मैं उनसे काफी समय तक मिल नहीं पाया। संयोगवश बुआजी से मेरी अगली मुलाकात शालिनी की शादी के समय हुई और उस वक्त उनके गहरे प्रेम और शीतल वाणी की मधुरता ने मेरा मन मोह लिया। बुआजी के मन में संतोष रानी के लिए एक खास जगह थी और यही वजह है कि वो हमेशा पारिवारिक मामलों में खुल के अपना पक्ष रखती थीं और संतोष को हमेशा सही सलाह देती थीं। तीज-त्यौहार पर हमारा बुआजी से मिलना हुआ करता था। कभी-कभी वो हमसे मिलने हमारे घर भी आया करती थीं। हमारा सम्बन्ध और भी घनिष्ठ तब हो गया जब हम वर्ष 2000 के अगस्त महीने में दिल्ली से जयपुर आए। बुआजी के लिए परिवार एवं रिश्ते सर्वोपरि थे जिसका ही नतीजा था कि वो परिवार के सभी सदस्यों को मोतियों की माला के समान जोड़े रखती थीं। परिवारजनों ने भी ताउम्र उन्हें उतना ही सम्मान दिया। आज भी मुझे उनकी कमी महसूस होती है। वे सदा हमारी प्रार्थनाओं एवं यादों में रहेंगी, इसका मुझे पूरा विश्वास है।

'हम बुआ-भतीजी का रिश्ता बहुत गहरा था'



-संतोष गड्डी

मैंने पूजनीय बुआजी की आंखों में सदैव परिवार के प्रत्येक सदस्य के प्रति अपार प्रेम और स्नेह की भावना देखी है। परिवार का चाहे कोई भी सदस्य हो, बड़ा या फिर छोटा, बुआजी सभी से प्रेम व सम्मान के साथ बात किया करती थीं। मैं बुआजी के साथ बचपन से ही घुल-मिल गई थी, इसलिए हम बुआ-भतीजी का रिश्ता बहुत गहरा था। जब भी मुझे किसी परेशानी का सामना करना पड़ता, मैं तुरन्त बुआजी के पास जाती और वो हर बार मेरा उचित मार्गदर्शन किया करती थीं। बुआजी की भगवान् में बहुत आस्था थी। रोजाना आनंदपुर कुटिया जाना उनका नियम था। बुआजी को जरूरतमंद लोगों की मदद करना बहुत अच्छा लगता था, जिससे पता चलता है कि उनका दिल बहुत उदार था। मैं जब भी छुट्टियों में उनसे मिलने जाती वो मुझे पुराने किस्से-कहानियां सुनाया करती थी। वो मेरी प्रिय बुआ ही नहीं बल्कि हमदर्द भी थीं।

'The way Bhuaji and Foofaji connected with us from the heart filled us with supreme bliss.'



-Dr. Shashi Arora

My family and I are so fortunate to be related to my dear Bhuaji and Foofaji. My first memory of them is when I went to Jaitsar along with my parents in my early life to attend the wedding of my first cousin. Bhuaji and Foofaji received us with open arms. I can never forget their warm-hearted hospitality.

I cherish the unique memories of visiting Foofaji's shop, going for a walk in the village and seeing how everyone was paying respect to them. The way Bhuaji and Foofaji connected with us from the heart filled us with supreme bliss. Foofaji's good sense of humour spread the waves of happiness all around. Bhuaji was very calm and affectionate. The immensity of quiet love we received from her reflected her motherly instincts.

I am grateful to my family particularly the siblings of my Dad for their infinite love, timely encouragement and guidance. Bhuaji and Foofaji kept their family together. They had the inner strength to bloom even in the midst of gloom. They have always been my role models. Their inspiring memories will stay forever.



डॉ. रवि - डॉ. शशि अरोड़ा, रितेश-भविशा अरोड़ा, रशिम-संगीता (माही) अरोड़ा

The family is a link to our past, bridge to our future.

'We can never forget the powerful life lessons taught by our loving Bhuaji'



- Sushma Chandra

Our loving Bhuaji, we are so blessed to be related to you. She was immensely kind, soft-spoken, loving and considerate. Her words, thoughts and behaviour were always positive. She stood for simplicity, hospitality, endless affection, collective happiness and family unity. Her strong moral values were reflected in her life. We can never forget the powerful life lessons taught by our loving Bhuaji.

I remember her coming over to Jaipur from Jaitsar. It was always a great pleasure meeting her. We always looked forward to seeing her. I cherish sweet memories of my childhood days when Bhuaji would give me and Shashi money as a taken of blessings. Our beloved Bhuaji always showered motherly affection on us. When our daughter Vinita got married, we had the pleasure of getting her blessings and it meant a great deal to us. She was an amazing woman with a good head on her shoulders just like my dad, the best dad in my life.

People disappear from our lives, but they cannot disappear from our hearts. There is a force stronger than death and that is love. Since our hearts are filled with reverential love for our beloved Bhuaji, she will live in our hearts forever.



रोहित - तनु चंद्रा

(श्री राजेश-श्रीमती सुषमा चंद्रा के पुत्र और पुत्रवधू)

Whenever we visited Jaipur, my Mamma visited her Bua ji and met all the family members. Our relationship with the Setia family has motivated us a lot.



डॉ. वनिता-डॉ. संदीप मोदी

(श्री राजेश और श्रीमती सुषमा चंद्रा की बेटी और दामाद)

At the time of our marriage in Jaipur, we came in close contact with Setia family. They are very nice people. We also got kind blessings of Mammi ji's Bua ji at that time.

When someone we love becomes a memory, the memory becomes a treasure.

'बुआजी का हमें बचपन की कहानियां सुनाने और ढेरों मिठाइयां लाने जैसी कई यादें आज भी मेरे जहन से जुड़ी हुई हैं'



- डॉ. जॉली अरोड़ा

मेरा बचपन जयपुर में बीता और यहीं से ही मैंने एमबीबीएस की डिग्री प्राप्त की। बुआजी के निकट आने का मौका भी यहीं मिला। मेरे पिताजी एवं बुआजी के बीच बेहद स्नेह था। पिताजी की हार्दिक इच्छा थी कि हमारे बुआजी हर वर्ष कम से कम एक महीना तो हमारे साथ अवश्य ही रहें। जब पिताजी बुआजी को लेकर आते तो घर में सबके चेहरे खिल उठते थे। उनके प्यार भरे साथ में महीना कैसे बीत गया मालूम ही नहीं पड़ता था। भाई-बहन के इस अटूट रिश्ते का प्रमाण यह भी है कि पिताजी के सम्बन्ध बुआजी के ससुराल पक्ष से इतने मधुर थे कि वो परिवार की हर शादी में सम्पूर्ण परिवार सहित जाया करते थे। यह भावनाएं पारस्परिक हैं क्योंकि हमारी बुआजी के बेटे-बेटियां भी पिताजी को आदर्श मामा मानते थे। मैंने भी पिताजी के पदचिह्नों पर चलते हुए पारिवारिक सम्बन्धों को सर्वोपरि समझा। पिताजी के देवलोकगमन के बाद बुआजी ही मुझे राखी बांधती थी एवं उन्हीं के साथ ही शालिनी भी राखी बांधने आया करती थी। यह नियम बुआजी की आखिरी सांस तक बरकरार रहा। बुआजी का हमें बचपन की कहानियां सुनाने और ढेरों मिठाइयां लाने जैसी कई यादें आज भी मेरे जहन से जुड़ी हुई हैं।

यह मेरी खुशनसीबी है कि वो बुआजी के रूप में मेरी जिन्दगी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनीं। हमारा परिवार परमात्मा का बहुत आभारी है कि उनकी अपार कृपा से हमारे परिवार को बहुमूल्य प्रतिभा की धनी बुआजी के सान्निध्य और आशीर्वाद का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं अपनी बुआजी स्वर्गीय श्रीमती लाजवंती देवी एवं फूफाजी स्वर्गीय श्री गिरधारीलाल जी सेतिया को सादर नमन करता हूँ। उनकी स्मृतियां हमारे परिवार में सदा जीवित रहेंगी।



वर्ष 2018 में रक्षाबंधन के त्यौहार पर माताजी अपने प्रिय भतीजे
डॉ. जॉली अरोड़ा को राखी बांधकर परिवार को प्यार के धागों में पिरोते हुए

'कुछ यादगार लम्हे बुआ सास के नाम'



-डॉ. रेणुका चुग

हमारी प्यारी बुआजी की मधुर आवाज, चमकता हुआ चेहरा, मिलनसार स्वभाव हमेशा याद रहेगा। डैडी जी और बुआ जी का भाई-बहन का प्यार अपने आपमें प्रेरणादायक मिसाल रहा है। बुआजी ने सहज रूप से हमें अहसास दिला दिया था कि जीवन एक दूसरे के साथ और सहयोग से ही चलता है। हमें बुआ जी से मिलकर सदैव प्रेमपूर्वक जीवन जीने की प्रेरणा प्राप्त हुई।

मेरे ससुर श्री सोहनलाल चुग जी के निधन के पश्चात् बुआ जी हर साल राखी के त्यौहार पर मिठाई, नारियल के साथ जॉली व मुझे बड़े प्यार से राखी बाँधने आया करती थीं और अपने अनमोल वचनों से हमारी राहों में उजाला किया करती थीं।

मम्मीजी के देवलोकगमन के समय उन्होंने हमारे परिवार के हर सदस्य को संभाला। बुआजी ने मेरी ननद शालिनी को अपने परिवार की पुत्रवधू बनाया। वो कहा करती थीं कि मजबूत रिश्तों की नींव प्रेम और परस्पर सहयोग पर रखी जाती है।

किसी ने सच ही कहा है:

कितने ही पुष्प खिला लो
तुम अपने आंगन में,
जीवन में खुशबू बुआ व बेटियों के आने से ही आती है।

चांद मेरे मामा हैं
सूरज मेरे चाचा तो
तारे मेरी बुआ हैं।



रोहन (डॉ. जॉली और डॉ. रेणुका चुग का बेटा)
पापा जी की बुआ जी और फूफा जी के
सेवा भाव से मैं बहुत प्रभावित होता था।



ऋतिक - ऋष्टि चुग
(डॉ. जॉली और डॉ. रेणुका के पुत्र और पुत्रवधू)
पापा जी की बुआ जी और फूफा जी
बहुत मिलनसार और विनम्रता की मूर्त थे।

'बुआजी ने
हर रिश्ते को
बखूबी निभाया'



अनीता अरोड़ा - संजीव अरोड़ा

बुआजी स्वभाव से बेहद दयालु थीं। वो परिवार में असीम उदारता के लिए जानी जाती थीं। वो उदार होने के साथ-साथ बुद्धिमान एवं मेहनतकश भी थीं। आज भी जब मैं उनको याद करता हूँ तो भावुक हो जाता हूँ। खासतौर पर वो क्षण मुझे बहुत याद आते हैं जब मेरी माताजी और बुआजी घंटों तक एक साथ समय व्यतीत करते थे। मैं हमारे परिवार को भाग्यशाली समझता हूँ कि हमें बुआजी का प्यार व स्नेह मिला। उनके शांत एवं प्रेमपूर्ण स्वभाव का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि परिवार के प्रत्येक सदस्य ने उनके साथ एक खास सम्बन्ध साझा किया। उन्होंने हर एक रिश्ते को बखूबी निभाया। उनकी कमी सम्पूर्ण परिवार द्वारा हर पल महसूस होती है।

-संजीव अरोड़ा

'हम हमेशा बुआजी को
अपनी यादों में संजोकर
रखेंगे और उनके आदर्शों की
अनुपालना करते रहेंगे'



निधी अरोड़ा - समीर अरोड़ा

हमारे माताजी श्रीमती संतोष रानी और पिताजी श्री केवल कृष्ण गड्डी का परमवंदनीय स्व. श्रीमती लाजवंती देवी से गहरा लगाव रहा है। रिश्ते में श्रीमती लाजवंती देवी जी मेरी माताजी की बुआ थीं। मैंने उनके बुआ-भतीजी के रिश्ते की आत्मीय गहराई को समझा। हमारी माताजी अपनी प्रिय बुआजी का जिक्र करती रहती हैं और हमें बताती हैं कि वो उनकी सारी समस्याएं बेहद आसानी से समझ जाती थीं और समय-समय पर उनका सही मार्गदर्शन करती थीं। यह बुआ-भतीजी के अटूट रिश्ते का ही परिणाम था कि मेरी माताजी ने अपनी प्रिय पुत्री शालिनी का विवाह बुआजी के पौत्र श्री राजेन्द्र के साथ सम्पन्न किया। मेरे माता-पिता का बुआजी में गहरा विश्वास था। बुआजी की सुनहरी यादें आज भी इस आदर्श परिवार के रूप में जीवित हैं। हम हमेशा उन्हें अपनी यादों में संजोकर रखेंगे और उनके आदर्शों का अनुपालन करते रहेंगे।

-समीर अरोड़ा

'दादाजी-दादीजी के दिव्य गुण सदैव हमें प्रेरित करते रहेंगे'



- राजकुमार सेतिया

दादाजी-दादीजी मेरे जीवन का आधार हैं। हम दादाजी को पिताजी और दादीजी को माताजी कहा करते थे। पिताजी बाहर से कठोर और अंदर से कोमल थे। उन्होंने हमेशा सबका हित चाहा। पिताजी ने हमें सदैव सच्चाई, साहस, ईमानदारी और आत्म-विश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उनके दिल में सबके लिए प्रेम था, परन्तु नियमों और अनुशासन के मामले में वो कठोर थे। नियमों का उल्लंघन होते देखकर उन्हें क्रोध आता था। व्यवहार की कठोरता और हृदय की कोमलता में पिताजी के व्यक्तित्व का आकर्षण था। पिताजी दूरदर्शी थे और उनकी सोच प्रगतिशील थी। प्रारम्भ में जैतसर में वे अकेले ही दुकान चलाया करते थे। हमारे बाऊजी ने स्कूल शिक्षा के दौरान ही पिताजी के किराने के व्यापार में हाथ बंटाना शुरू कर दिया था। 10वीं तक की पढ़ाई करने के बाद बाऊजी को पिताजी ने स्वतंत्र रूप से अलग किराने की दुकान खुलवाकर दी और इस प्रकार उन्होंने व्यवसाय के क्षेत्र में परिवार के लिए निरन्तर विकास की नींव रख दी।

पिताजी चाहते थे कि रवि चाचा आई.पी.एस. ऑफिसर बने। उन्होंने आई.पी.एस. की तैयारी के लिए रवि चाचा को दिल्ली भेजा था। देश-विदेश की यात्रा का महत्त्व समझते हुए करीब 40 वर्ष पूर्व पिताजी ने महेन्द्र कुमार चाचाजी को 20 वर्ष की आयु में सिंगापुर टुअर पर भेजा था।

बीती बातें प्राय: याद आती हैं। माताजी और पिताजी के साथ निकट से जुड़े हुए पुराने दिनों को हम कभी भुला नहीं पाएंगे। जैतसर में घर के प्रथम तल पर एक कमरा था जिसमें रवि चाचाजी पढ़ा करते थे। पिताजी ने उस समय अपने बेटों को फ्री हैंड दिया जो कि माहौल को देखते हुए जैतसर में अपने आपमें आश्चर्यजनक था। जैतसर में उस समय किसी-किसी के पास ही जीप थी जिनमें से पिताजी एक थे। पिताजी का देश विभाजन के बाद का समय बहुत मुश्किलों भरा रहा था। परन्तु उन्होंने अपनी लगन, साहस और कठोर परिश्रम से आपदाओं को अवसरों में बदल दिया। पिताजी हमेशा सफेद रंग का धोती-कुर्ता पहनते थे।

जयपुर आने के पश्चात् कभी-कभी कुर्ता पायजामा पहन लेते थे। पिताजी उर्दू लिखते थे व



अपने पोते राजकुमार सेतिया के शुभ विवाह पर 10 दिसम्बर, 2001 को माताजी और पिताजी आनंदपूर्वक दुल्हा-दुल्हन के साथ मंच पर

प्रेमसूत्र में बंधे वंदनीय पिताजी के श्रद्धेय समधी



स्व. श्रीरामचंद जी चुग



स्व. श्री सरदरीलाल जी नागपाल



स्व. श्री राधाकिशन जी नागपाल

हिसाब किताब के बहुत पक्के थे। जब सुरेन्द्र भैया व राजेन्द्र भैया गंगानगर पढ़ते थे तो पिताजी उन्हें पैसे की कीमत समझाने के लिए पिछला हिसाब लेने के बाद ही जेब खर्च दिया करते थे। यह बात मैंने अपने बेटे रणवीर को कई बार पैसे की अहमियत समझाने के लिए बताई है।

पिताजी उसूलों के पक्के थे। उनका पैसों के लेन-देन का कभी किसी से कोई विवाद नहीं हुआ। जैतसर में गुरुद्वारे जाना पिताजी की दिनचर्या का महत्त्वपूर्ण हिस्सा था। पिताजी का अपने भाई-बहनों से अपार स्नेह था। भगवानदास चाचाजी से उनका लगाव विशेष ही था। पिताजी अपने ट्रक के व्यापार को लेकर भी बहुत सक्रिय थे। वे स्वयं ड्राईवर से पूरा हिसाब लेते थे और ट्रक के व्यापार से होने वाले लाभ का ब्यौरा भी सभी को देते थे। पिताजी तैराकी भी बहुत अच्छी जानते थे। वे सुबह जल्दी उठा करते थे।



स्व. श्री भगवानदास जी सेतिया
बड़े भाई श्री गिरधारीलाल जी सेतिया की रूह की आवाज

पिताजी अपने समधियों की बहुत इज्जत किया करते थे। वे हमें जीवन की सीख देने वाली कहानियाँ और किस्से सुनाया करते थे। सब्जी और फल काटते-काटते पिताजी हमें सहज रूप से अहसास दिलाया करते थे कि घर का काम मिलजुल कर करने से आपसी प्रेम बढ़ता है और कठिन से कठिन काम आसान हो जाता है।

माताजी श्री परमहंस अद्वैत मत श्री आनंदपुर के प्रति आस्था रखती थीं। वह आनंदपुर कुटिया (जैतसर) के प्रति समर्पित थीं। पशु-पक्षियों के लिए माताजी आंतरिक रूप से उदार थीं। माताजी का सम्पूर्ण जीवन सेवा-धर्म पर आधारित रहा। उनके दिव्य गुण सदैव हमें प्रेरित करते रहेंगे। जैतसर में माताजी जरूरत से ज्यादा खाना बनाकर रखती थीं ताकि वक्त बे वक्त कोई आ जाए तो भूखा न जाए। माताजी अपने स्वास्थ्य व सफाई का शुरू से ही ध्यान रखती थीं। परिणामस्वरूप उन्होंने प्राय: बीमारी को अपने निकट नहीं आने दिया। माताजी और पिताजी हमारे दिलों की गहराइयों में हैं। उन्हें हम कभी नहीं भुला पायेंगे। माताजी और पिताजी को शत् शत् नमन !

'गर बुजुर्गों के हाथों में बच्चों की तक़दीर लिखने का कलम होता, यकीन मानिए, किसी की जिंदगी में एक भी गम न होता'



- शिवाली सेतिया

कई बार कलम उठाया कि माताजी-पिताजी के बारे में कुछ लिखूं, लेकिन समझ न आया कि क्या लिखूं। वे दोनों गुणों की ऐसी खान थे जिनके बारे में लिखना तो क्या सोचना भी मुश्किल है। पिताजी का साथ मुझे कम मिला, लेकिन जितना भी मिला बहुत यादगार रहा। पिताजी हर समय माहौल को खुशनुमा रखते थे। सब बच्चों का हर तरह से ख्याल रखते थे। उन्हें चेहरे पढ़ने की कला का ज्ञान था। सबसे छोटी बहू होने के नाते मुझे दोनों ने बहुत स्नेह और दुलार दिया। जैतसर से जयपुर का सफर आसान नहीं था, लेकिन उन दोनों के आशीर्वाद का ही फल है कि सारा परिवार आज भी मोतियों की एक सुन्दर माला की तरह पिरोया हुआ है।

माताजी को बिछुड़े तो अभी कम समय हुआ है। उनकी यादें हर जगह बिखरी हुई हैं। सुलझे हुए विचारों वाली, आधुनिक और पारंपरिक गुणों का सुमेल थी पूजनीय माताजी। जितनी लोकप्रिय वो बड़ों में थी, उतनी ही बच्चों में। अंतिम क्षण तक मायके से पूरी तरह जुड़े रहना उनकी बहुत बड़ी उपलब्धि थी। हर शादी ब्याह या महत्त्वपूर्ण आयोजन में उनकी सलाह ली जाती थी। धार्मिक प्रवृति, दान देने में आस्था, घर में आए हर मेहमान का खुले दिल से स्वागत करना जैसी विशेषताएं उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा थी।



वर्ष 2002 में महेन्द्र सेतिया के निवास स्थान पर माताजी अपनी पौत्रवधू शिवाली सेतिया व पुत्रवधू सरोज सेतिया के साथ

प्यार से हाथ पकड़ना, सहलाना, धीमे-धीमे बात करना, हालचाल पूछना जैसे गुण सामने वाले को पल भर में अपना बना लेते। अपने हाथों से बहुत तरह के पारंपरिक व्यंजन तैयार करते जैसे कि पिन्निया, पंजीरी, चूरी और भी बहुत कुछ। खूब सारा घी लगाकर परांठे बनाते। काम करने की शक्ति न होते हुए भी बच्चों की पसंद का ख्याल रखते हुए कुछ न कुछ बनाते ही रहते। माता-पिताजी के सभी गुण आगे उनके बच्चों को विरासत में मिले हैं।

इस फानी संसार से एक दिन विदा लेना तो नियति है लेकिन अपने पीछे सुन्दर सुनहरी यादों का सरमाया छोड़ कर जाना बहुत बड़ी बात है। मुझे विश्वास है कि वो इस परिवार पर हमेशा शुभाशीष बरसाती रहेंगी:

'माँ हर दम औलाद के जीने की दुआ करती है,
उसकी आँख के हर अश्क को समा लेती है,
मत झूम कर इतराना अपनी कामयाबी पर,
आसमां छूने का मुकद्दर तो माँ ही लिखा करती है।'

Blessings given by grandparents never go unanswered.

'उनकी आशीष से हर पल महके'



माता-पिता भगवान धरा पर,
जीवन की वगिया के वागवान हैं।
उनकी आशीष से हर पल महके,
उनका त्याग महान है।

- सहाना सेतिया सुपुत्री राजकुमार सेतिया

मेरी परदादी माँ मुझे बहुत ही प्यारी और सारे जग से न्यारी लगती थी। पापाजी जब उन्हें घर लेकर आते तो मैं बहुत खुश होती थी और उनके पास ही बैठी रहती थी। दादी माँ मेरी पीठ सहलाते हुए लाड़ प्यार में अपने हाथों में मेरा हाथ थामे रहते थे। उनका साथ पाकर मुझे ऐसे लगता था जैसे मैंने सारा जहां पा लिया हो। हमारे परदादा जी हमारे मनपसंद खाने की चीजें लेकर आया करते थे।

मुझे उनके आने का सदा इंतजार रहता था। हमारे परदादा-परदादी द्वारा सुनाए जाने वाली कहानियों में जीवन जीने की कला छुपी होती थी। बचपन में मेरे बढ़ते कद को देखते हुए परदादा जी हमेशा पापा को कहा करते थे देखना यह जल्द ही बहुत लंबी हो जाएगी। जब मैं स्कूल से लौटकर आती तो उनके साथ सलाद और फल खाकर मैं मम्मी के पास जाया करती थी। आज हमारे परदादा-परदादी हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनकी यादें हमारे दिल में हमेशा बनी रहेंगी।



सितंबर 2002 में परम पूज्य परदादा-परदादी
नवजात सहाना (परी) पर आशीष बरसाते हुए



स्नेह के घेरे में भाई-बहन रणवीरराज सेतिया और
कुमारी सहाना सेतिया अपनी मम्मी तथा परिवार
के अन्य सदस्यों के साथ

Great-grandparents are a family's greatest treasure.

'मेरी बड़ी दादी माँ मुझे बहुत अच्छी लगती थीं'



- रणवीर सेतिया सुपुत्र राजकुमार सेतिया



रणवीर सेतिया वर्ष 2014 में होली के दिन
पिचकारी के साथ परदादी माँ के श्री चरणों में
बैठकर जीवन में मासूमियत के रंग भरते हुए

मैं अपने पापा के साथ बड़ी दादी माँ से मिलने जाया करता था। उनसे मिलना मुझे बहुत अच्छा लगता था। जब भी मैं बड़ी दादी माँ से मिलने जाता, मैं उनके पैर दबाया करता था। बड़ी दादी माँ मेरे हाथ पकड़ लेती और गले लगाकर प्यार करती थीं। जब मुझे दादी माँ की याद आती तो मैं पापा से कहा करता था कि आज हम बड़ी दादी माँ से मिलने जाएंगे। बड़ी दादी माँ मुझे खाने को कुछ न कुछ देती ही रहती थीं। मेरी दादी माँ मुझे बहुत अच्छी लगती थी।

मुझे कहानियाँ सुनना बहुत अच्छा लगता था। बड़ी दादी माँ मुझे परियों और राजा-रानी की कहानियां सुनाया करती थीं। कितनी प्यारी थी मेरी बड़ी दादी माँ !





हमें परिवार के उभरते सितारे रणबीरराज सेतिया पर गर्व है जिसने TIMO (Thailand International Mathematical Olympiad) के अंतिम दौर 2021-2022 में एशिया में तृतीय स्थान प्राप्त किया व अपनी प्रतिभा का परचम लहराया।

SOF International English Olympiad (IEO) 2021-22 में रणवीरराज सेतिया अपने स्कूल में प्रथम रहा। इस प्रतियोगिता में देश विदेश के 68000 विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। International Olympiad में रणवीरराज ने 77वाँ स्थान प्राप्त किया तथा ज़ोन में 25वाँ रैंक प्राप्त करते हुए ज़ोनल मेडल ऑफ डिस्टिंक्शन प्राप्त किया। प्रिय रणवीरराज द्वारा स्वयं को साबित करते हुए प्राप्त की गई स्वर्णिम सफलता पर हार्दिक बधाई और उज्जवल भविष्य के लिए प्यार भरी शुभकामनाएं।

Great-grandmother is a wonderful combination of cheerfulness and love, warmth and generosity.

'माताजी-पिताजी को देखकर मुझे अपने झाईजी-बाऊजी की यादें ताजा हो गई'



धर्मवीर वर्मा - स्व. श्रीमती राजेश वर्मा
(अर्जुनदास सेतिया के समधी)

माताजी-पिताजी धार्मिक प्रवृति वाले थे। मेरा पहला परिचय उनसे तब हुआ जब वे मेरी बिटिया को देखने सपरिवार आये थे। माताजी हमेशा सिर दुपट्टे से ढक कर रखती थीं। उनको देखकर मुझे मेरे झाई जी की यादें ताजा हो गईं। उधर पिताजी मुझे साक्षात् बाऊजी अर्थात् मेरे पिताजी जैसे लगे। वे भी सफेद कुर्ता पायजामा पहना करते थे। मेरी पुत्री शिवाली का विवाह 10 दिसम्बर, 2001 को राजकुमार सेतिया के साथ सम्पन्न हुआ।

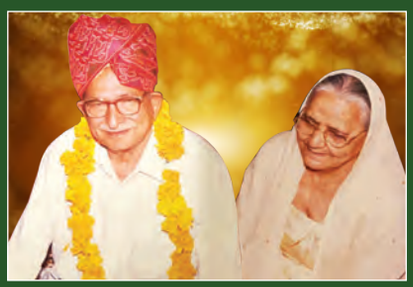
मेरे घर के प्रत्येक समारोह में सेतिया परिवार स्पेशली माताजी का बहुत योगदान रहा। चाहे मेरी पोती-पोते का जन्मोत्सव या कोई और समारोह, सब जगह उन्होंने खूब सारी खुशियां बांटी। मुझे उनमें अपने माता-पिता का अक्स दिखाई देता था। मैं जब भी माताजी के पैर छूता तो वह प्यार से मेरी पीठ सहलाती थी। पिताजी हमेशा धनी कहकर संबोधित करते थे। दीपावली व जब भी किसी अन्य त्यौहार पर मिलना हुआ, वो अच्छे से खिला-पिलाकर ही भेजती थीं। हॉस्पिटल में भी जब मैं उनसे मिलने गया, मुझे जबरन ड्राई फ्रूट्स खिलाकर ही भेजा। मैं ऐसी महान हस्ती के प्रति नतमस्तक हूँ।

-धर्मवीर वर्मा



अरुण वर्मा - रिया वर्मा
(श्री धर्मवीर वर्मा के सुपुत्र और पुत्रवधू)

परम पूजनीय माताजी और पिता जी के जीवन से हमने यह सीख प्राप्त की कि विरानेपन के घोर अंधकार में भी उम्मीद के चिराग जलाते रहें।



'दादा-दादीजी ने परिवार को एक सूत्र में पिरोए रखा'



- मंजू खुराना धर्मपत्नी स्व. आशीष खुराना

माँ-बाप का सिर पर हाथ ही काफी होता है। पर दादा-दादी का तो साथ ही बहुमूल्य है। मेरे दादाजी जिन्हें हम पिताजी कहा करते थे दयालु व्यक्तित्व के स्वामी थे। जो भी उनसे मिला वह उनका ही हो गया। दादाजी ने हमेशा मेहनत करने व आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। सेतिया परिवार जिस सफलता की ऊँचाइयों पर है उसका श्रेय दादाजी की पारदर्शी सोच को जाता है। उन्होंने अपने तीनों बेटों को प्लेटफार्म दिया, तभी तो वो अपना हुनर और काबलियत दिखा पाए। आज उनके तीन बेटे और सात पोते मिलकर पेट्रोल पम्प और फाइनेंस कम्पनियाँ चला रहे हैं। यह बहुत ही गर्व की बात है।

दादाजी अर्थात् पिताजी का प्यार मेरे लिए अनमोल है। मेरी शादी के बाद दादाजी का पेट्रोल पम्प जाने के लिए निकलना, रास्ते में मेरे घर आना और बच्चों के लिए कुछ न कुछ जरूर लेकर आना। फिर मेरे ससुर जी के साथ बैठकर पाकिस्तान, हिन्दुस्तान की बातें करना, हँसते-हँसाते रहना उन्हें अच्छा लगता था। दादाजी मेरे व मेरे परिवार पर अपने प्यार की अमिट छाप छोड़कर गए हैं।

मेरी प्रिय दादी 'You will always be alive in my heart'. दादीजी का जीवन एक मिसाल से कम नहीं। सदैव सभी के सुख-दुख में साथ रहने के विशेष गुण के कारण वह हमेशा सारे परिवार में अत्यन्त लोकप्रिय रही। उन्होंने अपने परिवार को सदा एक सूत्र में पिरोए रखा और हमेशा पारिवारिक संस्कारों को अपनाए रखने की शिक्षा दी। दादीजी के साथ मेरा अत्यन्त खूबसूरत रिश्ता रहा। बचपन से ही वो मुझसे बहुत स्नेह करती थीं और अच्छी-अच्छी बातें सिखाती थीं। उन्होंने हमेशा सत्य के मार्ग पर चलना सिखाया। उनके स्वभाव की एक विशेषता यह भी थी कि वो घर में आए मेहमान का स्वागत दिल से करती थीं। चाहे कोई मेहमान जिस समय मर्जी आ जाता, भले ही सब खाना खा चुके हों, वो आभास तक न होने देती और प्यार से नाश्ता खाना खिलाकर ही भेजती।

दादीजी बहुत ही आध्यात्मिक प्रवृत्ति की थीं। श्री परमहंस अद्वैत मत श्री आनंदपुर की अनुयायी थीं। उनसे हमेशा आस्था, पूजा-अर्चना की ही शिक्षा मिली। हर मौके पर घर में सत्संग करवाना उन्हें बहुत अच्छा लगता था। उनके इसी स्वभाव के कारण हम पर ईश्वर की कृपा बनी रही है और उनके आशीर्वाद से आगे भी बनी रहेगी। मैंने दादा-दादी के दिए हुए संस्कारों को जीवन में अपनाया और अपने दोनों बच्चों साहिल और मुस्कान को भी यही संस्कार दिए हैं। 3 दिसम्बर, 2019 को अपने जीवन का सफ़र पूरा करके वो अपने गुरु के श्रीचरणों में लीन हो गई। उस पुण्य आत्मा को शत-शत प्रणाम।

मैं सराहना करती हूँ अपने मम्मी-पापा अर्जुनदास सेतिया-भजन देवी सेतिया, रवि चाचा जी-प्रेम चाची जी, महेन्द्र चाचाजी-सरोज चाजीजी, सुरेन्द्र भैया-प्रेरणा भाभी, राजेन्द्र भैया-शालिनी भाभी, राजकुमार-शिवानी, रोबिन-डाली, नितिन-अर्पिता, विपुल-तृप्ति, संकुल-आशिमा की जिनके प्रयासों से यह नेक कार्य होने जा रहा है। आने वाली पीढ़ियाँ इस स्मारिका को पढ़ेगी और नेक संस्कारों से प्रेरणा लेगी। मेरी चारों बुआ ज्ञान, कमलेश, उषा और सुनीता रानी और मुझे तथा मेरी प्रिय बहन रैना को इस सेतिया परिवार में जन्म लेने पर नाज है। प्यारी विमला बुआ को धन्यवाद जिनके माध्यम से यह कार्य पूरा होने जा रहा है और मुझे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का मौका मिला है।



वर्ष 2015 में मंजु खुराना के जन्मदिन पर आशीर्वाद और असीम प्यारभरी शुभकामनाएं देते हुए माताजी तथा परिवार के सदस्य

Parental love is the purest love on the earth.

'बेहिसाब असर होता है बुजुर्गों की दुआओं में,
तभी तो हम ठोकर खाकर भी संभल जाते हैं'



- साहिल खुराना

श्रीमान गिरधारीलाल जी सेतिया मेरे नाना श्रीमान अर्जुनदास जी के पिता थे यानि कि मेरे बड़े नानाजी। उन्होंने हम सबको बहुत प्यार दिया। वे बहुत ही सच्चे और महान इंसान थे। मैं सौभाग्यशाली हूँ जो मुझे उनका प्यार मिला। वे सरल हृदय वाले व्यक्ति थे। वे उपदेश भरे किस्से कहानियाँ बहुत सुनाया करते थे। हर बात को उदाहरण के साथ समझाते थे। उनका कहना था कि अपने माता-पिता की एक आवाज पर फौरन हाजिर हो जाओ और उनकी बात कभी मत काटो। वे कहा करते थे कि माता-पिता की भावनाओं का ध्यान रखते हुए उनसे सदा दिल की गहराइयों से प्रेम करो क्योंकि उन्होंने हमारे सर्वांगीण विकास के लिए हर पल अथक प्रयास किया है। वे हमेशा प्रेरणादायी बातें साझा करते थे। गली मोहल्ले में वो कुत्ते और गाय को रोज रोटियाँ खिलाते थे। उन्होंने आनंदपुर कुटिया का निर्माण करवाया था। उनके जनहित के कार्य और बहुत सी प्रेरणादायक यादें अविस्मरणीय रहेंगी।

मेरी बड़ी नानी (माताजी) किसी परिचय की मोहताज नहीं। कहते हैं कि दुनिया में अपने लिए तो सब जीते हैं लेकिन जो अपने स्वार्थ को पीछे छोड़ मानव कल्याण के लिए जीते हैं वही महान हैं। ऐसे महान व्यक्तियों को दिल से याद किया जाता है। ऐसी ही महान हस्ती थे हमारे बड़े नाना-नानी। उनमें हर व्यक्ति के लिए अपार प्रेम था। उन्होंने परिवार को एक सूत्र में पिरोकर रखा हुआ था। वो आध्यात्मिक प्रवृति के थे। उन्होंने सदैव सत्य, प्रेम और धर्म पर आधारित जीवन जिया।

आज मैं उनके बारे में लिखते हुए महसूस कर रहा हूं कि परिवार आज भी उनकी कमी बहुत महसूस करता है। मेरे नाना श्री अर्जुन दास सेतिया, श्री रवि कुमार और महेन्द्र कुमार द्वारा प्रकाशित करवाए जाने वाली यह स्मारिका मेरे परमपूजनीय बड़े नानाजी और नानीजी की प्रेरणादायक स्मृतियों को सदैव बनाए रखेगी।





Sahil Khurana won the 2nd Runners-up position in the National Level Aditya Birla Group Badership Program Stratos Competition in 2019, amongst 3600 + MBA students in India.

Love is the bridge between us and everything.

'जितना भी समय बड़ी नानी और बड़े नानाजी के साथ बिताया वो अनमोल था'



- मुस्कान खुराना, सुपुत्री मंजु खुराना

बड़ी नानी का प्यार बहुत किस्मत वालों को मिलता है, खुशनसीबी है मेरी कि मैं उनमें से एक हूँ....

बड़ी नानी के लिए लिखते हुए हर्ष हो रहा है क्योंकि वो आदर्श महिला थी। सदा हर व्यक्ति के प्रति शुभकामना और शुभ भावना रखो यही सीख दी थी बड़ी नानी ने। हम कोशिश कर रहे हैं कि उनकी सीख को जीवन में अपनाएँ। जितना भी समय उनके साथ बिताया वो अनमोल था। नाना के घर जाना तो उन्होंने अपने पास बैठा लेना, पीठ सहलाना, हालचाल पूछना, प्यार करना बहुत अच्छा लगता था। बड़ी नानी ने मुझे सेब खाना सिखाया। कटा हुआ सेब मेरे हाथ में देकर बोलती, खाकर देखो कितना मीठा है। सेब से ज्यादा मिठास उनकी वाणी में थी। मैं सारा खा गई, इस तरह मुझे सेब खाना आ गया। उनकी एक और बात मुझे याद है। मेरे नानाजी श्री अर्जुन दास जी के बचपन में बड़ी नानी उन्हें काका कहकर बुलाती थीं। हमें सुनने में बहुत अच्छा लगता था। अब हम उन्हें बहुत मिस करते हैं। शत-शत नमन बड़ी नानी !

अब बात करूंगी मैं बड़े नानाजी की, अति प्रभावशाली व्यक्तित्व, गोरे चिट्टे देखने में अति सुन्दर लगते थे। मैं बहुत छोटी थी, पर मुझे याद है, जब मैं स्कूल जा रही होती थी तो वो मुझे पाँच रुपये दिया करते थे। ज्यादा समय तो नहीं मिला उनके साथ रहने का, मगर इतना याद है कि वो हम सब बच्चों से बहुत प्यार करते थे। जवाहर नगर स्थित बड़े नाना के घर जाते थे तो वो अपनी गोद में बैठा लेते। मेरे दादा श्री तिलक राज खुराना और बड़े नानाजी हमारी तरह बातें करते थे। हमें बड़ा अच्छा लगता था, जब वो हँसी मजाक करते थे। हमारे बड़े नाना सबका बहुत ख्याल रखते थे। जीवन में उनकी कमी का अहसास हमेशा बना रहेगा।



इक-दूजे की मुस्कान भाई-बहन
अपनी मम्मी श्रीमती मंजु खुराना के साथ

'परम वंदनीय माताजी और पिताजी की पावन स्मृतियां सदैव हमारे दिलों में बनी रहेंगी'



-श्रीमती उर्मिला खुराना
(धर्मपत्नी स्व. श्री तिलक राज जी खुराना)

परमपिता परमात्मा की अपार कृपा से वर्ष 1994 में हमारे सुपुत्र आशीष खुराना का विवाह श्री गिरधारीलाल जी सेतिया की बड़ी पोती मंजू बाला से हुआ और इस प्रकार हमारे परिवार के सेतिया परिवार से सम्बन्ध जुड़े। परमपूज्य पिता श्री गिरधारीलाल जी और माता श्रीमती लाजवंती देवी जी का जीवन पूर्णतया प्रेमभाव और सेवाभाव पर आधारित था। उनके यहाँ जब भी जाना होता था वे खूब आवभगत किया करते थे और हम सहज रूप से दिल की बातें किया करते थे। अच्छा सोचना, अच्छा करना, सबका दिल से ख्याल रखना और परस्पर सहयोग से आगे बढ़ना उनके स्वभाव में था। उन्होंने धैर्य और प्रेमपूर्ण त्याग से रिश्तों की मर्यादा को सदैव बनाए रखा और परमात्मा की शक्ति के साथ आगे बढ़ते रहे। उन्हें जो भी प्राप्त हुआ उसे उन्होंने अच्छा बना लिया। हमारे सम्माननीय समधि-समधन श्री अर्जुन दास जी सेतिया - श्रीमती भजन देवी सेतिया ने हमें सदैव प्रेमपूर्ण सहयोग प्रदान किया है। सेतिया परिवार के सदस्यों का विनम्र व्यवहार माता-पिता द्वारा प्रदान किए गए सुन्दर संस्कारों को दर्शाता है। परम वंदनीय माताजी और पिताजी की पावन स्मृतियां सदैव हमारे दिलों में सदैव बनी रहेंगी।



श्री अर्जुनदास सेतिया अपने समधी श्री तिलकराज खुराना के साथ

'परमपूज्य माताजी और पिताजी ने हर रिश्ते को दिल से उम्र भर निभाया'



-अलका गगनेजा
(सुपुत्री स्व. श्री तिलकराज खुराना - श्रीमती उर्मिला खुराना)

हमें ऐसे प्रतीत होता है जैसे सेतिया परिवार का हमारे परिवार से सम्बन्ध जुड़ना पुण्य कर्मों का अच्छा फल है। परमपूज्य पिता श्री गिरधारीलाल जी सेतिया और माताजी श्रीमती लाजवंती देवी की पहचान उनके सत्कर्म ही हैं। विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने सहजता से जीवन जिया। यह जग जाहिर है कि उन्होंने बच्चों को शुरू से ही अनुशासित रखते हुए अच्छी आदतों को इस प्रकार से उनकी दिनचर्या का हिस्सा बनाया कि वे सही गलत में फर्क समझ सकें। उन्होंने अच्छी परवरिश द्वारा बच्चों का भविष्य संवारा और धैर्य दिखाते हुए कड़े संघर्ष द्वारा कठिन परिस्थितियों में भी अपनी नई पहचान स्थापित की। परमपूज्य माताजी और पिताजी का हृदय अति विशाल था। उन्होंने हर रिश्ते को दिल से उम्र भर निभाया। उनके बारे में हम हर पल यही महसूस करते हैं:

प्रेमपूर्ण व्यवहार से सदा दिल जीता हमारा।

जीवन के हर मोड़ पर मिला उनका आत्मिक सहारा।।

'वाणी की मिठास, हाथों की गर्म जोशी, स्नेह से लबालब आँखें, निश्छल मुस्कान उनके व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देते थे'



- अमित नागपाल

मीठे व्यक्तित्व के धनी थे माताजी व पिताजी। सबसे पहले तो मैं स्वर्गीय माताजी एवम् पिताजी पर स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय लेने के लिए तथा परिवार में सबको और विशेष रूप से मुझे अपने भाव व्यक्त करने के लिए प्रेरित करने वाले आदरणीय बाऊजी श्री अर्जुनदास जी सेतिया को बधाई देना चाहता हूँ क्योंकि उनके प्रोत्साहन के बिना शायद इस स्मारिका का प्रकाशन संभव न हो पाता। सेतिया परिवार से मेरा रिश्ता 7 मार्च, 2000 को जुड़ा जब रैना मेरी जीवन संगिनी बनी। 22 साल से ज्यादा वक्त हो गया। शादी के बाद जब मेरा नया-नया ससुराल जाना शुरू हुआ तो नए दामाद की आवभगत की खातिर परिवार के सभी घरों में डिनर पर बुलाया जाता। कभी किसी के घर तो कभी किसी के घर। बड़ा अच्छा लगता। ऐसे ही महेन्द्र अंकल-सरोज आंटी के घर जाने का मौका मिला। अंकल-आंटी ने जो खाना खिलाया वो तो यादगार था ही, माताजी-पिताजी ने जो स्नेह व अपनत्व दिखाया वो अविस्मरणीय था। माताजी ने अपने हाथों से एक-एक चीज खिलाई।

फ्रूटस की बड़ी प्लेट मुझे दी जिसमें तरह-तरह के बेहतरीन फल थे। तब मुझे ज्यादा फल खाने का शौक नहीं था। मैंने फल कम करने को कहा, मगर माताजी का प्रेम ही ऐसा था कि मना नहीं कर पाया। प्लेट वापस रखता तो उठा कर दोबारा मेरे हाथों में पकड़ा देतीं। यानी उन्होंने यह निश्चय कर रखा था कि जब तक मैं फल पूरी तरह से ना खा लूं, वो वहाँ से नहीं उठेगी। ऐसा एक नहीं अनेक बार हुआ और तो और जब ड्राई फ्रूट्स सर्व होते तो मैं एक आध काजू या बादाम उठाकर मुँह में डाल लेता। उनको मेरा इस तरह से ड्राई फ्रूट्स खाना अच्छा नहीं लगा। वो बादाम की मुट्ठी भरती और जबरन मेरे हाथ में थमा देती। पिस्ते को अपने हाथ से छील-छील कर मेरी मुट्ठी में भर देती। अब क्या करता, खाने ही पड़ते।

कोई खाने पीने का भूखा नहीं होता, मगर जिसे प्यार, स्नेह, अपनापन मिल जाए तो वो तो सामने वाले के प्यार में दीवाना हो ही जाएगा। वो प्यार से सबको अपना बना लेती थीं। वाणी की मिठास, हाथों की गर्मजोशी, स्नेह से लबालब आँखें, निश्छल मुस्कान उनके व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देते थे। हाथ पकड़ कर अपने दोनों हाथों में दबा लेती और देर तक थामे हुए रिश्तों की मजबूती का अहसास करवाती। बड़ा ही विलक्षण व्यक्तित्व था उनका। ऐसा एक बार नहीं,



मार्च 2000 में माताजी और पिताजी रैना-अमित नागपाल के विवाह के शुभ अवसर पर वर-वधू को आशीर्वाद देते हुए



रैना-अमित नागपाल अपने निवास स्थान पर



वर्ष 2000 में रैना-अमित नागपाल के सगाई समारोह पर श्री अर्जुनदास सेतिया-श्रीमती भजनदेवी सेतिया अपने दामाद श्री अमित नागपाल का आशीर्वाद स्वरूप माल्यार्पण करते हुए

हर बार ही होता। कैसे भूल सकते हैं उस ममतामयी माँ को। यह उनके विराट व्यक्तित्व का एक पहलू भर है। माताजी के स्वर्गवास से कुछ समय पहले मैं और रैना जयपुर गए थे। उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। बिस्तर पर लेटी हुई थीं पर उन्हें तब भी अपनी फिक्र नहीं थी, हमारी थी कि इनकी आवभगत अच्छे से हुई कि नहीं।

हमें माताजी से मिलकर कार से श्रीगंगानगर के लिए निकलना था। लेट हो रहे थे, उठने लगे तो माताजी ने सरोज आंटी को बुलाकर कहा कि इन्हें चाय नाश्ते के बगैर जाने नहीं देना। बड़ा मना किया कि नाश्ता करके आए हैं और चाय की भी कोई खास इच्छा नहीं है। उनसे कहा कि हमें जल्दी निकलना है। सरोज आंटी तो एक बार हमारी बात समझ गई मगर माताजी ने तो जिद्द ही पकड़ ली कि चाय पी कर ही जानी पड़ेगी। फिर हम शांति से बैठ गए। चाय का मतलब पहले फल फिर मेवे और फिर चाय। करीब एक घंटे बाद जब हम चाय पीकर उठे तो मैंने माताजी का हाथ पकड़ कर कहा, "माताजी अब तो खुश हो?" वे बोली, "हाँ, हुन मैं खुश हाँ, तुसी मेरी गल मन लई।" मेरा दिल उनके झर-झर बहते प्रेम से गद्-गद् हो रहा था। मैं भूल गया था कि अभी सात-आठ घंटे ड्राईव करके वापिस भी जाना है। क्या पता था कि माताजी से ये आखरी मुलाकात है। यादें... बस यादें।

पिताजी के साथ मेरी मुलाकातें कम ही हुई। क्योंकि मेरी शादी के कुछ वर्षों बाद ही वे देवलोक गमन कर गए थे। मैं उनकी बहुत इज्जत करता था। दरअसल मैं उन्हें अपने दादाजी जैसा ही पाता था। मेरे दादाजी का मेरी शादी से पहले ही स्वर्गवास हो गया था, तो मुझे वो अपने दादाजी जैसे ही लगे। जब मैंने पिताजी को देखा तो मुझे लगा जैसे दोबारा मेरे दादाजी मुझे मिल गए। उनका पहनावा, सफेद कुर्ता, तहमद बिल्कुल मेरे दादाजी जैसी ही थी। पिताजी मुझसे हमेशा पूछते, 'होर सेठ जी ठीक हन'। मैं शुरू-शुरू में समझ नहीं पाया कि 'सेठ जी' किसको बोल रहे हैं। बाद में पता चला कि वो अपने सभी समधियों को 'सेठजी' कहकर ही बुलाते थे। यानी कि वो मेरे पापा जी का हालचाल पूछते थे। माताजी के मुकाबले पिताजी कम बोलते थे। मगर घर पर सबका हालचाल, सेहत के बारे में पूछना, कारोबार की बात करना नहीं भूलते थे।

एक और दिलचस्प बात मुझे उनकी याद आती है। वे अनेक लोगों की मौजूदगी में भी अक्सर पूछते थे, 'दुनिया विच सबतों मिट्ठी चीज की है?' कोई कुछ बोलता, कोई कुछ, अंत में वो बोलते: 'सबतों मिट्ठी जनानी।' और सब खूब हँसते। धीरे-धीरे हमें



वर्ष 2000 में रैना-अमित के शुभ विवाह पर राजेन्द्र सेतिया एवं स्व. श्री कमल नागपाल पिताजी से परामर्श करते हुए

पता चला कि किस प्रकार पिताजी ने कठोर परिश्रम व लगन से तथा काफी नीचे से शुरुआत करते हुए ऊँचा मुकाम बनाया था। बुजुर्गों के किए अच्छे कर्म, कठिन परिश्रम और आशीर्वाद ऐसे मीठे फल हैं जिनका भरपूर आनंद उनकी आने वाली पीढ़ियाँ उठाती हैं। सेतिया परिवार भी इस मामले में बेहद सौभाग्यशाली है।

'द्वार पर आए किसी को भी खाली हाथ नहीं भेजते थे'



- रैना नागपाल

जहाँ तक पिताजी को मैं समझ पाई उन्होंने वक्त के साथ अपने आपको बहुत बदला। जो वक्त के साथ चलता है उसका तालमेल सबके साथ बना रहता है। वो हम बच्चों से भी उतने ही खुलेपन से बात करते थे जितनी अपने हम उम्र लोगों से। मुझे याद है वो समय जब माताजी-पिताजी को जयपुर शिफ्ट होने के लिए कहा गया। ढलती उम्र में किसी को अपना शहर, गाँव, मित्र, रिश्तेदार और अपना काम छोड़कर किसी नई जगह आने के लिए कहा जाए तो मुश्किल तो आती ही है। उन्हें लगा होगा कि अब उन्हें रिटायरमेंट की जिन्दगी जीनी पड़ेगी मगर फिर भी उन्होंने बच्चों का साथ दिया और जयपुर आ गए। बड़ों का साथ और उनका आशीर्वाद पाकर परिवार नित नई ऊँचाइयाँ छूता गया।

क्योंकि मैं छोटी थी तो मुझे उनके साथ काफी वक्त बिताने का मौका मिला। बचपन में मैंने देखा कि पिताजी बाहरी रूप से थोड़े कठोर थे जबकि समय-समय पर प्रोत्साहित भी किया करते थे। मैंने बदलते वक्त के साथ उनके मिजाज को बदलते देखा। जब वो जयपुर आए तो उनका स्वभाव काफी शांत और विनम्र हो गया था। धीरे-धीरे उन्होंने स्वीकार कर लिया कि परिवर्तन जीवन का नियम है। उनके इस बदले हुए स्वभाव से हमें यह सीखना चाहिए कि जो वक्त के साथ चलता है वो सबको साथ लेकर चल सकता है। पिताजी की एक और खूबी यह भी थी कि उनकी कहावतों और बुझारतों का सिलसिला कभी भी थमता नहीं था। उन्होंने जो भी बात कहनी या सुनानी होती उसके उदाहरण स्वरूप कोई न कोई कहावत फिट कर ही देते। ज्यादा तो याद नहीं पर वो राजेन्द्र भैया को बीरबल कहा करते थे।

अगर माताजी की बात करें तो पूरे परिवार को एक रखने की भूमिका उन्होंने ही निभाई। समाज और रिश्तेदारों को वो ही ज्यादा संभालती थीं। घर में कोई मेहमान आए तो उसकी आवभगत करना और दर पर कोई उम्मीद लिए आए तो उसे निराश न करना उनके स्वभाव में शुमार था। जब हम जैतसर रहा करते थे तो उन दिनों फ्रिज किसी-किसी के घर में हुआ करता था। हमारे घर में था। गर्मी भी खूब पड़ती थी। अड़ोस-पड़ोस से कोई आ जाता तो माताजी बर्फ बाँट-बाँट कर सबको दे देती। कभी-कभी इसी चक्कर में परिवार के लिए बर्फ खत्म हो जाती तो घर वालों की नाराजगी भी झेलनी पड़ती। तो वो कह देती, मैं तो किसी को खाली हाथ जाने नहीं दूंगी। बर्फ ज्यादा जमाया करो। यानी कि बाँट के खाना और सबका ध्यान रखना, कितना बड़ा गुण था उनमें। अब आगे ये गुण सब बच्चों में आए। धर्म कर्म और नियम में तो उन्होंने जिन्दगी भर अपने आप को बाँधे रखा। यही अनुशासन अब सबमें है। आज परिवार में छोटे से लेकर बड़े तक एक सूत्र में बँधे रहते हैं, इसी वजह से परिवार बंद मुट्ठी की तरह एक साथ है।



अमित नागपाल-रैना नागपाल अपने सुपुत्र देवांश और कुशाग्र के साथ

बदलने की क्षमता व्यक्ति की बुद्धिमता का वास्तविक आंकलन है।

'The values imparted by Mataji and Pitaji are beyond estimate.'

- Devansh Nagpal S/o Shri Amit Nagpal



It is my misfortune that I couldn't spend much time with Pitaji and Mataji. I was still young when they passed away but one distinct memory of Mataji I cherish to date is when she narrated a series of unfortunate events faced by the family at the time of the partition of the country. It was remarkable to see the passion in her eyes as she inspired us by the family's unyielding determination. Starting from level zero isn't a cakewalk. Bauji went to work at an early age and soon all the hard work began paying off.

I see the family's accomplishment in the form of reflection of our elders' impeccable guidance. The values imparted by Mataji and Pitaji are beyond estimate. In my opinion, the book 'Amar Smritiyaan' will eternalize the family values and concretely pass them on to the generations to come.

'I wish I could have spent more time with Mataji'



- Kushagra Nagpal S/o Shri Amit Nagpal

memories which I can clearly recall till day. She was such a kind and warm-hearted soul that anyone would feel home around her. She was very beautiful, graceful and knew how to carry herself. Whenever I went to Jaipur and met her, she would always meet me with the same affection. She would also tell me stories from her childhood. For instance, Mataji once told me how she and all the other members of her family crossed the Pakistan border with fortitude at the time of the partition of the country. She was a strong and independent woman of faith and great determination. Mataji was a wonderful combination of warmth and kindness, cheerfulness and love. I really miss Mataji and her warm hugs. She made our family complete. There will always be a special place for her in my heart and I will always miss her I wish I could have spent more time with you, Mataji!

Pitaji

To be honest, I never really had the chance to meet Pitaji or even if did, I was too small to remember it but still, from what my mother told me, I could definitely tell one thing that he was a person with great personality and ethics. Maa would also tell me stories of how adorable he was. He was a role model for the Setia family. Everyone looked up to him. His teachings and rich experience made his children eminently successful in their respective fields as well as taught them to be kind, generous and modest.

Mataji

I had met Mataji plenty of times before she left us and I have got a lot of



Kushagra Nagpal studied in Blooming Dales International School, Sri Ganganagar for 14 years. He was awarded the prestigious title 'Mr. BDIS' on account of his outstanding academic achievements, pleasing manners and the quality of being diligent. We are all proud of him.

The most valuable gifts we can give to others are sharing and caring.

'माताजी से जब-जब मिलना हुआ हमें प्रेम के रंग में रंग दिया करती थीं'



- नीलम नागपाल धर्मपत्नी स्व. श्री कमल नागपाल

परम पूजनीय माताजी श्रीमती लाजवंती देवी जी अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी थीं। उनके चेहरे का तेज आज भी हमारी आँखों में बसा हुआ है। उनकी प्यार भरी निगाहें, मीठी बोली और स्नेहपूर्ण आशीष कोई कभी भुला नहीं सकता।

जब-जब उनसे मिलना हुआ वो हमें प्रेम के रंग में रंग दिया करती थीं। सबका हालचाल पूछतीं और सबके लिए भगवान से प्रार्थना करती थीं। स्नेहपूर्वक दिल ही नहीं पेट भी इतना भर देती थीं कि जो भी उनसे मिलकर आता घंटों तक कुछ खा नहीं पाता था, ऐसी थी आवभगत उनकी। माताजी को साफ-सफाई का बहुत शौक था। नियमित और नियंत्रित खान-पान की आदत के चलते उन्होंने प्राय: स्वस्थ जीवन व्यतीत किया।

माताजी और पिताजी ने इतने बड़े परिवार को समेट कर अपनी ओट में रखा हुआ था और आज सेतिया परिवार उन्हीं के दिये संस्कार और उन्हीं के दिखाए मार्ग पर चल रहा है। मेरे स्वर्गीय पति माताजी और पिताजी की भरपूर प्रशंसा करते हुए उनके बारे में प्रेरणादायक बात बताया करते थे।



स्व. माताजी और पिताजी को शत्-शत् नमन!

सेतिया परिवार

श्री गिरधारी लाल सेतिया एवं श्रीमती लाजवंती देवी सेतिया का परिवार

- श्री अर्जुनदास सेतिया – श्रीमती भजन देवी (पुत्र–पुत्रवधू)
- श्री सुरेन्द्र कुमार सेतिया – श्रीमती प्रेरणा सेतिया (पुत्र–पुत्रवधू)
  - श्रीमती शिवांगी भाटिया – श्री उज्जवल भाटिया (पुत्री–दामाद)
  - शुभम सेतिया (पुत्र)
- श्री राजेन्द्र कुमार सेतिया – श्रीमती शालिनी सेतिया (पुत्र–पुत्रवधू)
  - यश सेतिया (पुत्र)
  - कुमारी तान्या सेतिया (पुत्री)
- श्री राजकुमार सेतिया – श्रीमती शिवाली सेतिया (पुत्र–पुत्रवधू)
  - कुमारी सहाना सेतिया (पुत्री)
  - रणवीरराज सेतिया (पुत्र)
- श्रीमती मंजू खुराना – स्व. श्री आशीष खुराना (पुत्री दामाद)
  - साहिल खुराना (पुत्र)
  - कुमारी मुस्कान खुराना (पुत्री)
- श्रीमती रैना नागपाल – श्री अमित कुमार नागपाल (पुत्री दामाद)
  - देवांश नागपाल (पुत्र)
  - कुशाग्र नागपाल

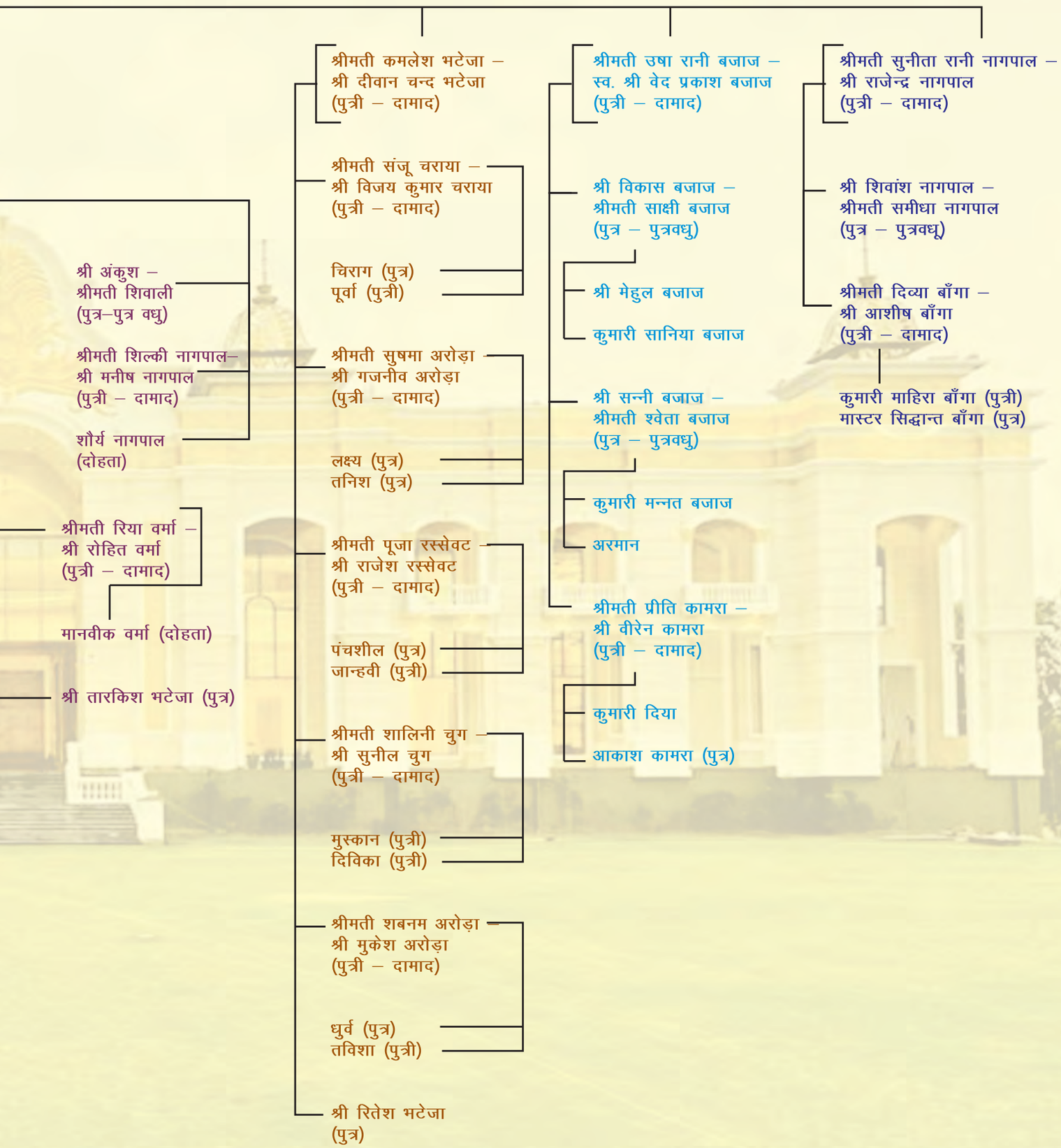
- श्री रविकुमार – श्रीमती प्रेम सेतिया (पुत्र–पुत्रवधू)
- श्री रॉबिन सेतिया – श्रीमती डोली सेतिया (पुत्र–पुत्रवधू)
  - मास्टर अयान सेतिया (पुत्र)
- श्री नितिन सेतिया – श्रीमती अर्पिता सेतिया (पुत्र–पुत्रवधू)
  - मास्टर हारवीन सेतिया (पुत्र)

- श्री महेन्द्र कुमार सेतिया – श्रीमती सरोज रानी सेतिया (पुत्र–पुत्रवधू)
- श्री विपुल सेतिया – श्रीमती तृप्ति सेतिया (पुत्र–पुत्रवधू)
- श्री संकुल सेतिया – श्रीमती आशिमा सेतिया (पुत्र–पुत्रवधू)

- श्रीमती ज्ञान देवी वधवा – स्व. श्री जगदीश राय वधवा (पुत्री – दामाद)
- श्रीमती कंचन चिलाना – श्री राजकुमार चिलाना (पुत्री – दामाद)
- श्रीमती शशि भठेजा – श्री हेमराज भटेजा (पुत्री – दामाद)

The most important thing in the world is family and love.

हमारा वंश वृक्ष : हमारी पहचान का अभिन्न अंग



Where there is family, there is love.

'उन्हें हम कभी भूल नहीं पायेंगे'



-जोगिंदर कुमार चुग -श्यामलाल चुग

(सुपुत्र स्व. श्री रामचंदजी चुग - श्रीमती नारायणीदेवी)

यह हमारा परम सौभाग्य है कि हमारी बहन भजन देवी का विवाह स्वर्गीय श्री गिरधारीलाल जी सेतिया के बड़े बेटे अर्जुनदास जी से हुआ। हमारी बहन ने सेतिया परिवार में वातावरण सदैव सहज, सम्मानपूर्ण और प्रेमपूर्ण पाया। हमारे माता-पिता स्वर्गीय गिरधारीलाल जी सेतिया और श्रीमती लाजवंतीजी से बहुत प्रभावित थे। उनका आपस में भाई-बहनों जैसा प्यार था। जब भी वे श्रीगंगानगर आते तो हमारे माता-पिताजी पलक पावड़े बिछाकर उनका स्वागत और आवभगत करते थे और जब हमारे पिताजी या घर का कोई भी सदस्य जैतसर जाता तो वो भी आदर सत्कार में कोई कसर नहीं छोड़ते थे। हमारी मौसी श्रीमती लाजवंती देवी सेतिया का स्वभाव और व्यवहार बहुत ही मधुर था। उन्होंने अपने जीवन में हमें बहुत प्यार दिया और जब कभी वे हमारे यहाँ आती थीं तो हमारी माताजी तहेदिल से उनका स्वागत करती थीं। इन दोनों ने अपने जीवन में कभी किसी का दिल नहीं दुखाया और बच्चों को बहुत लाड़-प्यार दिया। उन्हें हम कभी भूल नहीं पायेंगे।



स्व. श्री ओमप्रकाश तुतलानी - श्रीमती रेशमा तुतलानी



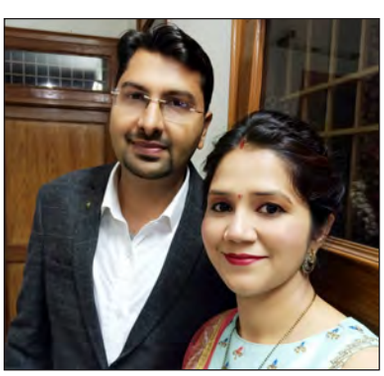
श्री मदनलाल नारंग - श्रीमती आशा रानी नारंग

(स्व. श्री रामचंदजी चुग - श्रीमती नारायणीदेवी की सुपुत्री और दामाद)



निशांत चुग-डिंपल चुग

(श्री जोगिंदर कुमार चुग के सुपुत्र और पुत्रवधू)



गौरव चुग-कंचन चुग

(श्री श्यामलाल चुग के सुपुत्र और पुत्रवधू)

परम श्रद्धेय माताजी और पिताजी की जीवन शैली से जाना की आत्म हित में बदलते समय के साथ स्वयं को सकारात्मक रूप से बदलते रहना बहुत आवश्यक है।

रूह से जुड़े रिश्ते गहरे होते हैं।

'प्रभु कृपा से हमारे नाना-नानी को सात पीढ़ियां नसीब हुई'



राजकुमार चिलाना - कंचन चिलाना

नाना-नानी के तो नाम से ही प्यार छलकता है। मेरे जन्म पर वो पहली बार नाना-नानी बने। मम्मी जी ने बताया कि उनका मेरे साथ इतना लगाव था कि अभी मैं 6 महीने की थी और फीड लेती थी, मुझे अपने साथ ले गए। आठ दस दिन तक मैं अकेली ही उनके पास रही। सभी ने बहुत ही लाड़-प्यार दिया। जब थोड़ी बड़ी हुई और स्कूल जाने लगी तो स्कूल की छुट्टियां होते ही हम आ जाते। जैतसर पहुँचने की जल्दी लगी रहती थी। स्कूल खुलने के आखरी दिन ही चले जाते और कई बार तो वापस जाने से पहले हम यहाँ वहाँ छुपने की कोशिश भी करते ताकि गाड़ी का समय निकल जाए और हम एक दिन और रह सकें। फिर भी जाते समय सबके गले लगकर रोना और आज तक भी यही हाल है। नानी से मिलकर रोते और जाते वक्त रोना बंद ही नहीं होता था। नानी कभी हमारा हाथ और कभी माथा चूमती।

छुट्टियों में जैतसर जाकर हमारा काम था खूब खेलना, खाना-पीना और सोना। 'नानी के घर जाएंगे, दूध मलाई खायेंगे' वाली कहावत हम पर सही उतरती थी। पहले बच्चों के खाने में आज जैसा कुछ नहीं होता था। गोली, टॉफी, चूरन, इमली गट्टा जैसी चीजें ही होती थी। घर पर आम, खरबूजे, तरबूज, गन्ने, ककड़ी, घर की बनी आइसक्रीम, कस्टर्ड, दही, मक्खन, परांठे खूब बिना गिने खाते थे। उन दिनों कोल्ड ड्रिंक का चलन नहीं था। मीठी लस्सी, शिकंजी, मैंगो शेक जितना चाहो पियो। शाम होते ही नाना जी जल्दी घर आ जाते और गली में चारपाई बिछाकर बैठ जाते। साथ ही गली में सारे बच्चे, बुजुर्ग और मामा मौसियों के सभी बच्चे इकट्ठे हो जाते। फिर खूब खेलते। लुका-छुपी, शटापू, रस्सी कूदना और रस्सा कशी में बड़ा मजा आता। एक तरफ लड़के और दूसरी तरफ लड़कियां रस्सी खींचती। लड़कियों के जीतने पर पिताजी बहुत खुश होते और इनाम भी देते और लड़कों को कहते कि खा पीकर हराम कर दिया।



जनवरी 2019 में माता जी अपनी दोहती कंचन चिलाना के दोहते मासूम सौर्य पर असीम प्यार-दुलार बरसाते हुए

पिताजी जब शाम को गाय भैंसों का दूध निकालते तो थोड़ा-थोड़ा दूध थनों में छोड़ देते और हमें कहते कि एक-एक थन से तुम सीधा कच्चा दूध पियो। इस तरह मुझे तो दूध निकालना भी आ गया। शादी के बाद मेरे घर पर दो तीन गाय-भैंसें थी। शादी के बाद मैंने दस बारह साल तक उनका दूध निकाला। खेल-खेल में हमें दूध निकालना आ गया था। पिताजी मामी जी से कहते कि ज्ञान

अपनी बेटियों कंचन, शशी से काम नहीं करवाती, इनको खाना बनाना सिखाओ। मामीजी जब काम करते तो हम पास खड़े रहकर बातें भी करते और काम भी सीखते। जब ससुराल गए तो काम करते वक्त वही वीडियो देखते रहने के कारण काम करने में कोई दिक्कत नहीं हुई। हमारे नाना-नानीजी का समधियों से बहुत प्रेम था। मेरे सास ससुर को उन्होंने जयपुर बुलाकर पूरा जयपुर घुमाया और वे उनकी सेवा से बहुत प्रसन्न हुए। नानीजी सुलझे विचारों वाली थीं। वो घर को हमेशा साफ-सुथरा और व्यवस्थित रखती थीं। वो कहा करती थीं- 'शहर वस्सन देवते, ते पिंडां वस्सन भूत'। यही सोच उनको जैतसर से जयपुर ले आई। उन्होंने कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। जल्दी ही जयपुर को अपना लिया। बढ़ती उम्र में भी उन्होंने सबसे मिलना-जुलना और फोन पर सभी का नाम लेकर बात करना जारी रखा।

चूंकि मैं थोड़ी हैल्दी हूँ तो नानाजी मुझे सलाह देते कि जिम जाया कर और सैर किया कर। उनके स्वर्गवास से कुछ समय पहले जब हम जयपुर आए तो उन्होंने मेरे दोहते को गोदी में लेकर प्यार किया और खाना खिलाया। प्रभु कृपा से उन्हें सात पीढ़ियां नसीब हुई। भले ही आज वो इस दुनिया में नहीं मगर उनकी यादें सदैव हमारे साथ रहेंगी।

-कंचन चिलाना



अंकुश चिलाना-शिवाली चिलाना
(श्री राजकुमार चिलाना- श्रीमती कंचन चिलाना के सुपुत्र और पुत्रवधू)



मनीष नागपाल-सिल्की नागपाल
(श्री राजकुमार चिलाना- श्रीमती कंचन चिलाना के पुत्री-दामाद)

नानी माँ के बेशुमार लाड़ प्यार को हम कभी भी भुला नहीं पाएंगे।

For Nanima- "Grandma held our tiny hands for just a little while but our hearts forever. She was a blessing for us."

'प्यार और लाड का दूसरा नाम ही है नाना-नानी'





शशी भटेजा- हेमराज भटेजा



मैं अपने नानाजी और नानी माँ की याद में कुछ भावपूर्ण पंक्तियाँ लिख रही हूँ। मेरा ननिहाल जैतसर था और हम श्रीगंगानगर में रहते थे। हम जब छोटे थे तो हमारे नानाजी काम के सिलसिले में अक्सर गंगानगर आते रहते थे। हमने अपने नाना और नानी जी से बहुत प्यार पाया। स्कूल की छुट्टियों में हम नाना जी के साथ ट्रक में बैठकर जैतसर चले जाते। ट्रक में बैठकर जाना हमें बहुत अच्छा लगता था। मेरी नानी माँ बहुत सेवा भाव वाली थी। गाँव में हर तरीके से वे सबकी सहायता किया करती थीं।



मास्टर तारकिश भटेजा

घर के पास रेत के टीले पर एक वृद्ध महिला कुटिया में रहती थी। माताजी हर रोज उसके लिए नाश्ता, खाना बनाकर भेजती और उनकी हर जरूरत का ध्यान रखतीं। माताजी की एक गुरु बहन भगवानी देवी जी थी, जिनके प्रति वो विशेष प्रेम और सेवा भाव रखती थीं। घर में जो भी बनता, वो उनके घर भी भेजती। सेवा भाव का पाठ बच्चों ने उनसे बचपन में ही सीख लिया था। आज हमें भी उसी सेवा भाव से जीवन बिताना अच्छा लगता है। जिंदगी में चाहे कितनी भी मुसीबतें आई, नानी माँ की सिखाई अच्छी बातों से हमने उनका सामना किया और अच्छे कर्म करते हुए उनके दिखाए रास्ते पर चलने की कोशिश करते हैं। हमने उन द्वारा दिखाए गए रास्ते को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया है। नाना-नानी जी द्वारा दिखाए मार्ग पर चलना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

-शशी भटेजा

'ऐसा लगता है कि प्रभु ने उन्हें दूसरों की सहायता के लिए ही भेजा था'



रोहित वर्मा - रिया वर्मा

(श्रीमती राशि भटेजा-श्री हेमराज भटेजा की पुत्री और दामाद)

जिन्दगी जब रात के बियाबान में स्मृतियों की तलछट कुरेदती है, अक्सर सुख-दुःख, राग-द्वेष की घटनाएँ घंटाघर के घंटे की तरह टन-टन-टन बजने लगती हैं। पहली बार जब सेतिया परिवार से मिले तो सच में इस परिवार ने अपने प्रेम से हम सबका मन मोह लिया। परिवार के सभी सदस्यों का एक दूसरे के प्रति प्रेम, समर्पण, लगाव यह सोचने पर विवश करता है कि आखिरकार ऐसे हीरों को तराशने वाला किरदार कौन है। परम पूजनीय पिताजी स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल जी सेतिया एवम् माताजी श्रीमती लाजवंती देवी जी ही ऐसे किरदार हैं जिन्होंने इस प्रतिष्ठित परिवार की नींव रखी। देश के विभाजन के पश्चात् यह परिवार एक विस्थापित परिवार की तरह बिना किसी सामान या पूंजी के सूरतगढ़ में आया। उस समय श्री गिरधारीलाल जी के बड़े पुत्र श्री अर्जुनदास जी लगभग 3 वर्ष के और बड़ी लड़की मात्र 6 माह की थी। सूरतगढ़ से यह परिवार जैतसर आकर बसा और नये सिरे से व्यापार शुरू किया। इनके सान्निध्य, संरक्षण एवम् मार्गदर्शन के परिणामस्वरूप आज यह परिवार जयपुर के प्रतिष्ठित परिवारों में से एक है।



Our Little Angel : Maanvik

परम पूज्य पिताजी शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक गुणों से पुष्पित एवम् पल्लवित होने के साथ-साथ प्रबल उत्तरदायित्व की भावना भी रखते थे। उनकी सोच एवम् दृष्टिकोण सदैव सकारात्मक रहे। दया, करुणा एवम् दूसरों की भलाई का भाव सदा उनके मन में रहता था। उनकी ओर से घर में स्थायी निर्देश थे कि चार लोगों का अतिरिक्त खाना रोज बनाकर रखा जाए ताकि खाने के समय मिलने के लिए या किसी काम के लिए आने वाला व्यक्ति खाना खाए बिना न जाए।

परम वंदनीय माता श्रीमती लाजवंती देवी ने पिताजी का पग-पग पर सहयोग किया। जब पिताजी जयपुर रहने लगे तब भी जैतसर के लिए उनका प्रेम वैसा ही बना रहा। जो भी जैतसर से जयपुर आता था पिताजी से मिले बिना वापिस नहीं जाता था। सबसे बड़ी बात जो ध्यान देने योग्य है वो ये कि जैसे ही उन्हें किसी की आर्थिक, पारिवारिक या व्यवसायिक समस्या का आभास होता था तो वे तुरन्त उसकी सहायता करके उसकी परेशानी का समाधान कर देते थे। ऐसा लगता है कि प्रभु ने उन्हें दूसरों की सहायता के लिए ही भेजा था। अब यही गुण परिवार के सभी सदस्यों में देखने को मिलते हैं।

A diamond earns its sparkle from the pressure it endures.

'परमपूज्य माताजी और पिताजी के आदर्श हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे'



-देवधन वर्मा

स्वर्गीय श्री गिरधारीलाल जी शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक गुणों से भरपूर एवम् उत्तरदायित्व की भावना से परिपूर्ण थे। उनकी सोच सदैव सकारात्मक रही। दया, करुणा एवम् दूसरों की भलाई करने का गुण उनमें कूट-कूट कर भरा हुआ था। श्रीमती लाजवंती देवी सेतिया जी किसी परिचय की मोहताज नहीं। अपने पति का उन्होंने पग-पग पर साथ दिया। जब-जब भी उनसे मुलाकात हुई, उनके चेहरे पर धीरज, संतोष एवम् मुस्कान ही मिली। वह एक प्रतिभावान, उदार एवम् दूरदर्शी महिला थीं। अतिथि सत्कार उनके रोम-रोम में बसा था। मिलने पर उनके मीठे बोल सुनकर हर कोई नतमस्तक हो जाता था। वह कहा करती थीं कि घर में प्रेमपूर्वक एक साथ बैठना, एक दूसरे का सुख-दु:ख बाँटना और मिलजुल कर रहना ही संतोषजनक एवम् तृप्तिदायक होता है। सबको इसका महत्त्व समझना चाहिए। उनके मन के तार परमात्मा से जुड़े थे।

बच्चों और बहुओं से कहतीं कि रसोई में जो भी बनाओ पहले ईश्वर और अपने गुरुजी को भोग लगाओ। सब कुछ प्रसाद बन जाएगा। श्रीमती लाजवंती देवी ने ईश्वर के मार्ग पर चलते हुए सदैव सेवाभाव पर आधारित जीवन जिया। जीवन में उन्हें जो भी प्राप्त हुआ उसे गुरुप्रसाद के रूप में स्वीकार किया और अपना ध्यान ईश्वर में लगाए रखा। उनके सान्निध्य, संरक्षण, मार्गदर्शन एवम् आशीर्वाद से सभी बच्चों, बहुओं व पोते-पोतियों में सुन्दर संस्कार भरे हुए हैं। आज सेतिया परिवार सबके लिए मिसाल बना हुआ है। उनके मधुर व्यवहार, मीठे बोल और आशीर्वाद को हम कभी भुला नहीं पायेंगे। जिस अपनत्व एवम् अंदाज से वह कुछ कहती या पूछती थीं, वह छाप हृदय पर अमिट है। काश! हम उनके साथ कुछ और अधिक समय बिता पाते।

'मीठी यादें'



-राजरानी वर्मा

ममता की मूरत श्रीमती लाजवंती देवी जी को मिलने का सौभाग्य कभी-कभी ही प्राप्त हुआ लेकिन जब कभी भी उनसे मिले उन्होंने अपने सरल स्वभाव से मन मोह लिया। मुझे आज भी उनका मंद-मंद मुस्कराता हुआ चेहरा और उनके मीठे बोल याद आते हैं। हमें मिलकर अपने गले से लगाना, स्नेह से सिर पर हाथ फेरना अंतर्मन को खुशी से सरोबार कर जाता था। मुझे इस बात का सदा अफसोस रहेगा कि मैं उस माँ से बहुत कम मिल पाई जो कि ममता का सागर थीं। लेकिन खुशी इस बात की है कि उनके लगाए पेड़ की छांव का आनंद लेने का सुअवसर हमें मिलता रहता है। उनके सद्गुणों, संस्कारों, मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद से आज सेतिया परिवार सबके लिए एक मिसाल बन गया है। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि उनका आशीर्वाद हम सब पर सदा बना रहे।

'नाना जी सभी को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते थे'



संजू चराया - विनय कुमार चराया

नाना-नानी का रिश्ता तो प्यार और लाड से भरा होता है। नानाजी बहुत प्यार करते थे और सभी को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उनके लिए हर रिश्ते की अहमियत थी। उन्होंने हर रिश्ते को एकता के सूत्र में पिरोकर रखा। नानी जी के हर काम में एक कला थी। उनके हाथों का बना अचार और पिन्नियों का स्वाद एक यादगार बन गया।

जयपुर पहुँचते ही नानी का मिलने आना, लाड प्यार से मिलना और हाथों को पकड़ प्यारी-प्यारी बातें करना, माँ की ममता का अहसास कराती थी। आज भी उनके संस्कारों की महक हम सबके मन में है, कभी न भूलने वाली यादों के रूप में।



चिराग एवं पूर्वा चराया अपने मम्मी-पापा के साथ

'नाना नानी का घर है यादों का भण्डार,
छुपी हैं इसमें खुशियाँ हज़ार'



- सुषमा अरोड़ा

नाना-नानाजी का नाम सुनते ही मन अनगिनत यादों के समुद्र में डूब जाता है। स्कूल में गर्मियों की छुट्टियाँ होते ही मन नाना-नानी के घर जाने को करता था। आज भी याद है वो जैतसर वाला घर, खुला बड़ा आँगन। सबका मिलजुल कर प्यार से रहना, नानी का लस्सी बनाना, आम रस पिलाना। नाना जी का जेब खर्च देना और बचत करने के लिए प्रोत्साहित करना। वो दिन बहुत ही खूबसूरत थे। नानाजी का सबके लिए सेवाभाव और सबकी आवभगत करना सच में एक मिसाल है। हम आज भी उनके गुणों को अपनाने की कोशिश करते हैं।

कुछ और यादें भी हैं ज़हन में। नाना-नानी के साथ आनंदपुर जाना और वो ट्रेन का सफ़र आज भी मन को प्रफुल्लित कर देता है। उनका हमें ऐसे पवित्र स्थान पर लेकर जाना और शिक्षा व संस्कार देना। इसीलिए तो कहते हैं कि दुनिया में सर्वाधिक अनमोल है बुजुर्गों के साथ समय बिताना। आज हम उन्हीं संस्कारों की वजह से गर्व महसूस करते हैं।



श्री गजनीव अरोड़ा - श्रीमती सुषमा अरोड़ा अपने दोनो पुत्रों लक्ष्य व तनिश के साथ

'I have felt and seen very closely the values inculcated by Mata Ji and Pita Ji in the family'





-Gajneev Arora (Shammi)
S/o Late Shri Bheem Sen

Mata Ji and Pita Ji, thank you for building a family of love and kindness with strong bonding beyond any comparison.

I still remember every detail of the day when I first met them at our Tilak Nagar residence. On 21st Jaunary, 1996, they came to meet our family and see me as their granddaughter Sushma's prospective life partner. As they say the first impression is always very true, I found both of them to be very caring and impressive personalities in their own way.

I feel really fortunate to be part of Setia family and have felt and seen very closely the values inculcated by them in the family. The members of the family have carried forward their teachings so beautifully.

I somehow got a bit less time to spend with them as I lived quite far away from them for so many years, but they never missed a chance to meet whenever possible, or to talk over the phone with us.

Mataji would invariably serve warm-heartedly dry fruits, pinnis and what not. One could really feel Mataji's loving and caring nature to the maximum when she hosted a lavish lunch/dinner. That life giving tradition is followed even today by my mom-in-law, wife and all other ladies in the family as well.

My conversations with Pitaji were brief, but he was always able to convey his thoughts and messages very effectively in just a few words. I have heard of him that he was a self-made man who worked extensively to become a great entrepreneur.

Surely, Mataji and Pitaji are still showering blessings on the family from heaven above and I pray to God for giving strength to all of us to be able to continue treading on the path shown by them.

Last but not the least, I wish to applaud Arjun Mamaji for coming up with an idea to print this memoir and giving everyone in the family a chance to pay their tribute to Mataji and Pitaji.

'नानी.... मेरी प्यारी नानी'



पूजा रस्सेवट - राजेश रस्सेवट

नानी.... मेरी प्यारी नानी, तेरी अजब कहानी
सुन्दर काया, सुडौल शरीर, और प्यार से भरा मन...
याद आता है, तेरा वो आवभगत का सलीका,
दान देने की कला, रिश्तों को सहेजने का हुनर--
सीखा तुझसे बहुत कुछ, पर तेरे जैसी न बन पाई
तेरा वो पीठ को सहलाना और हाथ पकड़ कर चूमना
तेरी बहुत याद दिलाता है।
लाड़ प्यार का ऐसा ताना बाना बुना
कि आज तक हम तुम्हें भुला नहीं पाए।
नाना हमारे गरम मिजाज पर छुपी थी उनमें गहरी सीख,
नानी शीतल छाया पर संतुलन ऐसा कि कोई समझ न पाया।
दिए आपने इस जग को ऐसे अनमोल रत्न
जो होने ना देंगे कभी तेरा नाम खत्म,
आज भी उस घर से भीनी-भीनी खुशबू आती है,
तेरे संस्कारों की महक तेरे होने का अहसास दिलाती है।

-पूजा रस्सेवट



पंचशील अरोड़ा



जाह्नवी अरोड़ा

(श्रीमती पूजा रस्सेवट-श्री राजेश रस्सेवट के सुपुत्र एवं पुत्री)

नानाजी और नानी माँ आप हमेशा हमारी यादों में ज़िंदा रहोगे।
.... Love you soooo much!

Nothing is really lost as long as we remember it.

'हर पल हर क्षण याद करेंगे'



शालिनी-सुनील चुग

कुछ महान विभूतियाँ जन्म लेती हैं दिलों में बने रहने के लिए,
माँ की माँ और मेरी थी नानी,
सबको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना,
यही थी उनकी खास निशानी।
सबकी सोच से परे, बहुत ऊपर
दिव्य चेहरा, हर बात निराली,
ऐसी शख्सियत थी मेरी नानी।
गुणों का भंडार, प्रेम की थी अथाह सागर,
सुंदर सूरत, शीतल सीख,
जग से न्यारी थी मेरी नानी।
बड़ी फुर्सत से बनाता है खुदा कुछ लोगों को,
उन्हीं में शामिल थी,
मेरी प्यारी नानी।
जिन्दगी के हर किरदार को बखूबी निभाया आपने,
हर पल हर क्षण, हम सबके दिलों में रहेंगी हाजिर,
नानी थी मेरी इतनी ज्ञानी।

-शालिनी चुग



श्री सुनील चुग- श्रीमती शालिनी अपनी पुत्रियों
मुस्कान एवं दीविका चुग के साथ

'किताबों के बिना सिखाया था बहुत कुछ,
बिना पढ़े पढ़ाया था बहुत कुछ।
वक्त के हर मोड़ पर साथ दिया था आपने,
मेरे हौसलों को ज़मीं से आसमान तक उठाया था आपने'

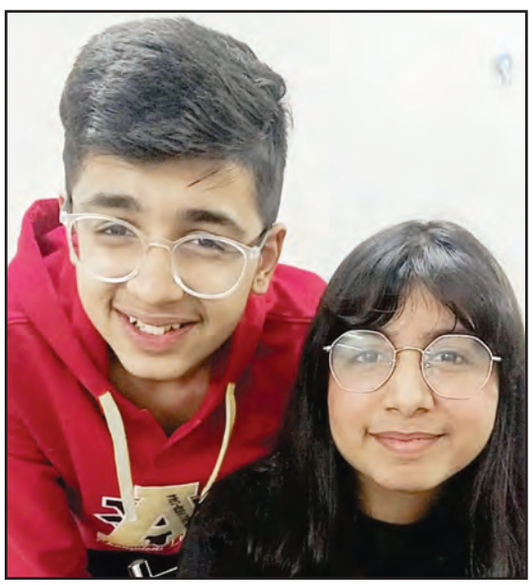


शबनम- डॉ. मुकेश मुत्नेजा

वैसे तो नानीजी सबको लेकिन विशेष रूप से अपने नाती-पोतों को छोटी-छोटी बातों पर बहुत प्रोत्साहित किया करती थीं। परन्तु जैसा कि मुझे लगता है कि मेरे प्रति वो विशेष स्नेह रखती थीं और बहुत मोटिवेट करती थीं। यह बात बीस साल पुरानी है, मगर आज भी मेरी यादों में महकते फूलों की खुशबू की तरह है। मैंने अपने शौक के लिए पाँच रुपये के सिक्के इकट्ठे करने शुरू किए। मुझे जहाँ से भी पाँच का सिक्का मिलता मैं उसे खर्च न करके जमा करने लगी। इस तरह से मैंने करीब दो सौ सिक्के इकट्ठे कर लिए। जब ये बात नानाजी को पता लगी तो वे बहुत खुश हुए और बोले, शाबाश! अब इस आदत को छोड़ना नहीं। मैंने बताया कि मुझे इन पैसों से स्कूटर लेना है तो बोले कि जितने पैसे तू जमा करेगी उतने ही मैं दूंगा, फिर स्कूटर लेंगे।

इससे मुझे नई ऊर्जा मिली और मेरी बचत की आदत और भी बढ़ गई। कुछ समय बाद मेरे पास बहुत से सिक्के इकट्ठे हो गए तो मैं उनके पास गई। उन्होंने अपना वादा पूरा किया और मैंने अपनी पहली स्कूटर खरीदी। नानाजी, आपने जो पाठ पढ़ाया है, मैंने वो अपनी जिन्दगी में अपनाया है।

-शबनम मुटनेजा



- Dhruv Mutneja and Tvisha
(Son and daughter of Smt. Shabnam - Dr. Mukesh Mutneja

Our great-grandmother
Badi Nani knew what life was about:
"No one left her house,
With an empty belly,
Without getting a hug,

She touched the heart and soul of everyone that met her.

We have always seen her caring for everyone in our family. She is a great inspiration for many of us. Everytime we met her, she showered us with love and kisses. We strongly feel that she was a great cook. You are not with us great-grandmother, but your memories will forever be with us.

All your wishes are in good hands. Your memories, sacrifice and love will guide us throughout our lives.

'दादाजी की दिनचर्या पूरी तरह योजनाबद्ध थी'



-रॉबिन सेतिया

जब मैंने इस दुनिया में थोड़ा होश संभाला तो महसूस किया कि मेरे दादाजी इस धरती पर बहुत ही मजबूत और साहसी व्यक्ति हैं। दादी माँ ने मोतियों की तरह सभी को एक धागे में पिरोकर रखा और सभी की देखभाल करने में और प्यार लुटाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। दादाजी पोते-पोतियों के साथ खेलते-खेलते न जाने कितनी ही शिक्षा दे जाते थे। हमारे दादीजी को जीवन का गहरा अनुभव था। हमें उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला। उन्होंने हमें छोटी उम्र में ही बातों ही बातों में स्वस्थ रहने, समस्याओं का सामना करने तथा भव्य सफलता की ओर कदम बढ़ाने की प्रभावशाली सीख प्रदान कर दी थी। रात के भोजन के पश्चात् हमारे दादाजी वज्रासन किया करते थे। वे हमें बताया करते थे कि भोजन करने के पश्चात् दोनों पैरों को मोड़कर कूल्हों पर रखकर 5 से 10 मिनट तक बैठने से भोजन को पचाने में मदद



रॉबिन सेतिया अपने विवाह के शुभ दिन 23 सितम्बर, 2007 को नव दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करने से पूर्व दादी माँ से श्रद्धापूर्वक गले मिलकर आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।

प्राप्त होती है और पैर तथा पीठ की मांसपेशियां मजबूत होती हैं। हमारे दादाजी हमें भी वज्रासन में बैठने के लिए कहा करते थे। हमारे दादाजी कहा करते थे कि इस योगासन के दौरान हम अपनी हथेली घुटनों पर रखें और कमर को सीधा रखते हुए गहरी सांस लें। मैं बचपन में दादाजी के पैर भी दबाया करता था। दादाजी मेरी पीठ थपथपाते हुए मुझे आशीर्वाद दिया करते थे।

हमारे दादाजी के महान सिद्धान्त आज भी हमारा मार्गदर्शन करते हैं। जब वो घर में प्रवेश करते तो सारी अव्यवस्था दूर हो जाती। वह सभी से प्यार करते और उनकी परवाह करते, लेकिन सख्त व्यवहार के कारण किसी को अपना असली चेहरा नहीं दिखा पाए। जब उन्हें पता चला कि मुझे मोपेड़ चलाना आता है तो मेरे लिए जल्दी ही मोटर बाइक खरीदकर दे दी। बचपन में मुझे कभी डाँट भी पड़ी तो सही रास्ते पर चलने के लिए। दादीजी तो सब पर सदा प्यार ही बरसाती रहीं।

जीवन के बाद के वर्षों में तो दादाजी का व्यवहार पूरी तरह

से बदल गया था। स्वभाव में काफी शांति और कोमलता आ गई थी। पहले तो वो सफेद धोती कुर्ता ही पहनते थे बाद में धोती की जगह पायजामा पहनना शुरू कर दिया था। उनकी दिनचर्या पूरी तरह योजनाबद्ध थी। रोज सुबह पेट्रोल पम्प जाते समय रास्ते में जरूरतमंदों को कुछ खाना देना उनका रूटीन था। मुझे दादीजी द्वारा बनाए गए परांठे बहुत पसंद थे। दादीजी काफी अद्भुत और आकर्षक व्यक्तित्व की स्वामिनी थी। प्राय: रविवार को मेरी दादीजी हमसे मिलने आया करती थीं। जब भी वो हमारे घर आतीं, वो हमेशा माथे या हाथ पर चुंबन से लाड प्यार करती थीं। मैं अक्सर कुटिया से उन्हें लेने जाया करता था। हमारे दिल में हमेशा उनके लाड़ प्यार और कोमल स्वभाव की यादें महफूज रहेंगी। मेरे दादा-दादी सदैव मेरे दिल की गहराइयों में रहेंगे। हम उन्हें कभी भुला नहीं पाएंगे।



वर्ष 2017 में माताजी परिवार के सदस्यों के साथ विपुल सेतिया के विवाह के शुभ अवसर पर आनंद उठाते हुए

'बड़ी दादी माँ से मिला प्यार दुलार अविस्मरणीय है'



जिस तरह से मैं अपनी सुपर ग्रैंड-माँ को देखता हूँ, मुझे बहुत अच्छा लगता है। जब मैं बड़ी दादी माँ से मिलता था तो उनका गले लगाने का तरीका, लाड़ प्यार करने की कोमलता और अहसास कितना अद्भुत होता था। मुझे आज भी याद है कि जब मैं लगभग 6 वर्ष का था तो मेरे पापा मुझे बड़ी दादी माँ को लेने के लिए कुटिया ले जाया करते थे। वो हमेशा रविवार को कुटिया जाती थीं। बड़ी दादी माँ से मिला दुलार अविस्मरणीय है। मैं अपने ग्रैंडदादू से नहीं मिला, लेकिन अपने पापा और दादू से बहुत सी कहानियां सुनीं। वह सेतिया परिवार के सबसे मजबूत व्यक्ति थे।

बड़ी दादी माँ और बड़े दादू को मेरा प्यार और नमन!



- मास्टर आयान सेतिया

'सोचो तो लगता है कि शायद उनका ही आशीर्वाद है जो हम आज जीवन की सीढ़ियां चढ़ पा रहे हैं'

- डॉ. डॉली सेतिया



वर्ष 2018 में डॉली सेतिया, अर्पिता सेतिया व तृप्ति सेतिया अपनी दादी माँ के साथ महेन्द्र सेतिया के निवास स्थान पर

जब भी परम वंदनीय माताजी को याद करते हैं, तब एक प्यारी सी छवि सामने आ जाती है। उनसे बात करने पर लगता था कि हर चीज का अनुभव था उन्हें। वैसा होना भी था, क्यों ना हो? आखिर माँ थी पापा की हमारे।

सोचो तो लगता है कि शायद उनका ही आशीर्वाद है जो हम आज जीवन की सीढ़ियां चढ़ पा रहे हैं। उनका प्यार तो उनकी हर बात में ही दिखता था। आते जाते हमसे पूछती थीं कि कुछ खाया। जब भी मैं घर आती थी, बहुत प्यार से अपने पास बुलाकर दो पल में ही माँ की तरह सहलाकर सारी थकान उतार देती थीं। लगता है अभी फिर बुलाएगी। सम्मान और सादर प्रणाम!



डॉ. डॉली सेतिया अपने संचित ज्ञान भंडार के साथ



ऑनलाइन कक्षाओं का प्रबंध करते हुए तथा शिक्षकों को पढ़ाने के लिए फ्रेंच पाठ्यक्रम सौपते हुए

डॉ. डॉली ने मान्ट्रियल विश्वविद्यालय, कनाडा में निष्ठापूर्वक शोधकार्य सम्पन्न करते हुए वर्ष 2015 में यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान से पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। डॉ. डॉली डीईएलएफ, डीएएलएफ, टीईएफ और टीसीएफ कनाडा की विशेषज्ञ और लोकप्रिय व्याख्याता है। उन्हें फ्रांसीसी भाषा और साहित्य के शिक्षण का 17 वर्ष का अनुभव है। वह 11 वर्ष से राजस्थान विश्वविद्यालय में गेस्ट लेक्चरर के रूप में शिक्षण कार्य कर रही हैं। डॉ. डॉली नेटिव एक्सपर्ट्स की टीम के साथ अपने विद्यार्थियों को फ्रेंच ट्वीट्स पर प्रासंगिक सामग्री प्रदान करती हैं। उन्होंने DELF-DALF की परीक्षाओं के Online French Course के माध्यम से कई लोगों के कनाडाई सपनों को साकार किया है। यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि वर्तमान में डॉली सेतिया की आधिकारिक वेबसाइट पर 5000 से अधिक पंजीकृत शिक्षार्थी हैं।

No language can express the power of a mother's blessings.

'अविस्मरणीय पल'



डॉ. सुधीर कुमार सिंह - श्रीमती मीना सिंह

स्वर्गीय गिरधारीलाल जी सेतिया उदार, दूरदर्शी, प्रतिभावान, भगवद् भक्त शख्सियत थे। हमारे लिए अत्यन्त गौरव एवं सम्मान का पल था जब सेतिया परिवार में इनके सुपौत्र चिरंजीवी रॉबिन के साथ हमारी सुपुत्री डॉली का विवाह 23 सितम्बर, 2007 को सम्पन्न हुआ।

हम ऐसी महान विभूति के दर्शन तो नहीं कर सके परन्तु इनकी धर्मपत्नी श्रीमती लाजवंती देवी जी से हमारा मिलना जुलना होता रहता था। स्व. श्रीमती लाजवंती देवी जी अपने सद्गुणों से परिवार और समाज में मान सम्मान अर्जित करने वाली, जीवन में सदैव प्रेरणादायी व्यक्तित्व बनकर सबका मार्गदर्शन करने वाली, सदैव ईमानदारी और बुलंद हौसलों की मिसाल बनकर परिवार को एकता के सूत्र में बांधने वाली, ईश्वर की भक्ति में सदैव लीन रहने वाली मधुरभाषिणी महिला थीं। इनके गुरु श्री आनंदपुर साहिब वाले थे। अनेकों बार वे भजन कीर्तन आदि भी करवाया करती थीं जिसमें हमें भी शामिल होने का सुअवसर मिलता था। वो परिवार के सभी सदस्यों को मोतियों के समान एक धागे में पिरोकर रखती थीं। उन्होंने अपने परिवार के सभी सदस्यों को संस्कारवान, सच्चरित्र होने का मंत्र सिखाया जिसका सुपरिणाम आज उनके बच्चों, बहुओं, पोतों में देखने को मिलता है। यह उनके आशीर्वाद और सद संस्कारों का सुखद परिणाम है कि आज सेतिया परिवार शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों और सफल व्यापारियों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा है।

आज हमें यह कहते हुए बड़े हर्ष का अनुभव हो रहा है कि परिवार के बड़ों द्वारा दिए गए संस्कारों की बदौलत वर्तमान पीढ़ी सफलता के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करते हुए उनके नाम को रोशन कर रही है। सभी पुत्र और पौत्र विनम्रता के साथ आपस में मिलजुलकर बड़े प्रेम से रहते हैं। अर्जुन दास सेतिया जी, रवि कुमार एवं महेन्द्र कुमार के गुणों के बारे में मैं जितना कहें उतना कम है, शायद लफ्ज कम पड़ जाएं। अपने पूर्वजों से विरासत में प्राप्त हुए संस्कारों को वे और उनके परिवारजन आगे बढ़ा रहे हैं। ईश्वर से प्रार्थना है वे दिन दुगुनी रात चौगनी तरक्की करें। विनम्रता की सीख जो उन्होंने अपने पूर्वजों से पाई है उसे इसी तरह से कायम रखें और अपने वंश की मान मर्यादा को चार चांद लगाते रहें।

'अपनी पीड़ा व्यक्त करने की बजाए वो हमारा हाल चाल पूछती'



नितिन सेतिया जीवन को सार्थक दिशा प्रदान करने वाले दादी माँ के पावन सान्निध्य में।



- नितिन सेतिया

दादी माँ कहते ही आज भी यही अहसास होता है कि वो यहीं कहीं हमारे आसपास हैं। दादीजी बहुत जिंदादिल थी। उन्होंने अपने बच्चों और फिर उनके बच्चों को खूब प्यार दिया और अच्छी परवरिश दी। दादी माँ के रहते अक्सर ही सारा परिवार इकट्ठा हो जाता था, जिससे आपसी स्नेह बना रहता। प्यार तो आज भी है लेकिन व्यस्तता के कारण कई बार समय निकालना मुश्किल हो जाता है। जब दादीजी बीमार थीं और अस्पताल में थीं तो सारा परिवार अस्पताल में एकत्रित हो गया और सब उनकी लम्बी उम्र की प्रार्थना करने लगे। वहाँ दादीजी के यह कहने पर कि 'मैं ठीक हाँ' मेरी आँखें भर आई। अस्पताल का माहौल ही बदल गया जैसे हर कोई बड़ी बेसब्री से उनके ठीक होने का इंतजार कर रहा था। सबके चेहरे पर खुशी दिखाई देने लगी और उन खुशियों को दादी माँ के साथ केक काटकर पूरा किया गया।

दादी माँ के नमक मिर्च के परांठे लाजवाब होते थे। दादी माँ के बोले हुए कुछ शब्द जैसे पोते संकुल को शंकु पुकारना आज भी याद हैं। दादीजी 94-95 की उम्र में भी काफी प्रसन्न और स्वस्थ रहती थीं। उन्हें चटपटा और मीठा खाने का शौक था। जब हम उन्हें अपने यहाँ लाते तो वह आइसक्रीम, पपड़ी, चाट या मिर्ची वाला खाना खाने से कोई परहेज नहीं करती थीं। मम्मी कई बार उनकी उम्र को देखते हुए सोचती, लेकिन मना भी करना अच्छा नहीं लगता था। दादीजी जब कहते 'थोड़ी जी दे दे' तो सब मुस्करा देते। दादीजी अक्सर मुझसे पंजाबी में बात करती थीं, इसलिए मैं भी पंजाबी बोलना सीख गया। अब जब मैं किसी से पंजाबी में बोलता हूँ तो दादी माँ ही याद आती हैं।



परदादी माँ का लाडला - हारवीन



श्री रवि सेतिया - श्रीमती प्रेम सेतिया के परिवार की बगिया के महकते पुष्प

Let's connect with the spiritual wisdom of our grandparents.

'सेतिया परिवार का स्तम्भ थी हमारी प्यारी दादी माँ'



-अर्पिता सेतिया

मुझे अपनी ददिया सास यानि कि दादी माँ के साथ रहने के लिए बहुत कम समय मिला। उनके साथ बिताए गए लम्हें आज भी मेरे दिल में समाए हुए हैं। काश मैंने कुछ वक्त और उनके साथ बिताया होता। थोड़े समय में ही बहुत प्यार और ढेर सारा अनुभव पाया। मुझे याद है उनका हर पल स्नेह से सिर को सहलाना, हर छोटी बात पर मेरे हाथ को थामना, मेरे माथे को चूमना, पल-पल आशीष देना, रह-रहकर कहना ये खा लो, वो खा लो, हर पल मीठी मनुहार से कुछ न कुछ खिलाते रहना। जीवन की तीखी धूप में हमेशा उनकी आशीषों का साया है। बहुत याद आती है उनकी हर बात। भले ही वो आज शारीरिक रूप से हमारे साथ नहीं हैं पर लगता है कि उनका प्यार, स्नेह, आशीर्वाद सब हमारे साथ हैं। सात पीढ़ियों को सहेजने वाली, अच्छा खाने, पहनने, घूमने का शौक और अपने काम में एक पल की भी देरी न करना उनकी आदत में शुमार था। न किसी से कुछ माँगना, न किसी से कुछ उम्मीद रखना, बस हर किसी को देना ही उनकी तहजीब थी।

आखिरी दिनों में जब वो अस्पताल में थीं तो हम उनसे मिलने जाते तो अपनी पीड़ा बताने की बजाए वो हमारा हालचाल पूछती खुद पीड़ा में होते हुए भी वो अपने से ज्यादा हमारी चिंता करती थी। सबको आशीष देने वाली, सबकी चिन्ता करने वाली या यूँ कह सकते हैं कि अच्छे ढंग से जीना सिखाने वाली और कोई नहीं, हमारी सबकी प्यारी दादी माँ ही थी।



वर्ष 2013 में नितिन सेतिया -अर्पिता के शुभ विवाह पर
दादी माँ परिवार की बगिया के मुस्कुराते
पुष्पों के साथ वर-वधू पर स्नेह और आशीर्वाद बरसाते हुए



वर्ष 2019 में परदादी माँ के आशीर्वाद से
भीगा प्रेम प्राप्त करते हुए हारवीन

A grandmother is a wonderful combination of warmth and kindness, laughter and love.

'उनका सरल स्वभाव, धीरे-धीरे बात करना, बार-बार प्यार से पीठ सहलाना बहुत याद आता है'



अनिता कक्कड़- राजीव कक्कड़

जो अपने माता-पिता के चरणों में शरण लेता है वह तो भाग्यशाली है। परन्तु जो व्यक्ति अपने दादा-दादी की गोद में बैठता है वह सौभाग्यशाली होता है। सेतिया परिवार बहुत भाग्यशाली है जो उन्हें देवतुल्य पिता और परम स्नेही माँ का सानिध्य प्राप्त हुआ और पोते-पोतियों को दादा-दादी का। दादा-दादी की सिर्फ दुआ ही काफी होती है। घर के यही बुजुर्ग तो ऐसे गुरु होते हैं जो कि विवेकपूर्ण प्रेम से बच्चों को परिपक्व बना देते हैं। माता-पिता द्वारा दिए गए सुंदर संस्कार सेतिया परिवार के प्रत्येक सदस्य में नजर आते हैं। परम पूजनीय माताजी ने परिवार को एक साथ बाँधे रखा। वे सेतिया परिवार की स्तम्भ थीं। उन्होंने जीवन के हर मोड़ पर अपने परिवार को अनेक पाठ पढ़ाए। उन्होंने अपने परिवार को सिखाया कि किस प्रकार बिना बताए जरूरतमंद की सहायता करनी है और हर किसी के दु:ख-सुख में साथ देना है। उनके आशीर्वाद के परिणामस्वरूप आज सेतिया परिवार फल फूल रहा है।

हमें बहुत समय तो उनके साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ लेकिन जितना समय भी उनके साथ व्यतीत हुआ उस समय की सुनहरी यादें आज भी मानस पटल पर अंकित हैं। उनका सरल स्वभाव, धीरे-धीरे बात करना, थोड़ी सी देर बैठने पर भी घर के एक-एक सदस्य का हाल-चाल पूछना, बार-बार प्यार से पीठ सहलाना, यह खाओ वो खाओ की मीठी मनुहार करना आदि बहुत याद आता है। आज वे हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनका आशीर्वाद हमेशा हमारे साथ रहेगा। सच ही कहा है किसी ने कि जाने वाले चले जाते हैं लेकिन जीवन में खालीपन आ जाता है जो कभी नहीं भरता। परन्तु उनका आशीर्वाद परछाई के रूप में हमेशा हमारे साथ है।

'रिश्ते निभाने की कला बखूबी जानता है सेतिया परिवार"



सुभाष नागपाल-रेणुका नागपाल
(स्व. श्री सरदारी लाल नागपाल - स्व. श्रीमती इन्द्रादेवी के सुपुत्र-पुत्रवधू)

हमारी बहन प्रेम सेतिया बहुत ही खुशकिस्मत है जो उसे रवि जैसा पढ़ा लिखा और उच्च विचारों वाला पति मिला और बहुत ही प्रेम और आदर करने वाला सेतिया परिवार मिला।

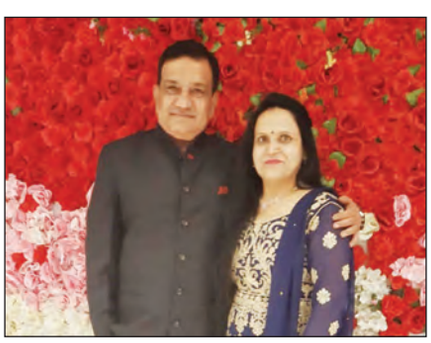
हमारे दादा तीर्थदास जी और पिताजी ने हमें बताया कि हिन्दुस्तान आजाद होने से पहले वे चिसतियां मण्डी बहावलपुर में रहते थे। वहाँ पर उनका आढ़त का काम था। काम बहुत अच्छा था। मण्डी में नाम था। हमारे दादाजी दो भाई थे। हमारी दादी राम प्यारी जी का देहान्त पाकिस्तान में 28 वर्ष की उम्र में ही हो गया था। पिताजी पाँच भाई-बहन थे। हमारे पिताजी की शादी आजादी से पहले फरवरी 1947 में 16-17 साल की उम्र में ही हो गई थी। उस समय स्कूल में पढ़ते बच्चों की ही सगाई शादी हो जाती थी। जब देश आजाद हुआ तो एकदम भगदड़ मच गई, मारकाट शुरू हो गई। जान बचाना मुश्किल था। सब कुछ छोड़कर सारा परिवार रेलगाड़ी से हिन्दूमलकोट आया। लूटपाट मच गई। लुटेरों ने सब छीन लिया। पिताजी के कुर्ते पर सोने के बटन लगे थे, लुटेरों ने खींचा तो कुर्ता भी फट गया। पिताजी बनियान, पायजामा में ही गाड़ी से उतरे। कुछ दिन वहाँ रहकर गिद्दड़बाहा आ गए। वहां एक साल रहने के बाद मुआवजे की जमीन श्रीविजयनगर के पास मिली तो सब सूरतगढ़ रहने लगे।

वहाँ पर साझेदारी में कपड़े की दुकान खोली। सिलाई का काम भी सीख लिया। दुकानें चल निकली। वहाँ पर आर.सी.पी. के दफ्तर और सी.एस.एफ. से काफी रौनक हो गई। पाँचों भाई-बहनों का जन्म सूरतगढ़ में ही हुआ। 1979 में बहन प्रेम की शादी जैतसर में श्री गिरधारी लाल जी के बेटे रवि सेतिया से हुई। सेतिया परिवार में जो प्रेम भाव था वो कम देखने को मिलता है। अपनी मेहनत, लगन से आज वो जिस मुकाम पर पहुँचे हैं, वह कोई छोटी बात नहीं। ठीक हमारे परिवार जैसा ही माहौल उनके घर का था। हमारी बहन प्रेम को कभी भी कोई कमी महसूस नहीं हुई। परम पूजनीय माताजी और पिताजी ने प्रेम को हमेशा अपनी बेटियों की तरह ही रखा। समधियों में भी बहुत अच्छा मेलजोल रहा। आज दोनों परिवारों के बुजुर्ग इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन उनकी यादें और आशीर्वाद सदा बना रहे, ऐसी हम सबकी प्रार्थना है।

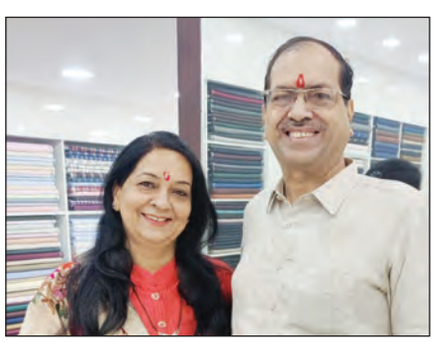
-सुभाष नागपाल



स्व. श्री सुदर्शन नागपाल - श्रीमती प्रकाश नागपाल



राजकुमार नागपाल- अन्नु नागपाल



सरोज चलाना - विजय कुमार चलाना

(स्व. श्री सरदारी लाल नागपाल - स्व. श्रीमती इन्द्रादेवी के सुपुत्र-पुत्रवधू)

(स्व. श्री सरदारी लाल नागपाल - स्व. श्रीमती इन्द्रादेवी की सुपुत्री और दामाद)

परम वंदनीय मासीजी और मासड़जी का आदर्श जीवन हमें व्यर्थ की सोच छोड़कर आगे बढ़ते रहने तथा रिश्तों में मिठास बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है।

To forget one's ancestors is to be a tree without roots.

'ता उम्र उनके प्यार की ठंडी छांव, खट्टे-मीठे किस्से पुराने,
चाहे साथ न हो आज, यादें उनकी सँभली हैं सिरहाने।
खुशनसीब हैं हम जिन्हें मिला उनके प्यार का साया,
जिंदगी के सफ़र में नाना-नानी सा सुख कोई और न दे पाया।'



-विकास बजाज

नाना-नानी का प्यार किस्मत वालों को ही मिलता है। उन्होंने हमें इतना प्यार दिया कि मम्मी-पापा का प्यार कम लगने लगा। नाना-नानी के घर जाना हर बच्चे को भाता है। मैंने हमेशा उन दोनों को दूसरों की मदद करते देखा। मुझे आज भी याद है कि जैतसर में उनके घर के पास एक गरीब परिवार रहता था। घर में जो कुछ भी बनता पहले वो उनको भिजवाते और फिर खुद खाते। उनके घर जो भी आता चाहे वो मेहमान हो या दुकान पर काम करने वाला कर्मचारी, वे किसी को भी कुछ खाए-पिए बिना जाने नहीं देते थे। उनके ये सद्गुण, सेवाभाव, संस्कार हममें भी समा गए। याद आता है मुझे मेरा वो बचपन सुहाना, नाना के साथ खेलना और नानी के हाथों से खाना। जब नानी के घर जाता था तब मामी जी सबके लिए बाल्टी भरकर मैंगो शेक बनाती थीं और नानी माँ हमारे लिए तरह-तरह की पिन्नियां बनाया करती थीं। उन पिन्नियों की मिठास ही कुछ अलग थी।

मम्मी बताती हैं कि नाना-नानी उन्हें बचपन में जल्दी उठाते, नहलाते और गुरुद्वारे ले जाया करते थे। यह नियम हमाारी मम्मी का आज भी है और उनसे यह नियम हमें भी प्राप्त हुआ है। ऐसे कई अनगिनत गुण हमने नाना-नानी से सीखें हैं। काश हमें प्रभु कृपा से नाना-नानी का थोड़ा और साथ मिलता।

हमारे नाना-नानी जो कल तक हमें कहानियाँ सुनाते थे और प्यार से कहते थे जो हमें आँखों का तारा, अब स्वयं ही आसमान में चमकता तारा हो गए। नानाजी और नानीजी को कोटि-कोटि प्रणाम!

'बुजुर्गों की बातों में हमेशा कोई न कोई सीख छिपी ही रहती है'



-साक्षी बजाज

बुजुर्गों का साया ही जिन्दगी की तपती हुई धूप से हमें बचाता है। मैं खुद को सौभाग्यशाली समझती हूँ कि मुझे नानाजी और नानीजी से बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। जब मैं इस घर में दुल्हन बनकर आई, मुझे नानाजी के साथ ज्यादा वक्त बिताने का मौका नहीं मिला। मगर कुछ यादें आज भी मेरे दिल में उनके प्रति आदर भाव को जागृत करती हैं। मैंने आज भी वो साड़ी संभालकर रखी हुई है जो नाना जी ने खासतौर पर मेरे लिए भिजवाई थी। उनका प्यार और आशीर्वाद आज भी मेरे साथ है। मुझे आज भी वो दिन याद है जब मेरा बेटा हुआ तो दूर जयपुर में रहकर भी उन्हें मेरी और बेटे की चिंता सताती थी। वो अक्सर मम्मी को फोन करते, मेरी तबीयत के बारे में पूछते और हमारा विशेष ध्यान रखने की हिदायत देते।

नानीजी की बातें भी ऐसी ही हुआ करती थी। बहुत ही प्यार भरा वक्त बिताया है मैंने नानीजी के साथ। वो जब भी आती थीं, खाना बनाने से लेकर घर और परिवार संभालने के तरीके पर बात करती। नानी माँ बहुत ही सेवा भाव वाली थीं। गुरुद्वारे, कुटिया जातीं और दान भी बहुत करती थीं। यही गुण उनके सब बच्चों में भी देखने को मिलते हैं। जब भी मैं सेतिया परिवार, मम्मी या मौसियों को देखती हूँ तो उनकी अच्छी परवरिश नजर आती है। सबमें सेवा भाव, दया की भावना दिखती है। तीनों भाइयों का आपस में प्यार होना, एक दूसरे का हर वक्त साथ देना, हमें हमारे रिश्तों के प्रति एक अनमोल सीख देता है। आज चाहे नानाजी-नानीजी नहीं रहे फिर भी हमें नानकों से पूरा प्रेम मिलता है। आज भी सरोज मामी जी हमारे लिए पिन्नियाँ बनाकर भेजती हैं। मैं भी सरोज मामी जी की तरह बनना चाहती हूँ। नानी माँ को तो अपने हाथों से खिलाने का शौक था। वो सबको अपने पास बैठाकर बड़े प्यार से खिलाती थीं। बहुत कुछ था उनसे सीखने के लिए। काश उनके साथ कुछ और वक्त बिताने का सौभाग्य मुझे मिल पाता। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि अगले जन्म में भी मुझे उनकी बहू बनने का मौका मिले।



मेहुल बजाज



सान्या बजाज

(श्री विकास बजाज -श्रीमती साक्षी बजाज के सुपुत्र और सुपुत्री)

हमें अपने मम्मी पापा के नाना-नानी पर गर्व है।

'जिस माँ बाप को तुम जन्नत कहते हो, उस जन्नत का घर होते हैं ये नाना-नानी'





सन्नी बजाज - श्वेता बजाज

'हमारे पूज्य नाना-नानी की यादों का संसार

माँ-बाप से भी बढ़कर होते हैं नाना-नानी।

जिस माँ बाप को तुम जन्नत कहते हो,

उस जन्नत का घर होते हैं नाना-नानी।

मना करने पर भी अपने हाथों से खिलाएँ,

वो होते हैं नाना-नानी,

माँ-बाप से पहले तुम्हारी हर जिद को पूरा करें,

ऐसे होते हैं नाना-नानी...

हम अपने प्यारे नानाजी और नानी माँ के बारे में क्या लिखें। नेक विचारों वाले नाना-नानी के लिए जितने शब्द लिखें, उतने ही कम हैं। सात भाई-बहनों का ये परिवार, उस परिवार की बेटी श्रीमती उषा बजाज के परिवार के बेटा-बहू हैं हम। नानाजी और नानी माँ के दिए हुए संस्कार आज भी हमारे परिवार की एकता को बनाए हुए हैं। हमारे बड़े बुजुर्ग अपने बच्चों का नामकरण शब्दों के महत्त्व को जानकर किया करते थे। हमारे पूज्य नानाजी ने और नानी जी ने अपने नाम की पहचान और प्रभुता को कायम रखा है।

श्री गिरधारी लाल जी : श्रीकृष्ण

श्रीमती लाजवंती देवी : लज्जाशील

और क्या लिखूँ मैं अपने नानाजी और नानी माँ के लिए। वो हमारे प्यारे नाना-नानी और हमारी यादों में सिमटा हुआ उनका हमारे प्रति स्नेह सदैव हमारी यादों को हरा भरा रखता है।

बचपन और नाना-नानी का घर---

वो नाना की गोद, वो नानी का आँगन,

वो नाना की सख्ती वो नानी का दुलार।

वो नाना का आमों का भण्डार,

वो नानी की स्वादिष्ट पिन्नियों का प्यार।

नाना की ज्ञान और शिक्षा भरी बातें,

नानी का बुना स्वेटर पहन दोस्तों को चिढ़ाते।

नाना के पेड़ों के हम फूल-पत्ते,

उनकी जड़ों से जुड़े हुए हम।

नानी के हाथों की हम हैं बातियाँ,

प्यार की रोशनी से रोशन हुए हम।

अब कहाँ हैं वो बचपन के दिन,

गर्मी की छुट्टियाँ न बीतती नाना-नानी के बिन।

रह गया बस अब उनकी यादों का संसार,

हम कभी न भूल पाएंगे नाना-नानी का दुलार।

-सन्नी बजाज

परम पूज्य नाना-नानी के आशीर्वाद से
हमारे परिवार की बगिया के महकते पुष्प



कुमारी मन्नत



मास्टर अरमान



'याद सदा वो आते रहेंगे, जीने की राह दिखाते रहेंगे'

हमारे जीवन में कुछ ऐसे लोग होते हैं जिनसे हम बहुत ही प्रभावित होते हैं और जो हमें बहुत प्यार करते हैं। मेरे नाना-नानी जी भी ऐसे ही थे। आज वो हमारे साथ नहीं हैं पर उनकी यादें आज भी हमारे साथ हैं। मेरी नानीजी सच में ही सुन्दर और रॉयल लगती थीं। अपने घर को बहुत सँवार कर रखती थीं। बहुत ही सफाई पसंद थीं। उनका परिवार बड़ा अनूठा है। वह सबको खूब प्यार करती थीं। सब नानी माँ से मिलने के लिए उत्सुक रहते थे। उनकी किचन में हमेशा कुछ न कुछ स्पेशल तैयार रहता था। उनके हाथों के बने आटे, मूंग के लड्डुओं को कोई भूल नहीं सकता।

मेरे नानीजी कुछ ऐसे थे-

ऊँचे विचार और जीवन सादा, दृढ़ संकल्प और मजबूत इरादा,
हम सब से था उनका नाता, छल कपट उन्हें कतई न भाता।
सही गलत का पाठ पढ़ाया, पल-पल उन्होंने साथ निभाया,
याद सदा वो आते रहेंगे, जीने की राह दिखाते रहेंगे।

Miss you a lot, Naniji

नानीजी हमारे सच्चे दिल की थीं। अच्छे कार्यों की वह प्रशंसा करने में पीछे नहीं थी और कोई गलत करता तो उसे बताने में भी देर नहीं करती थीं। नाना-नानी जी दान करने में भी हमेशा आगे ही रहते थे। वे अपने आसपास के जरूरतमंदों की हमेशा मदद करते थे। उनकी यह सीख आज भी याद है कि दान वो है जो देकर भूल जाओ। उनके ये विचार धीरे-धीरे हमारे जीवन में कब आ गए, पता ही नहीं चला। नानाजी, नानीजी आनंदपुर वाले महाराज जी को मानते थे। तीनों पहर उनको भोग लगाकर खाना खाते थे। नानाजी को बेसन के गट्टे की सब्जी बहुत पसंद थी जो हमारी प्रेम मामी जी बहुत ही स्वादिष्ट बनाती हैं और नानाजी को सरोज मामी जी के हाथ के बने हुए पकोड़े बहुत पसंद थे।

नाना-नानी ने कैसे अपने बच्चों को बड़ा किया इसे एक कहानी के माध्यम से बताना चाहूँगी। एक गाँव में एक कारीगर था। वह बहुत सुन्दर मूर्तियाँ बनाता था और मूर्तियाँ बेचकर अपनी आजीविका कमाता था। उसका बेटा बचपन से ही अपने पिता को देखते-देखते मूर्तियाँ बनाने लगा। कारीगर अपने बेटे को मूर्तियाँ बनाते देख बहुत खुश होता। धीरे-धीरे वह बहुत सुन्दर मूर्तियाँ बनाने लगा, परन्तु उसका पिता हर बार उसके काम में कोई न कोई कमी निकाल देता था। बेटे ने कभी कोई शिकायत नहीं की और अपने



वीरेन्द्र कामरा - प्रीति कामरा

पिता के अनुसार अपनी कला में सुधार लाता गया। धीरे-धीरे बेटे की मूर्ति बनाने की कला अत्यधिक लोकप्रिय हो गई। एक समय ऐसा भी आया जब लोग उसकी बनाई सुन्दर मूर्तियों के पैसे उसके पिता की मूर्तियों से भी ज्यादा देने लगे। यह कहानी नाना-नानी और उनके बेटों पर बिल्कुल ठीक बैठती है। उन्होंने अपने बच्चों के काम को सराहा, मन ही मन खुश भी हुए परन्तु साथ ही साथ उनकी कमियाँ भी बताई, जिससे कि उनके काम में सुधार हो सके। हम भी अपने नाना-नानी की भांति अपने बच्चों दिया कामरा तथा आयांश कामरा की परवरिश करना चाहते है

हमारे नाना-नानी ने सफलता के तीन सूत्र बताए-

- जीवन में सफलता के लिए दृढ़तापूर्वक लगन से काम करो। अपने काम में कमियों और कमजोरियों को पहचान कर उन्हें दूर करो।
- हर दिन अपने आप को बेहतर बनाते हुए निरंतर आगे ही आगे बढ़ते रहो।
- जीवन में महान ऊँचाइयों को छूने के लिए पूर्ण विश्वास और उत्साह के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहो।

ऐसा ही प्रेरणादायक जीवन था नानाजी का। उनके जीवन से बहुत कुछ सीखने को मिला।

-प्रीति कामरा

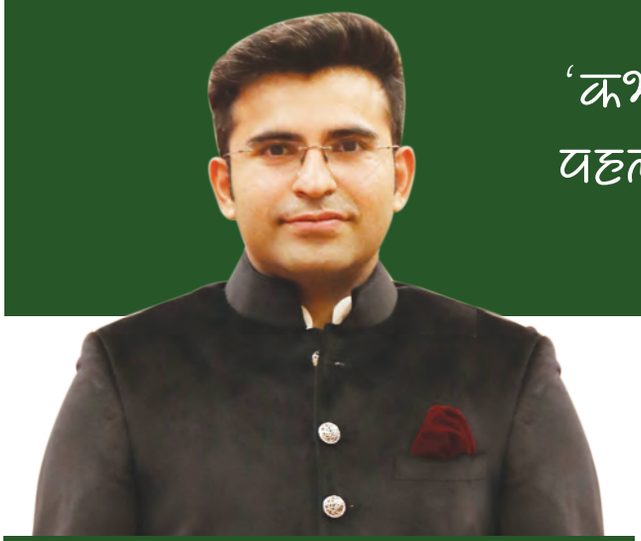


मास्टर आयांश कामरा



कुमारी दिया कामरा

'कभी नहीं भूलेगी स्कूल जाने से पहले दादाजी की लोई में ली गई दस मिनट की नींद'



-विपुल सेतिया

'मेरे दादा-दादी बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे। दोनों सुबह लगभग पाँच बजे उठते और सुबह-शाम गुरु महाराज जी की आरती पूजा करते। जब मैं सात वर्ष का था तब मुझे दादाजी ने सत्संग की किताब 'आनंद संदेश' पढ़ना शुरू करवाया। मुझे पढ़ता देख बहुत ही प्रसन्न होते। जब भी बाऊजी हमारे घर आते तो मुझे पढ़कर सुनाने के लिए कहते। कभी-कभी तो फोन पर भी बाऊजी को पढ़कर सुनाने के लिए कहते। शायद इसी कारण मुझमें किताबें पढ़ने का शौक जाग गया, जिसका लाभ मुझे आज तक मिल रहा है।

सर्दियों के दिनों में जब मैं सुबह स्कूल जाने से पहले उनका आशीर्वाद लेने जाता तो दादाजी मुझे गोद में बिठाकर लोई में लपेट



सन् 2018 में अपने विवाह की प्रथम वर्षगांठ पर विपुल सेतिया-तृप्ति सेतिया दादी माँ का आशीर्वाद प्राप्त करके केक काटते हुए



अपने जन्मदिन पर विपुल सेतिया अपनी दादी माँ का स्नेहपूर्ण आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

लेते थे। उनके स्नेह और लोई की गरमाहट से मुझे नींद आ जाया करती। यह दस मिनट की नींद मुझे बहुत ही प्यारी लगती थी। बचपन से मुझे पॉकिट मनी भी दादाजी ही दिया करते थे। मुझे मेरा पहला कम्प्यूटर भी दादाजी ने ही दिलवाया था। दोनों बहुत ही खुशमिजाज और हँसमुख थे। सबको प्यार करना, सबका ध्यान रखना, न किसी का बुरा सोचना और न ही बुरा करना, ये सब गुण उनमें थे और मैं भी उन्हीं के पद चिह्नों पर चलना चाहता हूँ। दादी माँ हमेशा निष्काम कर्म करने में विश्वास रखती थीं। उनसे खाली नहीं बैठा जाता था। वो हमेशा कुछ न कुछ करती रहती जैसे कि पूजा के लिए बातियां बनाना, कपड़े तय करना, रसोई में हाथ बँटाना आदि। यही कारण था कि वो 95 वर्ष की उम्र में भी अपने नित नियम स्वयं करती थीं। वो हम दोनों भाइयों से बहुत प्रेम करती थीं। बड़े प्यार से हमारा हाथ चूमते, डिनर पर हमारा इंतजार करते और खाना हमारे साथ ही खाते थे।

जब मैं तीन वर्ष का था तब मेरे माता-पिता ने मुझे पढ़ने के लिए जैतसर से जयपुर तायाजी यानी कि बाऊजी के पास भेज दिया। पर मेरे दादा-दादी जी से मेरे बिना रहा न गया तो कुछ समय पश्चात् वो भी जयपुर ही आ गए। मुझे स्कूल के लिए तैयार करना, मेरे खाने-पीने का ध्यान सब वही रखते थे। दादाजी रोज रात को जब नकली दाँत उतारते तो मुझे हँसकर दिखाते। उनको ऐसा करते देख मुझे भी बड़ी हँसी आती थी और मुझे खुश देखकर वो बहुत आनंदित होते थे। काश, मुझे उन दोनों का साथ थोड़ा और मिल पाता। मुझे आज भी उनकी बहुत याद आती है। जो लाड-प्यार मुझे उनसे मिला, वो मैं कभी भी भूल नहीं सकता।

The best place to be when we're sad is grandpa's lap.

'मेरी प्यारी दादी, न्यारी दादी, कैसे तुझे भुलाऊँ मैं,
दिया जो तूने प्यार अनोखा, कैसे वो बतलाऊँ मैं।
जो गुण देखे आप में मैंने, जीवन भर अपनाऊँ मैं,
तेरे बाग की शोभा बनकर, महकूँ और महकाऊँ मैं।'



वर्ष 2017 में विपुल सेतिया की रोका सेरेमनी पर दादी माँ तृप्ति सेतिया को स्नेहपूर्वक गले लगाकर अत्मिक आशीर्वाद देते हुए

रोज सुबह जब मैं दादी माँ से मिलने जाती तो वो मेरा हाथ पकड़ लेते, मुझसे बातें करते। चालीस पचास मिनट ऐसे ही बीत जाते। वो चाहते थे कि मैं उनके पास ही बैठी रहूँ। कभी वो सत्संग की कोई बात सुनाते, कभी बच्चों को याद करते तो कभी ये भी पूछते कि आज नाश्ते में क्या बना है। अक्सर वो मेरे माता-पिता को याद करते। जब कभी मैं उनको कहती कि दादी माँ, मैं अपने माता-पिता को मिलने फरीदाबाद जा रही हूँ तो वो उदास हो जाते और कहते कि तू इतनी जल्दी-जल्दी क्यूं चली जाती है और ये भी पूछते कि तेरा यहाँ मन तो लगता है ना, सब तेरा ख्याल तो रखते हैं ना। दादी माँ मेरी बहुत फिक्र करते थे।

उन्हें मेरा साथ अच्छा लगता था। वो मुझे बहुत लाड़ प्यार करते। जब भी मैं तैयार होती, वो मुझे देखकर बहुत खुश होते। विशेषतौर पर उन्हें मेरी लाल और पीले रंग की पोशाक बहुत अच्छी लगती थी। जब भी मैं ये रंग पहनती तो मेरा हाथ चूमकर कहते- 'बड़ी सोनी लग रही ऐं'। दादी माँ हमेशा मुझे प्यार से 'प्रीति' कहकर बुलाती। जब मैं न्यूजीलैंड से वापिस आई तो उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। वो अस्पताल में थे। जब मैं वहाँ उनसे मिलने गई तो काफी देर तक उन्होंने मेरा हाथ पकड़े रखा और मेरा नाम भी पुकारा। वो पल मैं कभी भी नहीं भूल सकती। उसके कुछ दिनों बाद ही वो ब्रह्मलीन हो गए। उनके प्रति मेरे भाव इस प्रकार हैं:



-तृप्ति सेतिया

जीवन को अपने सजा कर गई, यादों को दिल में बसा कर गई,
प्रेम के धागे में सब को पिरो के, वो कुल की शान बढ़ा कर गई।
वो गई नहीं, वो जिंदा हैं, हर पल सुबह शाम जिंदा हैं,
उनके जिक्र जिंदा हैं, उनके काम जिंदा हैं
पूरे परिवार को संभालें हर पल,
दिल की गहराइयों में उनकी यादें जिंदा हैं।



वर्ष 2018 में शिवांश नागपाल की रोका सेरेमनी पर उमंग और उल्लास में महेन्द्र सेतिया तथा अविनाश मेहता परिवार के सदस्या के साथ

Grandmothers are voices of the past and role models of the present.

'माताजी ने समस्त परिवार को प्यार व दुलार से एक सूत्र में बांधा हुआ था'



अविनाश मेहता-कुसुम प्रभा मेहता

प्यारी दादी, जिन्हें हम माताजी कहकर संबोधित करते थे, के साथ हमारा सुहाना सफ़र लगभग ढाई वर्ष तक रहा। माताजी से हमारी पहली मुलाकात 30 अप्रैल, 2017 में हमारी बिटिया तृप्ति की रोके की रस्म के दौरान हुई। वे हमें बहुत ही प्यार से मिलीं। उनके चेहरे से असीम प्रसन्नता झलक रही थी। उनकी प्रसन्नता इतनी थी कि अगले ही दिन कहने लगी कि दिल कर रहा है कि तृप्ति को अभी अपने साथ ले जाएं। उन्होंने तृप्ति को एक नया नाम दिया 'प्रीति'। वे तृप्ति को हमेशा प्रीति ही कहकर बुलाती थीं।

माताजी प्रेम, समझदारी और करुणा से भरी हुई ममतामयी माँ थीं। इसी सम्बन्ध में एक वाक्या याद आ रहा है। हम जयपुर में उनके घर पर तृप्ति के साथ बैठे थे, तो वो कमरे में आई और तृप्ति को प्यार करके कहने लगीं- 'प्रीति, तू कमजोर क्यों लगदी पई ऐं- कि महेन्द्र-सरोज तैनूं प्यार नहीं करदे? सरोज खाना ता अच्छा बनांदी है, तूं जो खाना होवे, दस दिताकर। कुड़ियां तां शादी दे बाद मोटियां हो जांदिया ने, तूं तां ओवें ही हैं।' हमें उनकी करुणामयी ममता का अहसास हो रहा था। वह मर्यादित, सरल और अनुशासित थीं। हम जब भी जाते, आवभगत करती, बहुत प्यार से खिलाती थीं। देर रात तक जब तक हम सब बैठे रहते थे, वे हमारे साथ बैठी रहतीं। लेकिन फिर भी समय पर उठकर भजन पर बैठती थीं और आरती पूजा करती थीं।

हम बहुत सौभाग्यशाली हैं कि उनके परिवार का हिस्सा बने। हमें समस्त परिवार ने बहुत प्यार और मान दिया। माताजी परिवार का केन्द्र बिन्दु थीं। समस्त परिवार को उन्होंने प्यार व दुलार से एकता के सूत्र में बाँधा हुआ था। आज पूरा परिवार उन द्वारा दिखाई हुई राह पर चल रहा है। माताजी को कभी भुलाया नहीं जा सकता। वो हमारे दिलों में हर पल बनी रहेंगी। माँ तेरी ममता को सलाम, तेरी विशालता को सलाम, तेरी सहनशीलता को सलाम!



वर्ष 2017 में विपुल-तृप्ति के विवाह पर माताजी तृप्ति की मम्मी श्रीमती कुसुम प्रभा मेहता से प्रेमपूर्वक मिलते हुए



वर्ष 2017 में विपुल सेतिया के विवाह के शुभ अवसर पर तृप्ति की दादी माँ तथा श्रीमती संतोष कुमारी मेहता, महेन्द्र सेतिया - सरोज सेतिया, तथा अंकित मेहता-आक्षी मेहता आनंदपूर्वक साथ-साथ

'Grandparents are truly a great blessing in our lives'



-Sankul Setia

Our grandparents are the epitome of blessings from God. They are the angels who are always looking after their kids and grandkids. As the times are evolving, people are losing touch with traditions and the importance of grandparents is getting diminished. Grandparents are truly a great blessing in our lives.

Our parents are just their reflection and it is their upbringing which made us the way we are. Moreover, grandparents are our support system. When we were asked who pampers us the most, our first answer in a jiffy was 'Dadu & Dadi'. Not everyone is fortunate enough to have them. Their unconditional love is endless and stays in our hearts forever. Their love for everyone in the house is a long and beautiful journey. Their presence is always blissful. Probably the sense of calm and composure can't be received anywhere else. An evil eye is always away because they are always praying.



नवम्बर 1993 में मासूम संकुल दादाजी की लाड-प्यार से भरी कंधे की सवारी करते हुए

I was fortunate enough to grow up in a family with my grandparents and have beautiful memories of them I wish I had that space to pen it down. As far as I remember about them from my childhood, my Dadu was more inclined in daily chores and Dadi used to be in the kitchen. Everyday when we used to come back from school, Dadu used to be in the porch lying on the charpai, taking sunbath, listening to the radio. We used to hug and kiss him. After lunch we used to eat mangoes with him. He had a very active personality. He was the backbone of the family and kept everyone together. He wasn't from a military background, but he had a routine like a military officer. He used to wake up at 5 every morning, get ready, do his morning puja. Everyday during his puja time, my brother and I used to sit on his lap and then he used to cover both of us with his shawl. He was our first spiritual guide and I believe we are what we are because of his guidance.

He was like a guiding light on the uncharted path of spirituality during our early life. Once we left for school, he used to meet

Grandparents always have time for us when everyone else is too busy.



Sankul feeling blessed in the loving presence of his grandparents in 2004



Sankul celebrating his birthday with his most affectionate grandparents in 2004

his friends and do yoga, He enjoyed laughter yoga the most and the same he used to practice with us at night after removing his denture. This was a special bonding time. He used to pour his wisdom on us through his stories. He had a scheduled day, and this inspires us till date to have an organized day. Even after retirement, he used to follow a routine. My Dadu was our protector and role model. Our smallest needs like haircut were handled and taken care of by him. Every Sunday, he used to give 50 rupees to bhaiya and me. We used to get packets of lays from the nearest general store and sit with Dadu, watch 'Shaktiman' and Mahabharat' with him. I think because of him everyone wakes up early in the morning and follows a routine even after he's gone. When Dadu passed away in 2006, it came like a huge impact on me as I faced mortality for the first time in life.

I had a very angry childhood, but after Dadu passed away all that anger went away, and I was a different soul. I realized that life is too short to stay angry with people. My biggest regret is that I wasn't present at the time of his death because I was in hostel. I still remember that evening when the warden came and informed me that my elder brother was there to take me home. I still remember my Bhaiya's eyes in tears, fully red and he told me that Dadu was no more. I couldn't stop my tears for almost two days. That moment still makes me feel homesick whenever I leave home.

It is rightly said that behind every great man, there's a woman. For me it was Dadi. She was like a coconut, hard from outside, soft and mushy from inside. She used to keep everyone on their toes, but she cared for her grandchildren like a guarding angel. She was very particular about grooming standards. If any man had an unshaved face, he used to get a slap from Dadi. Before going out everyone touched her feet. She used to scan everyone from head to toe. One must wear clean clothes, polished shoes, nails and hair should be groomed; otherwise she would pull our ears. I think my bonding with Dadi started when Dadu passed away because her involvement got lesser with household work, and she started devoting her time towards spirituality and her family. Everyday when I used to come home from office, Dadi used to ask me in Punjabi 'Kiven hain' and I used to reply 'Maujan Dadi.' Touching her feet I would ask her 'Tusi Dasso' and she used to reply 'Maujan Maujan'. At every mealtime, she generally asked everyone 'Khaana khada hai tu?' Till the time Dadi was with us, everyone used to come to meet her. Although we had separate houses, we never had the sense of separateness. Especially Bade Papa (Shri Arjun Das Setia) came to meet Dadi everyday before going to work.

I simply adore my grandparents for instilling moral values in me and my parents and for giving us a safe space to grow. My grandparents will forever live in my heart.

Grandparents are grand angels.

'दादा-दादी का प्यार बहुत अनमोल है'



-आशिमा सेतिया

मैंने दादा-दादी को कभी देखा तो नहीं, परन्तु सबसे उनकी प्रशंसा सुनकर यह अहसास होता है कि वे बहुत संस्कारी थे। उनका आशीर्वाद हम सबके साथ है और वे सदैव हमारे दिलों में बने रहेंगे। दादा-दादी का प्यार बहुत अनमोल है। भाग्यवान हैं वे जो इसे प्राप्त करते हैं। उनका प्रेमपूर्ण स्पर्श कहीं न कहीं अब भी हमारे साथ है। उनकी झलक घर के सभी सदस्यों में दिखती है।

दादा-दादी के साथ और उनके आसपास अपने आपमें प्रेमपूर्ण, आनंदपूर्ण अहसास है। वे हमारे जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं और देखभाल के साथ हमारे जीवन को भी खुशियों से भर देते हैं। उनके प्यार और भावना के अहसास को शब्दों के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता। दादा-दादी के प्यार का कोई मोल नहीं।

माँ हो या दादी, उनका प्रेम असीम है। एक रोटी माँगो तो दो देंगी, बिना गिने ही नोट पर्स में डाल देंगी।



वर्ष 2021 में संकुल -आशिमा विवाह से पूर्व संगीत संध्या के आंनदपूर्ण अवसर पर
श्रीमती सीमा कद-श्री आशीष कद के साथ



परम प्रसन्नता में नव दंपति संकुल-आशिमा, महेन्द्र कुमार सेतिया-सरोज सेतिया एवं विपुल सेतिया-तृप्ति सेतिया साथ-साथ

A grandmother's love knows no distance.

'We believe that the elders are the roots of the family.....'



-Mrs. Seema Kad & Mr. Ashish Kad

Someone once said, “There is no right kind of marriage. The couple and the families involved need to make it right." The right marriage recipe requires simple yet priceless ingredients like love, understanding, trust, care, acceptance and so on. All of this becomes easier when these values are imbibed in the families. In the end, the recipes of marriage come out most tasteful, scrumptious and healthy for the mind, body & soul.

When the Kads met the Setias

Destiny plays a very important role in our life by bringing us together. We were fortunate enough to meet the Setias at the right time when I was eagerly and anxiously looking for an ideal family that fits in my imagination as a father.

A marriageable girl's parents go through sleepless nights and anxious minds. Whatever decision they may take for the future of their darling daughter should be the best decision of their lives and my search was eventually over when I first met the Setias.

25th January, 2021 is the unforgettable day of our lives when we connected with Setia family in a private family meet. The innocence and sincerity that Sankul possessed was very appealing. We were amazed at the sincere efforts they were putting in to make everything work. Then and there we decided to make them an integral part of our lives. The very next moment Ashima & Sankul were formally hitched.

Kad Family

Our family basically hails from the small town of Batala, Punjab. We are a family of modern outlook but Desi/Punjabi at heart. We understand the value of family and relationships. We believe that the elders are the roots of the family that keep the tree firm, sturdy and strong. My children were raised under the shadow of their late grandparents who loved them dearly. They are very well known to the worth of a joint family, wherein



Abhay Kad with his Dadi Maa in a cheerful mood on the auspicious occasion of the wedding of Ashima to Sankul

everyone is taken care of selflessly. The young ones are showered with love & affection. The elders are given the utmost care & respect.

Setia Family

In a marriage, the girl & the boy as well as both the families are connected for lives. By the grace of God, we are fortunate enough to make a lifetime relationship with Setia family.

A beautiful joint family with high moral values and modest lifestyle is a dream of every parent now a days. Ashima is lucky enough to have got married in such a family that has accepted her in every sense.

The Sacred Knot

The most auspicious and pious event in the life of parents is the marriage of their beloved daughter. The planning of Ashima & Sankul's marriage started almost six months prior, and every little thing was taken care of under the supervision of me & Mr. Mahender Setia. I received full support from the Setia family and with mutual understanding we made the whole event a memorable one to cherish for a lifetime.

All the wedding ceremonies and rituals that took place left us in a magical state of mind where we could see our daughter Ashima getting married to the man of her life Sankul. On 23 July, 2021, the two families tied the knot in the grand ceremony held at the Imperial, New Delhi. It was an ultimate pleasure meeting all the family members and knowing them from close. The propitious presence of everyone made the atmosphere even more enchanting.

The 'saat pheras' taken by the beautiful bride 'Ashima' dressed in red & the prince charming 'Sankul' adorning white attire looked ethereal. The ringing bells, the shower of red roses, the sound of divine mantras and the blessings of the loved ones made the moment heavenly and unforgettable.

P.S. We truly believe that God will bless both the families and we will continue to take this journey ahead with love & mutual understanding.

The Ashima & Sankul eternal love story continues…. Sama Bana Rahe!



Mr. Ashish Kad alogwith his dearly respected mother, better half and son praying inwardly for the blissful married life of his loving daughter Ashima

Celebration happens when the mind unites with the spirit.

'सर्वगुण संपन्न एवं नेक इंसान थे सेठजी'



स्व. श्री राधाकिशन जी नागपाल-श्रीमती विद्यावंती नागपाल



-भारत भूषण नागपाल

स्व. श्री राधाकिशन जी नागपाल - स्व. श्रीमती विद्यावंती नागपाल के सुपुत्र

स्व. श्री गिरधारी लाल जी सेतिया परिवार के मुखिया जिन्हें हम आदर से सेठजी कहते थे, वे न केवल परिवार में आदरणीय थे बल्कि समाज में भी उनका ओहदा किसी से छुपा नहीं था। जैतसर में उन्होंने अपने गुणों व कार्यों से अपने आपको जिस शिखर तक पहुँचाया वहाँ तक कम ही लोग पहुँच पाते हैं। धनी होना एक अलग बात है, लेकिन सर्वगुण संपन्न तथा नेक दिल इंसान होकर हर किसी के दिल में अपनी जगह बनाना अलग बात है। 1981 की बात है जब हमारे नागपाल परिवार का रिश्ता ऐसे प्रतिष्ठित व शिष्ट परिवार से जुड़ा। सेठजी के सुपुत्र श्री महेन्द्र सेतिया जी का रिश्ता जब मेरी बहन सरोज से हुआ तो हमारे भाग्य ही जाग गए।

महेन्द्र जी भी अपने पिताजी की भाँति बहुत नेक दिल इंसान हैं। 1982 में दोनों विवाह बंधन में बंधे। हमारे पिताजी एवं माताजी ऐसे परिवार से रिश्ता जोड़कर खुद को खुशकिस्मत मानते थे। समधियों में आपस में बहुत प्रेम था। सेठजी बड़े सरल और विनोदी स्वभाव के थे। अपने जीवन में उन्होंने जो सीखा उसका लाभ अन्य लोगों तक भी पहुंचाया। वे सूझबूझ के धनी थे। अक्सर लोग उनका परामर्श लिया करते थे चाहे वह व्यापार से जुड़ी समस्या हो या पारिवारिक अथवा सामाजिक। उनमें से एक हमारे बाऊजी भी थे। जब भी उन्हें जीवन में कोई समस्या दिखाई पड़ती तो वे सेठजी से ही परामर्श लिया करते थे। महेन्द्र जी की माताजी भी गुणों की खान थी। उनसे मिलते ही हर व्यक्ति श्रद्धापूर्वक नतमस्तक हो जाया करता था। वो सबके प्रति अत्यन्त सेवा भाव रखती थीं। यही शिक्षाएं उन्होंने अपनी सभी पुत्रवधुओं को भी दी हैं।

सम्बन्ध और भी गहरा होता गया जब उनसे एक और रिश्ता जुड़ा। स्व. श्रीमती लाजवंती देवी के भाई श्री बिहारी लाल जी से हमारा सम्पर्क हुआ और उनके सुपुत्र श्री सुभाष जी से मेरी दूसरी बहन प्रेमलता का विवाह हुआ। ऐसा समय भी आया जब हमारी आर्थिक हालत अच्छी नहीं थी, तब सेठजी के सहयोग से हमें व्यापार में सहायता मिली। 1998 में जब हमारे बाऊजी बहुत बीमार हो गए तब उन्हें जयपुर ले जाना पड़ा। वहाँ पर भी सेठजी ने समय और साथ देते हुए हमारे बाऊजी का अच्छे से अच्छा इलाज करवाया। सेठजी के लिए क्या-क्या लिखूँ, जितना लिखूँ कम है। यह अलग बात है कि सेठजी के काफी सहयोग के बाद भी हम अपने बाऊजी को बचा नहीं पाए। 2006 में सेठजी का जाना सभी के लिए अपूरणीय क्षति था। कुछ समय बाद मुझे किन्हीं कारणों से अपनी सारी प्रॉपर्टी बेचकर जयपुर आना पड़ा। कितने ही कामों में हाथ डाला लेकिन भाग्य ने साथ नहीं दिया। जब कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था, तब महेन्द्र सेतिया जी ने हमें फिर से संभाला और खड़ा किया।

आज मैं जहाँ पर हूँ, केवल इन्हीं की वजह से हूँ। मुझे तो ऐसे लगता है कि पूर्व जन्म के पुण्य के कारण ही ऐसे परिवार से हमारा रिश्ता जुड़ा। अंत में निम्नलिखित पंक्तियों के माध्यम से अपने दिल के भाव व्यक्त करते हुए मैं इतना ही कहूंगा कि समाज में सेतिया परिवार की अलग पहचान का आधार सुन्दर संस्कार ही हैं:

बड़ों का आदर, छोटों से प्यार,

आदर्श परिवार, उच्च संस्कार।



भारत भूषण नागपाल - ममता नागपाल



अशोक कुमार नागपाल- किरण नागपाल



राजकुमार नागपाल - रिचा नागपाल

(स्व. श्री राधाकिशन जी नागपाल - स्व. श्रीमती विद्यावंती नागपाल के सुपुत्र - पुत्रवधू)

परम पूजनीय माताजी और पिताजी कहा करते थे
कि परमात्मा द्वारा बनाए गए रिश्ते दिल से निभाएंगे तभी जीवन में सुकून रहेगा।



शशि मेंहदीरत्ता धर्मपत्नी स्व. श्री नरेश कुमार



श्रीमती प्रेम चुग



रेखा बवेजा - रमेश बवेजा

(श्री राधाकिशन जी नागपाल - श्रीमती विद्यावंती नागपाल की बेटी और दामाद)

माताजी और पिताजी के प्रेमपूर्ण जीवन से हमें यह आभास हुआ कि हम रिश्तों के महत्त्व को कभी न भूलें और सदैव ध्यान रखें कि छोटी-छोटी बातों पर राहें कभी अलग न होने पाएं।

'सेतिया परिवार के सदस्यों की प्रेम भावना ने मुझे बहुत प्रभावित किया'



स्व. श्री जीवनदास मेहंदीरत्ता - स्व. श्रीमती निर्मला मेहंदीरत्ता



स्व. श्री गिरधारीलाल सेतिया - स्व. श्रीमती लाजंवती देवी



संजय मेहंदीरत्ता - काजल मेहंदीरत्ता

परम पूज्य मौसा श्री गिरधारीलाल जी सेतिया व उनके परिवार से मेरी पहली मुलाकात जैतसर में 1990 में हुई। मैं उनके साथ दो दिन रहा। उन अनमोल पलों को मैं कभी भूल नहीं सकता। वो प्रेम से भीगे पल सदैव मेरे दिल की गहराइयों में रहेंगे। सेतिया परिवार के सदस्यों की प्रेम भावना ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मेरे बाऊजी स्व. श्री जीवनदास जी मेहन्दीरत्ता, फूफा श्री राधाकृष्ण जी नागपाल तथा श्री गिरधारी लाल जी सेतिया एक दूसरे से अपार प्रेम करते थे। सेतिया परिवार सुलझा हुआ नेक परिवार है जो कि नि:स्वार्थ भाव से जरूरतमंदों की सहायता करता है।

अपने परिवार तथा समाज में मौसा जी के मान-सम्मान को देखते हुए मुझे उनमें अपने बाऊजी श्री जीवनदास जी मेहन्दीरत्ता की छवि नजर आने लगी थी। मेरे बाऊजी 5 भाइयों में सबसे छोटे थे, लेकिन मौसा श्री गिरधारीलाल जी की तरह परिवार और समाज में उन्होंने बहुत मान और सम्मान कमाया।

यह तो जगजाहिर है कि सेतिया परिवार द्वारा हर रिश्ता दिल से निभाया जाता है। जब बुआ जी श्रीमती विद्यावंती फूफा श्री राधाकिशन जी नागपाल के कैंसर के इलाज के लिए दिल्ली आए तो उनसे मुझे मालूम पड़ा कि मौसा गिरधारी लाल जी सेतिया तथा उनके सुपुत्रों ने जयपुर में पूरा समय देकर फूफा जी का अच्छे से अच्छा इलाज करवाया। फूफा जी के जीवन की तपती धूप में जिस प्रकार सेतिया परिवार घने साये के रूप में आगे आया उससे मुझे यह अहसास हुआ कि रिश्तों की अनमोल पूंजी को सहेज कर रखना इस मर्यादित परिवार से सीखें।

स्व. मौसा श्री गिरधारीलाल जी सेतिया के बच्चों ने अपने माता-पिता के नि:स्वार्थ प्रेम, दूरदर्शिता, सेवाभाव, सहजता, सादगी तथा त्याग जैसे सद्गुण विरासत में प्राप्त किए हैं। सेतिया परिवार के नि:स्वार्थ प्रेम और सेवाभाव को शत्-शत् नमन!

-संजय मेहंदीरत्ता

Parental love is truly selfless, unconditional and forgiving.

'वो सोच में काफी आगे थीं और बदलाव को स्वीकार करती थीं'



-दिव्या बांगा

(सुपुत्री श्री राजेन्द्र कुमार नागपाल-श्रीमती सुनीता नागपाल)

सबसे छोटी नातिन होने के कारण नाना-नानी की छवि मेरे मन में हमेशा अलग सी रही है। आज भी जब मैं आँखें बंद करके सोचती हूँ तो मुझे जैतसर वाले घर का वो झरोखा याद आता है जिसमें वो तरह-तरह के रंग-बिरंगे शरबत रखती थीं और दुकान से जब भी कोई खाना लेने आता तो नानी उसे बिना शरबत पिए जाने नहीं देती थीं। उनके मन में सबके प्रति प्रेम भाव रहता था। लोगों की सेवा करना, जरूरतमंद की सहायता करना अक्सर अच्छे लोगों



सिद्धांत बांगा वर्ष 2019 में मासूम मुस्कुराहट से खिले चेहरे के साथ अपनी परनानी के प्रति प्यार का इजहार करते हुए



दिव्या बांगा माताजी का प्यार दुलार प्राप्त करते हुए

की आदत होती है, पर उनका अंदाज बहुत भावपूर्ण होता था। उनकी ये आदत मेरे मन के बहुत करीब थी। सच में मैंने उनका बहुत प्यार बटोरा।

नानाजी के खिचड़ी रोटी खाने का तरीका आज भी याद है। मैं भी अपने बच्चों माहिरा और सिद्धान्त को उसी तरीके से खाना खिलाती हूँ जिस तरीके से नानीजी ने मम्मी को और मम्मी ने मुझे खाना खिलाया। जब भी गर्मियों की छुट्टियों में हम सभी कज्नस इकट्ठे होते नाना-नानी, मामा-मामी भी खूब लाड़ लड़ाते। जैतसर तो मानो ज़हन में बसा हुआ है। घर का कोना-कोना आज भी ज़हन में बसा हुआ है। वो मोटर साइकिल की आवाज, छत पर रोटी बनाना, टी.वी. वाला कमरा या नाना-नानी के कमरे का लुक, सब याद है। नानाजी के साथ तो इतना वक्त नहीं गुजारा, पर नानीजी के साथ बहुत वक्त बिताया। नानीजी कभी किसी को खाली नहीं बैठने देती थीं। उनका एक ही लक्ष्य था कि बच्चों के हाथों से काम निकलना चाहिए। यही बात हमें जाने अनजाने बहुत कुछ सिखा गई। उनका यह अहसास हमें शीतलता और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है।

मैं उनसे बहुत प्रभावित थी। जब मैं बड़ी हो रही थी तब इतना अहसास नहीं था, परन्तु आज उनकी सब बातों में शिक्षा ही शिक्षा नजर आती है। वो सोच में काफी आगे थीं और बदलाव को स्वीकार करती थीं। हम उन्हें कभी भुला ना पाएंगे।

'परिवार में अनुपम प्रेम की भावना ने मुझे बहुत प्रभावित किया'



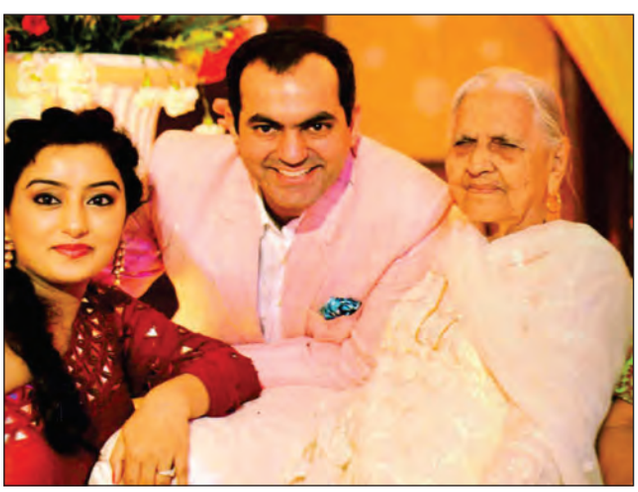
-आशीष बांगा



वर्ष 2012 में वर-वधू आशीष बांगा - दिव्या नानी माँ का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

2012 में जब मेरा नागपाल और सेतिया परिवार से परिचय हुआ तो परिवार में अनुपम प्रेम की भावना ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मेरे मन में रह-रहकर यह प्रश्न उठ रहा था कि वो कौन-सी शक्ति है जो कि इस विशाल बरगद वृक्ष रूपी परिवार को इतनी घनिष्ठता से बांधे हुए है। धीरे-धीरे जब मेरा परिचय परमपूज्य नानीजी श्रीमती लाजवंती देवी जी और परिवार के अन्य सदस्यों से हुआ तो मुझे यह अहसास हुआ कि जिस वृक्ष की जड़ें अद्वितीय सहजता, विनम्रता, शालीनता और स्नेह से परिपूर्ण हैं वह सदैव हरा-भरा तो रहेगा ही बल्कि राह में जुड़ने वालों को भी अपनी शरण में लेकर अपना अभिन्न हिस्सा बना लेगा।

मुझे आज भी याद है नानीजी द्वारा मेरे हाथों को चूमना और ऐसे गले लगाना जैसे एक माँ अपने बच्चे को गले लगाती है। मैं जब भी नानीजी से मिलता था तो मुझे उनकी आँखों में प्यार भरी खुशी देखकर एक अद्भुत सा सुकून मिलता था। उनका तेज और शालीनता उनके आसपास के माहौल को भी शांत, आनंदपूर्ण और सुन्दर बना देते थे। जब नानीजी को हमने अंतिम विदाई दी तो मुझे पहली बार अहसास हुआ कि हमारा जीवन कैसा होना चाहिए। नानीजी के हृदय की विशालता और अपार प्रेम की स्मृतियां हमें ऐसे आदर्श परिवार की स्वस्थ परंपराओं को स्थापित करने की प्रेरणा प्रदान करती है जहाँ परिवार के सभी हंसते-खेलते सदस्य एक दूसरे को शक्ति प्रदान करते हुए सदैव प्रेमपूर्वक आगे बढ़ते रहें।



वर्ष 2016 में श्री अर्जुनदास सेतिया-श्रीमती भजनदेवी सेतिया के विवाह की 50वीं सालगिरह पर माताजी, आशीष बांगा-दिव्या बांगा आनंद बांटते हुए



आशीष बांगा - दिव्या बांगा अपने मुस्कुराते नन्हे-मुन्ने बच्चों माहिरा और सिद्धांत के साथ

• Most good relationships are built on mutual trust and respect.

'देते हैं हम बंगा परिवार की ओर से श्रद्धांजलि..'



-कमांडर विनोद कुमार बांगा

जन्मी चुघ परिवार में, बढ़ाई शोभा सेतिया परिवार की,
संस्कारों ने दिया बचपन से ही सरल स्वभाव,
और दिया मानवता को प्रथम स्थान जीवन में,
इसी शिक्षा को आधार बना,
बढ़ाया परिवार का गौरव संग गिरधारी सेतिया जी के।
लिया जन्म जब ज्ञान देवी व अर्जुन जी ने, आई खुशियाँ जीवन में,
बढ़ती रही खुशियां यूं ही आगे,
जब संग मिला कमलेश, उषा, रवि, महेन्द्र व सुनीता का।
दिया सम्मान बच्चों ने इतना कि भरी रही झोली खुशियों से।
बढ़ी पीढ़ी और पदवी भी,
लिया जन्म जब नाती-पोतों ने,
बनी रही कृपा दृष्टि, ऊपर वाले की,
हर दुख-सुख झेला संग परिवार के।
हर दुख को बदला सुख में, दिखा रंग संस्कारों का,
पता ना चला कब जिंदगी में ऐसा मोड़ आया,
छूटा संग गिरधारी लाल जी सेतिया का,
पर न हिम्मत हारी, जब मिला संग परिवार का।
सह लिया इस गम को, जब बच्चों ने बैठाया सिर आँखों पर,
बदलते समय में भी ना बदला रंग
गिरधारी लाल जी सेतिया व लाजवंती जी के संस्कारों का,
बनाए रखी एकजुटता परिवार में जन्मी चौथी पीढ़ी ने,
मिले ऐसा जीवन हर परिवार को, देती रही यही दुआएं दिल से सबको, जो उनकी पहचान बनी।
थे हम भाग्यशाली, जो मिला आशीर्वाद ऐसी पुण्य आत्मा का,
जुड़ा सम्बन्ध जब सेतिया नागपाल परिवार का बंगा परिवार से,
जब दिया नातिन दिव्या को आशीर्वाद से आशीष को,
दिखा दिव्या की छवि में रंग
सेतिया नागपाल परिवार के संस्कारों का।
मिले जो कुछ पल उनके साथ बिताने को,
देख खुशी उनके चेहरे पे, लगा जैसे जन्मों से पहचान हो,
याद आती रहेगी उनकी आशीर्वाद भरी मुस्कान,
जब भी देखेंगे इस स्मारिका को।
ये भावनाएं बयां की नहीं जा सकती, रहती हैं दिलों में
रखे भगवान आशीर्वाद उनका हम सब पर,
बढ़ता रहे परिवार उनकी यादों में,
देते हैं हम बंगा परिवार की ओर से श्रद्धांजलि
उस पुण्य आत्मा को, दिया अपने होने का मान सम्मान जिन्होंने।



कमांडर विनोद कुमार बांगा-श्रीमती अल्का बांगा परिवार के साथ

'नानी मेरी प्यारी नानी'



-शिवांश नागपाल



वर्ष 2013 में माताजी अपने प्रिय दोहते शिवांश नागपाल को जन्मदिन पर आशीर्वाद देते हुए

नानी मेरी प्यारी नानी, गोद में मुझे सुलाओ ना।

बस एक बार ही सही वापिस आ जाओ ना।

अफसोस! मेरी प्यारी नानी माँ उस रूप में कभी वापिस नहीं आ सकती। छोटा नाती होने के नाते उन्होंने बहुत लाड़ लड़ाया। कभी घुमाने ले जातीं, कभी जेब खर्च देतीं और कभी



वर्ष 2018 में माताजी शिवांश - समीधा के मेंहदी समारोह में

गेम्स खिलाती थीं। नानी माँ से जब भी मिलते वो हाथ पर किस करके अपना प्यार जताती थीं। उन द्वारा पीठ पर हाथ फेरते ही सकारात्मक ऊर्जा आ जाती थी। जब भी नानी माँ के घर जाते तो वो बहुत सारे घी वाला परांठा बनाकर खिलाती थीं। लेकिन हमारे मामा-मामी ने नाना-नानी की कमी कभी महसूस होने ही नहीं दी।



वर्ष 2021 में संकुल सेतिया के विवाह के शुभ अवसर पर श्रीमती सुनीता नागपाल - श्री राजेन्द्र नागपाल अपने पुत्र-पुत्रवधू शिवांश-समीधा के साथ Imperial New Delhi में

गर्मियों की छुट्टियां होते ही नानी के घर जाने का उत्साह होता था। नानी माँ के घर में सब बच्चों की धमाल चौकड़ी उन्हें परेशान करती तो हमें डांटतीं परन्तु तुरन्त प्यार की बौछार करने लगतीं।

हमें देखते ही भाव विभोर हो जाने वाली हमारी नानी माँ की याद हमें हर पल आती रहेगी। उनके जाने के बाद जो स्थान रिक्त हुआ है उसको भरा जाना संभव नहीं है। नानी माँ की बहुत याद आती है। आज भी ज्ञान मासी के यहां से चुटकियों वाली सेवियां आती हैं तो मन की आंखों के सामने नानी जी की छवि आ जाती है। नानी माँ, हम जिस छांव तले फले-फूले उसका आधार आप ही हैं। प्यारी नानी, जग से न्यारी नानी, आई लव यू नानी माँ।

A garden of love grows in a grandmother's heart.

'नहीं भूलता उनका ममतामयी स्पर्श'



-समीधा लूथरा नागपाल

मैं अपनी इस छोटी सी कलम से उस महान हस्ती का परिचय कैसे दूँ जो हमारी नानीजी यानी माँ की माँ हैं। वो मुझे भी उतना ही प्यार करती थीं जितना शिवांश को करती थीं। बहुत कम लोग इस दुनिया में ऐसे होते हैं जिन्हें नाना-नानी और दादा-दादी का प्यार दुलार नसीब होता है। यह मेरा अहोभाग्य है कि मैं प्यार से ओत-प्रोत नानी का प्यार पा सकी। मुझे उनका साथ बहुत कम समय के लिए मिला, परन्तु जितना भी मिला वह अविस्मरणीय है। वो जब भी घर आतीं, घर में एक अलग-सी रौनक रहती थी। पापा से उनका खास लगाव था। उनकी एक बात मुझे बेहद पसंद थी, जब भी मिलती थीं, हाथ चूम लेती थीं। उनका ममतामयी स्पर्श पूरे शरीर में बिजली की तरह कौंध जाता था। अपने आप ही तन-मन उनके आगे नतमस्तक हो जाता था।

हमारी नानीजी सरल स्वभाव की संयम से जीने वाली धार्मिक महिला थीं। अपने ये गुण वो अपनी पुत्री को धरोहर के रूप में देकर गई हैं। यथा माता तथा पुत्री। मम्मा ने मुझे इस घर में इतना प्यार दिया है कि मुझे अपनी जन्मदात्री माँ को छोड़कर आने में कहीं कोई तकलीफ नहीं हुई। एक बार की बात है, मम्मा दीदी के पास गई थीं। नानी पीछे से मुझसे मिलने आई कि नई बहू को किसी तरह की कोई परेशानी तो नहीं। इतनी उम्र होने के बाद भी उन्हें सबका ख्याल रहता था। मुझे उनकी सजगता का एक वाक्या याद है। जब वो अस्पताल में थीं तो हम सब उनसे मिलने गए। वहाँ हमने उनके साथ फोटो ली। उन्हें फोटो दिखाई तो उन्होंने फोटो दोबारा क्लिक करने को कहा। वह बोलीं, इस फोटो में मेरे ऊपर रूमाल रखा है जो कि अच्छा नहीं लग रहा। इसे हटाकर दोबारा क्लिक करो, इतनी सजग थीं वो।



यह हमारे लिए गर्व की बात है कि मामाजी के परिवार ने स्मारिका के प्रकाशन का काबिले तारीफ निर्णय लिया और सभी परिवारजनों से अपने-अपने भाव व्यक्त करने को कहा। यही हमारे नाना-नानी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। यह संसार प्रकृति के नियमों के अधीन है और मृत्यु इस संसार का अटल सत्य है। नाना-नानी द्वारा प्रज्जवलित किए गए विवेक के दीप सदैव हमें अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करते रहेंगे।

अक्टूबर 2019 में सुनीता नागपाल और समीधा नागपाल
माताजी के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हुए जयपुरिया अस्पताल में

'माताजी प्यार और अपनत्व की धनी महिला थीं'



मीना-संदीप लूथरा

माँ ऐसा शब्द है जिसमें सम्पूर्ण दुनिया समा जाती है। आज मुझे एक ऐसी माँ के बारे में चंद शब्द लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है जिनका साथ तो कुछ महीनों का ही था, परन्तु इतने कम समय में मैंने उनसे जो ग्रहण किया वह अतुलनीय है। वह एक अत्यन्त सरल महिला थी। उनका ये मानना था कि जो भी आपके पास आए उनके स्वागत सत्कार में कोई कमी न रहे। मुझे इससे जुड़ा एक वाक्या याद है। उनके अंतिम समय से कुछ समय पहले जब वे अस्पताल में थीं तो मैं उनसे मिलने चली गई। थोड़ी देर हालचाल पूछने के बाद उन्होंने सुनीता जी को कुछ खाने-पीने का लाने के लिए इशारा किया। वे सूखे मेवे लेकर आई। मैंने एक टुकड़ा उठा लिया। जब प्लेट उनकी और बढ़ाई तो उन्होंने मुट्ठी भर ली और वह भरी हुई मुट्ठी मेरे हाथ में ऐसे थमा दी मानो एक माँ सारी दुनिया से छुपाकर अपनी बेटी को खजाना दे रही हो। मेरी आँखें नम हो आई। उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रख दिया, मानो मेरी भावनाएँ समझ गई हों।

ऐसी धनी थीं वो प्यार और अपनत्व की। अपने सभी गुण वो अपने परिवार को विरासत में दे गई हैं। हमें नाज है कि समधियों के रूप में हमें नागपाल और सेतिया परिवार मिला। इंसानियत की एक मिसाल कायम करता है ये परिवार। कोरोना काल में भी ये भाई लोग गरीबों को खाना वितरित करते नजर आए। शत्-शत् नमन है मेरा ऐसा जज्बा रखने वाले परिवार को। इन पंक्तियों के साथ मैं अपनी कलम को विराम देना चाहूँगी।

-मीना लूथरा



वर्ष 2018 में समीधा की दादी माँ
श्रीमती सुषमा लूथरा माताजी के साथ



श्रीमती मीना लूथरा श्रद्धापूर्वक माताजी
का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

'जब भी मेरे बड़े नानाजी मुझे प्यार से देखते थे व आशीर्वाद दिया करते थे तो यह दुनियां मुझे प्रिय लगने लगती थी'



-आशुतोष धमीजा
(सुपुत्र स्व. श्री ओमप्रकाश धमीजा-श्रीमती सुदेश धमीजा)

सेतिया परिवार द्वारा संकलित एवं प्रकाशनार्थ पारिवारिक जीवन-वृत के अवसर पर अपने कुछ संस्मरण व यादगार पलों को यहां प्रस्तुत करते हुए गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ।

स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया इस परिवार के प्रकाश पुंज मेरे बड़े नानाजी थे। मुझे मेरे नानाजी व बड़े नानाजी के घनिष्ठ सान्निध्य में अपना बाल्यकाल बिताने का सुअवसर प्राप्त हुआ। बड़े नानाजी के तीनों पुत्रों- श्रीमान अर्जुनदास जी, श्रीयुत रवि जी तथा मेरे व मेरे परिवार पर अपना पूरा प्यार-दुलार लुटाने वाले प्रियवर महेन्द्र सेतिया जी ने मेरा बचपन संभाला व संवारा।

जब भी मेरे बड़े नानाजी मुझे प्यार से देखते थे व आशीर्वाद दिया करते थे तो मैं प्रफुल्लित हो उठता था और यह दुनिया मुझे प्रिय लगने लगती थी। मैंने उनका अनुसरण किया और लाभान्वित होता रहा। एक समय की बात है मैं बड़े नानाजी के साथ उनके पेट्रोल पम्प पर था। बातों-बातों में मेरे साथ कुछ वार्तालाप के दौरान उन्होंने मुझे कहा: "सफलता जीवन में प्राप्त होने वाली एक दुर्लभ व अप्रत्याशित घटना होती है। सफलता उसी के कदम चूमती है जो समय के साथ अपने आपको बदलने में पारंगत है।" उनके इन शब्दों ने मेरा जीवन के प्रति नजरिया तो बदला ही और साथ ही एक बेहतर इंसान बनने में भी सहायता प्रदान की।

स्व. श्री भगवानदास जी सेतिया जिनका आकस्मिक निधन दिनांक 6 मार्च, 2019 को हुआ मेरे नानाजी ही नहीं अपितु मेरे अभिभावक, संरक्षक व पथ-प्रर्दशक भी थे। उनकी इस सहृदयता से पूरा सेतिया परिवार भी समय-समय पर लाभान्वित होता रहा है। इस परिवार की यह विशेषता रही है कि यह एक Close-Knit, Cohesive and Cultured Family का उच्चस्तरीय स्तंभ है। मैं इस गौरवशाली परिवार का एक सदस्य हूं।

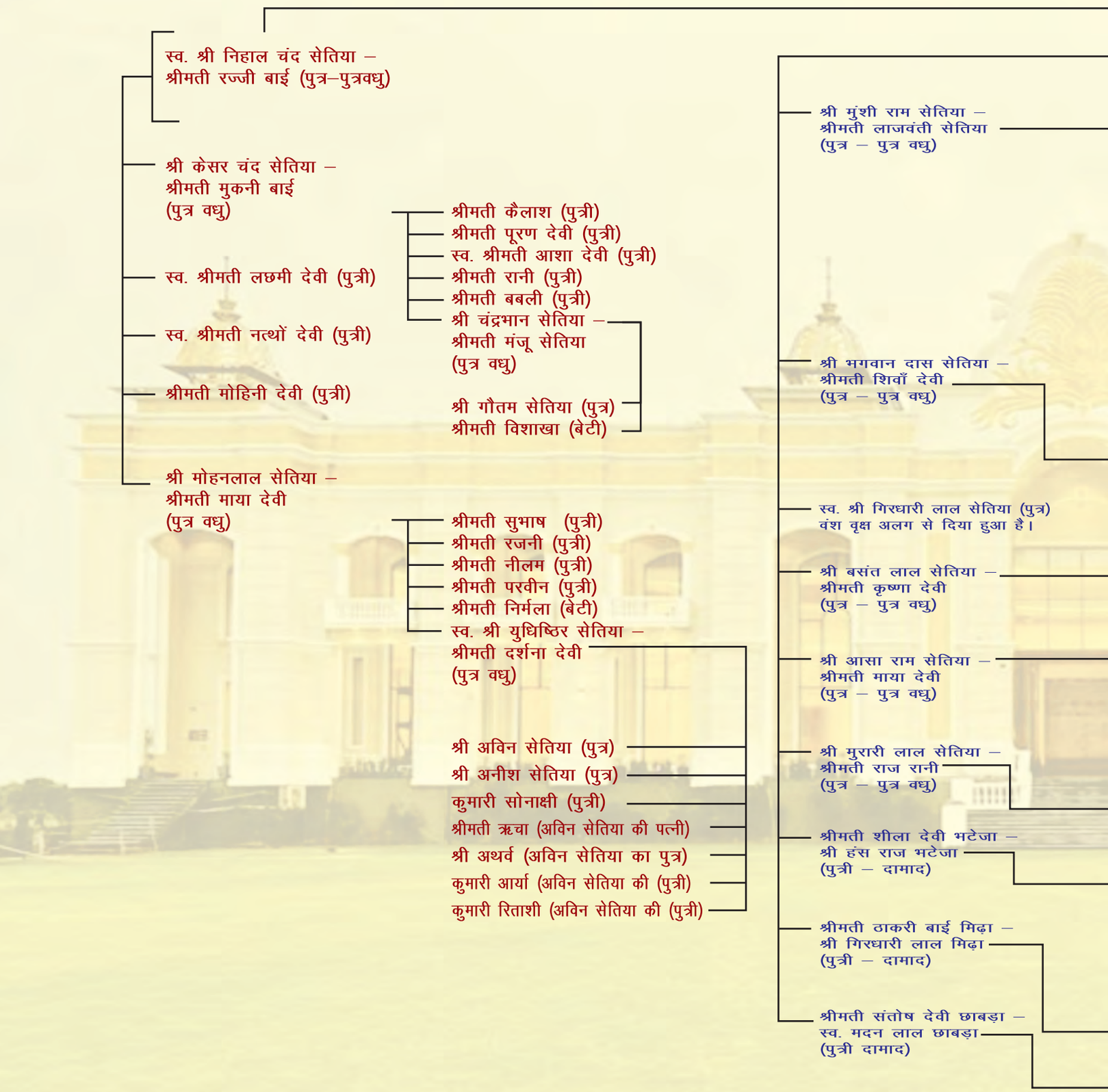
परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे अपनी कृपा-दृष्टि परिवार पर बनाए रखें।



श्रीमती सुदेश रानी धमीजा अपने सुपुत्र और पुत्रवधू अशुतोष धमीजा-शिवानी धमीजा, बेटी सोमन धमीजा भाटिया और पौत्र मेहुल के साथ

सेतिया परिवार के सदस्यों की सरलता, सहजता तथा सेवा भावना में परम वंदनीय माताजी और पिताजी द्वारा पुस्तुत किए गए आदर्शों की झलक नजर आती है।

हमारा वंश वृक्ष : हमारी पहचान का अभिन्न अंग



We grow in different directions like branches on a tree, but our strong roots keep us together.

सेतिया परिवार

स्व. श्री खेम चंद सेतिया का परिवार :

श्री माछी राम सेतिया – श्रीमती ठरी बाई (पुत्र–पुत्रवधु)

- श्री होतचंद सेतिया – श्रीमती भरांवा बाई, श्रीमती बिशनी बाई (पुत्र – पुत्र वधु)
- श्री निरंजन दास सेतिया – श्रीमती कृष्णा कुमार सेतिया (पुत्र – पुत्र वधु)
  - श्रीमती संगीता मिढ़ा (बेटी)
  - श्रीमती प्रीति कालड़ा (पुत्री)
  - श्रीमती अनिशा पुनियानी (पुत्री)
  - श्री साहिल सेतिया (पुत्र)
  - शिखा (पुत्री)
- श्री रमेश सेतिया – श्रीमती बिमला सेतिया (पुत्र – पुत्र वधु)
  - श्री अजय सेतिया (पुत्र)
  - श्री विजय सेतिया (पुत्र)
  - श्रीमती नीतू मदान (पुत्री)
- श्री सुभाष सेतिया – श्रीमती पुष्पा सेतिया (पुत्र – पुत्र वधु)
  - श्रीमती तनु छाबड़ा (पुत्री)
  - श्रीमती साक्षी (पुत्री)
  - श्री तुषार सेतिया (पुत्र)
- श्रीमती राज मुंजाल – श्री बक्शी मुंजाल (पुत्री – दामाद)
  - श्री साहिल मुंजाल (पुत्र)
  - श्री रोहित मुंजाल (पुत्र)
- श्री अशोक सेतिया (पुत्र)
- स्व. श्री ओम् प्रकाश सेतिया (पुत्र)
- स्व. श्रीमती सरोज भटेजा (पुत्री)
- श्रीमती सुदेश धमीजा (पुत्री)
- श्रीमती रानी (पुत्री)
- श्री राजेंद्र सेतिया (पुत्र)
- श्री मोहन सेतिया (पुत्र)
- श्रीमती कंचन कमल मिढ़ा (पुत्री)
- श्री गुलशन सेतिया (बेटा)
- श्री अनुराग सेतिया (बेटा)
- श्रीमती प्रेम मिढ़ा (पुत्री)
- श्रीमती उषा चुग (पुत्री)
- श्रीमती सुमन नारंग (पुत्री)
- श्रीमती रजनी मुंजाल (पुत्री)
- श्रीमती मीनू (पुत्री)
- श्री मनीष सेतिया (पुत्र)
- श्री वरुण सेतिया (पुत्र)
- श्रीमती निशा चुग (पुत्री)
- श्री राजू भटेजा (पुत्र)
- श्री विजय भटेजा (पुत्र)
- श्रीमती उषा रानी चुग (पुत्री)
- श्रीमती कृष्णा चलाना (पुत्री)
- श्रीमती अलका सेतिया (पुत्री)
- श्रीमती रानी सेतिया (पुत्री)
- सन्तोष रानी मुटरेजा
- श्री गुरबक्श लाल मिढ़ा (पुत्र)
- श्री प्रेम मिढ़ा (पुत्र)
- श्री संजय छाबड़ा (पुत्र)
- श्री हरीश छाबड़ा(पुत्र)
- श्रीमती मीनू (पुत्री)
- श्रीमती ज्योति (पुत्री)

- श्री टोपन दास सेतिया – श्रीमती प्यारी बाई (पुत्र – पुत्र वधु)
- श्री लाजपत राय सेतिया – श्रीमती शांति देवी (पुत्र – पुत्र वधु)
  - श्री राजन सेतिया (पुत्र)
  - श्री आकाश सेतिया (पुत्र)
  - श्रीमती विमला गुगलानी (पुत्री)
  - श्रीमती रेणु नागपाल (पुत्री)
  - श्रीमती बबीता बतरा (पुत्री)

Family means nobody gets left behind or forgotten.

'सभी बच्चे उन्हें काजू वाले पिताजी कहकर पुकारते थे'



श्रीमती रेनू सेतिया धर्मपत्नी स्व. श्री ओमप्रकाश जी सेतिया

हमारे परम पूजनीय दादा भगवानदास जी के हर मन प्यारे बड़े भाई श्री गिरधारी लाल जी सेतिया एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लाजवंती देवी जी सेतिया को हम सम्मान से दादाजी-दादीजी कहकर बुलाया करते थे। उनके बारे में जितना लिखें कम है क्योंकि उन्होंने हमारे दादाजी के बड़े भाई के नाते सदैव पिता के रूप में अपने सभी दायित्व निभाए। दादाजी व उनमें बहुत प्रेम था। उनके आपसी प्रेम को देखते हुए लोग उनके नाम से भाइयों के प्रेम की मिसाल दिया करते थे। चाहे पारिवारिक पृष्ठभूमि हो या फिर व्यापारिक क्षेत्र, आपस में ये दोनों भाई मिलकर ही हर समस्या को सुलझा लिया करते थे। वे बच्चों से बहुत प्यार करते थे।

सभी बच्चे उन्हें काजू वाले पिताजी कहकर पुकारते थे, क्योंकि वे जब दुकान से घर आते तो सबके लिए अपनी जेबों में काजू, बादाम, टाफियां भर कर लाते और सब बच्चों में बाँटते। श्री गिरधारीलाल जी सेतिया और श्रीमती लाजवंती देवी सेतिया का आशीर्वाद सदैव हमारे साथ है। हम जीवन भर उनके आभारी रहेंगे और हमेशा भगवान को धन्यवाद देते रहेंगे कि हमें उनकी छत्रछाया में बड़ा होने का मौका मिला। आज हम उनके बताए मार्ग पर चलकर ही अपना जीवन उन्नत कर रहे हैं। हमारी ओर से उनको शत्-शत् नमन्।



राहुल सेतिया - श्रीमती पूनम सेतिया

(स्व. श्री ओमप्रकाश जी सेतिया - श्रीमती रेनू सेतिया के सुपुत्र-पुत्रवधू)

परम पूजनीय माताजी और पिताजी का जीवन यह दर्शाता है कि सच्ची सफलता प्राप्त करने के लिए परिवार का साथ आवश्यक है। हम माताजी और पिताजी को कभी भुला नहीं पाएंगे।

'आज हम उनके आशीर्वाद से ही खुशहाल जीवन जी रहे हैं'



राजेन्द्र कुमार सेतिया



मोहन लाल सेतिया

(सुपुत्र श्री बंसतलाल सेतिया-श्रीमती कृष्णादेवी)

हमारे ताया जी एवं ताईजी ने हमारे पिताजी की अपने बेटे की तरह प्रेमपूर्वक परवरिश करते हुए उन्हें अच्छे संस्कार दिए। उनकी छत्रछाया में हमारे पिताजी ने अपने पैरों पर खड़े होकर हम दोनों भाइयों को भी कामयाब किया और आज उनके सुपुत्रों द्वारा दिए गए सहयोग से हम अपने व्यापार में कामयाब हैं। आज हम उनके आशीर्वाद से ही खुशहाल जीवन जी रहे हैं। हमारे बच्चों को भी हमारे तायाजी तथा ताईजी का भरपूर प्यार मिला। हम अपने परम पूजनीय ताया-ताईजी को कभी भुला नहीं पाएंगे। तायाजी एवं ताईजी को शत-शत नमन!

'भाई साहब और भाभी जी सदैव अपनों की खुशियों में ही अपनी खुशी तलाशते रहे'



आसाराम सेतिया - श्रीमती मायादेवी सेतिया

परमपूजनीय भाई साहब श्री गिरधारी लाल जी सेतिया और भाभीजी के साथ बिताए अनमोल पलों की स्मृतियां हमें हर चुनौती पर विजय पाने के लिए प्रेरित करती हैं। वे सदैव अपनों की खुशियों में ही अपनी खुशी तलाशते रहे। शिक्षा प्राप्त करने के बाद लगभग 20 वर्ष की आयु में जब मैं रोजगार की तलाश में था तो भाईसाहब ने जैतसर में अर्जुनदास सेतिया के किराना व्यवसाय के साथ जोड़ते हुए मुझे व्यापार की बारीकियों को पूरी तरह समझा दिया। 6-7 वर्ष पश्चात् भाई साहब गिरधारीलाल जी और श्री भगवानदास जी ने अनूपगढ़ में मेरा ट्रांसपोर्ट व्यवसाय शुरू करवाकर मेरे जीवन को नई दिशा प्रदान कर दी। उन्होंने अपनों का सदा दिल से साथ दिया। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि परस्पर प्रेम और विश्वास के साथ इस प्रकार जीवन जिएं कि अनावश्यक चिंता और बेचैनी सफलता के मार्ग में कभी रुकावट न बन पाए। भाई साहब और भाभीजी हमारी यादों में सदैव बने रहेंगे।

-आसाराम सेतिया

'दादा-दादीजी ने परिवार को एक सूत्र में पिरोए रखा'



-अशोक सेतिया

(सुपुत्र स्व. श्री भगवान दास सेतिया)

हमें ताया-ताई श्री गिरधारी लाल जी सेतिया और श्रीमती लाजवंती देवी की ओर से बहुत प्यार मिला। हमारे पिताजी और ताया जी में बहुत प्यार था। दोनों राम-लक्ष्मण की जोड़ी के समान थे। वे सुख-दुःख में सदैव एक-दूसरे के साथ खड़े रहते थे। ताऊजी बच्चों के प्रति बहुत स्नेह रखते थे। हमारे बच्चे आज भी उन्हें काजू वाले पिताजी कहते हुए याद करते हैं। हम हर पल परमात्मा से यही प्रार्थना करते हैं कि हमारे ताया-ताई का आशीर्वाद सदैव हम पर बना रहे और हम उनके बताए मार्ग पर चलते रहें। ताया जी और ताईजी को शत्-शत् नमन।



गुलशन सेतिया



अनुराग सेतिया

(श्री आसाराम सेतिया - श्रीमती मायादेवी सेतिया के सुपुत्र)

हमें अपने ताया-ताई स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया-स्व. श्रीमती लाजवंती देवी सेतिया से बहुत कुछ सीखने को मिला। उनकी यादें हमारे दिल की गहराइयों में बसी हैं। हमें रह-रह कर याद आती है उनकी यह सोच कि एक-दूसरे के दुःख-दर्द बांटने में ही जीवन का सच्चा सुख है।

'भाई साहब और भाभीजी ने परिवार को सदा जोड़कर रखा'



मुरारीलाल सेतिया - श्रीमती राजरानी सेतिया

भाई-बहनों में सबसे छोटा होने के कारण मुझे भाई साहब स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया व भाभी जी की ओर से अपार स्नेह मिला। मेरे परम सम्माननीय बड़े भाई साहब श्री गिरधारीलाल जी और भगवानदास जी ने मुझे ट्रांसपोर्ट व्यवसाय में निपुण बनाया और जैतसर में वधवा गोल्डन ट्रांसपोर्ट की एजेंसी दिलवाई। उन्होंने हमेशा हमारा साथ दिया। ट्रांसपोर्ट व्यवसाय के सिलसिले में मुझे प्राय: जैतसर मंडी से बाहर रहना पड़ता था। इस दौरान माता-पिता तुल्य भाई साहब और भाभीजी ही पूरी जिम्मेदारी निभाते हुए बच्चों की प्रेमपूर्वक देखभाल किया करते थे। परिणामस्वरूप मुझे पीछे की कोई चिंता नहीं रहती थी। भाई साहब और भाभीजी ने मुश्किल वक्त में हर पल हमारा साथ दिया और परिवार को सदा जोड़कर रखा। आज भी भाई साहब और भाभीजी द्वारा कही जाने वाली गहरी प्यार भरी बातों की यादें कठिन से कठिन समस्या का सामना करने की शक्ति प्रदान कर जाती हैं। ऐसी पुण्यात्माओं को कोटि-कोटि श्रद्धांजलि।

-मुरारी लाल सेतिया



मनीष सेतिया-एकता सेतिया



वरुण सेतिया-गुरप्रीत सेतिया

(श्री मुरारीलाल सेतिया-श्रीमती राजरानी सेतिया के सुपुत्र-पुत्रवधू)

परम सम्माननीय माताजी और पिताजी ने विकट परिस्थितियों में भी अवसरों का निर्माण किया। उनका आदर्श जीवन हमें यह आभास कराता है कि हमारी आंतरिक सरलता में ही जीवन का संगीत है।

'परम पूजनीय चाचाजी और चाची जी के त्यागपूर्ण प्रेम ने हमें विपत्तियों से हार न मानने की शक्ति प्रदान की'



निरंजन सेतिया - श्रीमती कृष्णा देवी



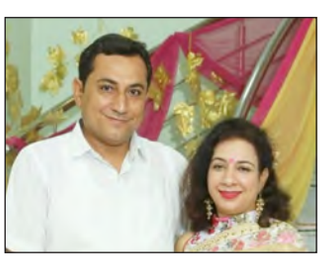
रमेश सेतिया - श्रीमती विमला सेतिया

(स्व. श्री मुंशीराम जी सेतिया-श्रीमती लाजवंती सेतिया के पुत्र और पुत्रवधू)

परमपूजनीय चाचा श्री गिरधारीलाल जी सेतिया और चाची श्रीमती लाजवंती देवी जी के असीम प्रेम को हम कभी भुला नहीं पाएंगे। आज हम जो कुछ भी हैं उनके भरपूर प्यार और आशीर्वाद के परिणामस्वरूप ही हैं। हम छोटे-छोटे ही थे कि हमारे पिताजी का अकस्मात ही 1967 में देवलोकगमन हो गया था। चाचा गिरधारीलाल जी और भगवान दास जी ने पिताश्री के रूप में ही हमारी परवरिश की। उन्होंने हमें अपनी छत्रछाया में रखते हुए हमारे कारोबार की भी व्यवस्था की। उनके त्यागपूर्ण प्रेम ने हमें विपत्तियों से हार न मानने की शक्ति प्रदान की। हमारे दोनों चाचा जी का सदैव यही प्रयास रहा कि हमें जीवन में किसी भी मोड़ पर पिता की कमी महसूस न हो।

हमारी चाची श्रीमती लाजवंती देवी जी ने हमेशा माँ की तरह ही हमारा ध्यान रखा। हमारी माताजी जब हमारे नाना-नानी के यहां जाया करती थीं तो चाची जी ही हमारी देखरेख किया करती थीं। चाचाजी और चाचीजी के साथ बिताए पल आज भी हमें बहुत याद आते हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि उनका आशीर्वाद सदा परिवार पर बरसता रहेगा। परमवंदनीय स्व. चाचाजी और चाचीजी को कोटि-कोटि नमन !

-निरंजन सेतिया एवं रमेश सेतिया



सुनील पुनयानी-अनीस पुनयानी

(श्री निरंजन सेतिया-श्रीमती कृष्णा देवी की सुपुत्री और दामाद)



नीतू मदान-तरुण मदान

(श्री रमेश सेतिया-श्रीमती विमला सेतिया की सुपुत्री और दामाद)



मनीष सेतिया

(श्री निरंजन सेतिया-श्रीमती कृष्णा देवी के सुपुत्र)



डॉ. अजय सेतिया



विजय सेतिया

(श्री रमेश सेतिया-श्रीमती विमला सेतिया के सुपुत्र)

परम श्रद्धेय माताजी और पिताजी का जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उनकी वास्तविक शक्ति थी। उनका जीवन हमें परमपिता परमात्मा को जीवन का आधार बनाकर आस्था के साथ आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित करता है।

जब एक द्वार बंद होता है तो दूसरा खुल जाता है।

'हम चाचाजी और चाचीजी को कभी नहीं भूल पाएंगे'



श्री सुभाष सेतिया - श्रीमती पुष्पा सेतिया

(स्व. श्री मुंशीराम जी सेतिया-श्रीमती लाजवंती सेतिया के पुत्र और पुत्रवधू)

जब मैं 12 वर्ष का था, मेरे पिता श्री मुंशीराम जी का परलोक गमन हो गया। हम तीन भाई और एक बहन हैं। हमारे जीवन की दु:ख की घड़ी में हमारे चाचा श्री गिरधारी लाल जी और श्री भगवान दास जी ने पिता के सभी दायित्व निभाए। उन्होंने हमारी पढ़ाई-लिखाई का बहुत ध्यान रखा। मेरी पढ़ाई पूरी होते ही उन्होंने अपनी दुकान के सामने मेरे भाई रमेश चन्द और मुझे कपड़े की दुकान खुलवा दी। मेरे बड़े भाई निरंजन कुमार जी को उन्होंने अपने साथ ट्रांसपोर्ट व्यवसाय में शामिल कर लिया। तीनों भाइयों के विवाह में उनका पूर्ण सहयोग रहा और उन्होंने हमें कभी भी किसी कमी का अहसास नहीं होने दिया। मेरी चाची श्रीमती लाजवंती देवी और मेरी मम्मी ने पूरी जिम्मेदारी लेकर हमारी जरूरतों का ध्यान रखा। परम वंदनीय चाचा जी और चाची जी को कोटि-कोटि नमन!

-सुभाष सेतिया



श्री सुभाष सेतिया - श्रीमती पुष्पा सेतिया के सुपुत्र तुषार सेतिया, बेटियां तन्नु व साक्षी तथा नन्हीं सी प्यारी सी दोहती नूर

हमारे पापाजी के परम पूज्य चाचा जी और चाचीजी ने परिवार के सभी सदस्यों को प्रेमपूर्वक एक दूसरे के साथ जुड़े रहने का मार्ग दिखाया। उन्होंने अपनो को कभी अकेला महसूस नहीं होने दिया।

'उन्होंने हमेशा सबके हित का ध्यान रखा'



गुरबक्श लाल मिढ्ढा



प्रेम कुमार मिढ्ढा

सुपुत्र स्व. श्री गिरधारीलाल जी मिढ्ढा - श्रीमती ठाकरी बाई

हम अपने मामाजी स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया और मामीजी श्रीमती लाजवंती देवी की प्यार भरी अमृतमयी दुआओं को कभी भूल नहीं सकते। हम जब अपनी बड़ी बहन संतोष रानी के साथ उनके यहां जाया करते थे तो मामीजी हमारे हाथों को अपने हाथों में लेकर हमसे बहुत लाड़ प्यार किया करती थीं। उन द्वारा किया जाने वाला कहावतों का प्रयोग तथा सुनाए जाने वाली कहानियां सार्थक जीवन जीने का मार्ग दिखा जाया करती थी। मेरी माताजी और मामीजी बचपन की सहेलियों की तरह एक-दूसरे के दिल के बहुत करीब थीं।



श्रीमती ठाकरी बाई के पिताश्री
स्व. होतचंद जी सेतिया

मामाजी और मामीजी का अपनों के प्रति प्यार अनुपम ही था। सरल स्वभाव के कारण वे खुलकर बात किया करते थे। वे सदैव अपनों के साथ मिलकर संयुक्त रूप से आगे बढ़ने के लिए प्रयत्नशील रहे। उन्होंने हमेशा सबके हित का ही ध्यान रखा।



स्व. श्री गिरधारीलाल जी मिढ्ढा-श्रीमती ठाकरी बाई

परिणामस्वरूप परिवार में वे सबके दिलों के करीब रहे। हमारे परम आदरणीय मामाजी और मामीजी के बेटे-बेटियां आज भी उन्हीं की भांति हर रिश्ते को दिल की गहराइयों से निभा रहे हैं। परमवंदनीय मामाजी और मामीजी को शत्-शत् नमन !

'हमारे मामा स्वर्गीय श्री गिरधारीलाल जी सेतिया स्वभाव के इतने अच्छे थे कि मैं उनका ही होकर रह गया'



योगराज मुटनेजा - संतोष रानी मुटनेजा

मेरी शादी 1973 में हुई तो संतोष के ननिहाल में मेरा सारे परिवार से मिलना हुआ। उनका प्यार देखकर मैं गद्‌गद् हो गया। हर सुख-दु:ख में हम जाया करते थे। हमारे मामा स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया स्वभाव के इतने अच्छे थे कि मैं उनका ही होकर रह गया। जैसे-जैसे समय बीतता गया परिवार में बच्चों की शादियां हुईं। मामाजी और मामीजी के अपार प्रेम को देखते हुए हम समय-समय पर उनके यहाँ जाया करते थे। मामाजी में गहरी सूझबूझ थी। इसलिए बड़े फैसले लेते समय हम उनकी सलाह अवश्य ही लिया करते थे। हमारे चार मामा अपनी जीवन यात्रा पूरी करके चले गए। उनके सभी बच्चे आज भी हमें भरपूर सम्मान देते हैं। स्वर्गीय मामा श्री गिरधारीलाल और मामी श्रीमती लाजवंती देवी जी का स्नेह कभी भुलाए नहीं भूलेगा। जब भी मेरा और संतोष का जाना होता तो मामीजी जबरदस्ती हमें एक दो दिन और रोक लेती थीं। हम दोनों की ओर से मामा-मामी जी को शत्-शत् नमन।

-योगराज मुटनेजा

'हमारे माता-पिता को मामाजी और मामीजी की ओर से सदा भरपूर प्रेम और सम्मान प्राप्त हुआ'



राजकुमार भटेजा विजय कुमार भटेजा

(सुपुत्र स्व. श्री हंसराज भटेजा-स्व. श्रीमती शीला देवी)

हमें स्व. मामाजी श्री गिरधारीलाल जी सेतिया और मामीजी स्व. श्रीमती लाजवंती देवी का अपार स्नेह प्राप्त हुआ। उनकी याद आते ही हमें अपने माता-पिता की याद आने लगती है। हमारे माता-पिता को मामाजी और मामीजी की ओर से सदा भरपूर प्रेम और सम्मान प्राप्त हुआ। हमारे पिताजी और मामाजी का एक दूसरे से गहरा लगाव था। दोनों एक दूसरे के यहां आते जाते रहते



स्व. श्री हंसराज भटेजा - स्व. श्रीमती शीला देवी

थे। परस्पर प्रेम और विश्वास के कारण हर बड़ा काम करने से पहले वे एक दूसरे की राय ले लिया करते थे। हमारे मामाजी-मामीजी और हमारे माता-पिता अपनी सांसारिक यात्रा पूरी करके जा चुके हैं परन्तु हमें आज भी ननिहाल परिवार की ओर से पहले की तरह ही भरपूर प्यार प्राप्त होता है। स्व. मामाजी और मामीजी को कोटि-कोटि नमन!

'उनके द्वारा जीवन के हर मोड़ पर दिए जाने वाले साथ को हम कभी भूल नहीं सकते'



श्रीमती संतोष रानी धर्मपत्नी स्व. श्री मदनलाल छाबड़ा

भाई साहब स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया तथा परमपूजनीय भाभीजी स्व. श्रीमती लाजवंती देवी के प्यार और उन द्वारा जीवन के हर मोड़ पर दिए जाने वाले साथ को मैं कभी भूल नहीं सकती। परिवार की सबसे छोटी बेटी होने के नाते मुझे माता-पिता और भाई-बहनों का भरपूर लाड़-प्यार मिला। मेरे स्व. पति श्री मदनलाल छाबड़ा परिवार के सदस्यों में परस्पर प्रेम और सहयोग की भावना को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ करते थे। मेरे बेटे संजय और हरीश, पुत्रवधू अंजु छाबड़ा तथा बेटियां मीनू और ज्योति अपने स्व. मामाजी और मामीजी को बहुत याद करते हैं। परमपूजनीय भाई साहब और भाभी जी की प्रेरणादायक स्मृतियों को प्रतिपल नमन !



संजय छाबड़ा - अंशु छाबड़ा
(स्व. श्री मदनलाल जी छाबड़ा-
श्रीमती संतोषरानी के सुपुत्र-पुत्रवधू)



हरीश छाबड़ा
(स्व. श्री मदनलाल जी छाबड़ा-
श्रीमती संतोषरानी के सुपुत्र)

हमारे प्रेरणा पुंज मामाजी स्व. श्री गिरधारी लाल जी सेतिया तथा मामी जी स्व. श्रीमती लाजवंती देवी के संघर्षपूर्ण जीवन से यह शिक्षा प्राप्त होती है कि हमें चिंतित रहते हुए बिखरना नहीं है बल्कि विश्वासपूर्वक संघर्ष करते हुए निखरना है।

'उन्होंने रिश्ते की मजबूती और सुन्दरता को बनाए रखा'



गुलशन मित्ढा

सुपुत्र स्व. श्री रामदयाल जी मित्ढा - स्व. श्रीमती ईश्वर देवी मित्ढा



स्व. श्री रामदयाल जी मित्ढा



स्व. श्रीमती ईश्वर देवी मित्ढा

स्व. श्री गिरधारीलाल जी प्रेम, सेवा और परस्पर सहयोग की प्रतिमूर्ति थे। अपने श्रेष्ठ विचारों और कर्मों के कारण वे सदैव पूजनीय रहेंगे। उन्होंने अपनों के हर सुख-दु:ख में सदैव भागीदारी के द्वारा रिश्तों की मजबूती और सुन्दरता को बनाए रखा।



स्व. श्री अर्जुनदेव मित्ढा

मेरे पिता स्व. श्री रामदयाल जी मित्ढा स्व. श्री गिरधारीलाल जी और भगवानदास जी के ममेरे भाई थे। पर उनका आपसी स्नेह सगे भाइयों जैसा ही था। मेरे बड़े भाई स्व. श्री अर्जुनदेव मित्ढा उनके भक्तिभाव तथा प्रेमभाव से बहुत प्रभावित थे। भगवानदास जी और मेरे पिताजी की ट्रक व्यापार में प्रेमपूर्ण साझेदारी लगभग 35 वर्षों तक चलती रही। स्व. श्री गिरधारीलाल और हमारे परिवार के सदस्यों ने एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान करते हुए परस्पर संबंधों की मधुरता को सदा बनाए रखा।

स्व. गिरधारीलाल जी और मेरे पिताजी जीवनभर श्री आनंदपुर ट्रस्ट से जुड़े रहे। दोनों परिवार श्री आनंदपुर धाम जाया करते थे। इन दोनों परिवारों की गुरु के प्रति अपार श्रद्धा थी। दोनों परिवारों के सदस्य ऐसे भक्ति भाव से परिपूर्ण हैं जिसका आधार प्रेम, श्रद्धा और समर्पण है। स्व. श्री गिरधारीलाल जी और उनकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती लाजवंती देवी जी हर सुबह श्री आनंदपुर आश्रम में सत्संग श्रवण करने हेतु जाते थे। जैतसर में आनंदपुर कुटिया के निर्माण में सेतिया परिवार ने तन-मन-धन से सेवा की।

'हमें अपने सेतिया परिवार पर नाज है'



राजन-रंजना सेतिया

पापाजी को जब भी मौका मिलता अपने भाई-भतीजों से मिलते ही रहते थे। परिवार के कुछ लोग जयपुर शिफ्ट हो गये थे लेकिन श्री बसंतलाल सेतिया, आसाराम जी और श्री मुरारीलाल चाचा जी तब जैतसर में ही थे। उनसे पापाजी का काफी मेलजोल था। जमीन की देखभाल का काम भी वही करते थे। जब विमला दीदी की शादी हुई तो वे पिताजी के ताऊजी दादा निहालचंद जी को साथ लेकर आए और मिलनी भी करवाई। दादीजी के स्वर्गवास हो जाने के बाद भी वो हमारे पास दिल्ली कम ही रहते, आते भी तो दो एक दिन में वापिस चले जाते। खुली जगह, प्रकृति का साथ और खेती-बाड़ी उन्हें बहुत भाती। आखिरी दिनों में जब किसी आवारा पशु ने उन्हें धक्का देकर गिरा दिया तो वो बेहोश होकर ऐसे गिरे कि फिर उठ नहीं पाए। फिर मैं उन्हें दिल्ली लाया। कुछ दिनों बाद ही वो स्वर्ग सिधार गए। अपने जीवन में दादी-दादाजी दोनों ही लगभग स्वस्थ ही रहे। ये सेतिया परिवार के वहाँ पर रह रहे आसपास के रिश्तेदारों का अपनापन ही था, जो उनका दिल वहाँ लगा रहा। हम वहाँ कम ही जा पाए, लेकिन जब भी गए प्यार से झोली भर कर लाए। व्यस्तता के चलते मिलना कम होता है मगर आज भी जब मिलते हैं तो बहुत प्यार व अपनत्व महसूस होता है। इसी अपनेपन के कारण पापाजी को इकलौते होने के बावजूद भी कभी नहीं लगा कि उनका अपना कोई सगा भाई-बहन नहीं है। हमें अपने सेतिया परिवार पर नाज है।

'हमारे घर रिश्तेदारों का आना जाना लगा रहता था, सभी दिल के करीब लगते थे'



बबीता-सुनील बत्रा

परिवार में छोटी होने के नाते मैं ज्यादा तो नहीं जानती, लेकिन पापाजी अक्सर ही अपने परिवार की बातें करते थे। उन्हें कभी अकेलापन महसूस नहीं हुआ। हर शादी विवाह या किसी अन्य मौके पर मैं देखती थी कि पापा के कज्नस या बच्चे आए होते। मेरे भाई आकाश की शादी पर मम्मी की बुआ श्रीमती लाजवंती देवी जी कुछ दिन हमारे साथ रही थीं। हम सभी को बहुत अच्छा लगा। मम्मी और उनकी बुआ बहनों सी ही लगती। हर समय कुछ न कुछ काम करते रहते। रीति रिवाजों की उन्हें पूरी जानकारी थी। दादाजी को अपनी जमीन से माँ जैसा प्यार था। पानी वगैरह की कमी के कारण कई बार जमीन बेचने की बात हुई, लेकिन उन्होंने अपने जीते जी जमीन नहीं बेची। मन तो पापा का भी नहीं था लेकिन वहां जाना आना मुश्किल हो गया था। बाबाजी के देवलोकगमन के बाद भी वहाँ पर रह रहे रिश्तेदार ही उसे ठेके पर दे देते और वही ध्यान भी रखते थे। भले ही अब वहाँ हमारी कोई जायदाद नहीं, अनूपगढ़ से भी सब जयपुर शिफ्ट कर गए लेकिन यादें तो हैं। किसी भी शादी ब्याह पर जब सब जयपुर में इकट्ठे होते हैं तो मन बहुत प्रसन्न होता है और कई रिश्ते तो और भी आगे से आगे जुड़ गए हैं। हमारे घर रिश्तेदारों का आना जाना लगा रहता था। सभी दिल के करीब लगते थे। मुझे तो अभी भी संबंधों का ज्यादा पता नहीं। सबसे प्यार ही मिला। हम सभी को जयपुर जाना बहुत अच्छा लगता है। दादके भी और नानके भी सब वहीं पर हैं। दुआ है कि सभी का प्यार यूँ ही बना रहे। रामसिंहपुर वाला घर भी छूटा, अबोहर वाला भी छूटा मगर आज भी कहीं आसपास वो पुराने घर, कभी बातों में.... कभी यादों में, कभी आँखों में, कभी ख्वाबों में।

-बबीता बत्रा

'हमारे पिताजी को कभी इकलौतापन महसूस नहीं हुआ'



आकाश-किरण सेतिया, चण्डीगढ़

'पापाजी का अपने दोनों तायों के बेटों से बहुत ही प्यार था। स्वर्गीय श्री गिरधारीलाल जी, भगवानदास जी, केसर चन्द, मोहन लाल सेतिया इन सबसे उनका विशेष स्नेह था। आपस में इन सबकी उम्र में लगभग पाँच साल का ही अन्तर था। सब बहनों से भी उनका बहुत प्यार था। पीलीबंगा वाली बहन ने तो सारी उम्र उन्हें राखी बाँधी है। श्रीमती लाजवंती जी हमारी मम्मी की बुआ जी भी थी तो बहुत आना जाना लगा रहता था। हर दु:ख-सुख में शामिल होते थे। पापाजी अक्सर पुरानी बातें सुनाते थे कि कैसे उनके दोनों ताए उन्हें बचपन से ही बहुत प्यार करते थे। जब भी मिलते उन्हें आशीर्वाद के रूप में एक दो पैसे जरूर देते। खाने का सामान भी देते। उस जमाने में एक रुपये में चौसठ पैसे होते थे। एक रुपये की तो बहुत कीमत होती थी। दोनों परिवारों के कुछ लोग मिलकर एक बार गयाजी भी गए थे। हालांकि पापा नौकरी के सिलसिले में अबोहर के अलावा लुधियाना, अंबाला, मंडी डबवाली और आखिर के बहुत साल दिल्ली में रहे लेकिन खास मौकों पर वो जरूर अपने इलाके में जाते।



स्व. श्री टोपनदास सेतिया

हमारे परिवार के हर दु:ख-सुख में सभी परिवारों से कोई न कोई जरूर शामिल होता था। पापाजी तो सारी उम्र अपनी जड़ों से जुड़े रहे। नौकरी के चलते भले ही वो ज्यादा समय गाँव में नहीं गुजार सके, मगर समय मिलते ही वो रामसिंहपुर जाते और फिर अनूपगढ़, जैतसर, श्रीगंगानगर, पदमपुर, पीलीबंगा, सूरतगढ़ सब जगह होकर आते और वहाँ रहने वाले हर रिश्तेदार से मिलकर आते। दादा-दादी वैसे तो गाँव में ही रहते थे मगर दादीजी साल में कई महीने हमारे पास ही रहती। आखिर के आठ-दस साल तो वो गाँव वापिस नहीं गई। सेहत ऐसी खराब नहीं थी, परन्तु कामकाज करना मुश्किल था। अपना नित्य-नियम खुद करती। अंतिम बीस दिन ही वो बैड पर रहीं। दादाजी का रामसिंहपुर से बहुत लगाव था। उस जमाने की बात कुछ अलग ही थी। वहाँ पर रामसिंहपुर में सेतिया परिवार के और भी तीन चार परिवार थे। दादाजी के सम्पूर्ण परिवार से उनका गहरा प्रेम था। उन्होंने कभी भी उन्हें अकेला महसूस नहीं होने दिया। दु:ख बीमारी में हमेशा उनका साथ दिया। कई बार खाना-पीना भी वहीं पर हो जाता।

अपने जीवन में दादी-दादा जी दोनों प्राय: स्वस्थ ही रहे। ये सेतिया परिवार के वहाँ पर रह रहे आसपास के रिश्तेदारों का प्रेम ही था जो उनका मन वहाँ लगा रहा। परिवार में अपनेपन की भावना के कारण हमारे पापाजी को कभी इकलौतापन महसूस नहीं हुआ। हम परमवंदनीय पिताजी श्री गिरधारीलाल जी और माताजी श्रीमती लाजवंती देवी को कभी भुला नहीं पाएंगे।

'मैं उनकी सोच और विचारधारा से अति प्रभावित हूँ'



-समीर गुगलानी, चंड़ीगढ़

13 जनवरी, 2006 को मैं श्री राजेन्द्र चुग जी के बेटे अमित चुग की शादी में जयपुर आया था। उस समय मेरी मम्मी ने मुझे मेरे बड़े नानाजी स्वर्गीय श्रीमान गिरधारीलाल जी सेतिया और बड़ी नानीजी श्रीमती लाजवंती देवी जी से मिलवाया था। मुझे बहुत अच्छा लग रहा था कि ढलती उम्र में भी उनके चेहरे पर नूर था। सर्दी की धूप में सादा सफेद वस्त्रों में उनका व्यक्तित्व अत्यन्त गरिमामय लग रहा था। मैं तो उन्हें देखता ही रह गया। उसके बाद सभी बेटे-बेटियों, बहुओं से मिलना हुआ। सभी से मिलकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। 13 अक्टूबर, 2021 को भाई सुरेन्द्र सेतिया जी की बेटी शिवांगी की शादी में सम्मिलित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जयपुर में दो दिन रहकर पूरे परिवार से मिलना हुआ। मैं उनकी सोच और विचारधारा से अति प्रभावित हूँ। संयुक्त परिवार का प्यार देखते ही बनता था। बड़े नाना-नानीजी को शत्-शत् नमन!

2 जुलाई, 2022 को समीर गुगलानी को चितकारा यूनिवर्सिटी (पंजाब) की ओर से स्टार्टअप समुदाय और मानवता में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए डॉक्टर ऑफ लिटरेचर (डी. लिट.) की उपाधि से सम्मानित किया गया। उनका कहना है कि इस सम्मान में उनकी मेहनत और शिक्षा से पहले उनके माता पिताऔर बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद शामिल है।



'यह स्मारिका आने वाली पीढ़ियों के लिए अत्यन्त प्रेरणादायक रहेगी'



-पंकज गुगलानी, चंड़ीगढ़

कितना अच्छा होता यदि मैं अपने बड़े नाना-नानीजी का प्यार और आशीर्वाद प्राप्त कर पाता। मुझे यह जानकर बहुत ही अच्छा लगा कि उनका परिवार उनकी स्मृतियों पर आधारित स्मारिका प्रकाशित करने जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह स्मारिका आने वाली पीढ़ियों के लिए अत्यन्त प्रेरणादायक रहेगी। मैं मामा महेन्द्र कुमार सेतिया जी से उनके बेटे संकुल सेतिया की शादी में मिला। विवाह का आयोजन अति भव्य था। उनकी सुन्दर, संस्कारी पुत्रवधू को देखकर मन हर्षित हुआ। फिर मैं बड़े मामाजी अर्जुनदास और रवि सेतिया जी से भी मिला। परिवार के बाकी सभी सदस्यों से भी मिला। बहुत अच्छा लगा। इसके बाद जल्दी ही सुरेन्द्र सेतिया जी की बेटी की शादी में जाने का मौका मिला। सब सरल स्वभाव के और जमीन से जुड़े हुए व्यक्ति हैं। मैं अपने बड़े नानाजी और नानीजी की पुण्य आत्मा को शत्-शत् नमन करता हूँ।

चुग परिवार

श्री लेखुराम चुग का परिवार

स्व. श्री गोमा राम चुग (पुत्र)

स्व. श्री बहादुर चन्द चुग –
श्रीमती बुद्धां बाई
(पुत्र–पुत्रवधू)

स्व. श्री बालकिशन दास चुग –
श्रीमती परमेश्वरी बाई
(पुत्र–पुत्रवधू)

श्री जयलाल चुग –
श्रीमती शांति देवी
(पुत्र–पुत्रवधू)

डॉक्टर अमर चंद चुग –
श्रीमती नीलम चुग
(पुत्र–पुत्रवधू)

श्री शिवदयाल चुग –
श्रीमती उषा रानी
(पुत्र–पुत्रवधू)

श्री राजेन्द्र चुग –
श्रीमती रानी देवी
(पुत्र–पुत्रवधू)

स्व. श्रीमती शांति देवी सेतिया –
स्व. श्री लाजपत राय सेतिया
(पुत्री – दामाद)

श्रीमती कृष्णा नागपाल –
स्व. श्री टेकचंद नागपाल
(पुत्री – दामाद)

श्रीमती शीला रस्सेवट् –
श्री कृष्ण लाल रस्सेवट
(पुत्री – दामाद)

श्रीमती सुमित्रा कुक्कड़ –
श्री प्रेम प्रकाश कुक्कड़
(पुत्री – दामाद)

स्व. श्री सोहनलाल चुग –
स्व. बयन्त कौर
(पुत्र–पुत्रवधू)

डॉक्टर जौली चुग –
डॉ. रेणुका चुग
(पुत्र – पुत्रवधू)

श्रीमती संतोष गड्डी –
श्री केवल कृष्ण गड्डी
(पुत्री – दामाद)

डॉक्टर शशि ढींगरा –
डॉ. रवि ढींगरा
(पुत्री – दामाद)

श्रीमती सुषमा चन्द्रा –
श्री राजेश चन्द्रा
(पुत्री – दामाद)

श्री अनीश कुमार चुग –
श्रीमती वीणा रानी चुग
(पुत्र – पुत्रवधू)

श्री अनिल कुमार चुग –
स्व. श्रीमती सुनीता चुग
(पुत्र – पुत्रवधू)

श्रीमती अनिता जसूजा –
श्री राजेन्द्र कुमार जसूजा
(पुत्री – दामाद)

श्रीमती नीलम डॉग –
श्री अशोक कुमार
(पुत्री–दामाद)

स्व. श्री बिहारी लाल चुग –
श्रीमती बागो देवी
(पुत्र–पुत्रवधू)

श्री सेवा सिंह चुग –
श्रीमती कैलाश देवी
(पुत्र – पुत्रवधू)

श्री करम चन्द चुग –
श्रीमती शशि चुग
(पुत्र – पुत्रवधू)

श्री मनोहर लाल चुग –
श्रीमती वीणा देवी
(पुत्र – पुत्रवधू)

श्री सुभाष चन्द्र चुग
श्रीमती प्रेम चुग
(पुत्र – पुत्रवधू)

श्री नरेश चुग – श्रीमती सीमा देवी
(पुत्र – पुत्रवधू)

श्रीमती राजरानी धमीजा –
श्री मेहरचन्द धमीजा
(पुत्री – दामाद)

श्रीमती अनुपमा वधवा –
श्री नवीन कुमार वधवा
(पुत्री–दामाद)

श्री अटल चुग –
श्रीमती अर्चना चुग
(पुत्र – पुत्रवधू)

स्व. श्रीमती माया देवी जसूजा –
स्व. श्री घनश्याम जसूजा
(पुत्री–दामाद)

स्व. श्री रामप्रकाश जसूजा –
श्रीमती शिवां देवी
(पुत्र – पुत्रवधू)

स्व. श्रीमती बिशनी बाई छाबड़ा –
स्व. श्री हुकमचन्द छाबड़ा
(पुत्री – दामाद)

स्व. श्रीमती भगवानी देवी भठेजा –
स्व. श्री मुंशीराम भठेजा
(पुत्री – दामाद)

श्रीमती लाजवंती सेतिया –
श्री गिरधारी लाल सेतिया
(पुत्री–दामाद)

श्री ऋतिक – ऋष्ठी
(पुत्र–पुत्रवधू)

श्री रोहन चुग (पुत्र)

श्री संजीव गड्डी –
श्रीमती अनिता गड्डी
(पुत्र–पुत्रवधू)

श्री समीर गड्डी –
श्रीमती निधि गड्डी
(पुत्र–पुत्रवधू)

श्रीमती शालिनी सेतिया –
श्री राजेन्द्र सेतिया
(पुत्री–दामाद)

श्री आलोक चुग –
श्रीमती सोनिया चुग
(पुत्र – पुत्रवधू)

श्री अतुल चुग –
श्रीमती अनु चुग
(पुत्र – पुत्रवधू)

श्री अनिकेत चुग –
श्रीमती सम्पदा चुग
(पुत्र – पुत्रवधू)

श्री अमित चुग –
श्रीमती ईशा चुग
(पुत्र – पुत्रवधू)

श्री आशुतोष चुग –
श्रीमती रूचि
(पुत्र – पुत्रवधू)

श्री आशीष चुग –
श्रीमती मोना चुग
(पुत्र – पुत्रवधू)

श्रीमती विमला गुगलानी –
स्व. श्री विनोद कुमार गुगलानी
(पुत्री – दामाद)

श्रीमती रेणु नागपाल –
श्री सुभाष नागपाल
(पुत्री – दामाद)

श्री राजन सेतिया –
श्रीमती रंजना सेतिया
(पुत्र – पुत्रवधू)

श्रीमती पारूल सेतिया (पुत्री)

श्रीमती बबीता बतरा –
श्री सुनील बतरा
(पुत्री – दामाद)

श्री आकाश सेतिया –
श्रीमती किरण सेतिया
(पुत्र – पुत्रवधू)

We may have differences, but nothing is more important than family.

हमारा वंश वृक्ष : हमारी पहचान का अभिन्न अंग



Family and friends are hidden treasures.

'परायापन शब्द उनके शब्दकोश में था ही नहीं'



जयलाल जी चुग - स्व. श्रीमती शांति देवी

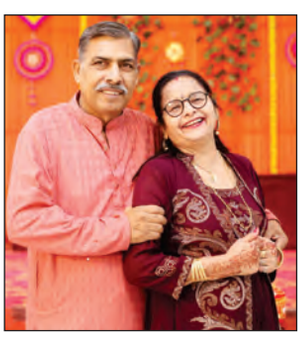
आदरणीय छोटी बुआजी श्रीमती लाजवंती देवी हमारे भरे-पूरे परिवार का महत्त्वपूर्ण अंग थी। परिवार के सभी सदस्य उनसे प्रेम करते थे। आदरणीय दादाजी, दादीजी, पिताजी, चाचाजी एवं सम्पूर्ण परिवार का उनके प्रति जुड़ाव जीवनपर्यन्त बना रहा। बुआजी आदरणीय दादीजी द्वारा दिये संस्कारों के परिणामस्वरूप अपने परिवार के प्रति सुहृदय रही। बुआजी एवम् चाचाजी सोहनलाल द्वारा सैंया अम्मां जी की जीवनपर्यन्त श्रद्धापूर्वक सेवा की गई। आदरणीय पिताजी अपनी छोटी बहन पर सदा स्नेह वर्षा करते रहे। वहीं चाचा श्री सोहनलाल जी एवम् श्री बिहारीलाल जी ने भी अपने रिश्ते प्रेमपूर्वक निभाए। अपने परिवार को अच्छे संस्कार दिए एवं पूरे परिवार को प्रेम के एक सूत्र में पिराए रखा। ये सब संस्कार बुआजी से हमें मिले। जिसके परिणामस्वरूप हम सुदृढ़ विचारशाला में परिपक्व हुए और परिवार को सशक्त बनाया।



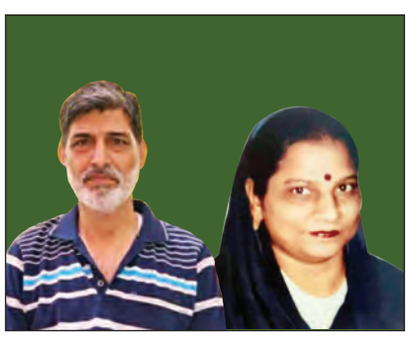
वर्ष 2011 में अतुल चुग के विवाह पर माताजी अपने प्रिय भतीजे श्री जयलाल चुग के साथ

अध्यात्म के पथ पर ईश्वर से प्रेम में सहयोग हमें आदरणीय फूफाजी गिरधारीलाल जी, बहनोई लाजपतराय जी, बहन शांति एवम् स्वयं प्रेरणा से प्राप्त हुआ और परिवार के साथ अपने इष्टदेव पर आसक्ति बनाए रखी। दुनियादारी को निभाते हुए भी ईश्वर भक्ति से कैसे जुड़ा रहा जा सकता है ये उनके जीवन प्रसंगों की चर्चा करते समय बड़ा स्पष्ट अनुभव होता है। आदरणीय माता परमेश्वरी देवी व चाची बागो बाई, चाची बसंत कौर से अति स्नेहपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखे। बुआजी के अपनी बड़ी बहन माया देवी के बच्चों के साथ भी मधुर सम्बन्ध रहे। श्रीमान् रामप्रकाश जी जसूजा, बिशनी देवी, भगवानी देवी एवम् शिवा जसूजा से भी उनके सम्बन्ध दिव्य व्यक्तित्व के साक्षी रहे। परायापन शब्द उनके शब्दकोश में था ही नहीं। सबको समभाव से देखना, पक्षपात रहित होकर सबको साथ लेकर चलना उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग थे। बुआजी का व्यक्तित्व, उनका सुख-दुख में सबकी संभाल करना ऐसे गुण थे जिनसे हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए और अपनी जीवनशैली में अपनाने का प्रयास करना चाहिए। अति स्नेही बुआ जी एवं परम आदरणीय फूफा जी को शत्-शत् प्रणाम!

-जयलाल चुग



अनिस - वीणा चुग



अनिल कुमार चुग - स्व. श्रीमती सुनीता चुग

(श्री जय लाल चुग-स्व. श्रीमती शांतिदेवी के सुपुत्र-पुत्रवधू)



नीलम - अशोक डंग



अनीता - राजेन्द्र जसूजा

(श्री जय लाल चुग-स्व. श्रीमती शांतिदेवी के पुत्री-दामाद)

पापा जी का अपनी बुआ और फूफा जी से अनन्य लगाव था और वे अक्सर हमें उनकी सहृदयता के बारे में बताते थे।

'दुनिया से विदा होकर भी, दिलों में सदा रहेंगे आप'



श्रीमती कृष्णा नागपाल - स्व. श्री टेकचन्द नागपाल

बुआ और बहन बन, सदा, दोहरा प्यार लुटाया आपने,
सादगी, सरलता का प्रयाय बन, सही राह पर चलना सिखाया आपने,
जब भी कभी जरूरत पड़ी, हमारा हाथ थाम हौंसला बढ़ाया आपने,
दिन बीते, मौसम बदले, हर वक्त साथ निभाया आपने,
अपार श्रद्धा की मूर्त, विश्वास की मिसाल रहे आप,
दुनिया से विदा होकर भी, दिलों में सदा रहेंगे आप।



भूपेन्द्र - नीरू नागपाल
(स्व. श्री टेकचंद नागपाल- कृष्णा नागपाल के सुपुत्र और पुत्रवधू)
मम्मी जी की बुआ जी और फूफा जी के परिवार के साथ बचपन से ही जुड़ाव हो गया था। जब वे जयपुर में परिवार के साथ रहने लगे, तब उनसे लगाव और बढ़ गया। उनकी स्नेहभरी बातें आज भी हमें उनकी याद दिलाती हैं।



धर्मेन्द्र - शीना नागपाल
(स्व. श्री टेकचंद नागपाल- कृष्णा नागपाल के सुपुत्र-पुत्रवधू)
मम्मी जी की बुआ जी और फूफा जी के साथ हर पारिवारिक समारोह में मिलना होता था। उन द्वारा प्रतिपादित संस्कार और उनका संघर्षपूर्ण जीवन हमें सदैव आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते रहेंगे।



डॉ. जितेन्द्र - ज्योति नागपाल
(स्व. श्री टेकचंद नागपाल-कृष्णा नागपाल के सुपुत्र और पुत्रवधू)
मम्मी जी की बुआ जी और फूफा जी से जब भी मुलाकात हुई तो उनके साथ प्रगाढ़ सम्बन्धों की अनुभूति महसूस होती थी और बेहद प्रसन्नता का अहसास होता था।



डॉ. कंचन बत्रा-डॉ. सुशील बत्रा
(स्व. श्री टेकचंद नागपाल- कृष्णा नागपाल के पुत्री-दामाद)



पवन- सीमा नागपाल
(स्व. श्री टेकचंद नागपाल - कृष्णा नागपाल के सुपुत्र और पुत्रवधू)
मम्मी जी की बुआ जी और फूफा जी से मिलकर अपनत्व की भावना का अहसास होता था। उनके परिवार के सभी सदस्यों का हमें बेहद स्नेह और सहयोग मिला।

'संस्कार शब्द खरा उतरता है इस परिवार पर'



कृष्ण लाल रस्सेवट - श्रीमती शीला देवी

संस्कार शब्द सेतिया परिवार के मुखिया हमारे फूफा श्री गिरधारी लाल जी और बुआ श्रीमती लाजवंती देवी पर पूरी तरह से खरा उतरता है। परिवार को स्नेह में बाँधना उन्हें आता था। मुझे कभी भी नहीं लगा कि वो मेरी बुआ सास हैं। जब मेरी शादी हुई तो उनसे इतना स्नेह व अपनापन मिला कि मैं हर तीन चार माह बाद उनसे मिलने सूरतगढ़ से जैतसर जाता था। यदि कभी न जा पाता तो वो मुझे बुला भेजते। कभी-कभी तो किसी को लेने ही भेज देते। इसी स्नेह की वजह से मैं उनके परिवार का हिस्सा ही बन गया। जयपुर आने के बाद भी जब भी मौका मिला मैं उनसे मिलने चला आता।

आज वही परम्परा उनके बच्चों में देखने को मिलती है। ये रिश्ते अब और भी मजबूत हो गए हैं क्योंकि इनकी बेटी कमलेश भटेजा की बेटी पूजा की शादी मेरे बेटे राजेश से काफी साल पहले हो गई थी। सेतिया परिवार के श्री अर्जुनदास, रवि जी और महेन्द्र जी से मिलकर आज भी दिल को बहुत खुशी मिलती है।

-कृष्ण लाल रस्सेवट



महेश रस्सेवट - प्रिया रस्सेवट
(श्री कृष्णलाल रस्सेवट-श्रीमती शीला रस्सेवट के पुत्र और पुत्रवधू)



ममता मुंजाल- सुनील मुंजाल
(श्री कृष्णलाल रस्सेवट-श्रीमती शीला रस्सेवट की पुत्री और दामाद)



लक्ष्य अरोड़ा



राहुल अरोड़ा
(सुपुत्र महेश रस्सवेट -श्रीमती प्रिया रस्सेवट)

परम वंदनीय माताजी व पिताजी के सौम्य व्यवहार और नजदीकीपन के हम कायल थे।

'परम वंदनीय बुआ जी की व्यवहार कुशलता और स्नेहपूर्ण वाणी उनकी पहचान थी'



डॉ. अमर चुग - नीलम चुग

मैं 1974 में शादी के बाद जब अनूपगढ़ आई तब आदरणीय बुआ जी से मिलते ही लगा कि मुझे इनसे भरपूर स्नेह मिलेगा। उनके प्यार से धीरे-धीरे और कम बोलने के स्वभाव से मैं भी बहुत प्रभावित हुई। मेरी सास के अभाव की कमी-पूर्ति उन्होंने कर दी। हम जब उनसे मिलने के लिए जाते, तब मेरा हाथ पकड़कर अपने पास बैठा लेतीं और मेरी मम्मी-बाऊजी से लेकर सारे परिवार के बारे में पूछतीं। मुझे उनसे बात करते वक्त ऐसे लगता था जैसे मैं उनकी बेटी हूँ। आज भी उनकी दी हुई सीख पर चलने में हमें गर्व महसूस होता है।

-नीलम चुग

परम वंदनीय बुआ जी की व्यवहार कुशलता और स्नेहपूर्ण वाणी उनकी पहचान थी। उनसे हमने जाना कि गहरे रिश्तों को किस प्रकार निभाया जाना चाहिए। जब भी उनसे मिलना हुआ, उनके आत्मिक आशीर्वाद ने हममें नवजीवन का संचार किया।

परम श्रद्धेय फूफा जी की प्रासंगिक कहावतों पर आधारित महत्त्वपूर्ण शिक्षाएं हम सबके लिए अविस्मरणीय हैं।

- डॉ. अमरचन्द चुग



अटल चुग - अर्चना चुग
(डॉ. अमरचन्द चुग - श्रीमती नीलम चुग के सुपुत्र व पुत्रवधू)

I never met Papaji's Bua ji and Fufa ji.
During a conversation with Papaji,
I came to know about the valuable traditions
of Setia family set up by their grandparents.
We have deepest regards for them.
-Archana Chug



अनुपमा - नवीन वधवा (डॉ. अमर चंद चुग के पुत्री-दामाद) पापाजी की बुआ और फूफा जी से जयपुर प्रवास के दौरान कई बार मिलना हुआ। उनके आत्मिक लगाव को याद करते हुए हम हार्दिक रूप से नत-मस्तक है।



हमारी नन्हीं बिटिया एमा आर्या

Respect your elders and the world will respect you.

'फूफाजी अनुशासन प्रिय, दिल के सच्चे व सबका भला चाहने वाले इंसान थे'



शिवदयाल चुग - उषा रानी

हम सब भाइयों के जीवन में बुआजी श्रीमती लाजवंती देवी का अत्यन्त प्रभाव रहा। संयोग से मुझे उनके साथ काफी समय बिताने का मौका मिला। मैं आठवीं पास करने के बाद काम सीखने के लिए जैतसर गया था। कुछ महीने बुआजी के साथ ही रहा। बुआजी अत्यधिक विनम्र स्वभाव की थीं। हमारे प्रति जो प्रेम उन्होंने प्रकट किया, उससे अधिक की तो हम कल्पना भी नहीं कर सकते। फूफाजी की जैतसर के मुख्य बाजार में किराने की बड़ी दुकान थी। मैंने न केवल काम सीखा, बल्कि जीवन के उन महत्त्वपूर्ण नियमों को भी सीखा जिन्होंने मुझे जीवन भर प्रभावित किया। फूफाजी अनुशासन प्रिय व्यक्ति थे। वे दिल के सच्चे और सबका भला चाहने वाले इंसान थे। दोनों ने मिलकर अपने परिवार और बच्चों को सुंदर संस्कार दिए। परस्पर प्रेम, सेवा-भाव, संयम, साहस, त्याग, धैर्य आदि सद्गुण उनके जीवन का आधार थे। परिवार के सदस्यों ने उनका अनुसरण करते हुए सफलता की महान ऊँचाइयों को छुआ है तथा उनका नाम रोशन किया है। परम पूजनीय बुआजी और फूफाजी को नमन करते हुए मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि परिवार में परस्पर प्रेम सदैव बना रहे।

-शिवदयाल चुग



आलोक - सोनिया चुग

(श्री शिवदयाल-श्रीमती उषा रानी के सुपुत्र और पुत्रवधू)

पापाजी की बुआजी और फूफा जी ने हमारे परिवार का सदैव स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन किया और हर मुश्किल में हमें हर तरह की सहायता प्रदान की।

मेरा सेतिया परिवार से दोहरा रिश्ता है। एक तरफ श्री गिरधारीलाल जी मेरे मामा जी हैं तो दूसरी तरफ श्रीमती लाजवंती जी मेरे पति की बुआ यानी कि मेरी बुआ सास हैं। मामाजी ने ही मेरा रिश्ता अपनी ससुराल में करवाया। मैं इतनी खुशकिस्मत हूं कि मुझे हमेशा इस परिवार का अपार प्यार मिला। मैं भाई-बहनों में सबसे बड़ी हूं। मैंने बचपन से ही दोनों परिवारों में घनिष्ठ प्रेम व परस्पर सम्मान की भावना को देखा है। मामाजी की बेटी कमलेश रानी मेरी चाची जी भी हैं। मुझे आज भी याद है कि मामाजी जब भी पदमपुर आते थे पहले अपनी बहन के यानि की हमारे घर आया करते थे फिर अपनी बेटी से मिलने जाते थे। उन्होंने कभी भी बेटी और बहन में कोई फर्क नहीं किया। उनके प्रेमभाव, सरल व्यक्तित्व से हमारा परिवार हमेशा प्रभावित रहा है। मामी जी बहुत ही विनम्र व धार्मिक स्वभाव की महिला थीं।

हमें सेतिया परिवार की ओर से सदैव भरपूर स्नेह प्राप्त हुआ है। हम परमवंदनीय मामा जी और मामी जी को कभी नहीं भूल पाएंगे।

-उषारानी चुग



अनिकेत चुग - सम्पदा चुग

(श्री शिवदयाल चुग और श्रीमती उषा रानी के सुपुत्र और पुत्रवधू)



अतुल चुग - अनु चुग

(श्री शिवदयाल चुग और श्रीमती उषा रानी के सुपुत्र और पुत्रवधू)

पापाजी की बुआजी और फूफा जी से पिछले 11 वर्षों में हमारा अत्यधिक सम्पर्क रहा। उनके निःस्वार्थ स्नेह और मागदर्शन को हम कभी भूल नहीं सकते।

Brothers and sisters are connected throughout their lives by a special bond.



'बुआजी कहा करती थीं 'मांवा धिंयां आपो आप, भुआ भतीजी इको जात'

सुमित्रा कुक्कड़-प्रेमप्रकाश कुक्कड़, अबोहर

मेरी माताजी का स्वर्गवास तो बहुत जल्दी हो गया था। उस समय दादी जी जीवित थीं। बुआजी अक्सर दादी जी से मिलने आती थीं। क्योंकि मैं सब बहनों से छोटी हूँ तो सबका मुझसे बहुत स्नेह रहा। मैं तो उन्हें अपनी माँ समान ही मानती थीं। सबको अपना समझना और हर सुख-दु:ख में शामिल होना, उनकी विशेषता थी। हमारे फूफाजी बहुत ही शानदार व्यक्तित्व वाले थे। पूरा रोब दाब, लेकिन बहुत हंसमुख स्वभाव। जहाँ भी बैठते रौनक लगा देते। जब वो जैतसर में रहते थे तो अक्सर आना जाना लगा ही रहता था। आज भी बुआजी के सभी बच्चों का ननिहाल परिवार से बहुत प्यार है। बुआजी कहा करती थीं 'मांवा धिंयां आपो आप, भुआ भतीजी इको जात' यानि कि माँ बेटी की जात अलग होती है लेकिन बुआ-भतीजी की एक ही जात होती है। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा। भगवान की कृपा से और बुआजी के आशीर्वाद से उनके बच्चों ने बहुत ऊंचाइयों को छुआ, लेकिन उनमें लेशमात्र भी अहंकार नहीं है। बुआजी को बड़ा परिवार मिला लेकिन मायके और ससुराल में उनके प्यार में कहीं कोई कमी नहीं रही। सबके लिए स्नेह की अविरल धारा बहती रही उनके अंदर। उनसे यही सीख मिलती है:

औरत बन कर जीना कोई खेल नहीं,

रोज सूरज बनकर निकलना पड़ता है,

चाहे लाख अंधेरा हो जीवन में,

सबको रोशन करना पड़ता है।

-सुमित्रा कुक्कड़



विक्की - सरोज कुक्कड़

(श्री प्रेम प्रकाश - श्रीमती सुमित्रा कुक्कड़ के पुत्र और पुत्रवधू)

मम्मी जी की बुआ और फूफा जी के यहाँ जाने पर हम सभी को जो आदर और सम्मान मिलता था उसे हम कभी भूल नहीं सकते।



रुपेश - ज्योति कुक्कड़

(श्री प्रेम प्रकाश - श्रीमती सुमित्रा कुक्कड़ के पुत्र और पुत्रवधू)

मम्मी जी की बुआ और फूफा जी की ज्ञान भरी बातें हमें बहुत उत्साहित करती थी।

'माँ समान प्यार मिला बुआ जी से'



राजेन्द्र चुग



हमारी माताजी की मृत्यु तो बहुत पहले ही हो गई थी तो पिताजी का सबसे छोटे बच्चों पर कुछ अधिक स्नेह होना स्वाभाविक ही था। श्रीमती लाजवंती देवी जी भी बड़े भाई को पितातुल्य मानती थीं तो काफी आना जाना लगा रहता। वैसे तो बुआजी का सभी पर स्नेह था, लेकिन छोटी उम्र में ही जब हमारी माता श्रीमती परमेश्वरी देवी नहीं रही तो बुआजी से हमें माँ जैसा प्यार मिला। उस समय दादी जी जिंदा थे तो बुआजी अक्सर आती थीं। जब सब जयपुर में ही रहने लगे तो मिलना जुलना लगा ही रहता। आगे से आगे बच्चों में भी बहुत लगाव है।

हमारे पिताजी को हमारा पूरा परिवार 'भाईया जी' कहकर बुलाता था और हमारी माँ को सब 'भाभी' कहते, भले ही किसी का कोई भी रिश्ता हो। बुआ लाजवंती जी पिताजी की छोटी बहन थीं। बुआजी का हमारे जीवन में एक अलग ही प्रभाव रहा। पिताजी ने बुआजी को अपनी बेटी की तरह ही माना और हमारे प्रति उनका प्रेम बड़ी बहन सा ही रहा। बात 1965 की है, जब शीला बहन जी की शादी थी। उस समय आज की तरह सबके पास गाड़ियाँ नहीं थी और बसों के साधन भी बहुत कम थे। हमें अनूपगढ़ से श्रीगंगानगर जाने के लिए जैतसर से रेलगाड़ी लेनी होती थी। बस तकरीबन दस बजे पहुँच जाती थी और रेल जाने का समय बारह बजे का होता था। इस बीच हम बुआजी के घर जाते, वहीं खाना खाते। बुआजी को हमारा इंतजार रहता, अपने पास बिठाकर माँ की तरह खाना खिलातीं। उनके चेहरे से खुशी झलकती थी। हमें इस बात की खुशी है कि हमारे बच्चों को भी उनका आशीर्वाद मिला, उन सबका भी उनसे बहुत लगाव रहा। वे भी हमेशा उनसे मिलने का चाव रखते थे।

बुआजी से जुड़ी अनमोल यादें

धुंधली सी यादें एक अलग मुकाम बनाती हैं,
ऐसी ही कुछ यादें हमारे जहन में उतर जाती हैं।
याद है हमें आज भी बुआ लाजवंती जी की,
उनका प्यार, सबके साथ लगाव अद्भुत मिसाल है।
प्रेरित करते हैं उनके आत्म-सम्मान, धैर्य, स्वाभिमान जैसे गुण,
सबके साथ प्यार, सबके साथ लगाव।
उनका आशीर्वाद, उनका प्यार से पीठ सहलाना,
एक अलग अंदाज था उनका प्यार जताने का।
याद है मुझे आज भी उनका अपने हाथों से खिलाना,
नामुमकिन था उनके यहाँ से बिना कुछ खाए जाना।
धुंधली सी यादें एक अलग मुक़ाम बनाती हैं,
ऐसी ही यादें हमारे जहन में उतर जाती हैं।

'पूजनीय बुआ फूफाजी के साथ बिताए पल हम कभी भी नहीं भूल सकते'



रानी चुग धर्मपत्नी राजेन्द्र चुग

परम पूजनीय बुआ श्रीमती लाजवंती देवी जी मेरी ननद और सास दोनों ही थी। वो ऐसी महान महिला थीं जिनमें सिर्फ प्यार ही प्यार था। जब भी मौका मिलता अपने भाई यानी कि मेरे ससुर जी से मिलने आया करती थीं। दोनों की प्रेम भरी बातें सुनकर बहुत अच्छा लगता था। राखी पर जब बुआजी आतीं तो जैसे घर में रौनक छा जाती। अब उनके बच्चों में भी अपनेपन की भावना है और वे बुआजी की तरह ही हर रिश्ता दिल से निभाते हैं। फूफाजी भी बहुत मिलनसार थे। हर सुख-दुख में मिलना होता रहता था। उनके साथ बिताए पल हम कभी नहीं भूल सकते। बुआजी और फूफाजी को शत-शत् नमन !



अमित - ईशा चुग
(श्री राजेन्द्र चुग - श्रीमती रानी चुग के सुपुत्र एवं पुत्रवधू)
पापा जी की बुआ और फूफा जी से हमें उनकी जिन्दगी के अनुभवों के बारे में जानकर अत्यधिक प्रोत्साहन मिलता था।



आशुतोष चुग - रूचि चुग
(श्री राजेन्द्र चुग और श्रीमती रानी चुग के सुपुत्र एवं पुत्रवधू)
पापा जी की बुआ और फूफा जी से हमें दादा-दादी के समान स्नेह और अपनापन मिला।



आशीष - मोना चुग
(श्री राजेन्द्र चुग-श्रीमती रानी चुग के सुपुत्र एवं पुत्रवधू)
पापा जी की बुआ और फूफा जी की प्रेरणापूर्ण सलाह से हमें हर कठिनाई का सामना करने की हिम्मत मिली।

When we are positive, good things happen.

'खुद जल कर दीप की भाँति, हमें जीवन में राह दिखाते हैं,
इंसानों में भगवान सदा यूँ ही मात-पिता बन कर आते हैं'





तुलसी राम सुथार - श्रीमती पुष्पारानी

जैसे दीपक स्वयं जलकर दूसरों को उजाला देता है, उसी तरह हमारे जीवन में उजाला करते हुए हमारे माता-पिता हमें जीने की राह दिखाते हैं। मेरे जीवन में प्रेरणा पुंज बनकर जो विभूति आए वे थे स्व. गिरधारीलाल जी सेतिया एवम् उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लाजवंती देवी जी। उन्होंने मुझे माता-पिता की तरह स्नेह एवम् वात्सल्य दिया, उन्हीं की बदौलत मैं आज इस मुकाम पर हूँ।

मेरा जन्म बीकानेर जिले के एक छोटे से गाँव ग्रांधी में हुआ था। बाल्यकाल में ही मेरे पिताजी का देहान्त हो गया। उसके उपरान्त मेरी माताजी ने जैसे-तैसे हमारा पालन-पोषण किया। जीवनयापन के लिए एवम् परिवार को आर्थिक रूप से सहायता देने के लिए मैं 25 अक्टूबर, 1968 को मात्र बारह वर्ष की आयु में अपने चाचाजी भोजाराम जी के साथ घर से 200 किलोमीटर दूर जैतसर चला आया। चाचाजी पेशे से खाती थे। वे जैतसर एवम् आसपास के गाँवों में लकड़ी का काम करने जाते थे। मैं भी इसी काम में मदद करने उनके साथ आया था। पर मेरे भाग्य में कुछ और ही लिखा था। जैतसर में हमारे ही गाँव के एक और व्यक्ति श्री करणीसिंह जी रहते थे जिनकी आढ़त की दुकान थी। किसान उनकी दुकान पर अपना अनाज बेचने आते थे और वापसी पर वो किराने की दुकान से अपने घर का राशन पानी लेकर जाते थे। श्री करणीसिंह जी के माध्यम से ही मैं अर्जुनदास भाई साहब से मिला जिनकी जैतसर में सबसे बड़ी किराने की दुकान थी। जब उन्हें पता चला कि मैं काम ढूंढ रहा हूँ तो उन्होंने मुझे अपनी दुकान में काम पर रख लिया। मैंने उसी दिन से उनके यहाँ काम करना शुरू कर दिया।



श्रीमती तुलसी राम सुथार की परमपूजनीय माताजी
स्व. श्रीमती इमिया देवी

वह दिन मुझे आज भी याद है। दिन भर की थकान के बाद जब शाम को मैं उनके साथ उनके घर गया तब मैं उनकी माताजी से पहली बार मिला। माताजी ने अपने सगे बेटे की तरह मुझे खाना खिलाया। फिर मेरे परिवार के बारे में काफी बातें की। इस तरह मेरे जीवन में सेतिया परिवार का आगमन हुआ जिसके बाद मेरे जीवन को एक नई दिशा प्राप्त हो गई। मैं पूरे तन-मन से काम में लग गया। रोज काम के बाद मैं अर्जुन भाई साहब के साथ खाना खाने के लिए तथा रात के विश्राम के लिए घर जाता तो माताजी परिवार के सदस्यों के साथ बहुत प्यार से खाना खिलाया करती थीं। उनकी ओर से मुझे जितना माँ का स्नेह प्राप्त हुआ उतने की मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। बाद में जब दिन भर का हिसाब पिताजी



वर्ष 2017 में विपुल सेतिया के विवाह के शुभ अवसर पर
श्रीमती पुष्पा रानी धर्मपत्नी श्री तुलसीराम सुथार माताजी के सान्निध्य में

लिखते थे तो कहते कि तू बोल कर बता और मैं लिखता हूँ। आठ दस दिन ऐसे ही चलता रहा। एक दिन मैंने पिताजी को कहा कि ऐसे दो लोगों का समय लग रहा है, ये काम तो मैं ही कर लेता हूँ। तब से कलम का काम मैंने संभाल लिया और फिर मेरी कलम चलती ही रही। न तो दिन को रुकी और न ही रात को।

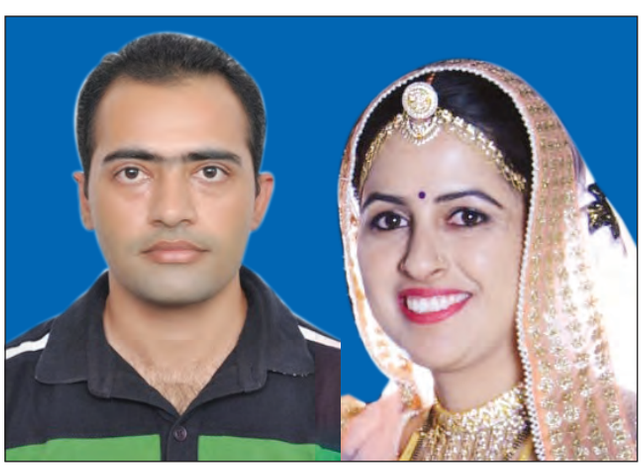
यह मेरा सौभाग्य ही था कि पिताजी ने मुझे बड़े स्नेह से बहीखाते का काम सिखाया, लिखवाकर और बुलवाकर पूरी तरह से प्रशिक्षित किया। मैं भी पूरी तन्मयता से काम में लगा रहा। फिर काम चाहे दुकान का हो या घर का, कभी मना नहीं किया। उन्होंने अपने बेटे की तरह ही मेरा ध्यान रखा, मुझे संभाला, अपने परिवार का हिस्सा बनाया। मैं भी उन्हें पिता की तरह ही देखने लगा। उन द्वारा सिखाई गई एक-एक बात मुझे आज तक सही राह दिखाती है। उन्होंने मुझे कभी पिता की कमी महसूस नहीं होने दी। वो हमेशा मेरे आदर्श रहे। अर्जुन भाई साहब ने हमेशा एक बड़े भाई की तरह प्रेरित किया। मेरी शादी के बाद मैं और मेरी पत्नी पुष्पारानी इन्हीं के साथ एक परिवार की तरह रहे। खाना-पीना, उठना बैठना सब एक साथ होता था। माताजी पिताजी ने गृहस्थी चलाने में पूरा सहयोग दिया। मेरी पत्नी को उन्होंने छोटी बहू की तरह प्यार और सम्मान दिया। फिर धीरे-धीरे परिवार बढ़ता गया तो उनकी छत्रछाया में हम पास के घर में रहने लगे। मेरे चारों बच्चों की परवरिश भी उन्हीं की देखरेख में हुई। मेरे बच्चों को भी वही संस्कार और आदर्श मिले जो मुझे माताजी-पिताजी से मिले। मैं हमेशा इसके लिए उनका आभारी रहूंगा।

माताजी, पिताजी, अर्जुन भाई साहब, रवि और महेन्द्र भाई साहब एवं चारों बहनों ज्ञान, कमलेश, उषा, सुनीता बहन जी ने कभी हमें परिवार की कमी महसूस नहीं होने दी। मेरे बच्चों को उनसे बहुत प्यार मिला। बच्चे जब जयपुर पढ़ने गए तो उनका स्कूल में दाखिला भी अर्जुन भाई साहब की वजह से मुमकिन हुआ। उन्होंने उनका वहाँ भी उतना ही ख्याल रखा और घर की कमी कभी महसूस नहीं होने दी। जब कोटा कोचिंग के लिए गए तब भी भाई साहब ने ही पूरी जिम्मेदारी ली। उनके दाखिले से लेकर उनकी हर जरूरत का पूरा ध्यान रखा। मेरी बेटी संतोष जब जयपुर गई तब माताजी ने अपनी सगी पोती की तरह उसका ख्याल रखा। जब वह माताजी से मिलने उनके घर जाती थी तब माताजी अपने अनुभव और ज्ञान की बातें उसे बताती और सिखाती थीं। उसकी फिक्र करती थीं। खाने पीने का, उसकी सेहत का पूरा ध्यान रखती थीं। छोटी-मोटी बीमारी का इलाज वह अपने घरेलू नुस्खों से ही कर देती थीं। अपने जीवन के अनुभवों और उनसे मिली सीख का ज्ञान उन्होंने अपने बच्चों के साथ-साथ मेरे बच्चों को भी दिया। मेरे बड़े बेटे सोहन ने जयपुर में पढ़ाई के साथ बाऊजी के यहाँ काम में भी साथ दिया। अभी वह जैतसर में मेरे साथ मिलकर काम को आगे बढ़ा रहा है। मेरे मंझले बेटे मोहन ने कठिन परिश्रम से पढ़ाई में अव्वल रहकर आज एक महारत्न कम्पनी में मैनेजर का पद संभाला हुआ है। मेरे सबसे छोटे बेटे गोरू ने भी पूरी लगन से पढ़ाई



सोहनलाल सुथार - सोनाली सुथार
(श्री तुलसी राम सुथार के पुत्र-पुत्रवधू)

बचपन में माताजी और मेरी दादी जी के साथ मैं भी शाम को आनंदपुर कुटिया जाया करता था। माताजी का स्वभाव सरल था जबकि पिताजी कभी डांट भी देते थे लेकिन वह हमारे भले के लिए ही करा करते थे। वह हमेशा हमें अच्छी चीज सिखाते थे।



मोहनलाल सुथार- श्रीमती पूनम सुथार
(श्री तुलसी राम सुथार के पुत्र-पुत्रवधू)

मैं जब जयपुर रहता था तब अक्सर पिताजी और माताजी से मिलने के लिए जाया करता था। मुझे हमेशा उनका प्रेम और स्नेह मिला उनकी सलाह और मार्गदर्शन से हमेशा मदद मिली।

की और आज एक मल्टीनेशनल कम्पनी में अच्छे पद पर कार्यरत है। बेटी संतोष आज एक सम्मानित परिवार में खुशी से रह रही है। मेरे सभी बच्चों की सगाई से लेकर शादी तक का पूरा दायित्व भाई साहब श्री अर्जुनदास सेतिया ने बखूबी निभाया। कभी भाई बनकर तो कभी पिता बनकर जीवन के हर मोड़ पर मेरे साथ खड़े रहे, चाहे वह खुशी का मौका हो या गम का।

माताजी-पिताजी ने मुझे लाड प्यार से संभाला और मैंने उनकी निस्वार्थ भाव से सेवा की। वो सुनहरा अतीत जो उनके साये में बीता, आज एक सपना सा लगता है। ये मेरे पूर्व जन्मों के ही कोई पुण्य कर्म रहे होंगे जो मुझे सेतिया परिवार का सान्निध्य मिला जिनके स्नेह की छांव में आज मेरा पूरा परिवार फल-फूल रहा है। इंसान को जन्म देने वाले उसके माता-पिता कहलाते हैं, परन्तु माता-पिता का एक और स्वरूप मुझे मेरी कर्मभूमि जैतसर में मिला। माताजी पिताजी की कमी मुझे हमेशा खलती रहेगी। उन्हें याद कर आज भी मेरी आँखें नम हो जाती हैं। मैं ईश्वर से सदा यही प्रार्थना करता हूँ कि मुझे अगले जन्म में यही परिवार और ऐसे ही माता-पिता मिलें। उनका मेरे जीवन में जो योगदान है वह शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। मेरे जीवन में एक वह दिन भी था, अनिश्चितता की धुंध से घिरा और एक आज का दिन है जब अतीत के सपने सुनहरे सच के रूप में सामने हैं। यह सब पिताजी, माताजी एवम् सेतिया परिवार के स्नेहपूर्ण व्यवहार की वजह से संभव हुआ है। उनके आदर्शों, संस्कारों और नेक दिल स्वभाव ने मेरी और मेरे परिवार की जिन्दगी सँवार दी।

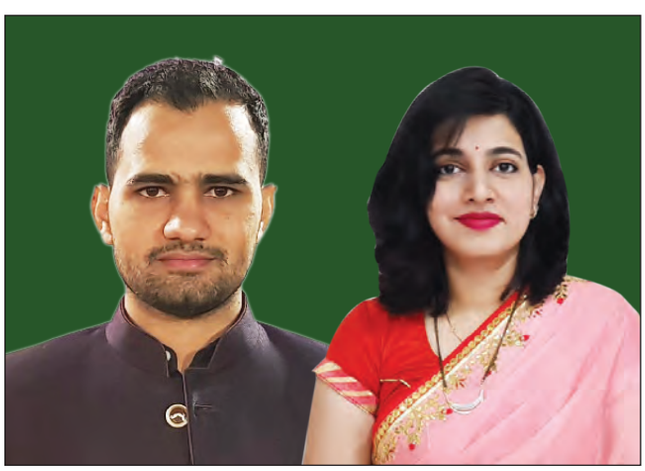
रब दा लख लख शुक्र मनावां,

लफ्ज भी हार जाते हैं, जज्बातों से,

कितना भी लिखो, कुछ बाकी रह ही जाता है

सेतिया परिवार का पुन: आभार एवं माताजी-पिताजी को भावपूर्ण आदरांजलि।

-तुलसी राम सुथार



गौरीशंकर सुथार - पारुल सुथार
(श्री तुलसी राम सुथार के पुत्र-पुत्रवधू)

जयपुर में जब तक रहा, माताजी से मिलना होता रहता था। उन्होंने हमेंशा परिवार के सदस्य की तरह स्नेह दिया। उनका विनम्र स्वभाव, उनके संस्कार और आदर्श हमेशा मेरे लिए प्रेरणादायी रहेगें।



संतोष शर्मा - नरेश शर्मा (श्री तुलसी राम सुथार के बेटी-दामाद)

मैं बचपन से ही माताजी व पिताजी के बहुत करीब रही हूँ। उन्होंने मुझे हमेशा अपनी बेटी की तरह प्यार दिया। वे बहुत ही ज्ञानी, अनुभवी और सकारात्मक विचारों वाले थे। जब भी मैंने स्वयं को असहाय पाया, उनके विचार और आशीर्वाद सदैव मेरे संबल बने। मैं आज भी उनका आशीर्वाद सदैव अपने साथ महसूस करती हूँ। हम सब पर उनका आशीर्वाद सदैव बना रहे।

'श्रद्धांजलि माँ लाजवंती जी के श्री चरणों में'



- केवल कुमार खन्ना
सेवानिवृत, वितीय सलाहकार, इंदिरा गांधी नहर बोर्ड, जयपुर
- प्रमिला खन्ना
सेवानिवृत निर्देशक, पेंशन और पेंशनर्स वेलफेयर डिपार्टमेंट

माँ लाजवंती जी ने अपनी कोख से मुझे जन्म तो नहीं दिया लेकिन उन्होंने मेरे अत्यन्त घनिष्ठ मित्र रवि कुमार सेतिया की माताजी के नाते मेरे लिए भी प्रेम और मधुर भाव रखे। उनको मिलकर मन नितांत प्रसन्न रहता। वह धर्मपरायण, मधुर भाषी, सत्य पर अडिग रहने वाली नारी की शक्ति मूर्ति थीं।

जैसी माँ वैसे तीन बेटे - अर्जुनदास, रवि कुमार और महेन्द्र कुमार। उन द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलते हुए व्यापार में शिखर पर हैं। उनके प्रेम को देखकर ऐसे लगता है जैसे माँ तीन बेटे राम, लक्ष्मण और भरत को अपने पीछे छोड़कर ईश्वर के श्री चरणों में अत्यन्त प्रसन्न हैं।

माँ की यादें भुलाई नहीं जा सकती। माँ एक बहुत छोटा शब्द है लेकिन इस शब्द की गहराई को समझना बहुत कठिन है। माँ हमारे जीवन का पहला वो शब्द है जिसे हम दु:ख-दर्द में सबसे पहले बोलते हैं। ईश्वर का नाम हम दु:ख-दर्द में भूल सकते हैं परन्तु हम माँ को कभी भूल नहीं सकते। इसीलिए माँ को भगवान का स्वरूप माना जाता है। माताजी के श्री चरणों में शत्-शत् नमन !

स्वर्गीय सेठ श्री गिरधारी लाल जी की लाचार और मजबूर व्यक्तियों की मदद करना स्वभावगत विशेषता थी



- के.के. बोहरा
डायरेक्टर दूरदर्शन (रिटा.)

यों तो इंसान जिस पल इस दुनिया में आता है तब से लेकर उसके विदा होने तक का पूरा समय उसके लिए महत्त्वपूर्ण होता है लेकिन बचपन का समय वो समय होता है जबकि उसके संस्कारों की नींव पड़ती है। वही संस्कार उस व्यक्ति को जीवन भर अच्छे बुरे की पहचान करवाते हैं और कदम-कदम पर सही रास्ता दिखाते हैं। इस समय बाल मन में जो बातें बैठ जाती हैं, इंसान चाहकर भी उन्हें नहीं भुला सकता।

मेरे बचपन के पहले दस साल जैतसर में गुजरे थे और हकीकत ये है कि जैतसर में गुजारे इन दस सालों के दौरान ही मैंने भले और बुरे की पहचान करना सीखा था। इस प्रकार उस वक्त जिन संस्कारों की नींव पड़ी थी मैंने जाने अनजाने उन्हीं संस्कारों के अनुसार अब तक का जीवन जिया है। हालांकि उसके बाद हमारा परिवार सूरतगढ़ आ गया था मगर फिर भी गाहे बगाहे हम लोगों का जैतसर आना जाना होता ही रहता था यानी संस्कारों के जड़ पकड़ने का सिलसिला सूरतगढ़ आने के बाद भी थमा नहीं था। जैतसर में महेन्द्र और मैं पहली कक्षा से ही साथ-साथ पढ़े थे। सच पूछा जाए तो मेरा महेन्द्र के साथ सिर्फ एक सहपाठी का ही रिश्ता नहीं था, बल्कि हम दोनों में घनिष्ठ मित्रता थी और मेरा अधिकांश समय महेन्द्र और उसके परिवार के साथ ही बीतता था। ऐसे में स्वाभाविक था कि महेन्द्र और उसके घर के अन्य सदस्यों के रहन सहन, बोल-चाल और अन्य संस्कारों का मुझ पर भी असर होता। किसी भी बच्चे पर जितना प्रभाव पिता का होता है, शायद उससे भी कहीं अधिक माता के विचार और आचरण उसे प्रभावित करते हैं। महेन्द्र की माताजी श्रीमती लाजवंती देवी बहुत करुणामयी और स्नेही थीं माँ। जब तक वो इस संसार में रहीं, उनका भी हमारे परिवार को भरपूर स्नेह मिला।

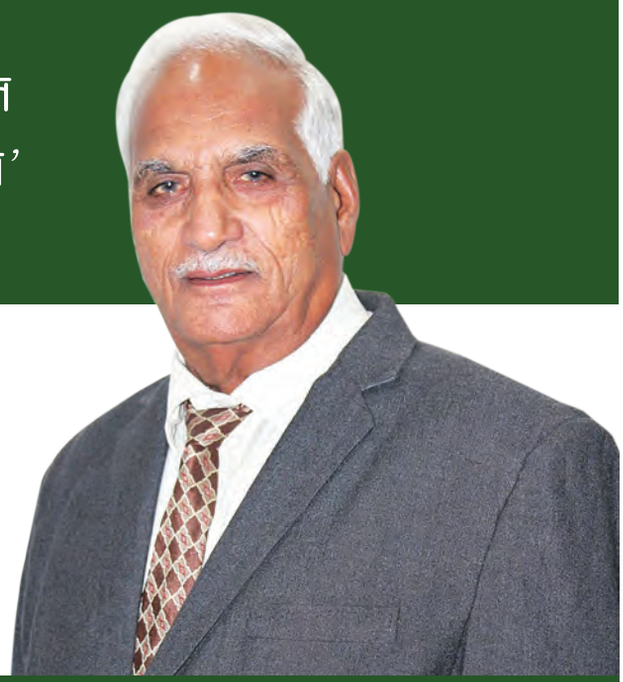
महेन्द्र के पिताजी श्री गिरधारीलाल जी अत्यन्त मृदुभाषी लेकिन सिद्धान्तों के पक्के, ईमानदार और सच्चे व्यक्ति थे। जैतसर में उनकी किराने की दुकान थी। वे अपने बच्चों को सादे जीवन और उच्च विचार की शिक्षा देते थे। मेरा मानना है कि बाल्यकाल में अधिकांश समय महेन्द्र के साथ रहने के कारण उसके पिताजी द्वारा अपने बच्चों को दिए गए संस्कारों का कहीं न कहीं मुझ पर भी गहरा असर पड़ा चूंकि मेरे पिताजी भी महेन्द्र के पिताजी की तरह सादे जीवन और उच्च विचारों में विश्वास करते थे। इन दोनों द्वारा दिए गए संस्कारों ने मेरे जीवन को हमेशा सही रास्ता दिखाया और कठिन से कठिन समय में भी मुझे हिम्मत हारे बिना सच्चाई के रास्ते पर चलने का हौसला दिया।

महेन्द्र के पिताजी स्वर्गीय सेठ श्री गिरधारी लाल जी की पूरे जैतसर में बहुत इज्जत थी। हम सभी भाइयों को सदैव उनसे भरपूर प्यार मिला। महेन्द्र उनका सबसे छोटा बेटा था। इसलिए उसके प्रति सेठजी का विशेष ही स्नेह था और क्योंकि मैं महेन्द्र का मित्र था, इस नाते मेरे प्रति भी वे बहुत लाड़ रखा करते थे। उन दिनों तो शायद मुझे इन सब बातों की समझ नहीं थी मगर आगे जाकर मैंने देखा कि किसी भी लाचार और मजबूर इंसान की मदद करना उनकी स्वभावगत विशेषता थी। जैतसर के ही कई लोगों ने मुझे बताया कि वो किसी की मदद करके उसका ढिंढोरा नहीं पीटा करते थे बल्कि किसी की बहुत खामोशी के साथ बिना प्रचार के मदद करने में विश्वास रखते थे। उनके स्वर्गवास के बाद कितने ही लोगों ने बताया कि किस प्रकार उन्होंने किस-किस की मुसीबत के समय में कितनी मदद की, ये वादा लेकर कि वो व्यक्ति इस सहायता का जिक्र किसी के सामने नहीं करेगा।

मेरे पिताजी स्वर्गीय श्री सत्यनारायण जी बोहरा उन दिनों जैतसर में शिक्षक हुआ करते थे। उनके और सेठ गिरधारी लाल जी के जीवन जीने का तरीका कमोबेश एक जैसा ही था। इसी कारण दोनों में खूब बनती थी। महेन्द्र और उसके बड़े भाई अर्जुन और रवि मेरे पिताजी के प्रिय छात्र थे।

समय तो अपनी रफ्तार से चलता है। अपनी पढ़ाई लिखाई पूरी करके मैंने रेडियो ज्वाइन किया और उसके बाद दूरदर्शन में आ गया। आज दूरदर्शन से सेवानिवृत्त होने के बाद मैं फख्र के साथ सिर ऊँचा करके कह सकता हूँ कि दूरदर्शन जैसे विभाग में रहकर भी अनगिनत कठिनाइयों के बावजूद मैंने अपने सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं किया और ये मेरे पिताश्री और मेरे घनिष्ठ मित्र महेन्द्र के पिताश्री के दिए संस्कारों का ही परिणाम है कि मैंने पूरे सेवाकाल में कदम-कदम पर सामने आने वाले हर लालच को ठोकर मारते हुए ईमानदारी और सच्चाई के रास्ते को कभी नहीं छोड़ा।

'जैतसर के हमारे अरोड़ा समाज में उनका बहुत मान-सम्मान था'



-राजेन्द्र कुमार सेतिया सुपुत्र श्री हंसराज, जैतसर

सन् 1965 में मैं अपनी पढ़ाई छोड़कर सरदारगढ़ में अपनी दुकान पर बैठने लग गया था। हम लोग अपनी दुकान का सामान लेने के लिए जैतसर भ्राता अर्जुनदास जी की दुकान पर जाया करते थे। वहाँ कभी-कभार चाचाजी स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया मिल जाया करते थे। उस वक्त वे दूसरे कामों में व्यस्त थे और दुकान का काम भाई साहब ने संभाल लिया था। जब भी मिलते थे तो बात राम रमैया तक ही सीमित रहती क्योंकि ना उनके पास समय होता था ना हमारे पास। हमें वापसी ट्रेन द्वारा जल्दी वापस जाना होता था। अगले 10-12 वर्षों तक लगभग यही सिलसिला चलता रहा। इस दरमियान भाई अर्जुनदास जी से मेरे सम्बन्ध बहुत गहरे हो गऐ थे। हर हफ्ते एक चक्कर जैतसर का लगता ही था। कुछ बातें ऐसी हो जाती थी जिनसे यह महसूस होता था कि हम दोनों एक दूसरे के दिल के बहुत करीब हैं।

चाचाजी के व्यक्तित्व को समझने का मौका मुझे उस वक्त मिला जब सन् 1978 में मैंने जैतसर में किराने की दुकान की। मेरी दुकान भाई साहब के सामने वाली लाइन में थोड़ा आगे चलकर थी। चाचाजी कभी कभार कुशल क्षेम का पता करने मेरे पास आकर बैठ जाया करते थे। एक दूसरे से वार्तालाप तो स्वाभाविक ही था। यह सिलसिला काफी समय तक चलता रहा। इसी दौरान मुझे उनके स्वभाव और व्यक्तित्व को जानने का मौका मिला। चाचाजी ने अपने जीवन में बहुत मेहनत की। बहुत कुछ पाया लेकिन कभी घमंड नहीं किया। उनसे मिलने के लिए कोई रिश्तेदार या कोई परिचित सज्जन आया तो उन्होंने दिल से उनका स्वागत किया और दुख दर्द भी बांटा।

चाचाजी को मैंने हमेशा साफ-सुथरे सफेद कपड़ों में देखा। जिस तरह से उनके कपड़े साफ सुथरे होते थे, उसी तरह से उनका दिल भी साफ सुथरा था। उन्होंने स्पष्ट बात कहने में कभी भी संकोच नहीं किया चाहे सामने कोई भी हो। ना किसी से दबे और ना किसी को दबाया। चाचाजी व चाचीजी को गुरु घर से बहुत प्रेम था। सुबह नहा धोकर गुरुद्वारे जाना उनका पहला नियम था।

स्कूल कॉलेजों से हमें बहुत शिक्षा मिलती है लेकिन कुछ शिक्षाएं हमें बड़े बुजुर्ग रिश्तेदारों व अड़ोस-पड़ोस से भी मिलती हैं जो जीवन में हमारे लिए बहुत उपयोगी होती हैं। उन शिक्षाओं के दम पर ही हमारा जीवन चलता है और हम सफल होते हैं। चाचाजी के पास जीवन का बहुत लंबा और गहरा अनुभव था जो उन्होंने अपनी मेहनत और संघर्ष के बल पर प्राप्त किया। चाचीजी भी धर्म परायण महिला थीं। उनका अपना ही रुतबा था। समाज के सभी वार-त्यौहार, रस्म-रिवाज की उनको पूरी जानकारी थी। सभी परिवारों से अच्छे सम्बन्ध रखना उनका स्वभाव था। इसी वजह से जैतसर के हमारे अरोड़ा समाज में उनका बहुत मान-सम्मान था। उनकी सबसे बड़ी खासियत मैं यह समझता हूं कि उन्होंने अपने परिवार को एक सूत्र में बांधकर रखा।

चाचाजी व चाचीजी ने अपने बच्चों को विनम्रता, सद्भाव, प्रेम और हर किसी के दु:ख-सुख में काम आने की प्रेरणा दी। उसी का फल है कि आज उनका परिवार इस ऊंचाई पर है जहां तक हर कोई पहुंचने की इच्छा रखता है।

अपनी बात समाप्त करते हुए मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि हमारा यह परिवार दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करता हुआ सफलता के नए आयाम स्थापित करे।

हम स्वर्गीय चाचाजी व चाचीजी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

'माताजी से जब भी मिले ऐसे महसूस हुआ कि वो निर्मल प्रेम का अथाह सागर हैं'



मंजू जग्गा - डॉ. श्याम सुन्दर जग्गा, जैतसर

माता व मातृ भूमि का स्थान स्वर्ग से भी ऊँचा होता है। धरती पर ईश्वर का रूप है माँ। माताजी से जब भी मिले, ऐसे महसूस हुआ कि वो निर्मल प्रेम का अथाह सागर हैं। माताजी नि:स्वार्थ भावना से परिवार धर्म का पालन करती थी। वह दानशील, दयावान व आस्तिक महिला थीं। माताजी जैतसर में आनंदपुर की कुटिया की सेवा जीवनपर्यन्त करती रहीं। वो विनम्र स्वभाव की शुद्ध पवित्र विचार रखने वाली ज्ञानवान महिला थी। भाग्यशाली लोगों को ही ऐसी माँ मिलती है। कर्तव्य व जिम्मेदारी के प्रति सतर्क व अनुशासित महिला थीं। जब-जब भी उनसे मिलने का मौका मिला अपनी माँ जैसी लगती थीं। परमपूज्य माताजी सर्वगुण सम्पन्न, संस्कारी, शिष्टाचार युक्त महिला होने के कारण सभी की प्रेरणा स्रोत थीं।

हजारों फूल चाहिएं माला बनाने के लिए,

हजारों दीपक चाहिएं आरती सजाने के लिए,

हजारों बूंद चाहिएं समुद्र बनाने के लिए,

पर माँ अकेली ही काफी होती है,

बच्चों की जिन्दगी को स्वर्ग बनाने के लिए।

पिताजी-

हम पानी से नहाते हैं वे पसीने से नहाते हैं,

देखकर मुस्कान हमारे चेहरे की वे अपना हर दर्द भूल जाते हैं,

मुकम्मल हों हमारे सपने इसलिए वे हर रोज काम पर जाते हैं,

वो हस्ती कोई आम नहीं वे पिता कहलाते हैं।

सेठ गिरधारी लाल सेतिया जी की यादें सदैव हमारे दिलो-दिमाग पर छाई रहती हैं। जब-जब भी उनसे मिलने का मौका मिलता था तब-तब कुछ ना कुछ सीखने का अवसर प्राप्त होता था। वे हमेशा सफलता की और बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे। वे शांत स्वभाव, सहज आचरण वाले संस्कारी व्यक्ति थे। वे नि:स्वार्थ समाजसेवी थे। वे असहाय व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति रखते थे व उनकी यथासंभव सहायता भी किया करते थे। उन्हें हमारा शत्-शत् नमन!

'हमें आज भी एक दूसरे से मिलने के विचार से ही सुकून मिलता है'



- अशोक कुमार मित्ता

(स्व. श्री मिलखी रामजी मित्ता - श्रीमती शांति देवी के सुपुत्र)

परम पूजनीय पिता श्री गिरधारी लाल जी सेतिया और माता श्रीमती लाजवंती देवी सेतिया की भांति मेरे माता-पिता ने भी सौभाग्यवश श्री आनंदपुर धाम जाकर गुरु दीक्षा प्राप्त की थी। दोनों परिवारों में प्रेम की भावना दिन प्रतिदिन गहरी होती चली गई। मेरे माता-पिता ने मुझे बताया था कि एक बार उनका सेतिया परिवार के साथ श्री आनंदपुर धाम जाना हुआ था। मेरे माता-पिता उस धार्मिक यात्रा के अनमोल पलों की यादें मेरे साथ साझा किया करते थे। पिता श्री गिरधारी लाल जी सेतिया के चाचा श्री टोपन दास जी रामसिंहपुर में ही रहा करते थे। वे जब भी अपने चाचाजी से मिलने रामसिंहपुर आते तो हमसे मिले बिना कभी नहीं जाते थे।

श्री अर्जुनदास भाई साहब और रवि सेतिया जी से भाइयों जैसा प्यार रहा। मेरा और महेन्द्र कुमार सेतिया का रिश्ता तो रुह से रुह का था। एक दूसरे से मिलने पर हमारी रुह महक उठती थी। महेन्द्र कुमार का व्यापारिक दौरा हुआ करता था। मैं उनके रामसिंहपुर आने की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा किया करता था। उनके रामसिंहपुर आने पर दोपहर का भोजन हम दोनों प्रेमपूर्वक एक साथ किया करते थे। हमें आज भी एक दूसरे से मिलने के विचार से ही सुकून मिलता है। हम परम श्रद्धेय माताजी और पिताजी को कभी भूल नहीं पाएंगे।

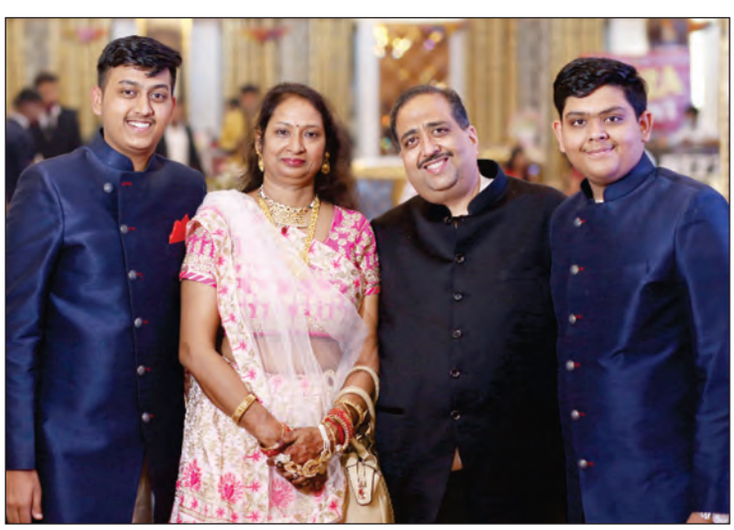
'अच्छे लोग दिलों में इस तरह उतर आते हैं
कि संसार से जाने के बाद अमर हो जाते हैं'



-संजय अग्रवाल

सेतिया परिवार की उन्नति के पीछे पीढ़ियों की मेहनत, लगन और ईमानदारी है। स्वर्गीय श्री गिरधारीलाल जी सेतिया (पिताजी) और स्वर्गीय श्रीमती लाजवंती देवी सेतिया (माताजी) भले ही आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनकी यादें हमारे साथ हैं। पिताजी एवं माताजी की विनम्रता और सहजता के कारण आज भी उन्हें सब दिल से याद करते हैं।

सर्वश्री अर्जुनदास सेतिया, रवि कुमार, महेन्द्र एवं परिवारजनों में रिश्ते निभाने की अद्वितीय कला है। सेतिया परिवार अपनों के लिए ही नहीं बल्कि समाज के प्रति भी अपना दायित्व निभाने के बारे में पूर्णतया जागरूक है। सेतिया परिवार की ओर से प्रतिदिन सुबह-शाम लगभग 500 असहाय व्यक्तियों को भोजन खिलाया जाता है। यह स्मारिका आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरित करती रहेगी।



संजय अग्रवाल-सीमा अग्रवाल अपने सुपुत्र तनमय अग्रवाल एवं सुचिर के साथ

'ईश्वर से कम नहीं माता'



-डॉ. श्रीधर शर्मा
श्रीगंगानगर

भारतीय संस्कृति व सभ्यता में माता-पिता का दर्जा भगवान से कम नहीं। हमारे समाज में श्रवण कुमार को आदर्श पुत्र होने का सम्मान प्राप्त है। माता-पिता में ही ब्रह्माण्ड समाया हुआ है। इस मान्यता पर शिव-पार्वती द्वारा अपने पुत्रों कार्तिकेय और गणेशजी की ली गई परीक्षा का प्रसंग प्रकाश डालता है। जब शंकर जी ने पार्वती से पूछा कि उन द्वारा अपने किस पुत्र का विवाह सर्वप्रथम करना उचित रहेगा तो माता पार्वती ने कहा कि इसके लिए उन्हें अपनी योग्यता और श्रेष्ठता साबित करनी होगी। शंकर जी को पार्वती का यह विचार पसंद आया। यह निर्णय लिया गया कि कार्तिकेय और गणेशजी में से पृथ्वी की परिक्रमा करके सर्वप्रथम आने वाले को श्रेष्ठ माना जाएगा। कार्तिकेय अपने वाहन मोर पर सवार होकर पृथ्वी की परिक्रमा के लिए निकल पड़े। परन्तु गणेश जी ने श्रद्धापूर्वक इस भाव से अपने माता-पिता शिव-पार्वती की परिक्रमा की कि जन्म देने वाले माता-पिता त्रिलोक समान हैं। इस प्रकार गणेशजी ने अपनी योग्यता और श्रेष्ठता को साबित किया।

भारतीय पौराणिक कथाएं ऐसे उदाहरणों से भरी पड़ी हैं। इस संदर्भ में यदि सेतिया परिवार द्वारा अपने माता-पिता की स्मृति में स्मारिका के लिए लिया गया निर्णय न केवल सराहनीय है वरन् अनुकरणीय भी है। हमारे आज के समाज में बुजुर्गों का तिरस्कार हो रहा है और वृद्धाश्रमों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। ऐसे में माता-पिता के प्रति असीम आस्था व श्रद्धा की बात करना अविश्वसनीय प्रतीत होने लगा है। श्री अर्जुनदास सेतिया जी अपने भाई-बहनों के साथ मिलकर अपने पिता स्व. गिरधारीलाल जी एवं माताजी स्व. श्रीमती लाजवंती की स्मृति को चिरस्थाई बनाए रखने के लिए जिस स्मारिका का प्रकाशन करने जा रहे हैं, वह समाज के लिए प्रेरणा का काम करेगी। गंगानगर जिले की छोटी सी मंडी जैतसर से आकर परिवार के वर्तमान मुखिया ने अपने भाइयों, बच्चों को साथ लेकर जयपुर के व्यावसायिक जगत में अपना उच्च स्थान बनाकर अपने माता-पिता का नाम रोशन किया है। माता-पिता द्वारा दिए गए सुंदर संस्कारों और ईश्वर की कृपा के परिणामस्वरूप समाज ने सेतिया परिवार को जो स्थान दिया है, उनके मूल निवास के लोगों के लिए गर्व का विषय है। तीन वर्ष पूर्व सेतिया परिवार ने अपनी माताजी के निधन पर जिस श्रद्धांजलि कार्यक्रम का भावपूर्ण आयोजन किया था वो मुझे आज भी याद है।

सीमा संदेश परिवार की ओर से मुझे प्रस्तावित स्मारिका के लिए शुभकामनाएं भेजते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है। हार्दिक श्रद्धांजलि व शुभकामनाएं!

'माता-पिता का साथ होना किसी खजाने से कम नहीं'



-स्व. मदन लाल सोमानी
पूर्व कोषाध्यक्ष
(जनता पार्टी, राजस्थान)

यह मेरा सौभाग्य है कि श्री अर्जुन दास सेतिया जैसे प्रतिभावान, दानवीर, सरल स्वभाव एवं सरल हृदय वाले व्यक्ति से मित्र के रूप में 16 वर्ष पूर्व सम्पर्क स्थापित हुआ। ऐसे प्रतीत होता है जैसे कि अर्जुनदास जी की हर प्रात: माता-पिता के आशीर्वाद से ही शुरू होती थी। पिताश्री के लिए मैं यही कह सकता हूँ:

जिसके सिर पर पिता का रहता है साया,

तपती धूप पर मानो मिली शीतल छाया।

माता की ममता, पिता का अनुशासन,

जिन्दगी की दौड़ में आगे ही बढ़ाता है।

न घबराहट होती है न ही कोई निराशा

पिता का मार्गदर्शन ही राह दिखाता।।

26 जनवरी, 2011 को सरस्वती बालिका विद्या मंदिर, जवाहर नगर, जयपुर में माँ सरस्वती के मूर्ति स्थापना समारोह का आयोजन हुआ था। देवी सरस्वती की मूर्ति की स्थापना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पांचवें सरसंघचालक श्री के.एस. सुदर्शन जी के कर कमलों द्वारा हुई। इस कार्यक्रम में अर्जुनदास सेतिया की माताजी की उपस्थिति स्वर्णिम रहेगी।

माँ का साथ होना किसी खजाने से कम नहीं लेकिन आज जब वो साथ नहीं हैं तो हम श्रद्धा से सर नवाते रहेंगे।

'परमात्मा में विलीन रहे आत्मा आपकी,

नश्वर जग से सुदूर रहे जीवात्मा आपकी।'

'उनके आशीर्वाद की खुशबू से मेरे जीवन की बगिया महक रही है'



-जगदीश राय डोडा

'पिता शब्द है जीवन दर्शन, माँ जीवन का सार,
पिता शांत है सागर सा, माँ गंगा की धार,
पिता अंधेरे में दीपक सा, माँ भटकों की राह,
माता-पिता के साये में, मिल जाता सारा संसार।'

यह जानकर परम सुख की अनुभूति हुई कि सेतिया परिवार स्व. श्री गिरधारीलाल जी और माताजी स्व. श्रीमती लाजवंती देवी जी की पावन स्मृतियों को सदैव बनाए रखने के लिए स्मारिका का प्रकाशन कर रहे हैं। सौभाग्यवश उनके सान्निध्य में रहने का सुखद अवसर भी प्राप्त हुआ जो अविस्मरणीय है। उनके गुणों को शब्दों में बयां करना कठिन है। उन्होंने हमें अजब नियामतें बक्शी हैं।

उनके आदर्श उन द्वारा प्रदान किए गए सुंदर संस्कारों में झलकते हैं। माता-पिता तो ईश्वर की सौगात हैं। उनसे ही हमारी पहचान है। उन्होंने हमें अच्छे और बुरे की पहचान कराई। उनके आशीर्वाद से ही हमारा जीवन आबाद है।

मुझे याद है जब मैं उनसे मिलता था वे मुझे आशीषों से सरोबार कर दिया करते थे। माताजी के हाथ से बने प्रत्येक व्यंजन का स्वाद अभी भी मेरी जिह्वा पर है। उनके आशीर्वाद की खुशबू से मेरे जीवन की बगिया महक रही है। इस पवित्र रिश्ते को मैं अपनी यादों में सदा सहेजकर रखना चाहता हूँ। किसी ने सच ही कहा है कि माता-पिता के चरणों में ही सच्चा तीर्थ स्थल है।

वो जमीं मेरी वो ही आसमान है,
वो खुदा मेरा वो ही भगवान है,
क्यों मैं जाऊं उन्हें कहीं छोड़कर,
माँ-बाप के चरणों में सारा जहान है।

'अटल विश्वास के साथ किए गए कड़े परिश्रम द्वारा विकट विपत्तियों को भी अवसरों में परिवर्तित किया जा सकता है'



लोकेश सुखीजा



नीरज सुखीजा

(सुपुत्र प्रो. देसराज सुखीजा - श्रीमती सुदर्शन सुखीजा)

हमें परम सम्माननीय माताजी और पिताजी का दर्शन करने का सौभाग्य तो नहीं प्राप्त हो पाया परन्तु हमें उनके आंतरिक स्वरूप तथा उन द्वारा प्रदान किए गए सुंदर संस्कारों की झलक तो सेतिया परिवार के सदस्यों के प्रेमपूर्ण व्यवहार, पुरुषार्थ तथा परस्पर सहयोग में प्राप्त हो ही जाती है। परम श्रद्धेय पिता जी श्री गिरधारी लाल जी सेतिया और माता जी श्रीमती लाजवंती देवी के सतत् संघर्ष पर आधारित आदर्श जीवन से हमें यह सीखने को मिलता है कि धैर्य और अटल विश्वास के साथ किए गए कड़े परिश्रम द्वारा विकट विपत्तियों को भी अवसरों में परिवर्तित किया जा सकता है।

देश का विभाजन मानवीय त्रासदी लेकर आया था। मानवता को शर्मसार करने वाली आग इस कदर भड़की कि लगभग 10 लाख लोग मारे गए और करोड़ों बेघर हो गए। अशांति, असुरक्षा और अराजकता के विचलित कर देने वाले वातावरण में श्री गिरधारीलाल जी सेतिया ने परिवार सहित बहावलनगर में पुरुखों के आढ़त के कारोबार तथा घर-संपत्ति छोड़ते हुए सीमा के दूसरी ओर सूरतगढ़ तक की खतरनाक यात्रा की। उस समय रोजी-रोटी अपने आपमें बहुत बड़ी समस्या थी। श्री गिरधारीलाल जी तथा उनके भाइयों ने सूरतगढ़ में लगभग 5 वर्ष तक आजीविका कमाने के लिए तरह-तरह के काम किए। मुश्किलों का दौर थमने का नाम नहीं ले रहा था परन्तु उम्मीद का दामन थामे वे निरंतर प्रयास करते ही रहे। कभी उलझनें सुलझती नजर नहीं आई तो उन उलझनों को ईश्वर के इंसाफ पर छोड़ते हुए आगे बढ़ गए। वे नए-नए रास्ते तलाशते रहे। आजीविका के लिए संघर्ष करते-करते वे अपने भाइयों के साथ जैतसर मंडी (श्रीगंगानगर) पहुंचे और वहां उन्होंने किराने की दुकान शुरू की। वर्षों के संघर्ष के पश्चात् अंतत: उनकी राहों के शूल महकते फूलों में परिवर्तित हो गए। माता-पिता द्वारा प्रदान किए गए सुंदर संस्कारों के परिणामस्वरूप आज सेतिया परिवार परोपकार के मार्ग पर चलता हुआ विकास पथ पर निरंतर अग्रसर है। परम वंदनीय माताजी और पिताजी के अनुकरणीय जीवन तथा उनकी पावन स्मृतियों को पल-पल नमन्!

'परिवार के सदस्य माता-पिता द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलते हुए निरंतर आगे बढ़ रहे हैं'



-डॉ. विजय वशिष्ठ

प्रोफेसर एवं सेवानिवृत प्राचार्य, कॉलेज शिक्षा, राजस्थान

सेतिया परिवार के सम्बन्ध में यह कहना उचित होगा-

'माना कि जिन्दगी की राहें आसान नहीं,
मगर मुस्कुराते हुए चलने में कोई नुकसान नहीं।'

परिवार के सदस्य माता-पिता द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलते हुए निरंतर आगे बढ़ रहे हैं :

''त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम् देवदेव।''

अर्थ- इस प्रार्थना में सबसे पहले भगवान को माँ कहा गया, फिर पिता, बंधु, मित्र, विद्या, धन और सब कुछ। भगवान आप ही माँ हैं, आप ही पिता हैं, आप ही बंधु हैं, आप ही मित्र हैं, आप ही विद्या हैं, आप ही धन हैं, अत: मेरे सब कुछ तो आप ही हैं।

अर्जुनदास सेतिया, रवि कुमार और महेन्द्र सेतिया का कहना है कि आज जो उनका जीवन है वो माता-पिता के लालन-पालन, संस्कारों, मेहनत और विचारों की ही देन है। वे अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता के आशीर्वाद को ही देते हैं। इस परिवार के बारे में मैं यह भी कहना चाहता हूँ-

'स्वयं का दर्द महसूस होना जीवित होने का प्रमाण है,
लेकिन औरों का दर्द महसूस करना इंसान होने का प्रमाण है।'

मैं इस स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ। भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि सेतिया परिवार समाज एवम् राष्ट्र के लिए निरंतर कार्य करता रहे।

''ॐ पूर्णमद: पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णश्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।''
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति।

'माता-पिताजी हमें उपयोगी संस्कार देकर हमारा मार्गदर्शन करते हैं'



-गुलशन कुमार वधवा
संरक्षक, श्री अरोड़ा समाज विकास संस्था, जयपुर

हम कभी माता-पिता का ऋण चुका सकते नहीं,

उनके उपकार हैं इतने गिना सकते नहीं।

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता व गर्व की अनुभूति हुई कि आज के भौतिकवादी युग में बच्चे माता-पिता से जहाँ विमुख होते जा रहे हैं, वहीं सेतिया परिवार के सदस्य अपने माता-पिता की पुण्य स्मृति में एक भावपूर्ण स्मारिका प्रकाशित करने जा रहे हैं।

परमपूज्य स्व. श्रीमती लाजवंती देवी एवं श्री गिरधारीलाल जी सेतिया का पुण्य प्रताप ही है कि उनके सुपुत्र भाई अर्जुन दास, भाई महेन्द्र कुमार एवं भाई रवि सेतिया स्मारिका के माध्यम से उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित कर रहे हैं। माता-पिता का अपने बच्चों के साथ पवित्र रिश्ता होता है। माता-पिता हमें जीवन देते हैं और अच्छे संस्क़ारों से सींचते हैं। वे हमें उपयोगी संस्कार देकर हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

सेतिया परिवार जयपुर महानगर में सम्मानित परिवार है। अति सम्पन्नता होने के बावजूद भी यह परिवार अपनी सादगी, विनम्रता एवं मृदु भाषा के लिए जाना जाता है। श्री अरोड़वंश सभा, जयपुर के प्रति सेतिया परिवार का तन-मन-धन से सदैव सहयोग बना रहा है। दीन-दुखियों की सेवा करने में भी सेतिया परिवार अग्रसर रहा है।

ईश्वर सेतिया परिवार में मानव प्रेम और जनकल्याण की भावना बनाए रखें। इस स्मारिका के प्रकाशन के शुभ अवसर पर सेतिया परिवार को हमारी ओर से शुभकामनाएं एवं साधुवाद।

'उनकी स्मृतियां हमें सदा सक्रिय रूप से समाज सेवा पथ पर चलते रहने के लिए प्रेरित करती रहेंगी'



-विजय कुमार सुखीजा
संस्थापक, अरोड़वंश सभा, जयपुर

सेतिया परिवार से हमारे 50 वर्षों से पारिवारिक संबंध हैं। हमारा परिवार और सेतिया परिवार एक साथ ही जयपुर आये थे और मुझे धर्मपरायण स्वर्गीय श्री गिरधारीलाल जी व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लाजवंती देवी जी से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उनके अटल विश्वास, परोपकार की भावना तथा सकारात्मक विचारों ने मुझे बहुत प्रभावित किया। वे परिवार और समाज के प्रति पूर्णरूप से समर्पित रहे।

जैतसर में रहते हुए जब स्व. गिरधारीलाल जी ने अपने भाइयों के साथ मिलकर ट्रांसपोर्ट व्यवसाय प्रारम्भ किया तो उनका सम्पर्क मेरे ससुर श्री अमरलाल वधवा से स्थापित हुआ जो कि गोल्डन ट्रांसपोर्ट कंपनी के संस्थापक थे और गंगानगर के निवासी थे। स्व. श्री गिरधारीलाल जी और मेरे ससुर स्व. अमरलाल वधवा के व्यापारिक संबंध देखते ही देखते पारिवारिक संबंधों में परिवर्तित हो गए, जिनकी गहराई दिन प्रतिदिन बढ़ती चली गई। दोनों परिवारों ने सबके कुशल-मंगल की कामना के साथ हर रिश्ता विराट हृदय के साथ निभाया और समाज सेवा के क्षेत्र में भरपूर योगदान दिया। जब मैंने जयपुर में अरोड़वंश सभा की शुरुआत की थी तो सेतिया परिवार ने अरोड़वंश के परिवारों को प्रेमपूर्वक जोड़ने के लिए तन-मन-धन से अपार सहयोग प्रदान किया। ऐसे सेवाभावी परिवारों द्वारा प्रदान की गई हार्दिक सेवाओं के परिणामस्वरूप आज हमारे समाज की अलग पहचान स्थापित हो चुकी है। स्व. श्री गिरधारीलाल जी एवं श्रीमती लाजवंती जी की स्मृतियां हमें सदा सक्रिय रूप से समाज सेवा पथ पर चलते रहने के लिए प्रेरित करती रहेंगी।

'माताजी ने न केवल परिवार के रिश्ते बल्कि मुंह बोले रिश्तों की गरिमा को भी दिल से निभाया'



उमा भंसाली (धर्मपत्नी स्व. श्री गौतमराज भंसाली)

परमपूज्य माताजी श्रीमती लाजवंती देवी धर्म के मार्ग पर पूरी निष्ठा के साथ चलते हुए सदैव परिवार तथा समाज के प्रति समर्पित रहीं। उनका हृदय इतना विशाल था कि उन्होंने मुझे और मेरे स्व. पति श्री गौतम राज भंसाली को अत्यधिक स्नेहपूर्वक अपने बहू-बेटे का दर्जा दिया। उनके जीवन से हमने यह सीखा कि अति भाग्यशाली वे हैं जो अपने अहंकार को मिटाकर प्रभु-भक्ति करते हैं और सद्कर्मों का जीवन जीते हैं। माताजी ने न केवल परिवार के रिश्ते बल्कि मुंह बोले रिश्तों की गरिमा को भी दिल से निभाया। माताजी की महानता के बारे में बात करना तो सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। माताजी का सान्निध्य हमारे लिए अनमोल था। हम उन्हें कभी न भूल पाएंगे। परमपूज्य माताजी के श्री चरणों में सादर प्रणाम।

'उनकी स्नेह भरी बातें हमें आज भी उनकी याद दिलाती हैं'



-वेद प्रकाश सेतिया, जैतसर

(सुपुत्र श्री धन्नाराम - श्रीमती लक्ष्मी देवी)

हमारे चाचा श्री गिरधारी लाल जी सेतिया बड़े सुलझे हुए व्यक्ति थे। मुझे जब कभी कोई समस्या होती थी तो मैं तुरन्त उनके पास सलाह लेने चला जाता था। वे बड़े धीरज से बात को सुनते थे और अपने गहन अनुभव के आधार पर समस्या का समाधान मेरे सामने रख देते थे। मुझे उन द्वारा कही गई हर बात पर विश्वास था। मेरी माताजी और मेरी चाची आदरणीय लाजवंती जी सहेलियों की तरह घंटों तक बातें करती रहती थीं। चाची जी का धीरज भरा स्वभाव हमें बहुत अच्छा लगता था। उनकी स्नेह भरी बातें हमें आज भी उनकी याद दिलाती हैं। भाई साहब अर्जुनदास जी, रवि जी, महेन्द्र जी और उनके परिवार ने समाज में आज जो उच्च स्थान प्राप्त किया है, यह चाचाजी और चाची जी के आशीर्वाद का ही प्रतिफल है। मैं उनको शत-शत् नमन करता हूँ।



स्व. श्रीमती लक्ष्मीदेवी सेतिया
स्व. श्रीमती लजवंती देवी सेतिया की प्रिय सखी

'मातृ देवो भव: पितृ: देवो भव:'



-अर्जुन दास जियानी

सेतिया परिवार से मैं सन् 1963 से जुड़ा हुआ हूँ। स्व. पूजनीय बाबूजी श्री गिरधारीलाल जी अपने तीनों पुत्रों सर्वश्री अर्जुनदास, रविकुमार व महेन्द्र कुमार सेतिया जितना प्यार मुझे भी देते थे। जैतसर में मेरा गुरुनानक मेडिकल स्टोर है। जब भी बाबूजी स्टोर पर आते तो बातें करते-करते सार्थक जीवन जीने का मार्ग दिखा दिया करते थे। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा।

जैतसर में व्यापारिक पड़ोसी होने के साथ-साथ श्री अर्जुनदास जी मेरे घनिष्ठ मित्र हो गए। पिछले 58 वर्ष से इनके सम्पर्क में होने के कारण पारिवारिक सम्बन्ध होना स्वाभाविक ही था। दोनों परिवारों के सदस्य एक दूसरे के सुख-दु:ख के साथी रहे हैं। पूजनीय बाबूजी श्री गिरधारीलाल जी की ऊँची सोच, सरलता और सहजता से मुझे बहुत प्रेरणा प्राप्त हुई।

पूजनीय माताजी का स्वभाव बहुत मिलनसार था। वो भक्ति, सेवा और निस्वार्थ प्रेम के मार्ग पर चलती रहीं। उन्होंने बच्चों को आस्था और श्रद्धा से सींचा। प्रभु नाम उनके जीवन का आधार था। उनका सान्निध्य प्राप्त करने वाला भी ईश्वर के रंग में रंगा जाता था।

पूजनीय बाबूजी और माताजी का प्रेरणादायक जीवन सदैव हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।

'सीधा व सरल रहना श्री गिरधारीलाल जी खासियत थी'



-प्रकाश बलाना

विभाजन के समय मैं डेढ़ वर्ष का था और भाई श्री बनवारीलाल 4 वर्ष के थे। हमारा बलाना परिवार और सेतिया परिवार बहावलनगर (पाकिस्तान) में साथ-साथ ही रहते थे। वहाँ भागीदारी में व्यवसाय भी किया। अनूपगढ़ बॉर्डर से भारत में इकट्ठे प्रवेश किया। बलाना परिवार अनूपगढ़ में रह गया और सेतिया परिवार सूरतगढ़ चला गया। मैंने देखा है कि दोनों परिवार मुश्किल में एक साथ ही रहे। दु:ख-तकलीफ और संघर्ष के दिनों को भी मिलकर झेला और अपनापन बनाए रखा। सेतिया परिवार के बुजुर्ग श्री गुरदित्ताराम रिश्ते में हमारे फूफा जी लगते थे। श्री माछी राम जी के छोटे बेटे श्री टोपनदास जी ने रामसिंहपुर में हमारे साथ भागीदारी में आढ़त का व्यवसाय भी किया। श्री गिरधारीलाल जी सेतिया, भगवानदास जी सेतिया और बसंत लाल सेतिया जब भी रामसिंहपुर आते, हमारे घर जरूर आया करते थे और हम साथ-साथ खाना खाया करते थे। उनकी सरलता और आत्मीयता मुझे हमेशा देखने को मिलती थी। सीधा व सरल रहना उनकी खासियत थी। सदियों पुराने रिश्ते आज भी दोनों परिवारों में कायम हैं। इन दिनों मैं और मेरे भाई श्री बनवारीलाल जी और सतीश जी जयपुर में रह रहे हैं। श्री अर्जुन दास सेतिया, रवि कुमार सेतिया और महेन्द्र सेतिया से हमारे सम्बन्ध आज भी भाइयों की तरह हैं। सुख-दु:ख में सभी मिलकर एक दूसरे का साथ निभाते हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी इन रिश्तों को बनाए रखेंगी। मुझे गर्व है कि हम इस स्मारिका के अंग बने हैं।

'माता-पिता की सेवा हर पूजा से श्रेष्ठ है'



-मानसिंह गुप्ता
अधिवक्ता (Advocate)

स्वयंसेवक सम्पर्क में होने के कारण श्री अर्जुनदास सेतिया के निवास पर लगभग गत 20 वर्ष की अवधि में समय-समय पर जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इनकी ममतामयी माँ स्व. श्रीमती लाजवंती देवी अर्धांगिनी स्व. श्री गिरधारीलाल सेतिया के पावन दर्शन व आशीर्वाद का समय-समय पर लाभ प्राप्त हुआ। उनकी आत्मीयतापूर्ण दृष्टि व सजल भाव स्मरणीय है। माँ भौतिक संसार में ईश्वर है। सेतिया परिवार पर माताजी द्वारा दिए गए सुदृढ़ भारतीय संस्कार व वत्सल मिठास भाव का अमिट गहरा प्रभाव पल्लवित हुआ है।

सेतिया परिवार के श्रेष्ठ संस्कारों का श्रेय स्मरणीय पूज्य माताजी को जाता है। माता-पिता की सेवा हर पूजा से श्रेष्ठ है। इनकी सेवा ईश्वर की उपासना के समान ही है। परमवंदनीय माता-पिता की सेवा करने वालों पर प्रभु कृपा सदैव बरसती रहती है।

'स्मारिका के माध्यम से माता-पिताजी की यादें अमर हो जाएंगी'



-जसविंद्र सिंह बल
प्रधान संपादक
दैनिक भोर

मुझे जानकारी मिली है कि सेतिया परिवार श्री गिरधारीलाल जी सेतिया व स्वर्गीय श्रीमती लाजवंती जी सेतिया के जीवनकाल पर आधारित स्मारिका प्रकाशित करने जा रहा है। मुझे जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि उक्त स्मारिका में उनके आदर्श व्यक्तित्व का समावेश होगा। आप लोगों द्वारा अपने माता-पिता की याद को संजोने का बहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं अनुकरणीय कदम उठाया जा रहा है। स्मारिका के माध्यम से उनकी यादें अमर हो जाएंगी तथा आपका यह कार्य परिवार की नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत होगा। मैं, मेरा परिवार व 'दैनिक भोर' के समस्त परिवार की ओर से आपके इस अनुकरणीय कार्य के लिए साधुवाद देते हैं और शुभकामना संदेश प्रेषित करते हैं।

'अच्छे संस्कारों के परिणामस्वरूप परिवार के सदस्य माला में पिरोये हुए मोतियों की तरह मिलकर रहते हैं'



-आर.के. जैन
पत्रकार

स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया व उनकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती लाजवंती देवी धर्मपरायण, मृदुभाषी व समाज सेवा करने वाले दंपति थे। जैतसर में वे सबके सुख-दु:ख में काम आया करते थे। उनके जनहित के कार्यों को सेतिया परिवार ने आगे बढ़ाया है। जैतसर से जयपुर आकर अर्जुनदास जी और इनके भाइयों ने पेट्रोल पंप और फाइनेंस व्यवसाय प्रारम्भ किए। इस प्रकार तीनों भाई समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए प्रतिष्ठित व्यवसायी बने, परन्तु माता-पिता द्वारा दिए गए सुंदर संस्कारों को कभी नहीं भूले। स्व. सेतिया दंपति द्वारा दिए गए अच्छे संस्कारों के परिणामस्वरूप परिवार के सदस्य माला में पिरोये हुए मोतियों की तरह मिलकर रहते हैं तथा अपने पूर्वजों के संस्कार आगे बढ़ा रहे हैं। स्व. गिरधारीलाल जी व माताजी श्रीमती लाजवंती देवी जी के सद्गुणों से न केवल परिवार बल्कि सम्पूर्ण समाज लाभान्वित हुआ है। स्व. सेतिया दंपति को शत्-शत् नमन !

'सेतिया परिवार की ओर से अपने श्रद्धेय माता-पिता की स्मृति में प्रकाशित की जाने वाली स्मारिका पावन, प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय कार्य है'



-ओम प्रकाश चुग

तायाजी बहुत ही सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। ताया जी और ताईजी का ईश्वर की तरफ झुकाव था। जैतसर की श्री आनंदपुर कुटिया में दर्शन के लिए जाना उनकी दिनचर्या का हिस्सा था। देश के विभाजन के पश्चात् मुसीबतों से घबराए बिना उन्होंने चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना किया और जैतसर में किराने की दुकान शुरू की। कड़ी मेहनत, ईमानदारी और दूरदर्शी सोच के परिणामस्वरूप उन्हें कारोबार में धीरे-धीरे सफलता प्राप्त होने लगी और सामान्य स्तर से शुरू किया गया कारोबार उच्च स्तर तक पहुंच गया। ताया जी के सुपुत्रों और उनकी अगली पीढ़ी के प्रयासों के परिणामस्वरूप सेतिया परिवार को न केवल जैतसर और जयपुर बल्कि दूर-दूर तक नई पहचान प्राप्त हो चुकी है।

ताऊ जी के सभी सुपुत्र उनकी तरह सामाजिक कार्यों में सदैव तत्पर रहते हैं। आज भी जैतसर में कोई कार्यक्रम होता है तो वो अपनी यथासम्भव उपस्थिति दर्ज करवाते हैं। चाहे अस्पताल, धर्मशाला, मन्दिर, सड़क निर्माण या कल्याण भूमि हो, वो हर जगह स्नेहभावी बनकर अपना योगदान देते हैं। सेतिया परिवार की ओर से अपने श्रद्धेय माता-पिता की स्मृति में प्रकाशित की जाने वाली स्मारिका पावन, प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय कार्य है। परमवंदनीय ताया जी और ताई जी को शत्-शत् नमन!

'मैं उनसे दिल की हर बात सहज रूप से कर लिया करता था'



-राजकुमार शर्मा

मुझे जुलाई 2000 से दिसम्बर 2007 तक राजापार्क पेट्रोल पम्प पर एकाउंटेंट व मैनेजर के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। मुझे बाऊजी स्व. श्री गिरधारी लाल जी सेतिया एवं उनके सुपुत्र श्री महेन्द्र जी सेतिया से काफी कुछ सीखने को मिला। बाऊजी एवं श्री महेन्द्र जी चाहते थे कि बहीखातों का काम कम्प्यूटर पर शुरू करना चाहिए तो हमने मिलकर काम कम्प्यूटर पर करना शुरू किया।

बाऊजी स्व. श्री गिरधारी लाल जी सेतिया मुझे हमेशा अपने परिवार के सदस्य की तरह मानते थे। मुझे उनसे बहुत स्नेह मिला। मैं उनसे दिल की हर बात सहज रूप से कर लिया करता था। मेरी हर समस्या को वे देखते ही देखते सुलझा दिया करते थे।

श्री महेन्द्र सेतिया जी व भाभीजी श्रीमती सरोज सेतिया जी ने हमेशा मुझसे व मेरे परिवार से अपनों की तरह ही व्यवहार किया है। मेरे परिवार में हर सुख-दु:ख में शामिल होकर उन्होंने अपनेपन का अहसास दिलाया। परम पूजनीय बाऊजी के साथ बिताए अनमोल पलों को मैं कभी नहीं भूल सकता।

'सेतिया परिवार से हमारे सम्बन्ध परस्पर प्रेम और अपनेपन की भावना पर आधारित हैं'



- सतपाल कंधरानी

(सुपुत्र स्व. श्री आनन्दमल जी कंधरानी)

स्व. सेठ गिरधारी लाल जी सेतिया से हमारा दिलों का रिश्ता रहा है। परम सम्माननीय सेठजी तथा मेरे मामा श्री टेकचंद जी वधनानी अक्सर प्रेमपूर्वक एक दूसरे से मिला करते थे। इसी क्रम में मेरा भी वर्ष 1975 में उनसे मिलना हुआ और धीरे-धीरे उनसे मेरा भावपूर्ण लगाव बढ़ता चला गया। हमारा जब भी उनसे मिलना होता था हम एक दूसरे से दिल की बातें खुलकर किया करते थे।

जैतसर में लगभग 45 वर्ष पूर्व हमारे भाई अर्जुनदास सेतिया और महेन्द्र कुमार जी से व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हुए जो कि पारिवारिक सम्बन्धों में परिवर्तित हो गए। वर्ष 1989 में मेरे भाई वासुदेव व मदनलाल जी ने इनके किराना व्यवसाय में सम्मिलित होकर परस्पर सम्बन्धों को और अधिक गहरा बना दिया। वर्ष 2003 में मेरा छोटा भाई मदनलाल, श्री महेन्द्र कुमार सेतिया के लक्खा (जैसलमेर) माइन्स व्यवसाय से जुड़ा।

सेतिया परिवार से हमारे सम्बन्ध परस्पर प्रेम और अपनेपन की भावना पर आधारित हैं। माताजी के प्रेम भाव को हम कभी भुला नहीं पाएंगे। जयपुर में हमारा जब कभी माताजी से घर पर मिलना हुआ उन्होंने हमें कुछ खाए-पिए बिना उठने ही नहीं दिया। स्व. सेठ गिरधारी लाल जी और माताजी की स्मृति में स्मारिका के प्रकाशन के लिए हम सेतिया परिवार को हार्दिक बधाई देते हैं।

'यह स्मारिका न केवल परिवार के लिए बल्कि समाज के लिए भी अति हितकर साबित होगी'



दिलीप अरोड़ा - कुसुम अरोड़ा

माता-पिता की प्रेरणादायक स्मृतियों को सदैव बनाए रखने के लिए सेतिया परिवार द्वारा लिया गया स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय प्रशंसनीय है। यह स्मारिका न केवल परिवार के लिए बल्कि समाज के लिए भी अति हितकर साबित होगी। अपने परिवार को जोड़कर रखने के लिए माता-पिता द्वारा किए गए कार्य हमने देखे हैं। उनकी सरलता, सहजता तथा परोपकार की भावना से हम भलीभांति परिचित हैं। हमारी हार्दिक कामना है कि सेतिया परिवार विकास पथ पर निरंतर अग्रसर रहे तथा उनके माता-पिता का आदर्श जीवन जन-जन को निरंतर मर्यादित जीवन जीने के लिए प्रेरित करता रहे।

'माता-पिता की ममता और त्याग का कर्ज हम कभी नहीं चुका सकते हैं'



-मनोज कुमार शर्मा
जवाहर नगर, जयपुर

मैंने स्व. श्री गिरधारी लाल जी एवं श्रीमती लाजवंती देवी जी को साक्षात कभी नहीं देखा परन्तु उनके बेटों के गुणों को देखकर अनुभव कर सकता हूँ कि उन्हें यह सभी गुण एवं आदर्श अपने माताजी और पिताजी से विरासत में मिले हैं। माता-पिता भगवान की ओर से दिए गए सबसे अनमोल उपहार हैं। माता-पिता का प्यार नि:स्वार्थ होता है और वे हमारी खुशियों के लिए अपनी खुशियों को कुर्बान कर देते हैं।

माता-पिता हमेशा अपने जीवन में बच्चों को सफल होते हुए देखना चाहते हैं। वे हमें अच्छे संस्कारों से सींचते हैं। माता-पिता की ममता और त्याग का कर्ज हम कभी नहीं चुका सकते हैं। माता-पिता अद्वितीय है। उनके समान दुनिया में दूसरा कोई भी नहीं है।

फूल कभी दो बार नहीं खिलते,
जन्म कभी दो बार नहीं मिलते,
मिलने को तो हजारों लोग मिल जाते हैं,
पर हजारों गलतियाँ माफ करने वाले,
माँ-बाप दोबारा नहीं मिलते।

'दादी जी के पवित्र हृदय की विशालता, परोपकार तथा असीम प्रेम का वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द ही नहीं हैं'



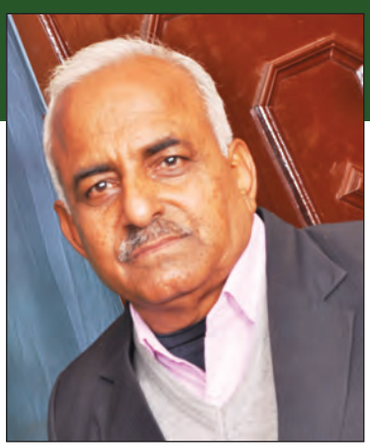
- धर्मेन्द्र सिंह
जयपुर

परम पूज्य माताजी के प्यार-दुलार ने मेरे जीवन में दादीजी की कमी को पूरा कर दिया, इसलिए मैं उन्हें श्रद्धापूर्वक दादी मां कहने लगा। उनके पवित्र हृदय की विशालता, अनुपम भक्ति भाव, परोपकार तथा असीम प्रेम का वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द ही नहीं हैं।

वर्ष 2017 में मैंने बाऊजी महेन्द्र कुमार सेतिया के यहां काम करना शुरू किया। मेरे दादा-दादी का तो मेरे जन्म से पहले ही स्वर्गवास हो चुका था। बाऊजी की माताजी से मिलने पर मैंने पहली बार जाना कि दादी का प्यार कैसा होता है। जब कभी घर पर दादी मां से मिलना होता तो वो अपने पास बिठाकर मेरा और मेरे परिवार के सदस्यों का हालचाल पूछा करती थीं और कुछ न कुछ खिलाए बिना उठने ही नहीं देती थीं। उन्होंने घर में काम करने वालों का सदैव परिवार के सदस्यों की तरह ध्यान रखा।

सेतिया परिवार के प्रेमपूर्ण व्यवहार ने मुझे सदा यह महसूस कराया है कि मैं इस परिवार का ही हूं। दादी मां के ममता भरे आशीर्वाद की याद आने पर आज भी आंखें नम हो जाती हैं। हम दादी मां को कभी भुला नहीं पाएंगे।

'दुनिया में माँ-बाप ही हैं जो हमें निरंतर सफल होते हुए देखना चाहते हैं'



-छगनलाल चावला
डावला (श्रीगंगानगर)

जब भी बला आई जीवन में तूफान बन कर,
माता-पिता की दुआएं सामने आई ढाल बनकर।

अत्यन्त सुखद अहसास हुआ यह जानकर कि सेतिया परिवार अपने अतीत, वर्तमान तथा भविष्य के पर्याय स्वर्गीय माता श्रीमती लाजवंती देवी व पिता श्री गिरधारी लाल जी सेतिया की पावन स्मृतियों को सदैव बनाए रखने हेतु स्मारिका का प्रकाशन करने जा रहा है। उनके संस्कारों की ही देन है कि सेतिया परिवार असहाय व्यक्तियों की सेवा करके मानवता की सेवा कर रहा है। सेतिया परिवार की ओर से शिक्षा, स्वास्थ्य, जनकल्याण आदि क्षेत्रों में वर्षों से भावपूर्वक सेवाकार्य किये जा रहे हैं। मेरे पापा श्री श्याम लाल जी चावला व स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया के मधुर सम्बन्धों की वजह से मुझे उनके नजदीक रहने का अवसर प्राप्त हुआ। यह मेरा परम सौभाग्य है कि इस आदर्श परिवार से हमारे पारिवारिक सम्बन्ध रहे हैं। पुरुषार्थ, स्पष्टवादिता एवं आत्मीयता उनकी पहचान रही। जब भी उनसे मिलना होता अपनत्व के साथ उनका आशीर्वाद पाकर सुखद अनुभूति होती थी। दुनिया में माँ-बाप ही हैं जो हमें निरंतर सफल होते हुए देखना चाहते हैं। उनकी परम पवित्र आत्मा हमेशा ईश्वर के श्रीचरणों में विराजमान हो। हम सबकी ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि!

'माता-पिता के आत्मिक आशीर्वाद में वो अनुपम शक्ति है जो कि कांटों को भी महकते पुष्पों में परिवर्तित कर देती है'



-सुशील कुमार महेश्वरी

शास्त्रों में माता-पिता को देवतुल्य माना गया है। उनकी अपार महिमा का वर्णन करना मानव मस्तिष्क की क्षमता से परे की बात है। बच्चों के सपनों को साकार करने के लिए माता-पिता अपना सर्वस्व कुर्बान करने के लिए तैयार रहते हैं। माता-पिता के नि:स्वार्थ प्रेम और सर्वोच्च त्याग को देखते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि इस धरा पर वे देवों के भी देव हैं। माता-पिता की श्रद्धापूर्वक की जाने वाली सेवा ईश्वर की अराधना के समान है। हमारे माता-पिता हमारे जीवन का आधार हैं। उनका आत्मिक आशीर्वाद वो अनुपम शक्ति है जो कि नुकीले कांटों को भी महकते पुष्पों में परिवर्तित कर देती है।

सेतिया परिवार की ओर से माता-पिता की स्मृतियों को सदैव बनाए रखने के लिए स्मारिका का प्रकाशन प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय कार्य है। परिवार हमारी श्रेष्ठ जीवन पूंजी है। संयुक्त परिवार की सुखद स्मृतियां बच्चों तथा भावी पीढ़ियों के लिए अपने आपमें सर्वोत्तम उपहार हैं। परिवार के सदस्यों द्वारा साथ-साथ संघर्ष करते हुए आगे बढ़ने तथा प्रेमपूर्ण जीवन जिए जाने के चित्र बच्चों की सकारात्मक सोच को विकसित करेंगे तथा उन्हें प्रेमपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करेंगे। परमवंदनीय माताजी और पिताजी को कोटि-कोटि नमन!

'स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल जी सेतिया ने अपनी कर्म स्थली को कभी नहीं भुलाया'



- दिलीप कुमार सुपुत्र श्री वासुदेव कंधराणी, जैतसर

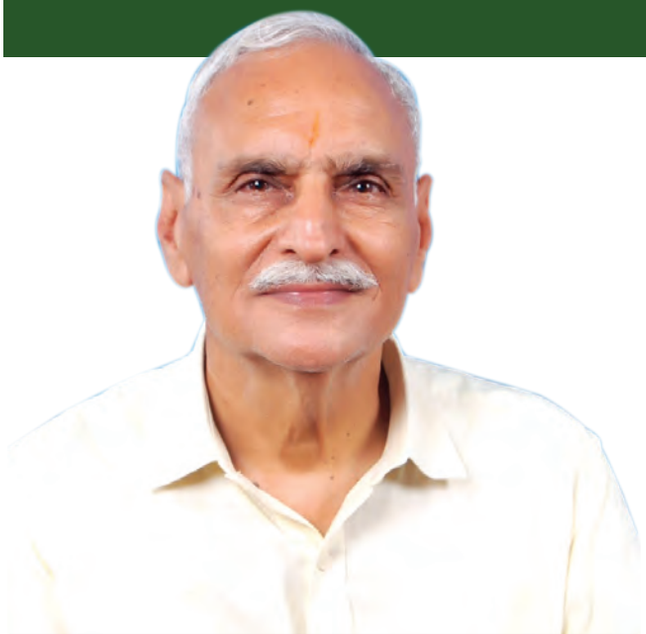
कुछ लोग संसार में ऐसे भी होते हैं जो अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि को भूल जाते हैं। सेतिया परिवार बेशक जयपुर जा चुका है, परन्तु अपनी कर्मभूमि जैतसर के प्रति उनका प्रेम दिन प्रतिदिन प्रबल होता रहा है। पूर्व जैतसर निवासी स्वर्गीय श्री गिरधारीलाल जी सेतिया एवं स्वर्गीय श्रीमती लाजवंती देवी सेतिया के पदचिन्हों पर चलने वाले उनके सुपुत्र श्री अर्जुन दास, रवि कुमार एवं महेन्द्र कुमार सेतिया निरन्तर जनहित के कार्य कर रहे हैं।

मेरे पिताजी स्वर्गीय श्री वासुदेव जी मेरे ताया जी श्री सतपाल दास जी की मार्फत स्व. गिरधारीलाल जी सेतिया के सम्पर्क में आए। मेरे पिताजी के कार्य को देखते हुए उन्होंने अपने किराना व्यवसाय में मेरे पिताजी का हिस्सा रख दिया, मेरे पिताजी बहुत ही मेहनत और लगन के साथ काम करने लगे। उस समय मैं अध्ययन कर रहा था साथ में व्यवसाय में भी सहयोग देने लगा। लगभग 30 वर्ष से इस किराना व्यवसाय में हमारी साझेदारी चल रही है। परस्पर विश्वास और प्रेम पर आधारित बिजनेस पार्टनरशिप ने पारिवारिक सम्बन्धों को अत्यधिक मधुर और मजबूत बनाया है। व्यावसायिक विकास के पथ पर चलते हुए 2005 में सेतिया परिवार पूरी तरह से जैतसर से जयपुर शिफ्ट हो गया। परन्तु किराना व्यवसाय में हमारी साझेदारी आज भी चल रही है।

स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल जी सेतिया के पदचिन्हों पर चलते हुए सेतिया परिवार द्वारा अपनी कर्मभूमि जैतसर में चिकित्सा और शिक्षा के क्षेत्र में भरपूर योगदान दिया जा रहा है।

स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल जी सेतिया एवं परम पूजनीय माताजी को शत्-शत् नमन!

'माता-पिता की स्मृतियों को स्मारिका के माध्यम से आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने का प्रयास सराहनीय है'



-प्रभु दयाल वाघला
(पूर्व अध्यक्ष, श्री अरोडवंश सभा)

सम्मानीय सेतिया परिवार द्वारा अपने पूर्वजों व माता-पिता की स्मृतियों को स्मारिका के माध्यम से आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने का प्रयास सराहनीय है। इससे समाज में जागरूकता आएगी और अन्य लोगों को भी प्रेरणा प्राप्त होगी। इसके लिए मैं सेतिया परिवार का अभिनंदन करता हूं।

स्व. श्री गिरधारीलाल जी व उनकी जीवन संगिनी स्वर्गीय श्रीमती लाजवंती देवी ने मिलकर परिवार को एक सूत्र में पिरोए रखा तथा समाज में असहायों की मदद में कभी पीछे नहीं रहे। उनके प्रभु चरणों में पहुंचने के बाद पूरा भी परिवार तन-मन-धन से सेवा कार्य में लीन है। मैं इस संस्करण के माध्यम से अमर स्मृतियों को सहेज कर रखने के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

'परिपूर्णता की मिसाल'



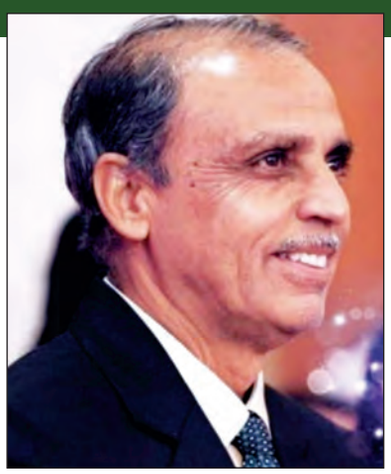
-गुलशन वाघला
अध्यक्ष, श्री अरोड़वंश सभा, जयपुर

'अपने माता-पिता के प्रति सच्चे मन से एवं श्रद्धापूर्वक व्यक्त की गई कृतज्ञता ही मानव जीवन की परिपूर्णता का अभूतपूर्व स्त्रोत है।'

इन प्रेरणादायक शब्दों को सम्माननीय सेतिया परिवार आज सही मायनों में चरितार्थ कर रहा है। परम श्रद्धेय स्वर्गीय श्रीमती लाजवंती देवी एवम् श्री गिरधारीलाल जी सेतिया द्वारा समय-समय पर दी गई बहुमूल्य सीख को संकलन कर अपनी भावी पीढ़ी के मार्गदर्शन हेतु एक दस्तावेज बनाना अपने आपमें एक महान तथा प्रेरणादायक कार्य है जिसके लिए सेतिया परिवार साधुवाद का पात्र है।

श्री अरोड़वंश सभा की ओर से यादगार स्मारिका 'अमर स्मृतियां' के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

'स्मारिका का प्रकाशन नव पीढ़ी के लिए प्रेरणा का पुंज है'



-डॉ. महेश पोपली
अध्यक्ष
स्वामी श्री गंगादास सत्संग सभा (रजि.)
(टॉक बिरादरी) जयपुर

परम श्रद्धेय पिताश्री गिरधारीलाल जी सेतिया एवं माताश्री स्व. लाजवंती जी सेतिया के द्वारा उनकी जीवन-यात्रा के दौरान विरासत में मिले संस्कारों से अर्जित यश-वैभव, सुख-समृद्धि एवं ऐश्वर्य से सेतिया परिवार ने समाज में नूतन आयाम स्थापित किये हैं।

धर्मपरायणता, पुरुषार्थ, समाज-सेवा, सद्व्यवहार, सादा जीवन, कुशल नेतृत्व के धनी एवं वात्सल्य की प्रतिमूर्ति आदरणीय माताश्री और पिताश्री की आदर्श जीवन-शैली से प्रेरित होकर उनके सुपुत्र सर्वश्री अर्जुनदास सेतिया, रवि कुमार, महेन्द्र कुमार एवं परिवारजन के द्वारा प्रस्तावित स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है जो कि समाज के लिए अनुकरणीय एवं पुनीत कार्य है। स्मारिका का प्रकाशन माता-पिता की मधुर स्मृतियों को संजोने का एक सार्थक उपक्रम है तथा नव पीढ़ी के लिए प्रेरणा का पुंज है। इस अनुष्ठान के लिए परिवार को साधुवाद एवं गुरुवर की ओर से शुभाशीष।

"वजूद नहीं मेरा अकेले अपने आपका
मैं कितना भी बड़ा बन जाऊँ
शुक्रगुजार हूँ अपने माँ-बाप का"

'माताजी व पिताजी ने परिवार के सदस्यों को सदैव प्रेम और धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हुए सेवाभावी बनाया'

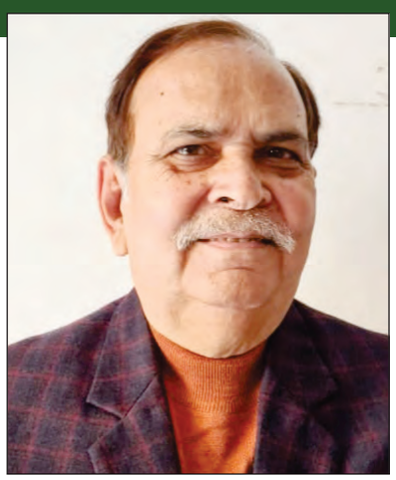


-सगन लाल डोडा
प्रदेशाध्यक्ष, पंजाबी समाज विकास संस्था, जयपुर
पूर्व अध्यक्ष, अरोड़वंश सभा, जयपुर

अर्जुनदास सेतिया, रवि कुमार और महेन्द्र कुमार की धर्मप्रेमी ममतामयी माताजी श्रीमती लाजवंती देवी वात्सल्य और मीठे वचनों की बहुत धनी थीं। उनमें सबको दिल से अपना बना लेने का विशेष गुण था। सेतिया परिवार से मेरे पिछले 27 वर्षों से पारिवारिक सम्बन्ध हैं। सौभाग्यवश मुझे माताजी और पिताजी का बहुत प्रेम और आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। मेरा जब भी सेतिया निवास पर जाना हुआ तो माताजी ने खाए-पिए बिना उठने ही नहीं दिया। माताजी पास बैठाकर खाने के लिए प्रेमपूर्वक आग्रह किया करती थीं।

माताजी व पिताजी ने परिवार के सदस्यों को सदैव प्रेम और धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हुए सेवाभावी बनाया। उनके आशीर्वाद और मार्गदर्शन के परिणामस्वरूप उनके बेटे और पोते-पोतियां व्यवसाय के क्षेत्र में आगे ही आगे बढ़ते हुए उनका नाम रोशन कर रहे हैं। प्रेरणादायक माता-पिता हमारे गौरवमयी आदर्श हैं। ऐसी महान पवित्र आत्माओं को मैं सादर नमन करता हूँ।

'धन्य है स्वर्गीय श्री गिरधारीलाल जी और श्रीमती लाजवंती देवी जी सेतिया जिन्होंने आज्ञाकारी बच्चों को जन्म दिया'



-प्रेम विज
अध्यक्ष- संवाद साहित्य मंच, चंडीगढ़

धन्य है स्वर्गीय श्री गिरधारीलाल जी और श्रीमती लाजवंती देवी जी सेतिया जिन्होंने आज्ञाकारी बच्चों को जन्म दिया। अपने माँ-बाप की यादों को संजोए रखने के लिए स्मारिका तैयार करना बहुत ही सराहनीय कार्य है। यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि संवाद साहित्य मंच चंडीगढ़ से जुड़ी लेखिका विमला गुगलानी को जयपुर के जाने-माने सेतिया परिवार और उनके रिश्तेदारों की भावनाओं को अपने शब्दों में पिरोने का शुभ अवसर मिला। इस नेक कार्य के लिए बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

'आज के युग में ऐसी सोच रखने वाले परिवार को मेरा नमन'



-दलजीत सिंह अरोड़ा
मुख्य संपादक,
मैगजीन 'सोच दी शक्ति', पटियाला

स्व. माता-पिता के तो नाम से ही आँखें नम हो जाती हैं। जिनको जितना अधिक माँ-बाप का साथ नसीब होता है, वे उतने ही किस्मत वाले हैं। मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि इस भावपूर्ण स्मारिका में सात पीढ़ियों के वर्णन के अलावा लगभग सभी रिश्तेदारों, नजदीकी दोस्तों, समधियों के विचार अंकित किए गए हैं। आज के युग में ऐसी सोच रखने वाले परिवार को मेरा नमन। यह सिर्फ एक स्मारिका ही नहीं, एक पारिवारिक धरोहर है, जिससे आने वाली पीढ़ियां अपने परिवार को, उसकी मेहनत तथा संघर्ष को अच्छे से जान पाएंगी। बहुत सी शुभकामनाएं।

'बात बहुत छोटी, मतलब बहुत खास है,
माँ-बाप के बिना किसी की क्या औकात है
बच्चों का जहान है, उनकी पहचान है,
माँ के साथ जमीं है तो पापा से आसमान है।'

'Your love is still our guide'



'Gone from our sight, but never from our hearts'



Vimal Goyal - Renu

We loved you,
We still love you,
We will love you forever

You were treasure of wisdom
You have golden hearts
You left us great memories
Your love is still our guide
And though we cannot see you
You are always by our side.

Always loved
Never forgotten
Forever missed.



K. K. Kapoor - Neelam Kapoor

Your life mattered and continues to matter,
Your deeds of love made us feel better.
Your sacred memory is a precious treasure,
You are respected and missed beyond measure.

You always helped those in need
And gladdened sad hearts with your noble deeds.
Your words of wisdom solaced wounded hearts,
You will always stay inside our hearts.

'आदरणीय स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया एवं माताजी श्रीमती लाजवंती देवी जी ने परिवार को जो संस्कार दिये, वे अनूठे हैं'



-निर्मल गोयल
प्रेसिडेंट-वॉयुलर प्रिन्टर्स

वर्ष 2021 की अंतिम तिहाई में श्री अर्जुन दास जी सेतिया एवं उनके भ्राता श्री रवि कुमार एवं श्री महेन्द्र जी सेतिया प्रेस पधारे। अत्यन्त आत्मीयता से तीनों भाइयों ने एक स्मारिका प्रकाशित करने की योजना रखी। इससे पूर्व में मैं इनसे नहीं मिला था। इस स्मारिका के लेखों का टाइपिंग, ले-आउट कार्य व फोटोज की स्केनिंग, एडीटिंग इत्यादि के दौरान तीनों भाई अकसर प्रेस आते रहे। जब वे प्रेस पधारते तो उनके कार्य के साथ-साथ ऑफिस में मुझे भी एक कप चाय के साथ वार्तालाप का मौका मिलता रहा। श्री अर्जुन भाई साहब अपने भाइयों से जो कुछ भी कहते थे, तो मैंने उनको कभी भी पलट कर मना करते हुए या उल्टा जवाब देते हुए नहीं सुना। ऐसा अनेकों बार देखने पर व सदैव तीनों बंधुओं की आपसी सौहार्द्रता तथा मेरे साथ मधुर व्यवहार देखकर इस परिवार को समझने की इच्छा बलवती होती गई।

मुझे ज्ञात हुआ कि ये तीन भाई एवं चार बहिनें हैं। किसी जमाने में प्रसिद्ध व्यवसायी स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया की आप संतानें हैं। मुझे स्व. श्री गिरधारीलाल जी एवं माताजी श्रीमती लाजवंती देवी जी से मिलने का सौभाग्य तो नहीं मिला, परन्तु इन तीनों भाइयों को देखकर उनके बारे में मेरे जो विचार एवं परिकल्पना बनी, उसका वर्णन शब्दों में कर पाना सम्भव नहीं है।

जैसे-जैसे पिछले एक वर्ष के दौरान अनेकों बार हम मिलते रहे, हमारे सम्बन्ध प्रगाढ़ होते चले गए एवं व्यवसायिक सम्बन्ध निजी आत्मीय सम्बन्ध में परिवर्तित हो गए। स्मारिका के संदर्भ में दिन प्रतिदिन प्रेस पधारना एवं शान्त स्वभाव से कार्य कराना तीनों भाइयों की प्रमुख विशेषता रही। कई बार 4-5 घंटों बाद मुझे पता चलता कि बंधुवर पधारे हुए हैं एवं काम करवा रहे हैं। इतनी शांति से कार्य कराने वाले गिने-चुने ग्राहक ही इस प्रेस को मिले हैं।

सेतिया परिवार ने जो ऊंचाइयां हासिल की हैं, वे अद्भुत एवं अनुकरणीय हैं। परम आदरणीय स्व. गिरधारी लाल जी सेतिया एवं श्रीमती लाजवंती देवी सेतिया ने परिवार को जो संस्कार दिए हैं, वे अनूठे हैं। हमारी ओर से दोनों को हार्दिक श्रद्धांजलि एवं अनेकानेक प्रणाम। वे जहां कहीं भी होंगे, आज अपने भरे-पूरे परिवार को संस्कारयुक्त देखकर फूले नहीं समा रहे होंगे। पूरा परिवार आज भी अलग-अलग रहकर एक है, ऐसी गिनी-चुनी मिसालें ही मिलती हैं।

एक बात और....। कुछ दिनों पूर्व प्रोफेसर रमेश अरोड़ा साहब का फोन आया था। वे प्रेस के पिछले 42 वर्षों से सम्माननीय ग्राहक हैं एवं हमने उनसे सदैव प्यार पाया है। साथ ही वे सदैव प्रेरणास्पद शब्दों से हमारा मनोबल बढ़ाते रहते हैं। इतने बड़े एवं नामी व्यक्तित्व का पिछले 42 वर्षों के दौरान किसी की भी सिफारिश करने के लिए फोन या अनुरोध नहीं आया। परन्तु सेतिया परिवार के लिए उन्होंने कई बार मुझे फोन किया एवं आग्रह किया कि सेतिया जी समाज के बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं एवं उनके इस स्मारिका में क्वालिटी प्रिंटिंग का पूरा ध्यान रखें। कई बार उनके इसी आशय के मैसेज व फोन मिले, जिन्हें हमने प्रो. रमेश अरोड़ा साहब का आदेश ही माना। ऐसी शख्सियत का निर्देश आना इस बात का द्योतक है कि सेतिया परिवार के सदस्य व्यवसाय में ऊंचाइयां हासिल करने के साथ ही समाज व लोगों से जबरदस्त आत्मीयता एवं ख्याति के साथ जुड़े हैं।

अंत में मैं पुन: आदरणीय श्री गिरधारीलाल जी सेतिया दम्पत्ति को शत्-शत् नमन एवं स्मरण करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ।

सात पीढ़ियों के सफ़र पर आधारित पारिवारिक पृष्ठभूमि

-विमला गुगलानी

परम पूजनीय श्री खेमचंद जी के वंशज

आजकल परिवार बहुत सिमट गए हैं। लोग अपने आप तक ही सीमित हो गए हैं। यदि दादा-दादी और नाना-नानी का नाम भी जानते हैं तो गनीमत है। लेकिन जिस जमाने का जिक्र इस स्मारिका में हो रहा है वो समय कुछ और ही था। इस स्मारिका में न केवल ममेरे, चचेरे, मसेरे और फुफेरे भाई-बहनों की बात की गई है बल्कि उनके बच्चों का भी प्रेमपूर्वक जिक्र किया गया है। हमारे परमपूजनीय परदादा श्री माछीराम जी के पिता श्री



खेमचंद जी बड़े ईमानदार आढ़ती थे। बहावलनगर में दूर-दूर तक उनका नाम था। सैकड़ों किसान उनके यहां अनाज बेचने के लिए आया करते थे। रात को रुकने वाले किसानों के भोजन तथा सुख-सुविधा का वे परिवार के सदस्यों की भांति ध्यान रखते थे और बाड़े में ऊंटों को ठहराने तथा चारे-पानी की सुचारु व्यवस्था करते थे। विनम्र और प्रेमपूर्ण व्यवहार के कारण चहुंओर लोग उनका दिल से सम्मान किया करते थे। सुन्दर संस्कारों की विरासत को प्राप्त करते हुए हमारे वंदनीय परदादा श्री माछीराम जी सेतिया ने बहावलनगर में आढ़त के व्यापार को चार चांद लगा दिए। अपने परदादा श्री माछीराम जी का जिक्र होते ही अर्जुनदास सेतिया बचपन की यादों में खो जाते हैं। देश के विभाजन के 5-6 वर्ष बाद की पुरानी यादों की तंग गलियों में से होते हुए अर्जुनदास जी बचपन के उस जमाने में प्रवेश पा जाते हैं जब वो लगभग 8 वर्ष के थे। परदादा माछीराम जी का शरीर भारी था। उम्र बढ़ने के साथ शरीर का भारीपन बढ़ता चला गया। अर्जुनदास जी को स्मरण हो आता है मासूम आंखों से देखा गया वह अविस्मरणीय दृश्य जब सूरतगढ़ में सेवाभाव से परिपूर्ण परमवंदनीय परदादी श्रीमती ठरी बाई परदादा श्री माछीराम जी को नहला रही थी। यहाँ पर मैं श्री माछीराम जी के तीनों बेटों- श्री निहाल चन्द जी, श्री होत चन्द जी और श्री टोपन दास जी का विस्तार से जिक्र करूंगी।



परम वंदनीय पूजनीय स्व. श्री निहाल चन्द जी

श्री माछीराम जी के सबसे बड़े बेटे निहाल चंद जी बँटवारे के बाद कुछ साल सूरतगढ़ रहे और फिर जैतसर आ गए थे। इनका जन्म 1896 में फकीरवाली (पाकिस्तान) में हुआ था। बचपन अच्छे तरीके से गुजरा। वहाँ व्यापार में भी खूब तरक्की की। उस जमाने के हिसाब से कुछ पढ़ाई भी की हुई थी। इनकी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रति अपार श्रद्धा थी। घर के एक कमरे में श्री गुरुग्रंथ साहब जी का प्रकाश किया हुआ था। काफी कुछ तो इन्हें जबानी ही याद था। वे बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति वाले थे। उनके धार्मिक जीवन का सारे परिवार पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। आध्यात्मिक गुरु श्री हरिसिंह जी बेदी के सान्निध्य में सिख धर्म में इनकी बहुत आस्था थी। 1947 में बँटवारे के बाद सूरतगढ़ में जीवन काफी संघर्षपूर्ण रहा। यहाँ पर इन्होंने किराने का कारोबार नए सिरे से शुरू किया। बाद में जैतसर आकर बस गए। परिवार के साथ काफी अच्छा समय बिताया। 6.10.1990 को अपनी सांसारिक यात्रा पूरी करके परलोकगमन कर गए।



श्रीमती मोहिनी देवी

लाला निहालचन्द जी के दो बेटे श्री केसर चन्द, श्री मोहनलाल और तीन बेटियाँ लक्ष्मी देवी, नत्थो देवी और मोहिनी देवी थी। श्री निहालचन्द जी की धर्मपत्नी श्रीमती रज्जी बाई छाबड़ा परिवार से थी। भगवान श्रीमती मोहिनी जी की लंबी उम्र करे। इनके बाकी भाई-बहन परलोकगमन कर चुके हैं। कुछ से मेरी बात हुई। जो जानकारी मिली मैं यहाँ पर साझा कर रही हूँ। श्री केसरचन्द और मोहनलाल जी के परिवार अभी भी जैतसर में पुरुखों के उसी मकान में रह रहे हैं।



स्व. श्री केसर चन्द जी

श्री केसर चन्द जी की पत्नी मुकनी बाई रामसिंहपुर के छाबड़ा परिवार से थी। इनकी पाँच बेटियाँ कैलाश रानी मिढ्ढा, पूरन देवी आहूजा, आशारानी भटेजा, रानी कामरा, बबली चराया और एक बेटा है श्री चन्द्रभान सेतिया। पिताजी के साथ रहकर ही इन्होंने दुकान संभाली। श्री केसरचन्द और इनकी पत्नी दोनों ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे। घर का माहौल तो इनके पिताजी के कारण पहले से ही धार्मिक था। बाबा राजकुमार जी बेदी इनके गुरु थे। गुरु घर की सेवा अत्यन्त लगन और विश्वास से करते थे। पिताजी की सेवा दिल से करते थे। माता जी का तो पहले ही देहान्त हो चुका था। गौ सेवा करना, पक्षियों को दाना डालना उनकी दिनचर्या का अहम हिस्सा था। वे स्वभाव से बहुत ही शांत, सहनशील और अपने परिवार के प्रति पूर्णतया समर्पित थे। श्री केसरचन्द जी 26.6.2011 को अपनी सांसारिक यात्रा पूरी करके प्रभु चरणों में लीन हो गए।



चन्द्रभान सेतिया -श्रीमती मंजुरानी



गौरव सेतिया
सुपुत्र श्री चन्द्रभान सेतिया



स्व. श्री मोहन लाल जी सेतिया



स्व. श्री युधिष्ठिर सेतिया - श्रीमती दर्शना सेतिया

श्री निहालचन्द जी के छोटे बेटे का नाम मोहनलाल सेतिया था। बटवारे के समय वे भी परिवार के साथ बहावलनगर (पाकिस्तान) से आकर सूरतगढ़ में रहे और फिर जैतसर शिफ्ट हो गए। बहावलनगर से आकर परम पूजनीय श्री माछीराम जी, उनकी पत्नी श्रीमती ठरी बाई, तीनों बेटे और बाकी सारा परिवार पहले कुछ साल सूरतगढ़ में ही रहे। 1953 में मोहन लाल जी की शादी माया देवी जी से हुई। माया देवी जी का परिवार भी पाकिस्तान से ही आया था। जब ये रेलगाड़ी से पाकिस्तान से आ रहे थे तो रास्ते में यात्रियों को लूट लिया गया। मायादेवी के कान की बालियाँ लुटेरों ने खींच ली तो उनके अंकल ने उनके कान की सिलाई करवाई। जिन्होंने बंटवारे की त्रासदी झेली है वही उसका दु:ख जानते हैं। सालों साल बीत गए लेकिन बात चलती है तो जख्म हरे हो जाते हैं। 1958 में मोहनलाल जी ने मुनीमगिरी शुरू कर दी। 1960 में उन्होंने जैतसर में अपनी दुकान शुरू की। उनकी सुभाष, रजनी, नीलम, प्रवीण और निर्मला पाँच बेटियाँ हैं तथा एक बेटा युधिष्ठिर था। अपनी पढ़ाई को बीच में ही छोड़कर युधिष्ठिर ने पिता का कारोबार संभाल लिया। 1986 में उसकी शादी दर्शना देवी से हुई जिन्होंने सरकारी नौकरी में शिक्षिका के पद पर रहने के बाद कुछ समय पहले रिटायरमेंट ले ली। इनके बड़े बेटे अविन सेतिया की शादी 2011 में रिचा से हुई। इनके तीन बच्चे अथर्व, आर्या और रिताक्षी हैं। एक उच्च शिक्षित बेटी सोनाक्षी है जो आजकल बैंगलोर में नौकरी कर रही है। इसके अलावा इनका एक बेटा अनीश भी था, जिसका दुर्भाग्यवश बीस साल की उम्र में ही 2015 में बीमारी के कारण निधन हो गया। श्री मोहनलाल जी का 12.10.2012 को और श्रीमती मायादेवी का 17.4.2015 को देवलोकगमन हो गया और जुलाई 2022 में युधिष्ठिर सेतिया का भी स्वर्गवास हो गया। अविन और रिचा दोनों ही बैंक ऑफ बड़ौदा में कार्यरत थे। कुछ साल पहले अविन ने नौकरी छोड़कर पिताजी का न केवल व्यापार संभाला बल्कि उन्हें अपनी एक किडनी भी दी। पिता के प्रति पुत्र के ऐसे जज्बे को सलाम है। प्रभु दोनों पर अपनी कृपा बनाए रखें और दीर्घायु प्रदान करें।



अविन - रिचा सेतिया





परम पूजनीय दादा होतचंद जी

श्री माछीराम जी के दूसरे सुपुत्र का नाम था होतचंद जी। इनकी पत्नी का नाम श्रीमती भरावां बाई था। जैसा कि बताया जा चुका है, सारा परिवार बहावलनगर (पाकिस्तान) से पहले सूरतगढ़ आया। फिर बाद में कारोबार के सिलसिले में अन्य स्थानों पर चले गए। पहली पत्नी की मृत्यु के बाद होतचंद जी की दूसरी शादी बिशनी बाई से हुई। इनकी पहली शादी से मुंशीराम जी, गिरधारीलाल जी और भगवान दास जी तीन बेटे हुए और एक बेटी ठाकरी देवी हुई। जबकि दूसरी शादी से बसंत लालजी, आसाराम जी और मुरारीलाल जी तीन बेटे हुए और दो बेटियाँ शीला और संतोष हुई।



स्व. श्री मुंशीराम जी सेतिया - स्व. श्रीमती लाजवन्ती देवी

श्री मुंशीराम जी श्री होतचन्द जी के सबसे बड़े बेटे थे। इनका जन्म बहावलनगर (पाकिस्तान) में 1923 में हुआ। पांचवीं कक्षा तक पढ़ने के बाद छोटीसी उम्र में ही वे अपने दादा श्री माछी राम जी के आढ़त के व्यवसाय में सक्रिय रूप से रुचि लेने लगे। दो-तीन वर्षों में ही वे व्यवसाय की बारीकियों को समझने लगे और हिसाब किताब में माहिर हो गए। उनकी इस योग्यता को देखते हुए उनके दादाजी ने आढ़तियों के हिसाब तथा लेन-देन के महत्त्वपूर्ण काम उन्हें ही सौंप दिए। 17 वर्ष की आयु में उनका विवाह लाजवंती जी से हुआ। देश के विभाजन के बाद सारा परिवार बहावलनगर (पाकिस्तान) से आने के बाद 5-6 वर्ष सूरतगढ़ रहा। परिवार के अन्य सदस्यों की भांति मुंशीराम जी ने भी प्रारम्भ में कई तरह के कार्य किए। 1951 में उन्होंने एक ट्रक खरीदा और अपने भाई श्री गिरधारीलाल जी और भगवान दास जी के साथ मिलकर ट्रांसपोर्ट व्यवसाय शुरू किया और इनके परिवार सूरतगढ़ छोड़कर जैतसर में बस गए।

उनके बड़े बेटे निरंजन दासजी की शादी कृष्णाजी से हुई। इनकी तीन बेटियाँ संगीता मिढ्ढा, प्रीति कालरा और अनीषा पुन्यानी हैं और बेटा है साहिल सेतिया। ये परिवार आजकल लुधियाना में रह रहा है। मुंशीराम जी के दूसरे बेटे का नाम है रमेश सेतिया जिनकी पत्नी है

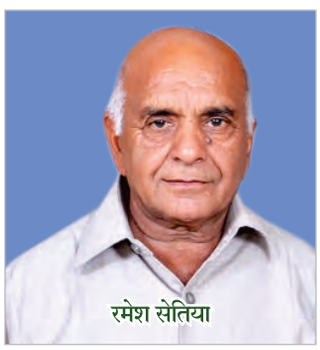

निरंजन सेतिया

बिमला सेतिया। अजय और विजय सेतिया दो बेटे हैं और नीतू मदान बेटी है। यह परिवार सूरतगढ़ में रहता है। अजय सेतिया सूरतगढ़ में दाँतों के डॉक्टर हैं।

तीसरे बेटे हैं सुभाष सेतिया। उनकी पत्नी का नाम है पुष्पा सेतिया। इनकी दो बेटियाँ तनु छाबड़ा और साक्षी हैं और बेटे का नाम है तुषार। ये परिवार मुम्बई में रहता है। मुंशीराम जी की बेटी का नाम है राज मुंजाल जिसकी शादी श्रीगंगानगर निवासी बक्शी मुंजाल जी से हुई। साहिल और रोहित दो बेटे हैं इनके।


मनीष सेतिया
सुपुत्र श्री निरंजन सेतिया

श्री मुंशीराम जी सेतिया अपने परमपूज्य दादा-दादी और माता-पिता के प्रति सदैव समर्पित रहे। उनका अपने भाई-बहनों और बच्चों से बहुत लगाव था। उन्होंने न केवल व्यवसाय को आगे बढ़ाया बल्कि पारिवारिक और सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। उन्होंने सदैव सत्य पर आधारित जीवन जिया। उनकी कथनी और करनी एक समान थे। 1967 में 44 वर्ष की आयु में अकस्मात ही उनका देवलोकगमन हो गया। परिवार के सदस्य उनकी उदारता, सत्यनिष्ठा, हिम्मत तथा परस्पर प्रेम की भावना की स्मृतियों को रह-रहकर नमन करते हैं।


रमेश सेतिया


सुभाष सेतिया


स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया

मूलरूप से यह स्मारिका श्री गिरधारी लाल जी सेतिया एवं श्रीमती लाजवंती जी पर आधारित है। वे पहले सूरतगढ़ ही रहे, फिर जैतसर में दुकान की शुरुआत की। धीरे-धीरे मेहनत, लगन और बच्चों के उत्साह के साथ प्रभु कृपा से सफलता के शिखर तक पहुँचे। इनके बड़े बेटे अर्जुनदास सेतिया के तीन बेटे सुरेन्द्र कुमार, राजेन्द्र कुमार और राजकुमार हैं। अर्जुनदास सेतिया की दो बेटियां मंजु और रैना हैं। श्री गिरधारीलाल जी सेतिया के मंझले बेटे रवि सेतिया के दो बेटे रॉबिन और नितिन हैं। श्री गिरधारीलाल जी के छोटे बेटे महेन्द्र कुमार के दो बेटे विपुल और संकुल हैं। स्वर्गीय श्री गिरधारीलाल जी सेतिया के सुपुत्र, पोते एवं परपोते जयपुर में पेट्रोल पंप व्यवसाय तथा फाइनेंस व्यवसाय का सफल संचालन करते हुए निरंतर विकास पथ पर अग्रसर हैं।



स्व. श्री भगवान दास जी सेतिया - स्व. श्रीमती शिवां देवी



स्व. श्री ओमप्रकाश सेतिया

श्री भगवान दास जी सेतिया श्री होतचंद जी के तीसरे बेटे थे। इनका जन्म बहावलनगर (पाकिस्तान) में 1929 में हुआ। जब देश का विभाजन हुआ तो उनकी आयु 18 वर्ष थी। बहावलनगर से सूरतगढ़ आने पर उन्होंने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर रोटी-रोजी के लिए कड़ा संघर्ष किया। जीवन के प्रति सकारात्मक सोच होने के कारण वे निरंतर साहस और दूरदर्शिता दिखाते हुए परिवार के साथ प्रेमपूर्वक आगे ही आगे बढ़ते रहे। श्री भगवानदास जी की पत्नी का नाम था श्रीमती शिवां देवी। इनके दो बेटे और तीन बेटियाँ हुई। इनके बड़े बेटे का नाम ओमप्रकाश था जो कि बहुत विवेकपूर्ण और शान्त स्वभाव के थे। श्री ओमप्रकाश सेतिया जी का विवाह रेनुका से हुआ। श्री भगवानदास जी के छोटे बेटे अशोक का विवाह सरोज रानी से हुआ। श्री भगवानदास जी की तीन बेटियां हैं - सरोज रानी, सुदेश रानी और निर्मला। सरोज रानी का विवाह श्री महेन्द्र कुमार भटेजा से हुआ। सुदेश रानी के पति का नाम श्री ओमप्रकाश धमीजा था। भगवानदास जी की तीसरी बेटी निर्मला का विवाह श्री दीनदयाल नागपाल से हुआ।



राहुल सेतिया
स्व. श्री ओमप्रकाश सेतिया
के सुपुत्र

परिवार के सदस्यों के परस्पर प्रेम, सहयोग और त्याग ने भगवानदास जी को विपत्तियों के अंधकार में भी सफलता के मार्ग पर आगे बढ़ने की शक्ति प्रदान की। जब इनके सबसे बड़े भाई श्री मुंशीराम जी ने ट्रक खरीदा और साझा ट्रांसपोर्ट व्यवसाय प्रारम्भ किया तो भगवानदास जी ने कड़ा परिश्रम किया। इन्होंने ट्रक चलाना और संभालना सीखा और ट्रांसपोर्ट व्यवसाय में अपने भाइयों के साथ संयुक्त प्रयास करते-करते अपार सफलता प्राप्त की।



अशोक कुमार सेतिया

1967 में श्री मुंशीराम जी का 44 वर्ष की आयु में होने वाला आकस्मिक निधन परिवार के लिए बहुत बड़ा सदमा था। उनके छोटे-छोटे बच्चे थे। देखते ही देखते परिवार के लिए जीवन रुक गया था। परन्तु श्री गिरधारीलाल जी और श्री भगवानदास जी ने कलेजे पर पत्थर रखते हुए अपने बड़े भाई के आकस्मिक निधन को प्रभु इच्छा के रूप में स्वीकार किया और बड़े भाई के बच्चों के प्रति जीवनभर दिल से पिता के फर्ज निभाए। श्री भगवानदास जी ने अपने बड़े भाई श्री गिरधारीलाल जी के साथ ट्रांसपोर्ट व्यवसाय में आगे बढ़ते हुए 6 ट्रक बनाए और अपने व्यवसाय में परिवार के कई सदस्यों को रोजगार दिया। वे ट्रक यूनियन में 15-20 वर्ष तक अध्यक्ष पद पर रहे। श्री भगवानदास जी ने हर दृष्टि से आदर्श जीवन जिया।





स्व. श्री बसंत लाल जी सेतिया

श्री बसंत लाल सेतिया श्री होतचन्द जी के चौथे बेटे थे। इनका जन्म बहावलनगर (पाकिस्तान) में 14 अगस्त, 1941 को हुआ। देश के विभाजन के समय इनकी आयु 6 वर्ष की ही थी। इनका अपने भाई-बहनों से बहुत लगाव था। वे अपने माता-पिता के साथ सूरतगढ़ 1959 तक रहे। 1960 में वे विजयनगर (श्रीगंगानगर) शिफ्ट हो गए। जीवन में महत्त्वपूर्ण कार्य करते समय वे अपने बड़े भाईयों श्री मुंशीराम जी, श्री गिरधारीलाल जी और श्री भगवानदास जी की राय अवश्य ही लिया करते थे।

1958 में 17 वर्ष की आयु में ही इन्होंने अपने बड़े भाईयों के साथ मिलकर ट्रांसपोर्ट व्यवसाय प्रारम्भ किया। श्री बसंत लाल जी की शादी कृष्णा देवी जी से हुई। इनके बड़े बेटे का नाम है राजेन्द्र सेतिया और छोटे का नाम है श्री मोहन लाल सेतिया और बेटी है कंचन कमल मिद्ढा। 2010 में वे विजयनगर से जयपुर शिफ्ट हो गए। 24 जून, 2018 को श्री बसंत लाल जी का देवलोकगमन हो गया।



राजेन्द्र कुमार सेतिया



मोहन लाल सेतिया



श्री आसाराम जी सेतिया



गुलशन सेतिया

श्री अर्जुन दास जी, रवि कुमार और महेन्द्र कुमार के चाचा श्री आसाराम जी कभी अपने भाई-भाभी के प्यार को भुला नहीं सके। भुलाएं भी कैसे बच्चों जैसा प्यार मिला है इन्हें। इनका भरा पूरा परिवार है, दो बेटे गुलशन और अनुराग सेतिया हैं तथा पाँच बेटियाँ हैं। सब अपने कामों में व्यस्त हैं। कामकाज सब बढ़िया है, मगर यादें तो यादें हैं। पहले वे सूरतगढ़ में रहते थे लेकिन काफी समय से जयपुर में हैं। इनकी पत्नी श्रीमती मायादेवी श्री ताराचन्द दुआ-श्रीमती देवी बाई की सुपुत्री है। बेटी प्रेम मिढ्ढा, दामाद ललित कुमार जी मिढ्ढा जयपुर निवासी प्रोपर्टी डीलर हैं जिनकी दो प्यारी सी बेटियाँ शैली और शेफाली हैं। दूसरी बेटी उषा की शादी श्रीगंगानगर निवासी वकील पवन कुमार चुग से हुई। इनके दो प्यारे बच्चे पारूल और विनीत चुग हैं। इनकी बेटी सुमन नारंग के पति किराना व्यापारी हरीश कुमार नारंग जी हैं, और एक नटखट बाल गोपाल अनरव नारंग है। हनुमानगढ़ निवासी पटवारी सतीश कुमार मुंजाल, बेटी रजनी मुंजाल के पति हैं और दो सुन्दर बेटियां हैं समायरा और खुशी मुंजाल। इनकी सबसे छोटी बेटी है मीनू सेतिया।



अनुराग सेतिया

सारे परिवार के पास सूरतगढ़, जैतसर, जयपुर की उस समय की यादों का अनमोल खजाना है। जब सारा परिवार बुजुर्गों के साथ मिलकर बैठता था तो इस खजाने की परतें खुलने लगती थीं और खुशियां बिखरने लगती थीं। सच ही तो है कि उन दिनों घर भले ही कच्चे थे, पर प्यार दिलों में सच्चे थे।



श्री मुरारी लाल जी सेतिया



मनीष सेतिया

श्री मुरारी लाल सेतिया जी की शादी हनुमानगढ़ जंक्शन निवासी साधु राम और ठाकरी देवी चुग की बेटी राजरानी से हुई। इनका बड़ा बेटा मनीष और बहू एकता सेतिया और प्यारा सा पोता है अंश सेतिया। छोटे बेटा बहू हैं वरुण और सुरप्रीत सेतिया। इनकी बेटी का नाम है निशा जिसकी शादी रामसिंहपुर निवासी रवि चुग से हुई। मन्नत और निशा नाम की इनकी दो बेटियाँ हैं।



वरुण सेतिया



परम वंदनीय स्व. श्री टोपन दास जी सेतिया

श्री माछीराम जी के सबसे छोटे बेटे का नाम था श्री टोपन दास जो कि आजादी के बाद कुछ साल सूरतगढ़ रहे और फिर रामसिंहपुर शिफ्ट हो गए। वहाँ उन्होंने अपना घर बना लिया और क्लेम में मिली जमीन भी वहीं पास में थी। घर की लम्बाई काफी थी। पिछला हिस्सा बाजार तक था तो उन्होंने पीछे छोटी-छोटी तीन दुकानें बनाकर किराए पर दे दी। घर दुकान सब कच्चे ही थे। उन दिनों पक्के मकानों का चलन बहुत कम था और बहुत महंगे पड़ते थे। लाजपतराय सेतिया नाम का इनका एक ही बेटा था। बहुत छोटा-सा परिवार। इनकी पत्नी श्रीमती प्यारी बाई जुनेजा परिवार की बेटी थी। श्री लाजपतराय जी को पढ़ने का बहुत शौक था। पाकिस्तान में भी वे स्कूल जाते थे। हिन्दुस्तान में जब वे सूरतगढ़ आए तो आजीविका कमाना ही सबसे बड़ी समस्या थी। उस समय जब परिवार के सब लड़के कहीं न कहीं काम पर लग गए तब इन्होंने अपने पिताजी से अपनी आगे की पढ़ाई चालू रखने की इच्छा जाहिर की।

पाकिस्तान में लाजपतराय सेतिया सातवीं क्लास में पढ़ते थे। 15-16 साल की उम्र रही होगी। सूरतगढ़ में तो तब पांचवीं तक ही स्कूल था। उन दिनों छोटी उम्र में ही शादियाँ हो जाती थी। लाजपतराय जी की सगाई अनूपगढ़ निवासी श्री बालकिशनदास चुग की सबसे बड़ी बेटी शान्तिदेवी के साथ बहुत पहले ही हो चुकी थी। इकलौते बेटे की शादी का माँ-बाप को बहुत चाव था। 30 जनवरी, 1948 को इनकी शादी थी और उसी दिन राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की हत्या कर दी गई थी जो कि बहुत ही दुखद घटना थी। उन दिनों देश के हालात बहुत खराब थे। अनूपगढ़ में इनकी ससुराल वाले घर के साथ ही एक छोटा सा किला था। वहाँ पर उस समय शहनाई बजाना मना था। जैसे-तैसे शादी हो गई।

यहाँ पर मैं यह बताना चाहूंगी कि शांति देवी श्रीमती लाजवंती देवी सेतिया जी की सगी भतीजी थी। रिश्ता भी उन्होंने ही करवाया था। श्रीमती लाजवंती बुआ श्री माछीराम जी के मंझले बेटे होतचंद की पुत्रवधू थी। उनकी भतीजी शांतिदेवी श्री माछीराम जी के छोटे बेटे टोपनदास की पुत्रवधू बनी। एक घर में बुआ तो दूसरे घर में भतीजी। दोनों का बचपन साथ-साथ ही बीता था। दोनों में बहनों सा प्यार था और अब वो देवरानी जेठानी भी थी।

आजकल के बच्चों को ऐसी शादियाँ हैरानी भरी लगती होंगी परन्तु तब ऐसा होता था। शादी के कुछ समय बाद ही श्री लाजपतराय जी श्रीगंगानगर चले गये अपनी आगे की पढ़ाई पूरी करने के लिए। बीच के समय में इन्होंने सूरतगढ़ के एक छोटे से सिनेमाघर में काम किया जहां पर कि टिकट काटना, पैसे इकट्ठा करना और उसका पूरा हिसाब-किताब सब इनके जिम्मे था। वो तो इन्हें नौकरी पर रखे रहना चाहते थे परन्तु इनका सपना कुछ और ही था। अगले साल श्रीगंगानगर रहकर इन्होंने दसवीं की परीक्षा पास की। इसी बीच परिवार रामसिंहपुर आ चुका था और इनकी बेटी विमला का जन्म भी हो चुका था। दसवीं का रिजल्ट आने के तुरन्त बाद ही इनकी नौकरी पंजाब के शहर फाजिलका में



स्व. श्री लाजपतराय सेतिया - श्रीमती शांति देवी



परम वंदनीय स्व. श्री टोपन दास जी सेतिया- स्व. श्रीमती प्यारी बाई

स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर में लग गई। बाद में वे मलोट और फिर अबोहर आ गए। लंबे समय तक वे अबोहर में ही रहे।

विमला के बाद रेनूका, राजन, बबीता और आकाश का जन्म हुआ। श्री लाजपतराय जी के माता-पिता रामसिंहपुर में रहकर अपनी जमीन की देखभाल करते थे। श्री टोपनदास जी ने एक आढ़त की दुकान भी खोली थी और रामसिंहपुर में एक बाग जैसे स्थान पर जिसे 'कोठी' कहते थे वहाँ भी कुछ समय काम किया लेकिन बाद में सब बंद कर दिया। उन्हें अपनी जमीन पर काम करना ही अच्छा लगता था। बीच-बीच में छुट्टियों में सब बच्चे रामसिंहपुर और अनूपगढ़ अपने दादके और ननिहाल जाते रहते थे। साथ में शांति देवी अपनी बुआ श्रीमती लाजवंती देवी से मिलने जैतसर भी जरूर जाती थी। उस जमाने में लोग छुट्टियों में रिश्तेदारों के पास ही जाते थे। वही उनके लिए कुल्लू, मनाली या फिर पेरिस हुआ करते थे। तभी तो प्यार, त्याग की भावना रहती थी। श्री लाजपतराय जी की माताजी तो अक्सर अपने बेटे के पास आती रहती थीं। इनके पिताजी व्यस्तता के कारण ज्यादा नहीं आ पाए। इनकी माताजी आखिर के आठ-दस साल तो बेटे के पास ही रही, गाँव नहीं गई। धीरे-धीरे शरीर भी साथ देना बंद कर देता है। उनकी मृत्यु अंबाला में हुई। उन दिनों लाजपतराय जी की पोस्टिंग वहाँ पर थी। कुछ सालों बाद उनके पिताजी दिल्ली में चल बसे।

श्री लाजपतराय जी ने स्वयं पढ़ाई करके अपना अच्छा भविष्य बनाया। उन्होंने अपने पाँचों बच्चों को भी शिक्षित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। विमला की शादी अबोहर के गुगलानी परिवार में ही श्री जगदीशचन्द्र और श्रीमती सरला देवी गुगलानी के बेटे विनोद कुमार से हुई जो कि चंडीगढ़ में रहते थे और परिवार अब भी वहीं पर ही रहता है। इनके समीर, पंकज गुगलानी दो बेटे हैं और एक पोती है जिसका नाम है सना। दूसरी बेटी रेनूका की शादी सूरतगढ़ के बड़े व्यवसायी सरदारीलाल जी नागपाल के बेटे सुभाष नागपाल से हुई। पिछले कुछ सालों से वे जयपुर में ही रह रहे हैं। इनका एक बेटा है पंकज नागपाल और उनका एक प्यारा सा बेटा है अभिराज। अबोहर में काफी साल रहने के बाद लाजपतराय जी का ट्रांफसर काफी शहरों में हुआ जैसे कि लुधियाना, अंबाला, मंडी डबवाली, एक बार फिर से अबोहर और फिर अंत में दिल्ली। फिर तो वो दिल्ली में ही सैटल हो गए।

श्री लाजपतराय जी ने अबोहर वाला मकान बेच दिया और दिल्ली द्वारका में ही अपना फ्लैट खरीद लिया। उनके बेटे राजन की शादी सूरतगढ़ के चुग परिवार में रंजना से हुई। राजन की एक बेटी पारूल है, जिसकी शादी दिल्ली में ही यतिन अरोड़ा से हुई। बेटी बबीता की शादी अलवर के बत्रा परिवार के सुनील बत्रा से हुई। आजकल इनका निवास स्थान दिल्ली में ही है। इनके निशू और सागर दो बच्चे हैं। निशू की शादी दिल्ली में ही अक्षय ढींगड़ा से सम्पन्न हुई। सबसे छोटे बेटे आकाश की शादी दिल्ली के ही तनेजा परिवार में किरण से हुई। इनके दो बच्चे रोमिका और मंथन सेतिया हैं। कुमारी रोमिका ने आई.आई.एम., इन्दौर से एम.बी.ए. किया है और अब एक बड़ी कंपनी में कार्यरत है।आकाश ने चंडीगढ़ के पास जीरकपुर में अपना आशियाना बनाया हुआ है। क्योंकि धीरे-धीरे रामसिंहपुर जाना कम हो गया था और माँ-बाप भी प्रभु चरणों में विलीन हो गए तो श्री लाजपतराय जी ने गाँव की जमीन बेच दी थी। 2010 में श्री लाजपतराय जी और 2014 में श्रीमती शांतिदेवी भी इस दुनिया से विदा हो गए। तो ये है श्री माछीराम जी के तीसरे बेटे श्री टोपनदास जी के इकलौते बेटे श्री लाजपतराय जी सेतिया की जीवन कथा।

अब तो सेतिया परिवार ने पढ़ाई, लिखाई, व्यवसाय हर क्षेत्र में ही अपनी मेहनत, लगन से बहुत तरक्की कर ली है और यूं ही आगे बढ़ते रहें, लेकिन श्री लाजपतराय जी उस समय के सेतिया परिवार के पहले लड़के थे जिन्होंने पढ़ाई की और नौकरी की। उन्होंने अपने बच्चों को भी शिक्षा के भरपूर अवसर प्रदान किए। वैसे तो हर माँ-बाप ही बच्चों का भविष्य संवारते हैं लेकिन मिलता उतना ही है जितना मुकद्दर में होता है।

'परिवार की धुरी श्रीमती लाजवंती देवी सेतिया का मायका परिवार'



स्व. श्रीमती लाजवंती देवी - शांति का स्वरूप

यहां हम बात करेंगे श्रीमती लाजवंती सेतिया की जो कि प्रतिभा, अतिथि सत्कार, विनम्रता और सादगी की अनूठी मिसाल थीं। प्रतिभा सिर्फ उन्हीं महिलाओं में ही नहीं होती जो बहुत पढ़ी-लिखी होती हैं या बाहर जाकर नौकरी करती हैं। घर परिवार संभालना, रिश्तों को संजोकर रखना, सेवा, त्याग, ममता जैसे गुण तो महिलाओं में जन्मजात ही होते हैं। रही बात डिग्रियाँ लेने की तो वो समय और सुविधा की बात है। जब भारत में ब्रिटिश राज था, शिक्षा का प्रचार-प्रसार कम था, महिलाओं के लिए तो नाममात्र के ही साधन थे।

श्रीमती लाजवंती देवी का जन्म 1925 में बहावलपुर स्टेट के एक छोटे से कस्बे बहावलनगर (पाकिस्तान) में हुआ। इनके पिता श्री बहादर चन्द जी चुग और दादा श्री गोमाराम जी चुग अपने इलाके के प्रतिष्ठित वूल के आढ़तिए थे। 1929 में वैश्विक महामंदी के चलते उन्हें अपने व्यापार में बहुत घाटा उठाना पड़ा और आर्थिक स्थिति बुरी तरह चरमरा गई। कोमल हृदय वाले बहादर चन्द जी इन परिस्थितियों को सह न पाए और उसी साल हृदयाघात से असमय ही उनकी मृत्यु हो गई। तीन भाइयों और दो बहनों में लाजवंती देवी सबसे छोटी थी। पिता की मृत्यु के समय उनकी उम्र 4 साल थी। उनकी एक बड़ी बहन माया देवी जसूजा और तीन भाई सर्वश्री बालकिशन दास, सोहन लाल और बिहारीलाल जी थे।

श्रीमती लाजवंती देवी के भाई श्री सोहनलाल चुग की पढ़ाई में बहुत रुचि थी, अभी तक उन्होंने मैट्रिक पास ही की थी कि घर के हालात इतने बिगड़ गए कि वो बड़ी मुश्किल से इंटर कर पाए। आगे चलकर उनकी बैंक में नौकरी लग गई। बालकिशन दास जी भाइयों में सबसे बड़े थे। उन्होंने पढ़ाई छोड़कर घर की जिम्मेदारी उठाने का फैसला किया। दादा गोमाराम जी ने किसी तरह व्यवसाय को समेटा और 1931-32 में इनका सारा परिवार अनूपगढ़ आ गया। श्री बालकिशन दास और बिहारीलालजी ने अनूपगढ़ आकर दुकानदारी शुरू की और खेती का काम भी शुरू किया। अनूपगढ़ आने के एक वर्ष बाद ही श्री गोमाराम जी का देहान्त हो गया। मुसीबतें थी कि खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही

स्व. श्रीमती लाजवंती देवी के पिता तुल्य भाई



स्व. श्री बालकिशन दास जी चुग



स्व. श्री सोहनलाल जी चुग



स्व. श्री बिहारीलाल जी चुग

थी, लेकिन इनकी माता श्रीमती बुद्धांबाई जी बहुत ही हिम्मत वाली महिला थीं। एक और बात मैं उनके लिए कहे बिना नहीं रह सकता, वो बहुत ही खूबसूरत और कर्मठ महिला थीं।

जबसे मैंने उनको देखा वो ज्यादा चल नहीं पाती थी लेकिन बैठे-बैठे ही वो बहुत से काम कर लेती थी। एक खास बात उनमें यह थी कि वो चौके में बैठकर सबको खाना परोसती। कोई भी अपने आप खाना नहीं ले सकता था। अपनी बेटी लाजवंती में तो जैसे उनकी जान बसती थी। माँ बेटी में बहुत ज्यादा प्यार था। अपने अन्तिम दिनों में वो काफी बीमार थी तो अक्सर श्रीमती लाजवंती देवी उनसे मिलने आती और उनकी बहुत सेवा करती। वो अक्सर उनकी नहाने में मदद करती, सिर पर मालिश कर बाल बनातीं। जिन दिनों वो बहावलनगर से अनूपगढ़ आए वह बहुत मुश्किल समय था। पति और ससुर दोनों ही साथ छोड़ गए। लेकिन उन्होंने हिम्मत का परिचय देते हुए सब बच्चों की शादियाँ की। श्रीमती लाजवंती देवी सबसे छोटी थी। घर की बिगड़ती और संभलती हालत को उन्होंने अपनी आँखों से देखा और महसूस किया था। लाजवंती देवी ने अपनी माँ और बाकी परिवार के संघर्ष को देखा था। उनकी जिन्दगी का पहला पाठ तो यहीं से शुरू हो गया था। सहनशीलता, विनम्रता, धैर्य आदि गुण यहीं से ही अंकुरित हो चुके थे जो कि आगे चलकर विकसित होते चले गए।

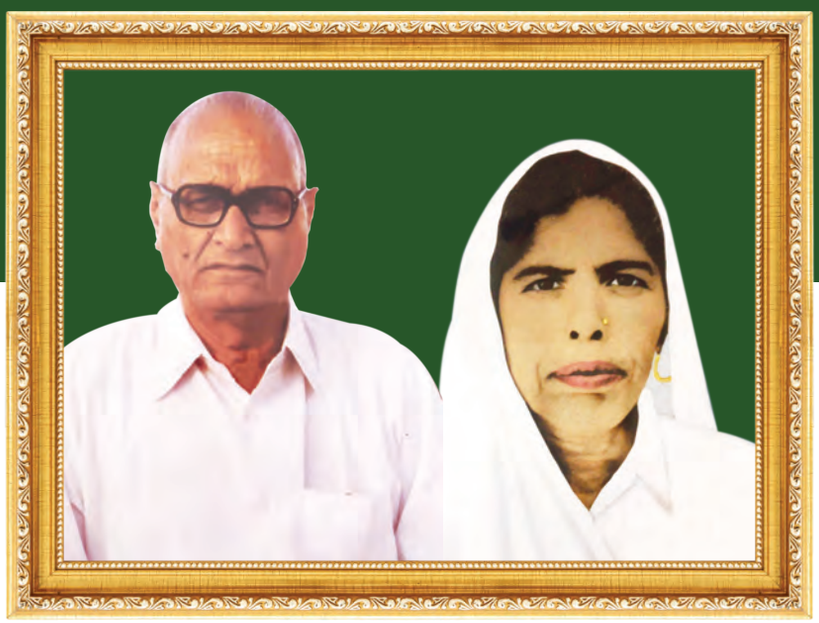
श्री गोमाराम जी के बहादरचंद के अलावा दो बेटे और भी थे। बदकिस्मती से दूसरे बेटे ईसरदास की बहुत ही छोटी आयु में शादी के कुछ समय बाद ही मृत्यु हो गई थी। उनकी पत्नी श्रीमती सैंयाबाई ने अपने जेठ श्री बहादर चंद जी के बेटे श्री सोहनलाल चुग को गोद ले लिया और माँ-बेटे ने जीवन भर एक दूसरे का साया बनकर साथ निभाया। प्रारम्भ में सारा परिवार इकट्ठा ही था। तीसरे बेटे श्री लालचन्द के भी आगे तीन बेटे हुए। सबके घर पहले तो अनूपगढ़ में साथ-साथ ही थे। समय के साथ-साथ सबने अपने अलग-अलग आशियाने बना लिए। बदकिस्मती से गोमाराम जी



भाई-बहन के पवित्र प्रेम के प्रतीक रक्षाबंधन पर्व पर
वर्ष 1999 में श्रीमती लाजवंती देवी सेतिया अपने बड़े भाई
श्री बालिकिशन दास चुग की कलाई पर आनंदपूर्वक राखी बांधते हुए।

के तीसरे बेटे की उम्र भी ज्यादा लंबी नहीं थी। लेकिन कुदरत का खेल देखिए, तीनों बहुओं की उम्र लंबी थी। बच्चों को पिता का तो नहीं परन्तु माँ का प्यार तो मिलता ही रहा। लाजवंती जी पिता के प्यार से तो वंचित रही मगर तीनों भाइयों का और माँ का भरपूर प्यार मिला। उनके लिए तो वो पिता समान थे। जहाँ तक मुझे याद है सभी बच्चों को अपनी नानी या जिनकी वो दादी थी उनका सदैव प्यार, आशीर्वाद और साथ भी मिला।

प्रभु की असीम कृपा है कि स्वर्गीय गोमा राम और माछीराम जी के परिवारों की पीढ़ियों के काफी लोग अब जयपुर में ही हैं, सुख-दुःख में शामिल होते हैं और शादी विवाह व अन्य पारिवारिक उत्सवों में आपस में मिलते रहते हैं। कईयों के तो कुछ दूर की रिश्तेदारी में आपस में बच्चों के रिश्ते भी हो चुके हैं। बहुत अच्छी बात है कि देखे भाले परिवार हों तो चिंता भी नहीं रहती। जयपुर में रहते हुए जब सब इकट्ठे होते हैं तो यही लगता है कि जैसे मिनी अनूपगढ़, जैतसर या गंगानगर हो। सब पुरानी यादें ताजा हो जाती हैं।



स्व. श्री बालकिशन दास चुग - स्व. श्रीमती परमेश्वरी बाई

श्री बालकिशन दास चुग श्रीमती लाजवंती देवी के सबसे बड़े भाई थे जिनका जन्म 1912 में बहावलनगर में हुआ। प्राथमिक शिक्षा के बाद ही उन्होंने अपने पारिवारिक व्यवसाय में समय देना प्रारम्भ कर दिया था। जब वे 15-16 वर्ष के ही थे, उनके पिता श्री बहादर चंद जी का अचानक स्वर्गवास हो गया। वूल के व्यवसाय में आई भयानक मंदी ने परिवार की आर्थिक स्थिति को झकझोर कर रखा दिया था। परिवार में सबसे बड़े होने के नाते उन्होंने अपनी जिम्मेदारी को समझा और अनूपगढ़ आकर छोटा मोटा व्यवसाय करने लगे। परिवार को संभालना बहुत बड़ी चुनौती थी। मगर उनकी शांत प्रवृत्ति एवम् समझदारी से ही यह संभव हो पाया। उन्होंने अनूपगढ़ में जब पंसारी की दुकान शुरू की तो उन्हें इस कार्य में लगातार सफलता मिलती गई। बीमारियों के इलाज के सम्बन्ध में उनका अच्छा अनुभव था। कस्बे के लोगों को उनकी सलाह पर पूरा भरोसा था। सौंफ का अर्क स्वयं घर पर ही तैयार कर लेते थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी और सिख धर्म में उनकी पूरी श्रद्धा थी। उनके जीवन के अन्तिम एक वर्ष को छोड़कर वे सदैव स्वस्थ रहे। अपने सभी रिश्तेदारों से हमेशा उनके आत्मीयता के सम्बन्ध रहे। श्रीमती लाजवंती देवी के प्रति उनका विशेष लगाव रहा। श्री बालकिशन दास चुग ने लाजवंती देवी की परवरिश अपनी बेटी की तरह स्नेहपूर्वक की तथा अपने हाथों से उनका विवाह किया। श्री बालकिशन दास जी के चार पुत्र जयलाल, अमरचन्द, शिवदयाल एवम् राजेन्द्र हैं। उनकी चार पुत्रियां स्वर्गीय शांति देवी सेतिया, कृष्णा नागपाल, शीला रस्सेवट एवम् सुमित्रा कुक्कड़ के परिवार अपनी बुआ से सदैव जुड़े रहे।



स्व. श्री सोहनलाल चुग - स्व. श्रीमती बेअंत कौर

श्रीमती लाजवंती देवी के बड़े भाई श्री सोहनलाल जी चुग का जन्म बहावलनगर (पाकिस्तान) में सितम्बर 1916 में हुआ। उनकी पढ़ाई और खेलकूद में बहुत रुचि थी। मैट्रिक पास करने के बाद जब उन्होंने अपनी माताजी से आगे पढ़ने का आग्रह किया तो माताजी ने अपनी असमर्थता प्रकट की क्योंकि वूल के व्यवसाय में जबरदस्त मंदी के कारण परिवार के आर्थिक हालात ठीक नहीं थे। इन्हीं कठिनाई के दिनों में सोहनलाल जी के पिता श्री बहादरचंद जी का भी देहान्त हो गया मगर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और बहावलपुर (पाकिस्तान) राजकीय महाविद्यालय से इंटर पास किया। उन दिनों मैट्रिक पास करना भी बहुत बड़ी बात मानी जाती थी। सोहनलाल जी प्रारम्भ में कुछ समय बीकानेर के पीबीएम हॉस्पिटल में कार्यरत रहे। 1943 में बैंक ऑफ बीकानेर में अधिकारी पद पर नियुक्त हुए। तत्पश्चात् यही बैंक 1963 में स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर बना जहां से वे 1976 में सहायक महाप्रबन्धक के पद से सेवानिवृत हुए।

सोहनलाल जी का व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था। वे परिवार के लिए पूर्ण रूप से समर्पित थे। जब भी कोई उनके पास किसी प्रकार की सहायता के लिए आता तो उसकी हर सम्भव सहायता किया करते थे। वे अपनी बात को अति प्रभावशाली ढंग से कहते थे। वे न केवल अपने भाइयों, भतीजों व बहनों के बच्चों का ध्यान रखते थे, बल्कि ससुराल वालों के बच्चों का भी ध्यान रखते थे। मुरारी लाल कुक्कड़ को मेडिकल कॉलेज में प्रवेश दिलाना व उनको अपने साथ रखकर पढ़ाई करवाना तथा नौकरी लगवाना एक बहुत बड़ा उदाहरण है। इसके साथ ही श्री लक्ष्मण दास जी का हर कार्य में सहयोग देना प्रशंसनीय है। वे सुबह साढ़े चार बजे उठकर लंबी सैर के लिए जाया करते थे। सैर से वापिस आकर चाय पीते थे और फिर बैडमिंटन खेलने के लिए घर के पास ही बने सामाजिक भवन में चले जाते थे, जिसके निर्माण में उनका सक्रिय योगदान रहा, और वे आजीवन उसके ट्रस्टी बने रहे।

श्री सोहनलाल जी चुग की सबसे बड़ी बेटी श्रीमती संतोष रानी की शादी श्री केवल कृष्ण गड्डी से हुई जिनके तीन बेटे और एक बेटी है और वे सभी जयपुर में रहते हैं। सोहनलाल जी की छोटी बेटी डॉ. शशी अरोड़ा लंदन में रहती हैं। इनकी शादी स्वर्गीय डॉ. रवि जी अरोड़ा से हुई। इनके दो बेटे हैं। वे बहुत ही अच्छे स्वभाव के हैं। सोहनलाल जी की मंझली बेटी सुषमा कनाडा में रहती हैं। इनकी शादी श्री राजेश चन्द्रा जी से हुई। इनका एक बेटा और एक बेटी है जो कि कनाडा में ही रहते हैं। श्री सोहन लाल जी के बेटे डॉ. जॉली की शादी श्रीगंगानगर में बनवारीलाल मुंजाल की बेटी डॉ. रेणुका से हुई।

श्री सोहनलाल जी आध्यात्मिक प्रवृति के थे। उन्होंने सदैव सबका भला चाहा। उन्होंने अपने भतीजों, दामादों तथा अन्य बहुत से रिश्तेदारों की बैंक की नौकरी लगवाने हेतु मदद की। समय-समय पर सब उनसे मिलने आया करते थे। अपनी बहन लाजवंती देवी से उनका बहुत लगाव था और हर तरह से उनका ख्याल रखते थे। अपने भांजे-भांजियों की शादियों में परिवार सहित जाते थे। सब उन्हें आदर्शवादी मामा मानते थे। जयपुर में अपने रिश्तेदारों को लाने में भी उनका बहुत बड़ा योगदान रहा। वे अपनी कार्य कुशलता, व्यवहारिकता के कारण सबको अच्छे लगते थे। उन्होंने अपनी नातिन शालिनी की शादी अर्जुनदास सेतिया के बेटे राजेन्द्र कुमार सेतिया से करवाई। यह सारा श्रेय उन्हीं को जाता है। उन्होंने महेन्द्र कुमार के एक्सीडेंट में पैर में हुए फैक्चर के इलाज हेतु एक वर्ष तक उसे अपने पास रखा। सोहनलाल जी चुग की जितनी प्रशंसा की जाए कम ही होगी। उनका जीवन अत्यन्त अनुशासित और अपने आपमें मिसाल रहा। वे समय के बड़े पाबंद थे। उनकी इच्छा रहती थी कि हर बच्चा उच्च शिक्षा अवश्य प्राप्त करे। इस हेतु वे अपने बच्चों, भतीजों एवम् भांजों को सदैव प्रोत्साहित करते रहते थे। उनके कुशल मार्गदर्शन में उनके बड़े भाई श्री बालकिशन दास जी के बेटे श्री जयलाल चुग और श्री अमरचंद चुग तथा दामाद श्री लापजतराय जी सेतिया और श्री टेकचंद नागपाल ने बैंक में नौकरी प्राप्त करते हुए ऊंचे-ऊंचे पदों पर कार्य किया। भतीजे अमर चंद को पी.एचडी. करवाने में मुख्यत: उनकी प्रेरणा ही थी और उनका सहयोग बहुत काम आया। श्री सोहनलाल जी का 7 अक्टूबर, 1997 में 81 वर्ष की उम्र में देवलोकगमन हो गया।

'एक दूसरे की 'प्रसन्नता में हार्दिक रूप से प्रसन्न रहने वाले भाई-बहन'



श्रीमती लाजवंती देवी अपने भाई श्री बिहारी लाल जी के साथ

श्रीमती लाजवंती देवी के सबसे छोटे भाई थे बिहारी लाल चुग। इनका जीवन अत्यन्त संघर्षपूर्ण रहा। इन्होंने कई तरह का व्यवसाय किया। इनके पाँच पुत्र स्वर्गीय सेवा सिंह, स्व. कर्मचंद, मनोहरलाल, सुभाषचंद्र एवम् नरेश कुमार के परिवार आज सर्वसम्पन्न है। सभी जयपुर में ही निवास करते हैं। उनकी बेटी श्रीमती लाजवंती देवी धमीजा का परिवार भी जयपुर में ही अच्छा जीवन व्यतीत कर रहा है। श्री बिहारीलाल चुग का जीवन सादगीपूर्ण रहा। सदैव स्वस्थ रहे। उनके स्वास्थ्य का मुख्य कारण था उनका संयमित जीवन और समय पर भोजन करना और ज्यादा से ज्यादा पैदल चलना। आजादी से पहले वो बहावलनगर से अनूपगढ़ अधिकतर पैदल ही चलकर आ जाते थे। इसी तरह से सूरतगढ़ से अनूपगढ़ लगभग 75 किलोमीटर पैदल चलने में भी उन्हें कठिनाई महसूस नहीं हुई।

श्री बिहारीलाल जी दुनिया की सारी खबरें रखते थे। उर्दू का अखबार नित्य पढ़ना उनकी जीवन शैली का अंग बन गया था। किसी भी विषय पर बात करते ही उनके ज्ञान एवं अनुभव से सामने वाला प्रभावित हो जाता था। ईश्वर का नाम स्मरण करने और सदैव प्रसन्न रहने से उनकी एक अलग ही पहचान बन गई थी। उन्होंने शांति, धैर्य और संतोष से परिपूर्ण जीवन व्यतीत किया। श्री बिहारीलाल जी अपनी बात बड़ी बेबाकी के साथ कहा करते थे। उनका अपने भतीजे डॉक्टर अमरचंद चुग से गहरा लगाव था। 1994 की बात है जब अमरचंद जी स्टाफ ट्रेनिंग सेंटर में थे। एक दिन उनके चाचा बिहारीलाल जी उनके पास आए और परिवार के बच्चों की बातें होने लगी। बातों-बातों में उन्होंने कहा कि अर्जुन सेतिया का बेटा राजेन्द्र बिल्कुल उनके भाई साहब श्री सोहनलाल जी के नक्शेकदम पर चल रहा है। कम बोलना और उसकी विनम्रता एक दिन उसे बहुत आगे ले जाएगी। 1994 में उनके द्वारा की गयी भविष्यवाणी आज पूर्णतया सत्य साबित हो रही है। हम श्री बिहारीलाल जी की दूरदर्शिता के कायल हैं। श्री बिहारीलाल जी का देवलोकगमन 2019 में 99 वर्ष की आयु में हुआ। वे हमारे लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहे।



स्व. श्री रामप्रकाश जसूजा
(सुपुत्र श्रीमती माया देवी जसूजा-
स्व. श्री घनश्याम दास जी जसूजा)

श्रीमती माया देवी जसूजा

श्रीमती लाजवंती देवी की बड़ी बहन श्रीमती माया देवी का विवाह श्री घनश्यामदासजी जसूजा से लगभग 17 वर्ष की उम्र में हुआ। पाकिस्तान बनने के बाद उनका परिवार श्रीगंगानगर आ गया। श्रीमती माया देवी का देहान्त पैंतीस वर्ष की उम्र में ही हो गया था। उनका एक पुत्र एवम् दो पुत्रियां थी। उनके सुपुत्र श्री रामप्रकाश जसूजा एल.आई.सी. की नौकरी से 1995 में रिटायर हुए और उनका देहान्त 2012 में हुआ। उनकी धर्मपत्नी एवम् तीन बेटियां जयपुर में ही निवास करती हैं। बेटा राजू दिल्ली में स्वयं का व्यवसाय करता हुआ सम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा है। श्रीमती मायादेवी की पुत्रियों स्व. श्रीमती बिशनी देवी छाबड़ा एवम् भगवानी देवी भटेजा के परिवार श्रीगंगानगर में निवास कर रहे हैं।

'मिलना बिछड़ना जीवन का दस्तूर'



स्व. श्री गिरधारीलाल जी सेतिया - स्व. श्रीमती लांजवती देवी सेतिया

लाजवंती देवी और श्री गिरधारीलाल जी की शादी बहावलनगर (पाकिस्तान) में ही हो गई थी। जिन लोगों ने इस खूबसूरत शादी को अटैंड किया उनके अनुसार उस समय इन दोनों की उम्र लगभग बराबर यानी की सत्रह अठारह ही रही होगी और दूल्हा-दुल्हन के परिवेश में खूब जच रहे थे। उनका व्यक्तित्व सदैव रोबदार रहा। तभी तो सारे आनुवांशिक गुण विरासत के रूप में परिवार को मिले। जैसा कि मैंने पहले बताया कि अर्जुनदास और ज्ञानदेवी का जन्म तो देश के विभाजन से पहले ही हो चुका था। कुछ साल सूरतगढ़ रहने के बाद श्री गिरधारीलाल जी ने जैतसर में अपना घर बनाकर किराने की दुकान शुरू कर ली। संघर्ष तो अभी शुरू हुआ था।

श्री मुंशीराम, गिरधारी लाल, भगवान दास और ठाकरी देवी तो श्री होतचंद जी की पहली पत्नी से थे। होतचंद जी की दूसरी शादी से पाँच बच्चे हुए, जिनका जिक्र पहले किया जा चुका है। उन सबके प्रति श्रीमती लाजवंती देवी ने अपनी जिम्मेदारी पूरी तरह निभाई। आज तक भी सबमें आपसी मेलजोल और प्यार बरकरार है। समय के साथ-साथ जब अपने परिवार बढ़ जाते हैं तो मिलना-जुलना भले ही कुछ कम हो जाता है लेकिन दिलों में प्यार और इज्जत बरकरार रहनी चाहिए। इनके इस परिवार में आने से पहले इनके जेठ मुंशीराम जी की शादी हो चुकी थी। लेकिन बाकी सबकी शादियाँ बाद में हुई। परस्पर विश्वास और प्यार की मिसाल यहीं से पता चलती है कि दूसरी शादी की बहन शीला अपने देवर के लिए भतीजी कमलेश का रिश्ता ले गई। इससे पहले लाजवंती जी ने अपनी सबसे बड़ी भतीजी यानी कि मेरी माँ शांति देवी का रिश्ता अपने चचिया ससुर टोपनदास जी के इकलौते बेटे लाजपतराय जी सेतिया से पाकिस्तान बनने से पहले ही तय करवा दिया था।

उस समय हालात कुछ ऐसे बन गए थे कि पाकिस्तान से विस्थापित होकर आए लोगों को यहाँ के लोग हेय दृष्टि से देखते थे। काफी लोगों ने रिश्ते तोड़ दिए। इस रिश्ते में भी कुछ ऐसे हालात बन गए थे लेकिन श्रीमती लाजवंती देवी ने ऐसा होने नहीं दिया। एक तरफ भतीजी थी तो दूसरी तरफ देवर। इतनी कम उम्र में भी अपनी सूझबूझ का परिचय देते हुए उन्होंने न केवल दोनों तरफ से रिश्ता संभाला बल्कि 5-6 महीने में शादी ही करवा दी। श्रीमती लाजवंती देवी अनेकों गुणों से मालामाल थी। उनका रिश्तों को जोड़ने में प्रबल विश्वास था। उन्होंने दूर-दूर के रिश्तेदारों से भी नाता बनाकर रखा हुआ था। प्रभु भक्ति में उनका अटूट विश्वास था। शादी से पहले ही अनूपगढ़ में आनंदपुर की कुटिया में अपनी माँ के साथ जाना शुरू कर दिया था।

अपने अंतिम समय तक श्री परमहंस अद्वैत मत श्री आनंदपुर में उनका अटूट विश्वास रहा। आनंदपुर आश्रम ग्वालियर के पास है, लेकिन पूरे देश में बहुत से लोग इनके अनुयायी हैं और काफी शहरों कस्बों में इनके आश्रम हैं जिन्हें 'कुटिया' कहा जाता है। अक्सर अपने घर पर कीर्तन करवाना, दान पुण्य करना उनके स्वभाव में शुमार था। बेटे, बहुएं, नाती पोते उन्हें याद करते नहीं थकते। 3 दिसम्बर, 2019 को लगभग 95 साल की उम्र में उन्होंने इस दुनिया को जयपुर में अलविदा कहा। उनके पति श्रीमान गिरधारीलाल जी सेतिया ने 30 अक्टूबर, 2006 में अपनी सांसारिक यात्रा पूरी कर ली थी। परिवारजन तो उनकी कमी महसूस करते ही हैं और हमेशा करते रहेंगे, रिश्तेदार, जान पहचान वालों के लिए भी उन्हें भुलाना संभव नहीं। उनका व्यक्तित्व था ही अद्भुत और चुंबकीय। रिश्तेदार आस-पड़ोस सभी उनसे सलाह लेते और मानते भी थे।

मेरी माँ शांति देवी से श्रीमती लाजवंती देवी सेतिया सिर्फ पाँच-सात साल बड़ी थी। दोनों में बहनों सा प्यार था। वे सभी भतीजे-भतीजियों, भांजे-भांजियों तथा दूर के रिश्तेदारों के प्रति भी अत्यन्त स्नेहपूर्ण थे। अतिथि सत्कार में तो उनका कोई जवाब नहीं था और उनके गुण अगली पीढ़ियों में भी मौजूद हैं। माँ-बाप के आशीर्वाद का ही फल है कि आज सेतिया परिवार तरक्की की बुलंदी पर है। जिस परिवार के बुजुर्गों के चेहरे पर खुशी होती है, असल में वही परिवार खुशहाल है।

Simplicity and naturalness are the truest marks of distinction.

'परम पूजनीय मासी श्रीमती लाजवंती जी सेतिया हमारी 'माँ' समान थी'



-श्रीमती शिवां देवी धर्मपत्नी स्व. श्री राम प्रकाश जसूजा

परम पूजनीय मासी श्रीमती लाजवंती जी सेतिया हमारी 'माँ' समान थी। मेरी सासु माँ श्रीमती माया देवी जी का स्नेह मुझे नहीं मिल पाया क्योंकि उनका स्वर्गवास हमारी शादी से पहले ही हो गया था। हमारी मासी जी से हमें अपार प्यार मिला। हम कई अन्य रिश्तेदारियों के कारण भी एक-दूसरे के निकट ही निकट आते चले गये। मेरी भतीजी प्रेम की शादी मासी जी के बेटे रवि कुमार से हुई और मेरे भतीजे सुभाष की शादी उनकी भतीजी शांति देवी की बेटी रेणु से हुई। हर सुख-दु:ख में हम उनसे सलाह लेकर ही आगे बढ़ते थे। उनके द्वारा समय-समय पर दिए गए मार्गदर्शन से हमें समाज में रिश्तेदारी निभाने में किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। हम सभी उनके प्रति हार्दिक रूप से आभारी हैं और उनको शत-शत नमन करते हैं।

स्व. श्रीमती लाजवंती देवी जी की प्रिय भानजियाँ



श्रीमती विशनी बाई छाबड़ा एवं स्व. श्रीमती भगवानी देवी



सीमा जसूजा - नवनीत

(श्रीराम प्रकाश जसूजा और श्रीमती शिवां देवी के पुत्र और पुत्रवधू)
पापा जी की मौसी जी और मौसा जी का स्नेहभरा आशीर्वाद हमें हमेशा मिलता रहा। पापा जी मासी जी को अपनी माँ के रूप में देखते थे।



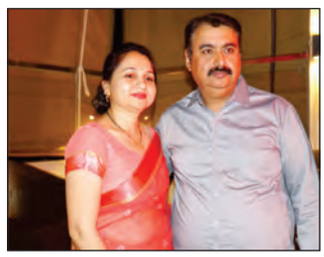
नीरू - विक्रम नरूला

(श्रीराम प्रकाश जसूजा -श्रीमती शिवां देवी की पुत्री और दामाद)
पापा जी की मौसी और मौसा जी का स्नेहभरा सहयोग और मार्ग दर्शन हमारे परिवार को सदैव मिलता रहा। हम उनके प्रति हार्दिक रूप से कृतज्ञ हैं।



कुसुम - राकेश अरोड़ा

(श्रीराम प्रकाश जसूजा और श्रीमती शिवां देवी की पुत्री और दामाद)
पापा जी की मौसी और मौसा जी के आशीर्वाद और मागदर्शन के फलस्वरूप आज सेतिया परिवार नई उचाइयों को छू रहा है। हमें उन पर गर्व है।



सपना - रूबी डाँग

(श्रीराम प्रकाश जसूजा और श्रीमती शिवां देवी की पुत्री और दामाद)
पापा जी की मौसी और मौसा जी का हमारे परिवार से विशेष लगाव रहा। हमारी दादी जी के देवलोकगमन के बाद पापा जी की मौसीजी ने ही उनका ख्याल रहा।

'सेवा भाव से प्रेरित विकास पथ पर बढ़ते कदम'



-डॉ. अमर चुग

सेवा भाव से प्रेरित विकास पथ पर बढ़ने वाला प्रत्येक कदम तो ईश्वर की ओर बढ़ाए जाने वाला अगला कदम ही है। श्री गिरधारी लाल जी सेतिया एवं श्रीमती लाजवंती देवी जी ने अपने पुरुखों से प्राप्त किए गए संस्कारों को अपने जीवन में उतारते हुए विकट विपत्तियों को भी धैर्यपूर्ण साहस के धागे में पिरोते-पिरोते अंतत: अनमोल मोतियों की माला में परिवर्तित कर डाला।



देश के विभाजन के पश्चात् श्री गिरधारी लाल जी सेतिया ने परम सत्ता में विश्वास रखते हुए वर्षों तक कड़ा परिश्रम किया। उनके विश्वास की शक्ति ने उन्हें मुसीबतों के घने अंधकार में भी निराश नहीं होने दिया। कुछ वर्ष तक आजीविका के लिए सूरतगढ़ में संघर्षरत रहने के पश्चात् श्री गिरधारी लाल जी सेतिया और उनके भाईयों के परिवार जैतसर मंडी आ गए। यहां गिरधारीलाल जी ने श्री मूलचन्द जी सनेजा के साथ साझेदारी में किराने की दुकान से व्यापार की शुरुआत की। उनके विश्वास, अथक परिश्रम और धैर्य के परिणामस्वरूप काम चल निकला। उनकी लगन और व्यावहारिक ईमानदारी के कारण उनका व्यवसाय बढ़ता चला गया। जब श्री गिरधारी लाल जी के सुपुत्र व्यवसाय में सक्रिय सहयोग प्रदान करने लगे तो उनके किराना व्यवसाय में दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की होने लगी।



गुरुद्वारा अरोड़वंश सभा, जैतसर

श्री गिरधारी लाल जी और उनके परिवार के सदस्य जनहित के प्रति सदैव समर्पित रहे। उन्होंने अपनी कथनी और करनी को हमेशा एक समान रखने का प्रयास किया। वे कहा करते थे कि परिवार और समाज में संगठित रहते हुए जन कल्याण तथा बेजुबान पशु-पक्षियों के लिए जो भी किया जा सकता है करते रहना चाहिए। उन्होंने मन, कर्म और वचन से प्रेमपूर्ण और त्यागपूर्ण जीवन जीते हुए समाज को सदैव सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास किया। श्रीमती लाजवंती जी प्रतिदिन जरूरतमंद व्यक्तियों के लिए अतिरिक्त भोजन तैयार किया करती थीं। पक्षियों को नियमित रूप से दाना-पानी देना उनकी दिनचर्या का महत्त्वपूर्ण हिस्सा था। श्री गिरधारी लाल जी और श्रीमती लाजवंती देवी के परोपकारी जीवन से प्रेरणा प्राप्त करते हुए सेतिया परिवार के सदस्यों ने सेवा धर्म को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लिया है। जैतसर में सेतिया परिवार के घर के पास वाला अरोडवंश गुरुद्वारा परिवार की आस्था का केन्द्र रहा है। परिवार के सदस्य वहां प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक मत्था टेकने जाया करते थे। गुरुद्वारे के प्रति श्रद्धाभाव से प्रेरणा प्राप्त हुए श्री गिरधारी लाल जी सेतिया ने अपने परमपूज्य पिता श्री होतचन्द जी की स्मृति में 1990 में इस गुरुद्वारे में एक कमरे का

निर्माण करवाया। जैतसर के मेन बाजार में स्थित गुरुद्वारा सिंह सभा के नवीकरण के दौरान श्रीमती लाजवंती देवी ने 2010 में एक लाख रुपये की सेवा राशि भेंट की। जैतसर से 18 किलोमीटर दूर श्री विजयनगर की अरोड़वंश धर्मशाला में अर्जुनदास, रविकुमार और महेन्द्र कुमार सेतिया ने 2014 में 2 कमरों का निर्माण करवाया।



स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल जी एवं श्रीमती लाजवंती देवी ने धर्म पथ पर चलते हुए जैतसर में श्री परमहंस अद्वैतमत (श्री आनंदपुर) की कुटिया का निर्माण करवाने के लिए तन-मन-धन से सहयोग प्रदान किया। वे मंदिर, गुरुद्वारे तथा जनहित की गतिविधियों के लिए भरपूर योगदान किया करते थे। गर्मी के मौसम में प्यासों की जरूरत को देखते हुए वे प्याऊ लगवाया करते थे। अपनी तथा पास पड़ोस वालों की पानी की जरूरत को पूरा करने के लिए उन्होंने जैतसर में अपने निवास स्थान के पास हैण्डपम्प लगवाया। उन्होंने अपनों को हमेशा यह आभास दिलाया कि वे अकेले नहीं हैं।

1987 में श्री गिरधारी लाल जी ने अपने बड़े बेटे अर्जुनदास



श्री आनंदपुर कुटिया, जैतसर

को पेट्रोल पम्प की डील के लिए जयपुर भेजा। सेतिया परिवार ने 1990 में जयपुर में पेट्रोल पम्प व्यवसाय प्रारम्भ किया। परिवार द्वारा कुछ वर्ष पश्चात् टोंक रोड स्थित पेट्रोल पम्प की डीलरशिप ले ली गई। स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल जी सेतिया और श्रीमती लाजवंती देवी द्वारा परिवार में बच्चों को प्रदान की गई संस्कारों की सौगात ने उनकी भव्य सफलता का मार्ग तैयार कर दिया। सेतिया परिवार के सदस्य व्यवसाय के लिए धीरे-धीरे जैतसर से जयपुर शिफ्ट होने लगे। श्री गिरधारी लाल जी की अगली पीढ़ी में रचनात्मक रूप से कुछ नया करने की चाह थी। 1994 में राजेन्द्र सेतिया ने जयपुर में SK फाइनेंस लिमिटेड की स्थापना की। प्रभु कृपा और बुजुर्गों के आशीर्वाद से धीरे-धीरे नई पीढ़ी के सपने साकार होने लगे।



भूखे व्यक्तियों को भोजन कराना : आत्मा की खुराक

न्यू इंडिया एश्योरेंस में 20 वर्ष का सेवाकाल पूर्ण होने पर रवि कुमार सेतिया ने 1998 में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति प्राप्त की और नई उमंग के साथ सेतिया ऑटो फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड की शुरुआत की। SK फाइनेंस लिमिटेड तथा सेतिया ऑटो फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड की भव्य सफलता से प्रेरणा प्राप्त करते हुए सेतिया परिवार के अन्य सदस्यों ने भी अपनी-अपनी स्वयं की फाइनेंस कंपनी की स्थापना की। आज स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल जी के तीनों बेटों के सुपुत्र - सुरेन्द्र कुमार सेतिया, राजेन्द्र कुमार सेतिया, राजकुमार सेतिया, रॉबिन सेतिया, नितिन सेतिया, विपुल सेतिया और संकुल सेतिया जयपुर में निम्नलिखित फाइनेंस कंपनियों का सफल संचालन करते हुए विकास पथ पर निरंतर अग्रसर हैं:

- SK फाइनेंस लिमिटेड
- सेतिया ऑटो फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड
- डायमंड कैपफिन प्राइवेट लिमिटेड
- मेट्रोसिटी फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड
- रकम क्रेडिट प्राइवेट लिमिटेड

फाइनेंस व्यवसाय के क्षेत्र में सेतिया परिवार के उक्त व्यावसायिक प्रतिष्ठानों का यह प्रयास रहा है कि अधिक से अधिक लोगों को वित्तीय सेवाएं प्रदान करते हुए उनके जीवन स्तर में सुधार लाया जाए।



सरस्वती बालिका विद्या मंदिर, जवाहर नगर, जयपुर में शालिनी सेतिया, डायरेक्टर एस.के. फाइनेस बालिकाओं के उज्जवल भविष्य के सपनों को पंख प्रदान करते हुए

सेतिया परिवार के सदस्यों के परस्पर प्रेम की शक्ति इनके जीवन पथ को प्रकाशमय करते हुए इन्हें निरन्तर आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित करती रही है। अर्जुनदास, रवि कुमार और महेन्द्र कुमार सेतिया ने परिवार को दिव्य उपहार माना है और परिवार में सदैव एक दूसरे को भावनात्मक सहयोग प्रदान करते हुए परिवारजन की खुशियों में ही अपनी खुशी को तलाशा है। इन्होंने अपने स्व. पिता श्री गिरधारी लाल जी सेतिया की पावन स्मृतियों को बनाए रखने के लिए तथा उन द्वारा प्रदान किए गए नि:स्वार्थ सेवाभाव के सुंदर संस्कारों को भावी पीढ़ियों तक पहुंचाने के लिए जनवरी 2007 में गिरधारी लाल सेतिया मेमोरियल ट्रस्ट की स्थापना की। इस ट्रस्ट द्वारा असहाय व्यक्तियों की यथासंभव सहायता की जा रही है तथा शिक्षा, स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में सेवा कार्य नि:स्वार्थ भाव से किए जा रहे हैं।



सरस्वती बालिका विद्या मंदिर, जवाहरनगर, जयपुर के व्यवस्थापक मनोहरलाल नागपाल विद्यालय वाहन समर्पण कार्यक्रम में राजेन्द्र कुमार सेतिया, मैनेजिंग डायरेक्टर, SK फाईनेंस का अभिनंदन एवं सत्कार करते हुए

दयालुता भरा कोई कार्य निष्फल नहीं रहता। निश्छल प्रेम और नि:स्वार्थ सेवाभाव का जीवन जीने वालों के तो पीछे-पीछे खुशियां दौड़ती ही रहती हैं।

SK फाइनेंस लिमिटेड की वर्तमान में उत्तर-पश्चिम भारत के 10 राज्यों में 416 शाखाएं सफलतापूर्वक चल रही हैं। कंपनी शीघ्र ही दक्षिण भारत में भी अपनी शाखाएं खोलने जा रही हैं। SK फाइनेंस लिमिटेड के एम.डी. राजेन्द्र कुमार सेतिया ने सामाजिक उत्थान के लिए SK फाउंडेशन की स्थापना की। गिरधारी लाल सेतिया मेमोरियल ट्रस्ट तथा SK फाइनेंस के समर्पित सदस्यों को



सेवा पथ पर चलते हुए सदैव यह आभास हुआ है कि बहते आंसुओं को मुस्कान में परिवर्तित करना ही सर्वोत्तम उपासना है।

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, जैतसर की परम आवश्यकता को देखते हुए SK फाइनेंस की ओर से बड़ा हॉल बनवाया जा रहा है। इस हॉल का निर्माण कार्य अंतिम चरण में है। सरस्वती बालिका उच्च माध्यमिक विद्या मंदिर, जवाहर नगर, जयपुर में दूर-दराज से आने वाली बालिकाओं की सुविधा के लिए SK फाइनेंस ने सरस्वती बालिका विद्या मंदिर को स्कूल बस भेंट की। बच्चों के संतुलित विकास के मध्य नजर सरस्वती बालिका विद्या मंदिर में SK फाइनेंस के सौजन्य से शिशु उद्यान विकसित किया गया। बच्चों को शारीरिक और मानसिक रूप से फिट रखने के लिए उद्यान में स्विमिंग पूल बनाया गया तथा विभिन्न प्रकार के





जयपुर जिले के ग्रामीण अंचल की आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की महिलाओं को स्वरोजगार के योग्य बनाते हुए उनके जीवन को महकाने के लिए निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान करते हुए कुमारी तान्या सेतिया

आकर्षक झूले लगाए गए। बच्चों के लिए वातावरण रुचिकर बनाने के लिए तथा उनके समुचित विकास के लिए चिड़ियाघर विकसित किया गया। बच्चों को ऐसे आकर्षक तथा ज्ञान प्रदान करने वाले खिलौने भेंट किए गए जो कि उनका मनोरंजन करते हुए एकाग्रता के गुण को विकसित करें। बच्चों की प्रतिभा को तीव्रता से निखारने के लिए हाई-टेक क्लासरूम तैयार करवाया गया। सुंदर रंग बिरंगे फर्नीचर द्वारा क्लासरूम को बच्चों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनाया गया।



स्किल डेंवलमेंट सेंटर, निवारू द्वारा प्रशिक्षित की गई महिलाओं के साथ कुमारी तान्या सेतिया

सशक्त महिलाओं के सक्रिय योगदान के बिना स्वस्थ समाज का निर्माण असंभव है। SK फाइनेंस ने महिलाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए तथा उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्किल डेवलपमेंट सेंटर निवारू को 17 सिलाई मशीनें और एक प्रिंटिंग मशीन भेंट की। इन मशीनों की सहायता से 100 से अधिक महिलाओं को प्रशिक्षित किया जा चुका है। SK फाईनेंस की ओर से कुमारी तान्या सेतिया द्वारा समर्पण भाव से जयपुर जिले की आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की ग्रामीण महिलाओं को हस्तशिल्प प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। SK फाइनेंस द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के स्कूल के विद्यार्थियों की बकाया फीस का भुगतान किया गया ताकि वे आत्मविश्वास के साथ अपनी पढ़ाई जारी रखते हुए आत्मनिर्भर बन सकें। अलग-अलग क्षेत्रों के विद्यालयों में समय पर भोजन पहुंचाने के लिए हरे कृष्णा ट्रस्ट, जयपुर को चौपहिया वाहन भेंट किया गया।

विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बच्चों और किशोरो की चिकित्सा संबंधी तथा अन्य मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रति संवेदनशीलता दिखाते हुए जुलाई 2022 में आदर्श नगर जयपुर में SK फाईनेंस के तत्वावधान में एस.के. बेबीलोन न्यूटन इंस्टीट्यूट ऑफ चाइल्ड एंड एडोलसेंट डेवलेमेंट का शुभाम्भ हुआ। यह इंस्टीट्यूट बहु विषयक अद्वितीय संस्थान है जो कि बाल विकास अनुसंधान तथा बच्चों की क्षमता को पूर्णतया विकसित करते हुए उनके जीवन को सुखी एवं प्रशंसनीय बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहा है।





श्री कृष्ण गौशाला, जैतसर

सेतिया परिवार गायों की सेवा के प्रति पूर्णतया समर्पित है। गिरधारी लाल सेतिया मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा श्रीकृष्ण गौशाला, जैतसर में गायों को तपती धूप और ठंड से बचाने के लिए शेड का निर्माण करवाया गया। SK फाइनेंस की ओर से बेगस गौशाला सेवा समिति को गायों के चारे, रखरखाव और इलाज के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया।

गिरधारी लाल सेतिया मेमोरियल ट्रस्ट तथा SK फाइनेंस लिमिटेड की ओर से स्वास्थ्य के क्षेत्र में भरपूर सहयोग प्रदान किया जा रहा है। दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल व्यक्तियों तथा गंभीर मरीजों को तत्काल अस्पताल पहुंचाने की आवश्यकता को देखते हुए जैतसर में सरकारी अस्पताल को एम्बुलेंस दान स्वरूप भेंट की गई।

मानवता के प्रति अपना कर्तव्य निभाते हुए सेतिया परिवार सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान के लिए सदैव प्रयत्नशील रहा है। कोरोना महामारी के दौरान जब लोग बहुत बड़ी संख्या में संक्रमित हो रहे थे और अस्पताल में ऑक्सीजन की कमी आ चुकी थी तो असहाय मरीजों के लिए परिवार की ओर से अस्पताल को ऑक्सीजन कंसंट्रेटर भेंट किए गए। कोरोना वायरस की महामारी में



सरस्वती बालिका विद्या मंदिर, जवाहर नगर, जयपुर की चारदिवारी से सटे मुख्य मार्ग पर सेतिया परिवार द्वारा राहगीरो के लिए की गई शीतल पेयजल की स्थाई व्यवस्था



राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, जैतसर

जरूरतमंदों को भोजन सामग्री, दवाइयां, फेस मास्क व सेनिटाइजर वितरण द्वारा मानवीय सहायता प्रदान की गई। कोरोना महामारी के दौरान गिरधारी लाल सेतिया मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा 2 वर्ष तक प्रतिदिन 600 फूड पैकेट्स जरूरतमंदों तक पहुंचाए गए। SK फाइनेंस ने कोरोना से जुड़े राहत कार्यों के लिए मुख्यमंत्री सहायता



SK फाइनेंस के तत्त्वावधान में निर्माणाधीन हॉल

कोष में 21 लाख रुपये और भास्कर फाउंडेशन में 2 लाख रुपये की सहायता राशि प्रदान की। सेतिया परिवार के सदस्य इस सकारात्मक विचार के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रयत्नशील हैं कि परस्पर सहायता के लिए उठे छोटे-बड़े हाथ ही समाज का नवनिर्माण करते हुए मानव जीवन को खुशियों के इन्द्रधनुषी रंगों से भर सकते हैं।



राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, जैतसर

'जैतसर में बीते दिन : यादों के झरोखे से'



-रवि कुमार सेतिया

हम परिवार की कर्मभूमि जैतसर को कभी भूल नहीं सकते। हमारी प्रारंभिक अवस्था और बाल्यावस्था के मस्ती भरे दिन और किशोरावस्था के कुछ विशेष कर गुजरने के उत्साह भरे दिन माता-पिता के अनमोल साये में जैतसर में बीते। जैतसर में माता-पिता और गुरुजन का कुशल मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए हमारे कदम परिपक्वता की ओर बढ़े। अपनों के प्रेमपूर्ण सहयोग तथा समयानुसार स्वयं में लाए जाने वाले सकारात्मक सुधारों से दिशा प्राप्त करते हुए हम गिरते-संभलते मिलकर लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ते रहे।

जैतसर में परिवार के सदस्यों द्वारा हर रिश्ते को खूबसूरती के साथ निभाने का अहसास आज भी अन्तर्मन को महका देता है। जैतसर में रहते हुए जीवन पथ पर हमारे साथ चलने वाले सदैव हमारे दिलों के करीब रहे हैं जो कि समय-समय पर यादों के झरोखे से हमारी रुह में उतर आते हैं। दिल से निभाए जाने वाले रिश्तों के रंग-बिरंगे फूलों की महकती बगिया से मंद-मंद बहती हुई मधुर यादों की हवाएं आज भी जीवन को फूलों सा महका देती हैं।

हमारे माता-पिता ईश्वर की शक्ति को जीवन का आधार बनाकर खून के और दिल के सारे रिश्ते निभाते रहे और जीवन पथ पर अपनों के साथ मिलकर आगे बढ़ते रहे। हमने उनसे ही जाना कि त्यागपूर्ण प्रेम जीवन को जीने योग्य बनाता है। पिताजी के 6 सच्चे मित्र थे जो कि दिल की बातें एक दूसरे से साझा किया करते थे। उनके मित्र सदैव एक दूसरे के दिल से जुड़े रहे। उनकी जीवन भर चलने वाली मित्रता का अटूट रिश्ता प्रेरणादायक मिसाल है। 1956 में पिताजी ने अपने मित्र श्री मूलचन्द जी सनेजा के साथ मिलकर जैतसर में किराना व्यापार शुरू किया। परस्पर विश्वास और मैत्रीपूर्ण प्रेम पर आधारित साझेदारी ने उन्हें कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने और विकास पथ पर आगे बढ़ते रहने के लिए नई शक्ति प्रदान की। सर्वश्री मूलचन्द सनेजा, लालचंद जी मुंजाल, प्यारे लाल आहूजा व मास्टर किशनलाल जी थरेजा, श्री हंसराज जी अग्रवाल, लोहा व्यापारी के साथ पिताजी की सच्ची दोस्ती की मिसाल आज भी प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा समय-समय पर दी जाती है।

हमारे भाईसाहब श्री अर्जुनदास जी का जन्म मई 1945 में बहावलनगर (पाकिस्तान) में हुआ। हमारी ज्ञान बहनजी का जन्म भी वहीं का है। देश के विभाजन से मात्र 6 महीने पहले ही उनका जन्म हुआ था। देश के विभाजन के परिणामस्वरूप हमारे परिवार को विकट विपत्तियों के दौर से गुजरना पड़ा। हमारे परदादा श्री माछीराम जी और दादा श्री होतचंद जी अकस्मात ही अपना सब कुछ छोड़कर परिवार के सभी सदस्यों के साथ बहावलनगर (पाकिस्तान) से सूरतगढ़ आए। आजीविका के साधनों का अभाव अपने आपमें बहुत बड़ी समस्या थी। विभाजन के बाद के शुरुआत के कुछ वर्ष हमारे परिवार के लिए बहुत ही संघर्षपूर्ण रहे। हमारे पिताजी, ताऊजी और चाचाजी ने जब रोजी-रोटी के लिए जैतसर की ओर कूच किया तो संघर्ष करते-करते वहीं बस गए और जैतसर ही उनकी कर्मभूमि बन गया। मेरा, महेन्द्र कुमार और मेरी तीन बहनों- कमलेश रानी, उषा

हमारे पिताजी के सच्चे मित्र - जीवन की बगिया के महकते पुष्प



स्व. श्री मुंशीराम जी भटेजा



स्व. मास्टर श्री कृष्णालालजी थरेजा



स्व. श्री अमरलाल जी वधवा



स्व. श्री हंसराजजी बंसल



स्व. श्री प्यारेलाल आहूजा



स्व. श्री मूलचंद जी सनेजा



गुजरे जमाने की याद दिलाते जैतसर में ऊँट गाड़ी के साथ
सरदार सुलक्खन सिंह

रानी, सुनीता रानी का जन्म जैतसर में ही हुआ।

बचपन के मस्ती भरे दिन भुलाए नहीं भूलते। मासूमियत की उस अवस्था में आनंद ही आनंद था। तब हम में कहां सोच थी उन विपत्तियों को समझने की जिनसे परिवार जूझ रहा था। सारा-सारा दिन उलछना-कूदना, बेवजह खुश रहना, कागज की नाव को बहते पानी में बहाना और तालिया बजाना, बारिश के बाद महकती मिट्टी के घर बनाना हमें आज भी याद है। हमें याद है छोटी-छोटी बातों पर रूठ जाना, बात बात में आपस में लड़ना और देखते ही देखते मान जाना। जैतसर में हमारे मकान के दाईं ओर हमारे बड़े दादाजी निहालचन्द जी रहा करते थे। उनके मकान के सामने वाला मकान सरदार सुलक्खन सिंह जी का था। उनके घर के बाहर बहुत बड़ा पेड़ था। उस बड़े पेड़ की मजबूत शाखा के साथ हमारे पिताजी ने रस्सी बांधकर बच्चों के लिए रस्सी का झूला बनाया था, जिसका हम भाई-बहन और पास-पड़ोस के बच्चे भरपूर आनंद उठाया करते थे। पास में ही शहतूत का पेड़ भी था। झूले लेते-लेते हम कई बार शहतूत खाने का आनंद भी लिया करते थे। कोमल पंखों वाली उड़ती हुई रंग-बिरंगी तितलियां खुशनुमा वातावरण के आकर्षण में चार चांद लगा दिया करती थीं।

जैतसर में हमारे घर के आगे लगभग 50 फुट की दूरी से कलकल करते बहते पानी का खाला/नाला निकलता था। सरूपसर के निकट गंगनहर से सिंचाई के लिए शुरू होने वाला यह खाला/नाला खेतों से होता हुआ जैतसर मंडी पहुंचता था। कुछ वर्ष बाद उस नाले का मार्ग बदल दिया गया था। उन दिनों जैतसर में हमारे घर के सामने का बहुत बड़ा हिस्सा बिल्कुल खाली पड़ा था। उस जमीन को हमारे पिताजी ने इतनी अच्छी तरह समतल करवा दिया कि हमारे जैसे हर पल खेलते रहने वाले बच्चों के लिए तो वो खेल का अजब मैदान ही बन गया। वहां हम भाई-बहन तथा पास-पड़ोस के बच्चे तरह-तरह के खेल खेला करते थे। हमारे बचपन के खेल भी निराले थे जो कि बहुत पीछे छूट गए। कभी हम खो-खो, कभी गिल्ली-डंडा तो कभी छुपन-छुपाई जैसे खेल खेलते। कंचे खेलने का भी बहुत शौक हुआ करता था। रंग-बिरंगे कंचे देखते ही देखते हमारे बचपन के जीवन में रंग भर जाया करते थे। हमें जो पैसे जेब खर्च के लिए मिला करते थे शुरुआत में वो कंचों पर ही खर्च हो जाया करते थे। बाद में पिताजी से बचत की प्रेरणा प्राप्त करते हुए हम पैसा जोड़ने लगे। बचपन में कंचों का भंडार हमारा अनमोल खजाना हुआ करता था। कंचों की बढ़ती संख्या हमारे चेहरे की चमक को बढ़ाया करती थी। कितने निराले थे बीते बचपन के वो दिन। बचपन में खेल से कभी मन भरता ही नहीं था। बदलते मौसम के साथ हमारे खेल भी बदल जाया करते थे। आकाश में उड़ती पतंग देखने पर हमें भी पंख मिल जाया करते थे। हम कॉपी के पेज से अक्सर पतंग बनाया और उड़ाया करते थे। शाम के समय हम प्राय: कबड्डी और वॉलीबाल खेला करते थे। दिन हो या रात खेल और मस्ती कभी रुकने का नाम ही नहीं लेते थे। कितने खूबसूरत हुआ करते थे हमारे बचपन में चांदनी रात के खेल।

हम सब भाईबहनों की आठवीं तक की शिक्षा जैतसर के राजकीय मिडिल स्कूल में ही हुई। तब जैतसर में कोई प्राइवेट स्कूल नहीं था और सरकारी स्कूल आठवीं तक ही था। भाई साहब अर्जुनदास जी ने पढ़ाई के साथ-साथ पिताजी के काम में भी हाथ बंटाना शुरू कर दिया था। आठवीं पास करने के बाद भाईसाहब ने गंगानगर जाकर दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त की और पदमपुर में श्री मिलखी राम जी से हिसाब-किताब रखने की पद्धति को सीखने के बाद 15 वर्ष की उम्र में ही हमारे पिताजी ने उन्हें किराने का स्वतंत्र व्यवसाय प्रारम्भ करवा दिया था।



राजकीय मिडिल स्कूल, जैतसर
(हम सातों भाई-बहनों का आठवीं तक का शिक्षा केन्द्र)

मैं जब पांचवीं कक्षा में था तो मेरे छोटे भाई महेन्द्र ने जैतसर के सरकारी स्कूल की पहली कक्षा में प्रवेश प्राप्त किया था। हमारी रुचि तो हर पल खेलने में ही रहती थीं। स्कूल जाकर जो पढ़ लेते थे, हमारे लिए तो वही पर्याप्त से भी अधिक था। छुट्टी की घंटी बजते ही हम नीलगगन के पक्षी बन जाया करते थे। जैतसर में हमारा स्कूल

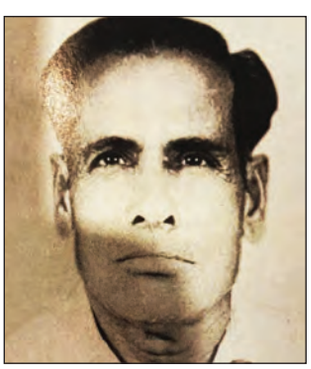
हमारे घर से लगभग 300 मीटर की दूरी पर था। छुट्टी होने के बाद उछलते-कूदते हम घर आते, खाना खाते और फिर निकल पड़ते अपने पसंदीदा खेल अभियान पर। उन दिनों जैतसर में सरकारी स्कूल का क्षेत्र तो विशाल था। परन्तु कमरे गिने-चुने ही थे। तब स्कूल की चार दीवारी भी नहीं थी। शाम के समय और छुट्टी वाले दिनों में हम स्कूल के मैदान में फुटबाल, हाकी, क्रिकेट आदि खेल खेला करते थे। समय बीतने के साथ हमारी मानसिक शक्तियों का विकास होता चला गया और हमारे जीवन में परिवर्तन आते चले गए। हमारे नैतिक विकास की नींव तो हमें सुन्दर संस्कार देते हुए हमारे माता-पिता ने ही रख दी थी। पौष्टिक आहार और कुशल व्यवहार के महत्त्व को समझते हुए हमारे माता-पिता ने हमारे खान-पान और रहन-सहन को कभी असंतुलित नहीं होने दिया। हमारे नैतिक, भावनात्मक और मानसिक विकास में हमारे शिक्षकों ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हमारे जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैलाते हुए और हमें सार्थक जीवन जीने की राह दिखाते हुए हमारे गुरुजन द्वारा प्रदान किए गए मार्गदर्शन के लिए हम उनके प्रति सदा आभारी रहेंगे। जैतसर में श्री दिवानचंद जी मिड्ढा, श्री सत्यनारायण बोहरा और श्री रिछपाल शर्मा हमारे आदर्श अध्यापक थे। उन्होंने हर पल अपने विद्यार्थियों को बेहतर बनाने का प्रयास किया। समर्पण भाव के साथ शिक्षा के क्षेत्र में उन द्वारा फैलाया गया प्रकाश तथा उनके नैतिक मूल्य हमें जीवन में निरंतर सफलतापूर्वक आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते रहेंगे।

जीवन को महकाने वाले हमारे आदर्श अध्यापक



श्री रिछपाल शर्मा



स्व. श्री सत्यनारायण बोहरा

जैतसर में तब लड़कियों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए घर से बाहर भेजने का चलन नहीं था। हमारी बहनों की आठवीं तक की शिक्षा जैतसर के सरकारी स्कूल में ही हुई। शिक्षा प्राप्त करने में विशेष रुचि होने के कारण हमारी बहन सुनीता रानी ने घर रहते हुए बी.ए. तक की शिक्षा पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा प्राप्त की। मैंने और मेरे ताऊ श्री मुंशीराम जी के सुपुत्र रमेश ने सूरतगढ़ के सरकारी स्कूल में 9वीं कक्षा में प्रवेश प्राप्त किया। उस समय दादाजी सूरतगढ़ ही रहते थे। सूरतगढ़ हम अपने दादा-दादी के साथ ही रहे। तब हमारे हम उम्र चाचा श्री मुरारीलाल जी भी 9वीं कक्षा के ही विद्यार्थी थे। सूरतगढ़ में श्री एन.डी. सेतिया और दादाजी के पारिवारिक संबंध थे। हमारी वार्षिक परीक्षा के दिनों में श्री एन.डी. सेतिया हमें लालटेन के प्रकाश में गणित पढ़ाया करते थे। 10वीं से एलएलबी तक की पढ़ाई मैंने श्रीगंगानगर में बुआ ठाकरी जी, ज्ञान बहन जी तथा भाइयों की छांव में पूर्ण की। गंगानगर में मैंने कमरा किराए पर लिया था। चूनागढ़ से भवनेश बत्रा और गंगानगर से सतीश ठक्कर ने मेरे साथ अलग-अलग समय रूम शेयर किया था। सतीश ठक्कर की मम्मी के स्नेह में मुझे अपनी माताजी की ममता नजर आया करती थी। वो रात को मलाई जमाने के लिए रख दिया करती थीं। वो हमें उस मलाई पर चीनी डालकर नमक-काली मिर्च के पराठों के साथ नाश्ता कराया करती थीं। उनकी तीन संस्कारी बेटियां थी- स्वर्णा, वीणा और अनीता।

श्री अर्जुनदास भाई साहब, महेन्द्र और सुरेन्द्र के संयुक्त प्रयासों के परिणामस्वरूप व्यवसाय की तरक्की दिन प्रतिदिन होती चली गई। व्यवसाय सम्बन्धी बैंकों के काम मैं करने लगा था। इस प्रकार जैतसर में हमारे किराना व्यवसाय ने नई गति प्राप्त की और भाई साहब तथा महेन्द्र की गिनती क्षेत्र के बड़े व्यापारियों में होने लगी।

हमारे भाई साहब श्री अर्जुनदास जी की दिली इच्छा थी कि मैं आईपीएस परीक्षा की तैयारी करूं। मेरी लॉ सैकंड ईयर की शिक्षा पूरी होते ही भाई साहब तथा उनके जैतसर के मित्र श्री अर्जुन जियाणी ने एस.एन. दास गुप्ता कॉलेज, पूसा रोड, दिल्ली में आईपीएस परीक्षा की तैयारी के लिए मेरा एडमिशन करा दिया। उस संस्था के प्रमुख श्री के. मोहन हमारी जीके (GK) की क्लास लिया करते थे। पिताजी, चाचा भगवान दास जी और भाई साहब चाहते थे कि मैं सरकारी नौकरी करूं। उन्हीं दिनों मेरे पास न्यू इंडिया कंपनी की ओर से इंटरव्यू के लिए कॉल आई। इंटरव्यू बहुत ही अच्छा रहा और 1978 में कंपनी में विकास अधिकारी के पद पर मेरी नियुक्ति हो गई। 1979 में मेरा विवाह हो गया। 1978 से 1993 तक का मेरे जीवन का सफर उमंगों और परिवर्तनों से भरा था। 1991 में रॉबिन और नितिन की शिक्षा के लिए मैं सूरतगढ़ शिफ्ट हुआ। वहां की हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में हमें प्रिंसिपल अशोक दत्ता जी तथा उनके सुशिक्षित परिवार का अमूल्य साथ मिला।

शिक्षा प्राप्त करने के लिए जैतसर से दूर जाने पर शुरुआत में मुझे घर की याद सताती थी। जैतसर के सामाजिक वातावरण की अपनी ही गरिमा थी। वहां का जीवन हर प्रकार से शांतिपूर्ण था। वहां व्यक्ति के सत्कार का आधार संस्कार हुआ करते थे। सुन्दर संस्कारों के आधार पर अमीर-गरीब दोनों का ही दिल से सम्मान किया जाता था। सूरतगढ़ और गंगानगर में रहते हुए मैं अक्सर मन की आँखों से देखा करता था जैतसर के गेहूं से लहलहाते तथा ऊंचे-ऊंचे गन्नों के

खेत, बेर की झाड़ियां, सब्जियों की क्यारियां, महकती घास, शहतूत के पेड़ और सफेद फूलों पर मंडराती प्यारी-प्यारी तितलियां।

बाल्यावस्था की मधुर स्मृतियां मुझे रोमांचित कर दिया करती थी। देखते ही देखते मन में तरह-तरह की यादों की भीड़ उमड़ आती थी। रामलीला मंचन के दिनों के उत्साह और उमंग भरी यादों के परिणामस्वरूप मेरा हृदय आनंद में नृत्य करने लगता था। अकस्मात ही मुझे याद आने लगी अपने जीवन की उस रोमांचकारी रात की जब मैंने जैतसर की रामलीला स्टेज पर रामभक्त केवट की धर्मपत्नी के रोल को निभाया था। जैतसर में हर वर्ष दशहरा सरकारी स्कूल के मैदान में मनाया जाता था। यहीं पर 1972 में ट्रैक्टर ट्राली उल्ट जाने से भाई महेन्द्र के पैर में फ्रैक्चर हो गया था। लंबे इलाज के बाद ही महेन्द्र ठीक हो पाया था। महेन्द्र के स्वास्थ्य को देखते हुए हमारे माता-पिता ने 8वीं के बाद की शिक्षा के लिए उसे जैतसर से बाहर भेजने का जोखिम नहीं उठाना चाहते थे। परिणामस्वरूप महेन्द्र 1975 में भाई साहब के किराना व्यवसाय में पूरी तरह शामिल हो गया।

किराना व्यवसाय में आगे बढ़ते रहने का भाईसाहब में ऐसा जज्बा था कि जैतसर में हमारी किराने की दुकान सबसे पहले खुल जाया करती थी। जब मैं जैतसर में होता था तो सुबह-सुबह मैं ही दुकान खोला करता था। ईमानदारी, बड़ी सोच, विनम्रता और ग्राहकों की जरूरत के प्रति संवेदनशीलता जैसे विशेष गुणों के कारण भाईसाहब ग्राहकों के भरोसे को जीत चुके थे और उनकी लोकप्रियता की महक दूर-दूर तक फैल चुकी थी।

भाई साहब अर्जुनदास जी किराना व्यवसाय में सफलता के ऊंचे लक्ष्य की ओर बढ़ते रहने के लिए दिन-रात कड़ी मेहनत किया करते थे। जब महेन्द्र भाई साहब के किराना व्यवसाय में सक्रिय रूप से शामिल हो गया तो विकास पथ पर आगे बढ़ने के लिए उनकी शक्ति और उत्साह निरन्तर बढ़ते चले गए। भाई साहब की तरह महेन्द्र भी स्वभाव से ही मेहनती रहा है। उस द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में भाई साहब से जुड़ना परिवार के लिए वरदान साबित हुआ। पहले किराना व्यवसाय में भाई साहब अकेले ही थे। जब महेन्द्र भी व्यवसाय में शामिल हो गया तो उनका नैतिक बल बढ़ता चला गया। ठीक ही कहा जाता है कि एक और एक ग्यारह होते हैं।

जैतसर में हमारा किराने का अधिकतर थोक व्यवसाय ही था। महेन्द्र ने दुकान पर नियमित रूप से जाना प्रारम्भ किया और प्राइवेट पढ़ाई भी करता रहा। सूर्योदय से पहले ही वह दुकान पर पहुंच जाया करता था और तुलसी राम, सीताराम तथा सोमनाथ शर्मा के सहयोग से दुकान की सफाई करवा लिया करता था। दुकान में ग्राहक सुबह जल्दी ही आने लगते थे। श्री तुलसी राम सिंधी, पंडित देवराज जी, सरदार भजन सिंह जी, श्री मदनलाल जग्गा आदि आसपास के होटल वाले सुबह जल्दी ही अपनी जरूरत के अनुसार सामान ले जाया करते थे। सर्वश्री रोशनलाल, सुभाष चन्द्र मेहंदीरत्ता, निहालचंद आदि दुकानदार ग्राहकों को बेचने के लिए सामान ले जाया करते थे। जैतसर के लगभग 80 दुकानदार बिक्री का सामान नियमित रूप से खरीदने के लिए आया करते थे। उनसे हमारे व्यापारिक सम्बन्धों के साथ-साथ पारिवारिक सम्बन्ध भी विकसित



हो चुके थे। सरदारगढ़ (श्रीगंगानगर) के बहुत से व्यापारी हर दिन दुकान पर बेचने का तथा घर का सामान ले जाया करते थे। भाई साहब अर्जुनदास जी महेन्द्र और तुलसी राम देर रात दुकान बढ़ाकर साथ-साथ ही घर वापिस आया करते थे।

हमारे चाचा श्री मोहन लाल जी, चाची माया देवी जी, भाई साहब अर्जुनदास जी, भाभी भजन देवी, बहन कमलेश और हमारे बहनोई दीवान चंद जी ने ईश्वर कृपा से राधास्वामी का नामदान प्राप्त किया था। 22 वर्ष की आयु में भाईसाहब को नामदान प्राप्त करने की प्रेरणा जैतसर में श्री जगननाथ सुखीजा से प्राप्त हुई। जगननाथ जी दिव्य प्रेरणा से राधास्वामी सत्संग में जाने लगे थे और मादक पदार्थों का सेवन छोड़ते हुए नामदान की बख्शीश को प्राप्त किया था। हमारे भाईसाहब डेरा ब्यास जाते रहते थे। एक बार जब मेरा दिल्ली से जयपुर लौटना हुआ तो मैंने भी श्री व्यास जाने का मन बनाया और एक रात डेरे में रुका। डेरा ब्यास के अद्वितीय आध्यात्मिक अनुभव को शब्दों में व्यक्त कर पाना संभव नहीं है।

धर्म के प्रति समर्पित संत बाबा नत्थासिंह जी ने भी



संत बाबा नत्थासिंह जी



धम्मथली विपश्यना मेडिटेशन सेंटर, जयपुर

भाईसाहब को बहुत प्रभावित किया था। बाबा नत्थासिंह का जन्म पंजाब में 1929 में हुआ था। ईश्वर में पूर्ण विश्वास के कारण एक पैर होते हुए भी उन्होंने अपना संतुलन बनाए रखा। वे वर्षों तक गुरुद्वारा बुड्ढा जोहड़ से आस्थापूर्वक जुड़े रहे। इस ऐतिहासिक और सुप्रसिद्ध गुरुद्वारे की नींव 1953 में रखी गई थी। जब 1956 में गुरुद्वारे का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ तो नत्थासिंह जी ने वहां भावपूर्वक कार सेवा की। अनुपम सेवा भाव के कारण वे वर्षों तक गुरुद्वारे के प्रधान पद पर आसीन रहे। गुरुद्वारे के काम से वे 13 किलोमीटर का फासला तय करते हुए साइकिल से जैतसर जाया करते थे। जैतसर में वे प्राय: हमारे पिताजी, ताऊ मुंशीराम जी और चाचा भगवान दास जी से प्रेमपूर्वक मिला करते थे। आजकल वे पंजाब के गुरुद्वारे में रहते हैं। ईश्वर उन्हें स्वस्थ रखे। जयपुर आने के बाद 2005 में भाईसाहब अर्जुनदास जी का संघ के स्वयंसेवक स्व. चंदन मल कट्टा जी से मिलना हुआ, जिन्हें रामायण, श्रीमद् भगवद्गीता आदि धर्मग्रंथों का गहरा ज्ञान था। एक दिन ध्यान-प्रयोग के प्रसंग में चंदनमल जी ने आध्यात्मिक गुरु 'ओशो' के विचारों पर प्रकाश डाला तो भाईसाहब 'ओशो' के प्रवचन सुनने लगे और उनका साहित्य पढ़ने लगे। ओशो की पुस्तक 'मरो हे जोगी मरो' ने उन्हें यह आभास कराया कि



धम्मथली विपश्यना मेडिटेशन सेंटर, जयपुर का मुख्य द्वार

विपश्यना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ध्यान-प्रयोग है। विपश्यना शब्द का अर्थ है 'देखना, लौटकर देखना।' विपश्यना स्वयं के शांति और आनंद के मूल स्वरूप में प्रवेश पाने के लिए आती जाती श्वांस को साक्षी भाव से देखते रहने की सरल प्रक्रिया है। हमारे भाईसाहब उन साधकों के प्रति हार्दिक रूप से आभारी हैं जिन्होंने उन्हें धम्मथली विपश्यना मेडिटेशन सेंटर, जयपुर की ओर मुड़ने के लिए प्रेरित किया और उनके लिए हृदय के मधुर संगीत को खोजने का मार्ग प्रशस्त किया।

श्री अर्जुनदास भाई साहब, महेन्द्र कुमार, सुरेन्द्र कुमार व तुलसी राम की कड़ी मेहनत तथा परिवार के सदस्यों के प्रेमपूर्ण सहयोग ने ही जयपुर में सफल व्यवसाय की स्थापना का मार्ग तैयार कर दिया था। जयपुर में माता-पिता के आशीर्वाद से परिवार में से सर्वप्रथम फाइनेंस व्यवसाय मैंने और मेरे अज़ीज़ राजेन्द्र सेतिया ने ही प्रारम्भ किया था। हमारे संयुक्त प्रयासों ने सम्पूर्ण परिवार के लिए सफल फाइनेंस व्यवसाय का आधार तैयार कर दिया। परिवार के जयपुर शिफ्ट होने के पश्चात् अज़ीज़ सुरेन्द्र कुमार ने जैतसर में तुलसी राम के सहयोग से 15 वर्ष तक अकेले ही किराना व्यवसाय का संचालन किया।

परिवर्तन संसार का नियम है। जीवन में परिस्थितियों के साथ-साथ हमारी सोच भी बदलती रहती है। सकारात्मक परिवर्तन के बिना विकास असंभव है। एक वो समय भी था जब हमारा परिवार यह चाहता था कि मैं सरकारी नौकरी करूं परन्तु परिवार के जयपुर शिफ्ट होने के बाद पिताजी की यह इच्छा थी कि मैं नौकरी छोड़कर व्यवसाय करूं और भाइयों के साथ जयपुर में ही रहूं। यह देखते हुए कि मैं नौकरी छोड़ना ही नहीं चाहता था, पिताजी ने प्रिंसिपल अशोक दत्ता के माध्यम से मेरे लिए जयपुर में भाइयों के साथ रहने का मार्ग प्रशस्त किया था। आज हम जयपुर में प्रेमपूर्वक साथ-साथ हैं और हम तीनों भाइयों के सुपुत्र सुरेन्द्र कुमार, राजेन्द्र कुमार, राज कुमार, रॉबिन, नितिन, विपुल तथा संकुल फाइनेंस कंपनियों का सफल संचालन करते हुए निरंतर विकास पथ पर अग्रसर हैं। कितनी हितकर सोच थी हमारे माता-पिता की !

हमारी माताजी के जीवन में बनावट और दिखावट लेशमात्र भी नहीं थी। उनके हृदय की पवित्रता, व्यवहार की सहजता और प्रेम की प्रबलता ऐसी थी कि उन्होंने जीवन भर हर रिश्ते की मधुरता को बनाए रखा। हमारे चाचा श्री मोहनलाल जी और चाची मायादेवी जी धर्म के प्रति समर्पित थे। हमारे चाचा श्री मोहन लाल जी हर इतवार राधा स्वामी सत्संग व्यास द्वारा लिखित रत्नों से भी कहीं अधिक बहुमूल्य आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़कर सुनाया करते थे। चाची मायादेवी आस्थापूर्ण मधुर भजनों को आवाज दिया करती थीं। उनके भजन सम्पूर्ण वातावरण को भक्तिमय बना दिया करते थे और भावपूर्वक सुनने वालों के अंत:करण में आनंद की तरंगे उठने लगती

थी। हमारे भाई साहब अर्जुनदास जी, भाभी श्रीमती भजन देवी जी और बुआ जनको उनके यहां हर सुबह 4 बजे से 5 बजे तक सामूहिक रूप से नाम जपा करते थे।

हमारे दादा श्री होतचंद जी के बड़े भाई श्री निहाल चंद जी की बड़ी पुत्रवधू चाची मुकनी बाई और छोटी पुत्रवधू चाची माया देवी से हमारी माताजी का हार्दिक लगाव था। हमारे मकान बेशक अलग-अलग थे परन्तु माताजी और दोनों चाचीजी एक दिल थीं। तीनों घरों में जब कभी किसी मेहमान का आना होता तो एक-दूसरे के यहां दूध का बड़ा गिलास लेकर जाया करती थीं और प्रसन्नतापूर्वक काम में हाथ बंटाया करती थीं। खुशी, गम, सत्संग आदि में माताजी मुकनी चाची के साथ ही जाया करती थीं। जब कभी जैतसर में साधु-संतों का आना होता तो माताजी, चाचीजी को आवाज लगाती- 'चल मुकनी हंस मुनि दी कुटिया ते.... महात्मा जी आए होए ने।'

चाची मुकनी बाई और चाचा केसरदास जी का जीवन सेवाभाव पर आधारित था। दोनों ही दिल के बहुत अमीर थे। चाचा केसरदास जी के पिता श्री निहालचंद जी की वृद्धावस्था में नजर कमजोर हो गई थी। चाचाजी की माताजी का बहुत वर्ष पहले ही देवलोकगमन हो चुका था। पिता के प्रति उनका सेवाभाव इतना गहरा था कि वृद्धावस्था में वे हर कदम पर उनका सहारा बने। उन्होंने अपने पिताजी को किसी भी क्षण अकेला महसूस नहीं होने दिया। वे हर सुबह प्रेमपूर्वक पिताजी का हाथ पकड़ कर धीरे-धीरे चलते हुए दुकान पर ले जाया करते थे। वे पिताजी के हुक्के की सामग्री को अपने साथ ले जाना कभी नहीं भूले। दुकान से वापिस भी वे साथ-साथ आया करते थे। चाचा केसरदास जी गुरुनानक देवजी के परम भक्त थे।

चाची मायादेवी माताजी से 5-7 वर्ष छोटी थीं। माताजी में गहरा विश्वास होने के कारण चाचीजी उनकी सलाह के बिना कोई बड़ा काम नहीं किया करती थीं। चाची मायादेवी के निवास स्थान पर हर इतवार राधा स्वामी सत्संग का आयोजन हुआ करता था। हमारी माताजी का बुआ जनको से बहुत लगाव था। बुआजी हमारी माताजी से लगभग 15 वर्ष छोटी थीं। वो हमारे घर के सामने वाले मकान में रहती थीं। हमारे यहां मेहमानों के आ जाने पर वो माताजी के साथ मिलकर देखते ही देखते सारे काम निपटा लिया करती थीं। मासी भगवानी देवी हमारी माताजी की तरह सरल स्वभाव की थीं। हर बड़ा फैसला लेने से पहले वो हमारी माताजी की राय अवश्य लिया करती थीं।



श्री तुलसीराम सुथार

आज भी हमें याद हैं जैतसर के वो दिन जब तुलसी राम सुथार बाल्यावस्था में ही हमारे परिवार का अभिन्न हिस्सा बन गया था। अपने पिताश्री के देवलोकगमन के पश्चात् 12 वर्ष की आयु में तुलसी राम अपने चाचा श्री भोजाराम जी के साथ उनके काम में सहायता करने के लिए जैतसर आया था। जब तुलसी राम का संयोगवश हमारे भाईसाहब से मिलना हुआ तो भाई साहब ने उसे दुकान में काम पर रख लिया। मन से काम करते-करते तुलसी राम हमारे दिलों के करीब आता चला गया। दुकान पर तुलसी राम परिवार के सदस्य की तरह काम किया करता था और घर पर वर्षों तक खाना-पीना, उठना-बैठना साथ-साथ चलता रहा। विवाह के पश्चात् भी तुलसी राम और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पारानी लगभग 2 वर्ष तक हमारे साथ ही परिवार के सदस्यों की तरह रहे।

हमारे माता-पिता ने इन दोनों का ठीक वैसे ही ध्यान रखा जैसे वो हमारा ध्यान रखा करते थे। हमारे माता-पिता प्राय: पंजाबी बोला करते थे। पुष्पा रानी शुरुआत में पंजाबी नहीं समझ पाती थी। परन्तु हमारे माता-पिता की अपनेपन की भावना ने पुष्पा रानी को भी हमारे परिवार का अटूट हिस्सा बना दिया। विवाह के 2-3 वर्ष पश्चात् तुलसी राम जी ने हमारे घर के पास ही अपना घर बना लिया था। तब तुलसी राम जी अपनी माताजी श्रीमती इमिया देवी सुथार को जैतसर ले आये। तुलसी राम जी की माताजी बहुत शांत स्वभाव की थीं और बहुत कम बोला करती थीं। उन्हें कभी अपने बहू-बेटे से ऊंची आवाज में बात करते नहीं सुना गया।

माता-पिता एवं गुरुजन की शुभाशीष, आत्मविश्वास, कड़ा परिश्रम, परस्पर प्रेम, धैर्य और जीवन के प्रति जागरूकता सच्ची सफलता की आधारशिला हैं। जीवन में बड़ी सफलता परस्पर सहयोग का परिणाम है। हमारा स्टाफ हमारा परिवार है। पिछले 75 वर्षों में हमारे परिवार को सूरतगढ़ से जैतसर और जयपुर तक के जीवन के सफर में अनेक व्यक्तियों का अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ। उनके सहयोग से ही हमारा प्रगति पथ पर आगे बढ़ना संभव हो पाया है। हमें हार्दिक सहयोग प्रदान करने वाले सदैव हमारे दिलों में रहेंगे। उनका शुक्रिया अदा करते हुए हम ईश्वर से उन सबके परम सुख की प्रार्थना करते हैं।

Our Kirana Business Centres at Jaitsar
(Sri Ganganagar)

Surinder Kumar and Company
Grocery Wholesale
Dealers : Desai Bidi, Bunge India Limited,
Patanjali Food, Nestle, Jaggery, Sugar etc.
5-A, Old Dhaan Mandi,
M : 9414089595, 9414464366

Gaurishankar and Company
Grocery Wholesale
Dealers : Desai Bidi, Bunge India Limited
Patanjali Food, Nestle, Jaggery, Sugar etc.
5-A, Old Dhaan Mandi
Mob. : 9414089595, 9414464366

हमारे किराना व्यवसाय, पेट्रोल पंप बिजनेस तथा फाइनेंस व्यवसाय में भरपूर सहयोग प्रदान करने वाले स्टाफ के सदस्य हमारे परिवार के सदस्यों की तरह ही हैं। हम अपने परमपूजनीय पिताश्री की इस सीख को कभी नहीं भूल सकते कि हम स्टाफ के सदस्यों का परिवार की तरह ध्यान रखें। हमारे परस्पर सद्भावपूर्ण संबंधों के परिणामस्वरूप हमारे स्टाफ के सदस्य समर्पण भाव के साथ अपने-अपने कार्य पर ध्यान केन्द्रित करते हुए तथा टीम के साथ सुखद तालमेल स्थापित करते हुए निरंतर व्यावसायिक सफलता के निर्धारित लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाते चले आ रहे हैं।

हमारे किराना व्यवसाय, पेट्रोल पंप बिजनेस, एस.के. फाइनेंस लिमिटेड, सेतिया ऑटो फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड, डायमंड कैपफिन प्राइवेट लिमिटेड, मेट्रोसिटी फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड तथा रकम क्रेडिट लिमिटेड के स्टाफ का प्रत्येक सदस्य हमारी टीम की अनुपम शक्ति है। व्यवसाय को तीव्र गति प्रदान करने के लिए हमारे स्टाफ के सदस्यों द्वारा किए गए अथक प्रयास अति प्रशंसनीय हैं।

हम अपने स्टाफ के सदस्यों की कर्तव्य निष्ठा, ईमानदारी तथा योजनाबद्ध तरीके से टीम के साथ आगे बढ़ते रहने की प्रवृत्ति के लिए उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी वे योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ते हुए कार्य के प्रति अपने श्रेष्ठ स्तर को बनाए रखेंगे।

OUR STAFF



Chhankindra Singh
Helper



Kasturi Lal Joshi
12GB
Senior Salesman



Nej Kumar Bishnoi
10 Sarkari
Salesman



Narender Singh Rathore
Senior Accountant



Chanchal Kumar Sharma
Salesman



Tarachand Raina
Salesman



Punit Sharma
Accountant



Manish Sain
Senior Accountant



Madanlal Sharma
3LC
Salesman



Prem Kumar Bansal
Salesman



Deepchand Indora
Helper

Talent wins games, but teamwork wins championships.

Girdhar Lal M. Mohatta Petrol Pump

Govind Marg, Adarsh Nagar, Opposite Bhagat Singh Park, Jaipur
Phone : 0141-2619491, +919413340514

Office Staff



Raghuveer Singh Dhuwan
Chief Manager



Mahaprasad Kumawat
Deputy Manager



Suresh Kumar Kumawat
Accounts Manager



Satish Kumar Sanchoria
Senior Accountant



Sayed Bilal Ahemad
Accountant



Jai Singh Gurjar
Supervisor



Prabhu Saini
Supervisor



Munshi Ram Choudhary
Salesman



Suresh Bhargava
Salesman



Naresh Kumar
Salesman



Vimlesh Kumar
Salesman

Teamwork makes the dream work.

Sharma Brothers Petrol Pump

Opposite Glass Factory, Tonk Road, Jaipur
Mob. : 9828168068

Office Staff



Mohammed Arif
Chief Manager



Sunil Kumar Saxena
Cashier



Mohammed Shahrukh
Chief Accountant



Rajender Kumar Sharma
Team Leader



Shivpal Saini
Senior Salesman



Omprakash Sharma
Team Leader



Pushpender Singh Jadoun
Team Leader



व्यक्तिगत सम्बन्धों की सौगात



- अर्जुन दास, रविकुमार, महेन्द्र कुमार सेतिया

जीवन के लम्बे सफर में अनेक व्यक्ति मिलते हैं और बिछड़ते हैं। माता-पिता की अंगुली पकड़ कर चलना सीखा। परिवार और मोहल्ले के बच्चों के साथ खेलते-खेलते मस्ती में बचपन बीता। हमारे बचपन के दिन भी क्या दिन थे। उस बीते जमाने में सारा मोहल्ला अपना परिवार हुआ करता था। अध्यापकगण और बुजुर्गों से जीवन जीने की कला सीखी। जीवन में आगे बढ़ने के लिए अनेक व्यक्तियों का प्रेमपूर्ण सहयोग मिला। हमारे परिवार का सूरतगढ़ से जैतसर और जयपुर का 75 वर्षों का सफर काफी चुनौती और संघर्ष भरा रहा। इस लम्बे सफर में निम्नलिखित व्यक्तियों का मार्गदर्शन और सहयोग उल्लेखनीय रहा और हम उन सबको नमन करते हैं। ऐसे प्रतीत होता है कि यदि वे हमारे साथ नहीं होते तो हम प्रगति नहीं कर सकते थे। अत: हम उनके प्रति हृदय से कृतज्ञ महसूस कर रहे हैं। उन द्वारा किए उपकारों और सहयोग को शब्दों में बांधना असंभव है। इसलिए हम उनको स्मरण और नमन करते हुए उनके प्रति हृदय की गहराइयों से आभार प्रकट कर रहे हैं।

हमारे पिताजी के अंतरंग मित्र:

पिताजी का जीवन पूर्णतया मर्यादित था और उन्होंने उसे बड़ी सादगी के साथ जिया। अपनी 80 वर्ष की उम्र तक न तो किसी से कोई झंझट हुआ और न ही वे किसी विवाद में पड़े। उनकी कोशिश रहती थी कि किसी भी विवादास्पद स्थिति को आमने-सामने बैठकर बातचीत से निपटा लिया जाए। वे किसी भी गम्भीर समस्या को आसानी से सुलझा लिया करते थे। उनको अपने निम्नलिखित मित्रों के साथ हंसी-मजाक करना और उनके साथ पारिवारिक समस्याओं को साझा करना आम बात थी। वे ताउम्र उनके साथ जुड़े रहे।

- श्री प्यारे लाल आहूजा
- श्री कृष्ण लाल थरेजा
- श्री हंसराज बंसल
- श्री लाल चंद मुंजाल
- ठाकर जतन सिंह
- श्री तन्ना मल सेतिया
- श्री धन्ना राम सेतिया
- श्री शंकर लाल छाबड़ा
- श्री सोहनलाल सेतिया
- श्री बिहारी लाल सेतिया
- श्री सूरज मल गोदिसरिया
- श्री हंसराज सेतिया, सरदारगढ़
- श्री हंसराज सुखीजा, जैतसर
- श्री रांझा राम बलाना, विजयनगर
- श्री शंकरलाल सेतिया
- श्री लेखराज चुग
- श्री मदनलाल गोयल
- श्री लेखराज जग्गा
- श्री मदनलाल गीद्दड़
- श्री गोविन्द लाल छाबड़ा
- श्री चिरंजीलाल सेतिया

हमारी माताजी के धर्मप्रिय संगी साथी :

हमारी परमवंदनीय माताजी का सम्पूर्ण जीवन नि:स्वार्थ प्रेम, परोपकार, सरलता, धैर्य तथा श्रद्धाभाव पर आधारित रहा। उन्होंने हर रिश्ते की खूबसूरती और महक को सदैव बनाए रखा। जैतसर में वे सुबह-शाम अपने संगी-साथियों सहित भावपूर्वक श्री आनंदपुर कुटिया जाया करती थीं। हमारे माता-पिता द्वारा नियमित रूप से किए जाने वाले पूजा पाठ से हमें भक्ति की शक्ति का आभास हुआ और हम भी उनके इस शुभ कार्य से जुड़ते चले गए। माताजी तथा उनके निम्नलिखित संगी-साथियों के धर्म परायण जीवन की स्मृतियां हम में नवजीवन का संचार करती है:

- चाची श्रीमती मुकनी देवी
- श्रीमती लक्ष्मी देवी
- माता श्रीमती विद्या चुग
- माता श्रीमती इमिया देवी

- बुआ श्रीमती जानकी देवी
- चाची श्रीमती शांति देवी सेतिया
- माता श्रीमती परमेश्वरी देवी सेतिया
- चाची श्रीमती भागा देवी
- मासी श्रीमती भगवानी देवी बाघला
- श्रीमान् विजय कटारिया

हमारे आध्यात्मिक पथ प्रदर्शक

हम सभी भाई बहनों के लिए हमारी माँ प्रथम आध्यात्मिक गुरु थी। माताजी को उनकी माँ (हमारी नानी) बचपन से ही अद्वैत मत परमहंस श्री आनंदपुर कुटिया अपने साथ ले जाया करती थी। हम जब अपने ननिहाल अनूपगढ़ अपनी माँ के साथ जाते थे तो हमारी माँ हमें उनके साथ कुटिया ले जाना कभी नहीं भूली। वहीं से हमारे मन में आध्यात्मिक संस्कारों के बीज बोए गए और वे अंकुरित होकर हमारे परिवार की बगिया को महका रहे हैं। हमारे सभी मामाजी बड़े धैर्यवान और सरल स्वभाव के थे और हमारी माताजी को विरासत में मिले इन पारिवारिक गुणों का भरपूर खजाना हम सबको मिला, जिसके फलस्वरूप हम अपने जीवन को सफल बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

मुझे ईश्वर कृपा से राधास्वामी का नामदान लेने की प्रेरणा जैतसर में श्री जगननाथ जी सुखीजा से प्राप्त हुई। मैंने और मेरी धर्मपत्नी श्रीमती भजनदेवी सेतिया ने 1970 में डेरा व्यास जाकर नामदान की बख्शीष प्राप्त की। मेरा वर्ष 2005 में जयपुर में संघ के स्वयंसेवक स्व. चंदनमल जी कट्टा से मिलना हुआ। उनसे प्रेरणा प्राप्त करते हुए मैं आध्यात्मिक गुरु 'ओशो' के प्रवचन सुनने लगा। 'ओशो' के साहित्य ने मुझे यह आभास कराया कि विपश्यना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ध्यान प्रयोग है। विपश्यना ध्यान के महत्त्व को समझते हुए मैंने धम्मथली विपश्यना मेडिटेशन सेंटर, जयपुर से विपश्यना ध्यान के विशेष 10 दिवसीय कोर्स पूरे किए तथा वहां समय-समय पर जाना शुरू किया।

रविप्रकाश जी मोदी व ऋषभ मोदी द्वारा साधना के लिए एक बड़ा हॉल उपलब्ध कराया गया। आचार्य सतपाल जी, आचार्य संग्राम सिंह जी, घनश्याम जी शर्मा, प्रेमप्रकाश जी गुप्ता कल्याण मित्र, एस.के. गुप्ता जी कल्याण मित्र तथा रामप्रकाश सिंघल कल्याण मित्र, प्रीतपाल गुप्ता कल्याण मित्र, आचार्य बाबूलाल यादव (विपश्यना आचार्य), खुशहाल चन्द ढंढ कल्याण मित्र से मुझे ध्यान मार्ग पर आगे बढ़ने तथा आंतरिक आनंद प्राप्त करते हुए आत्म साक्षात्कार की प्रेरणा प्राप्त होती रहती है। हमारे आध्यात्मिक पथ प्रदर्शकों ने ही हमें अच्छी तरह से जीने का मार्ग दर्शाया है। हमारे हृदय उनके प्रति सदैव आभार से भरपूर रहेंगे।

-अर्जुन दास सेतिया

हमारे प्रिय मित्र

मित्रता रुह से रुह का रिश्ता है। दिलों को दिलों से जोड़ने और जीवन को उत्साहपूर्ण उत्सव बना देने वाला यह अनमोल रिश्ता प्यार ही प्यार, अटल विश्वास और त्याग की भावना पर आधारित है। हमारे प्रिय मित्र हमारे दिल के बेहद करीब हैं। वर्ष 1987 में हमारे परिवार की जैतसर से जयपुर शिफ्ट होने की शुरुआत हुई। अब हम बेशक जयपुर के स्थाई निवासी हैं परन्तु हमारे निम्नलिखित प्रिय मित्र सदैव हमारे दिल की गहराइयों में रहेंगे :

श्री इन्द्र कुमार गोदिसरिया
श्री दर्शन कुमार गर्ग
श्री कुलदीप सिंह रंधावा-4 जीबी
श्री प्रभु सिंह राठौड़
श्री जय सिंह राठौड़
श्री भँवर सिंह शेखावत
श्री मनोहर लाल कंधरानी
श्री केवल कृष्ण नागपाल
श्री राधाकृष्ण जियानी
श्री प्रकाश चांद भोमदिया
श्री राकेश गोयल
श्री नत्थु राम मिढा
श्री गौरव पुण्यानी
श्री नत्थु राम सेतिया
श्री दिलीपकुमार सुंदर दास - दिल्ली
श्री मदनलाल जग्गा
श्री ब्रिज मोहन मुंजाल
श्री चिराग चंद गोदिसरिया
श्री सुभाष चंद मेहंदीरत्ता
श्री राकेश जग्गा
श्री सुभाष हर्ष
श्री सतीशकुमार मित्तल रामसिंहपुर
श्री निरंजनकुमार आहूजा - विजय नगर
श्री एसएल सिंघल, यूको बैंक
श्री राकेश माथुर, यूको बैंक
श्री एस.के. सचदेवा
श्री आर.के. अग्रवाल
श्री के.के. चलाना
श्री के.के. कपूर
श्री मदनलाल जी नागपाल, करणपुर
श्री राकेश माथुर
श्री गुरमीत सिंह बेस, जयपुर
श्री प्रभु दयाल सिंधी
श्री ऊधम सिंह - 6 जी.बी.
श्री नायब सिंह - 3 जी.बी.
डॉक्टर गुरबचन सिंह
श्री कृष्ण लाल पारीक
श्री शिव रतन पण्ड्या
श्री मदनलाल जाखड़
श्री संतोख सिंह 1 जी.बी.
श्री राम कुमार जोशी
श्री राम कुमार बाघला
श्री मोहन लाल आहूजा
श्री रमेश कुमार ओम प्रकाश सेतिया
श्री सुनील पुण्यानी
श्री डूंगरमल सेतिया
श्री फिरंगी लाल सेतिया
श्री राज कुमार सुराना
श्री देशराज आहूजा गंगा नगर
श्री ठाकर दास सेतिया
श्री शंकरलाल जियानी
श्री युधिष्ठर कुमार आहूजा
श्री अशोक कमार मिढा रामसिंघपुर
श्री टेक चंद बलाना विजय नगर
श्री चिमनलाल बलाना विजयनगर
श्री बी.एल. रजवालिया, यूको बैंक
श्री के.सी. बंसल
श्री एन डी सेतिया, वकील, सूरतगढ़
श्री निरंजनदास सेतिया, सूरतगढ़
श्री भवनरेश बत्ता
श्री रमेश आहूजा
श्री वी.के. कपूर
श्री के.सी. वर्मा, जयपुर
श्री वासुदेव जियानी
श्री परम जीत सिंह रंधावा - 4 जी.बी.
श्री बंसीलाल जियानी
श्री दौलत राम मौर
श्री देवी लाल गर्ग
श्री रोशनलाल 12 जी बी
श्री दयालदास कंधरानी
श्री रल्ला सिंह 4 जी बी
श्री धोकल राम 12 वाली
श्री रघुनाथ सुथार
श्री मुलक राज चुग
श्री वेद प्रकाश भंडारी
श्री रोशनलाल नागपाल करणपुर
श्री कपिल भंडाररी
श्री दीवान चंद लभु राम सेतिया
श्री बृज मोहन सेतिया
श्री पुरूषोत्तम लाल बंसल
श्री खेमचंद छाबड़ा
श्री राजकुमार खुराना
श्री वेद प्रकाश हर्ष
श्री मोहनलाल कक्कड़, रामसिंहपुर
श्री सुरेशकुमार चुग विजयनगर
श्री बी.के. बत्रा, यूको बैंक
श्री एम.आर. गर्ग, एस.बी.आई.
श्री धीरेन्द्र मदान
श्री इन्द्र कुमार चुग, सूरतगढ़
श्री विमल गोयल
श्री गेलाराम गर्ग
श्री रमेश धामीजा
श्री सतीश ठक्कर, गंगा नगर

श्री प्यारे लाल आहूजा
श्री कृष्ण लाल थरेजा
श्री हंसराज बंसल
श्री लाल चंद मुंजाल
ठाकर जतन सिंह
श्री तन्ना मल सेतिया
श्री धन्ना राम सेतिया
श्री शंकरलाल छाबड़ा
श्री सोहनलाल सेतिया
श्री बिहारी लाल सेतिया
श्री सूरज मल गोदिसरिया
श्री हसंराज सेतिया, सरदारगढ़
श्री हंसराज सुखीजा, जैतसर
श्री रांझा राम बलाना, विजयनगर
श्री शंकरलाल सेतिया
श्री लेखराज चुग
श्री मदनलाल गोयल
श्री लेखराज जग्गा
श्री मदनलाल गिद्दड़
श्री गोविन्द लाल छाबड़ा
श्री चिरंजी लाल सेतिया

पिछले 35 वर्षों में जयपुर तथा अन्य शहरों के कई प्रिय व्यक्तियों से हमारे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध विकसित हुए। कुछ विवशतावश हम उन्हें सूचीबद्ध नहीं कर पाए परन्तु वे हर पल हमारे दिल के पास ही रहेंगे। हमारे प्रिय मित्र हमारे लिए ईश्वर का अनमोल वरदान हैं। हमें अपने प्रिय मित्रों पर गर्व है।

Our family and friends are our support system.

'पारिवारिक पृष्ठभूमि की लेखिका'



लेखिका परिचय

नाम : विमला गुगलानी 'गुग'

जन्म : 10 मार्च, 1951

शिक्षा : एम.ए. (इतिहास), बी.एड.

माता-पिता : श्रीमती शान्ति देवी - श्री लाजपतराय सेतिया

पति : स्वर्गीय श्रीमान् विनोद कुमार गुगलानी

बेटे : समीर गुगलाली, पंकज गुगलानी

संप्रति : पंजाब सरकार से सेवानिवृत्त अध्यापिका, कवियत्री, लेखिका

प्रकाशित पुस्तकें :

1. स्मृतियों के आर-पार (विभाजन पर आधारित पारिवारिक पुस्तक)
2. इन्द्रधनुषी जीवन कला (निबंध संग्रह)
3. उत्सव है जिन्दगी (निबंध-संग्रह)
4. मन कस्तूरी (निबंध संग्रह)
5. सन्नी-बन्नी (बाल कविताएँ)
6. रंगला जंगल (पंजाबी में बच्चों की कविताएं) 2019 में चंडीगढ़ साहित्यिक अकादमी से पुरस्कृत

इसके अलावा हिन्दी, पंजाबी में लगभग बीस साझा काव्य संग्रह, अखबारों, मैगजीनों में कहानियां, कविताएं, रेसिपी अक्सर प्रकाशित होती रहती हैं। अनेकों पुरस्कार, सम्मान मिल चुके हैं। रेडियो, दूरदर्शन, यूट्यूब पर भी प्रोग्राम देने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। योग और समाज सेवा में विशेष रुचि।

वेबसाइट : vimlaguglani.com

सम्पर्क : 9888973200

E-mail : vimlaguglani.gmail.com

पता : कोठी नं. 3200, सेक्टर-40डी, चंडीगढ़